जाओ
और
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो

परमेश्वर के राज्य का स्वरूप

द्वारा

डोटा

नियमावली 10

समूह के अगुवों के लिए

(चौथा संशोधित संस्करण 2016)

प्रस्तावना

राज्य का सुसमाचार क्या है?

राज्य का सुसमाचार, परमेश्वर के राज्य की खुशखबरी है। सामान्य तौर पर यदि देखें तो परमेश्वर के राज्य का अर्थ अनन्तता से अनन्तता तक हर एक सजीव और निर्जीव वस्तु पर परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (भजन 24:1; 145:13)। खास तौर पर कहें तो, परमेश्वर का राज्य, यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता या अधिकार है (मत्ती 28:18)। यह राज्य मसीह के उद्धार के सम्पूर्ण कार्यों (प्रेरितों 2:36) और पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन में उन कार्यों के प्रयोग पर आधरित होता है (रोमियों 14:17)। इस राज्य को विश्वासियों द्वारा मन में स्वीकार किया जाता (लूका 17:20-21) और उनके जीवन में इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर का राज्य हमारे जीवन में चार प्रत्यक्ष क्षेत्रों में प्रगट हुआ हैः प्रारम्भ से लेकर अन्त तक विश्वासियों के सम्पूर्ण उद्धार में (मरकुस 10:25-26), एक कलीसिया के रूप में इस धरती पर पाये जाने वाले विश्वासियों के संविधान में (मत्ती 16:18-19), विश्वासियों के भले कामों (प्रभाव) के द्वारा मानवीय समाज के हर क्षेत्रा में (मत्ती 25:34-40), और अन्त में यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर मुक्त जगत या नये स्वर्ग और नयी धरती पर (1कुरिन्थियों 15:24-26)।

राज्य का सुसमाचार कब प्रचार किया गया?

उसके प्रथम आगमन पर, यीशु मसीह ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया (मरकुस 1:14-15; मत्ती 4:23)। यीशु ने करीब पचास दृष्टान्त कहे और वे सभी प्रभु के राज्य से सम्बन्धित थे। इन दृष्टान्तों में, यीशु हमें उनकी विशेषताओं के बारे में बताते हैं और खास तौर पर यह कि परमेश्वर के राज्य की रीतियों के अनुसार हम कैसे उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और उसमें किस तरह का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अन्त में, यीशु ने कहा, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)। इस तरह से, धेरती पर मसीही कलीसिया की स्थापना करने के बाद, मसीही लोग राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:24-25; 28:23,31)। सारे मसीहियों का लक्ष्य यीशु मसीह की प्रभुता का प्रचार करना, प्रचार की हुई शिक्षाओं का अभ्यास करना (मत्ती 23:3) और उनके तौर तरीकों को परमेश्वर के राज्य के तौर तरीकों से बदल देना है।

तैयार अगुवों और मज़दूरों को बढ़ाना

यीशु के अनुसार परमेश्वर के राज्य में "समय की मांग" तैयार अगुवे व मज़दूरों की संख्या है। एक तरफः "इसलिए खेत के स्वामी से *विनती करो* कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:38)। और दूसरी तरफे "ज्यादा से ज्यादा मसीहियों को *तैयार करो* ताकि वे मसीह की कलीसिया में सेवक बन सकें" (मत्ती 4:19; मत्ती 10:7; इपिफसियों 4:12)। उन्हें शिष्यता के समूह के अगुवे रूप में, घरेलू कलीसिया के अगुवे, कलीसिया के प्राचीन के रूप में, दूतों (नयी कलीसिया के रोपणकर्ता के रूप में) ठहरा दें।

डोटा पाठ्यक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता हैः

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छः महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) माप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठ्यक्रम को छः दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे "पढ़ें" "खोजें व चर्चा करें" समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. "नोट्स" प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का सारांश बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठ्यक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण पाठेयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्रा में तेजी से मण्डलियों की ;घरेलू कलीसियाद्ध संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं;प्रेरितों 6ः7द्ध। यीशु ने कहा,फ्मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधेलोक के पफाटक उसमें प्रबल नहीं होगें!य;मत्ती 16ः18द्ध! परमेश्वर को महिमा मिले! फ्क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहेः आमीन!य;रोमियों 11ः36द्ध

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05–10–1993 में हुआ जब यह पाठ्यक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, "Discipleship training On The Air", अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)**1996** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार
मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए निःशुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश
इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठ्यक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज़्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकध्यर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 13 *शान्त समय को साझा करना* (1राजा 3,11,17,18)
स्मरण करना (1. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना : 1 पतरस 2:5)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करनाः* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित शर्तों के बारे में दृष्टान्त**)
विवाह का भोज (मत्ती 22:1-14)

अध्याय 14 *शान्त समय को साझा करना* (2राजाओं 5,6,17,25)
स्मरण करना (2. कलीसिया में पाई जाने वाली गतिविधियां : प्रेरितों 2:42)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। रोमियों 4:1-17)

अध्याय 15 *शान्त समय को साझा करना* (2इतिहास 16,18,20,26) स्मरण करना
स्मरण करना (3. कलीसिया की सेवाकाईयांः इफिसियों :4:12-13)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना* : **(परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी से संबंधित दृष्टान्त)**
दो पुत्र (मत्ती 21:28-32)**+ फलरहित अंजीर का वृक्ष** (लूका 5:11-32)

अध्याय 16 *शान्त समय को साझा करना* (2इतिहास 32,33,34,36)
स्मरण करना (4. कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य : प्रेरितों 20:28)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। रोमियों 4:17ब-25)

अध्याय 17 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 1,2,5,8)
स्मरण करना (5. कलीसिया में महिमा : इफिसियों 3:20-21)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना* : **परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में है** (लूका 15:1-7) + **खोया हुआ पुत्र** (लूका 15:11-32)

अध्याय 18 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 10,11,14,15)
स्मरण करना (श्रृंखला 'त्र' "मसीही कलीसिया" का पुनरावलोकन)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री*। रोमियों 5:1-11)

अध्याय 19 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 16,18,19,22)
स्मरण करना (6. रोमियों 4:5)

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट होने वाले प्रेम का दृष्टान्त) भला सामरी** (लूका 10:29-37)

अध्याय 20 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 23,24,25,27)
स्मरण करना (7. रोमियों 5:1-2अ)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:12-21)

अध्याय 21 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 31,32,33,34)
स्मरण करना (8. रोमियों 5:3-4)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन* : **परमेश्वर के राज्य में नम्रता से संबंधित दृष्टान्त हैं)**
भोज में आरक्षित स्थान (लूका 14:7-14) + **फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत** (लूका 18:9-14)

अध्याय 22 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 37,38,40,49)
स्मरण करना (9.रोमियों 6:13)
बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:1-11)

अध्याय 23 *शान्त समय को साझा करना* (भजन संहिता 50,51,58,62)
स्मरण करना (10. रोमियों 6:23)
शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवनः* **परमेश्वर के राज्य में क्षमा से संबंधित दृष्टान्त**)
निर्दयी सेवक (मत्ती 18:23-35)

अध्याय 24 शान्त समय को साझा करना (भजन संहिता 71,73,78,82)
स्मरण करना (रोमियों के 5 प्रमुख पदों का पुनरावलोकन करें)
बाइबल का अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:12-23)

परिशिष्ट 4 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **सकेत फाटक** (मत्ती 7:13-14) + **बड़े भोज का दृष्टान्त** (लूका 14:15-24)

परिशिष्ट 5 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत** (मत्ती 11:16-19; लूका 7:31-35) **+ मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत** (मत्ती 16:1-4; लूका 12:54-56)**+ जाल का दृष्टांत** (मत्ती 13:47-50)

परिशिष्ट 6 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **खोई हुई भेड़ का दृष्टांत** (लूका 15:1-7) + **खोए हुए सिक्के का दृष्टांत** (लूका 15:8-10)

परिशिष्ट 7 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **दुष्टात्मा के वापस आने का दृष्टान्त** (मत्ती 12:43-45; लूका 11:24-26) **+ दो देनदारों का दृष्टांत** (लूका 7:40-50)

परिशिष्ट 8 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* मुद्दई (मत्ती 5:25-26)

वचन याद करने का तरीकाः समूह के अगुवों के लिए नियमावली 9 के परिशिष्ट1 में देखिये। शान्त समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने, मनन करने व वचनों को याद करने के लिए (नियमावली 1 परिशिष्टों में देखें)

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधना (बड़े समूह के साथ)
09.30-11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अध्ययन(छोटे समूह के साथ)
	अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अध्ययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
17.30-17:45	मनन(बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना (बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 13+14)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 4:1-17अ)

स्मरण करना (1पतरस 2:5+ प्रेरितों 2+42)

बाइबल पठन (1राजा 3,11,17,18; 2राजा 5,6,17,25)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: 1राजा 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 15+16)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (रोमियों की पत्री। रोमियों 4:1-17अ)

स्मरण करना (इफिसियों 4:12-13+प्रेरितों 20:28)

बाइबल पठन (2इतिहास 16,18,29,26,32,33,34,36)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में:2 इतिहास 20)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 17+18)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में दृष्टान्त**)

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:11)

स्मरण करना (इफिसियों 3:20-21श्रृंखला ञ का पुनरावलोकन)

बाइबल पठन (भजन संहिता 1,2,5,8,10,11,14,15)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: भजन संहिता 2)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 19+20)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट प्रेम से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 5:12-21)

स्मरण करना (रोमियों 4:5+ रोमियों 5:1-2अ)

बाइबल पठन (भजन संहिता 16,18,19,2223,24,25,27)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: भजन संहिता 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 21+22)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में प्रगट नम्रता से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:1-11)

स्मरण करना (रोमियों 5:3-4+ रोमियों 6:13)

बाइबल पठन (भजन संहिता 31,32,33,34,37,38,40,49)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: भजन संहिता 18)

बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6 (अध्याय 23+24)

प्रार्थना

शिक्षा देना (*परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **परमेश्वर के राज्य में क्षमा से संबंधित दृष्टान्त)**

बाइबल अध्ययन (*रोमियों की पत्री।* रोमियों 6:12-23)

स्मरण करना (रोमियों 6:23+ पुनरावलोकन)

बाइबल पठन (भजन संहिता 50,51,58,62,71,73,78,82)

परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो-दो के जोड़े में: भजन संहिता 51)

बांटना और प्रार्थना करना

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 4 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **सकरा फाटक** (मत्ती 7:13-14)+ **बड़े भोज का दृष्टान्त** (लूका 14:15-24)

परिशिष्ट 5 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत** (मत्ती 11:16-19; लूका 7:31-35) **+ मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत** (मत्ती 16:1-4; लूका 12:54-56) **+ जाल का दृष्टांत** (मत्ती 13:47-50)

परिशिष्ट 6 *परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना।* **खोई हुई भेड़ का दृष्टांत** (लूका 15:1-7) **+ खोए हुए सिक्के का दृष्टांत** (लूका 15:8-10)

परिशिष्ट 7 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **दुष्टात्मा के वापस आने का दृष्टान्त** (मत्ती 12:43-45; लूका 11:24-26) **+ दो देनदारों का दृष्टांत** (लूका 7:40-50)

परिशिष्ट 8 *परमेश्वर के राज्य में जीवन।* **मुद्दई** (मत्ती 5:25-26)

राज्य अध्याय 13

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* 1राजाओं 3,11,17 व 18

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (1राजाओं 3,11,17 व 18) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* (1) 1पतरस 2:5

स्मरण पदों की 10 श्रृंखला (ण) "मसीह कलीसिया" के बारे में है। पांच स्मरण पदों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

(1) कलीसिया का स्वरूप। 1पतरस 2:5।
(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियां। प्रेरितों के काम 2:42।
(3) कलीसिया की सेवकाईयां। इफिसियों 4:12-13।
(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28।
(5) कसीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21।

दो दो करके ***अवलोकन करें।***

(1) कलीसिया का स्वरूप। 1पतरस 2:5। तुम भी अप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

4	***शिक्षा देना*** *(85 मिनट)* *(यीशु के दृष्टांत)* विवाह का भोज

मत्ती 22:1-14 में दिया गया "विवाह के भोज का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से संबंधित शर्तों के बारे में।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें। **(नियमावली 9 में, परिशिष्ट 1 को देखें)।**

पढ़ें मत्ती 22:1-14।

---

1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

इस दृष्टान्त के बहुत से मायने हैं और इसके तीन भागों को एक ही दृष्टान्त में समावेशित तीन दृष्टान्तों के तौर पर देखा जा सकता है।

कहानी का पहला भाग राजा के आमन्त्रण को अस्वीकार किये जाने के बारे में बताता है। एक राजा ने अपने बेटे के विवाह पर एक भोज रखा। राजा ने अपने मेहमानों के लिए तीन बार आमन्त्रण भेजा। पहले उसने उन्हें विवाह के भोज में आमन्त्रित किया। फिर से, उसने मेहमानों को विवाह भोज में आने का आमन्त्रण दिया। और अन्त में, फिर उसने अपने लोगों को यह कह कर आमन्त्रण देने के लिए भेजा कि सब कुछ तैयार हो चुका है तुम विवाह भोज में जरूर से आना(पद 3-4)। यहूदियों में यह कोई असामान्य बात नहीं थी कि वे पहले लोगों को सामान्यतः आमन्त्रण भेजें और फिर बाद में आमंत्रित लोगों को पुनः विवाह भोज में आने के लिए बुलावा भेजें (ऐस्तेर 5:8; 6:14)। लोगों ने आमन्त्रण पर कोई ध्यान ही नहीं दिया, उन्होंने दासों के साथ दुर्व्यवहार किया वरन उन्हें मार दिया। उन दिनों में राजा के आमन्त्रण को अस्वीकार करना स्वीकार नहीं किया जाता था और इसके लिए उन्हें गम्भीर दण्ड भुगतना पड़ता था। इसीलिए यीशु ने कहा,"तब राजा को क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों का नाश किया, और उनके नगर को फूंक दिया। (पद 5-7)

कहानी का दूसरा भाग विवाह के घर को अतिथियों से भरने के बारे में बताता है। राजा ने मूल रूप से बुलाये गये अतिथियों को योग्य न जाना इसलिए उसने उन्हें दोबारा आमन्त्रण नहीं भेजा। लेकिन वह सुनिश्चित था कि वह अपने पुत्र का विवाह बहुत धूम धाम से करने का रहा है। इसलिए उसने अपने लोगों को चोराहों पर और सार्वजनिक जगहों पर भेजा और कहा कि जो कोई दिखे उसे आमंत्रित करो। ऐसा करने से विवाह का घर अतिथियों से भर गया। *राजा की योजना कभी असफल नहीं हो सकती और न होगी!*

कहानी का तीसरा भाग उस व्यक्ति के बारे में हैं जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहिने हुए थे। जब राजा अपने मेहमानों से मिलने के लिए आया, तो उसने ध्यान दिया कि वहां पर एक आदमी है

जिसने विवाह के वस्त्र नहीं पहिन रखे हैं। ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद है जिसके अन्तर्गत बाइबल के काल के बाद भी पूरब में यदि किसी को राजा के दरबार में हाजिर होने के लिए बुलाया जाता था तो उसको दरबार में आते वक्त पहिनने के लिए राजा की ओर से एक पोशाक भेजी जाती थी। इस दृष्टान्त में,राजा हर एक अतिथि से करता है कि वह विवाह में विवाह के वस्त्र पहिनकर आये। जिस व्यक्ति ने विवाह के वस्त्र नहीं पहिने थे उसके पास उसे न पहिनने का कोई बहाना नहीं था। तब राजा ने अपने दासों का आदेश दिया कि उसे उठाकर अंधियारे में फेंक दिया जाये जहां रोना और दांत पीसना होगा।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती अध्याय 21 व 22 में पायी जाती है।

यह परिस्थिति यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाये जाने से केवल एक सप्ताह पहले की है। यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया और भीड़ ने उसका स्वागत आने वाले मसीहा के रूप में किया। उसने आकर मन्दिर में कारोबार करने वाले सारे व्यापारियों को वहां से निकाल दिया, जिन्होंने सम्भवतः अराधनालय के याजकों को वहां दुकाने लगाने के लिए पैसे दिये होगें। मन्दिर अर्थात अराधनालय में, उसने अंधे को आंखें दीं और लंगड़े को चंगा किया और उसे देखकर बच्चे चिल्ला उठे कि आने वाला मसीहा यही है। केवल महायजक और व्यवस्थापकों ने ही यीशु मसीह का यरूशलेम में, मन्दिर में या अपने हृदय में स्वागत नहीं किया। फलहीन अंजीर के वृक्ष का शाप देने के बाद महायाजक और इस्राएल के प्राचीनों ने यीशु के अधिकार पर प्रश्न उठाये, उस समय यीशु ने तीन दृष्टान्त कहेः दो पुत्रों का दृष्टान्त, दुष्ट किसानों का दृष्टान्त और विवाह भोज का दृष्टान्त।

इससे साफ होता है कि जब विवाह भोज का दृष्टान्त कहा गया था तो *यीशु के प्रति लोगों का मिज़ाज खराब था और इस्राएल के धार्मिक और राजनैतिक अगुवे यीशु मसीह के विरुद्ध थे।* उन्होंने और उनके अनुयायियों ने यीशु को मसीह मानने से इनकार कर दिया था, उन्होंने उसके द्वारा की गयी चंगाईयों और आश्चर्यों को शैतान की सामर्थ्य द्वारा किये गये कार्य कहा, और उन्होंने उसे सुसमाचार प्रचार करने वाले एक शिक्षक या प्रचारक के रूप में भी स्वीकार नहीं किया। इसके अलावा उन्हें पहले ही उसे मारने की योजना बना ली थी!

(2) दृष्टान्त की कहानी मत्ती 22:2–13 में लिखी हुई है

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग मत्ती 22:14 में दिया गया है।

वहां पर लिखा है कि, "बुलाये तो बहुत गये हैं लेकिन चुने हुए थोड़े हैं।" हालांकि दूर दूर तक और

बहुत से लोगों में प्रचार किया गया है परन्तु ज्यादातर लोग इस दृष्टान्त में बताये गये व्यक्ति के समान होगेंः जिन्होंने सुना तो सही लेकिन विश्वास नहीं किया। अन्तिम निष्कर्ष यह निकलता है कि, *परमेश्वर के राज्य के वारिस बनना मनुष्य की उपलब्धि नहीं है, वरन् यह परमेश्वर के अनुग्रह से मिला हुआ वरदान या तोहफा है।* यूहन्ना 15:16 और 2थिस्लुनिकियों 2:13-14 के अनुसार, परमेश्वर ही खुद तक पहुंचने वाले सर्वश्रेष्ठ मार्ग के लिए लोगों को चुनते और बुलाते है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। क्योंकि अगर यीशु ने किसी बात का वर्णन नहीं किया है तो, इसका अर्थ है कि जरूरी या प्रासंगिक बात संदर्भ और बाइबल में लिखे किसी अन्य सामान अर्थ वाले अनुच्छेद पर निर्भर होगा।

स्वर्ग का राज्य (परमेश्वर का राज्य)। जब भी कभी यीशु कहते हैं, "परमेश्वर का राज्य *ऐसा* है..." (मत्ती 22:2) तो वह वहां पर सिखाना चाहते हैं किः

- पुराने नियम में *पुराने समय में* परमेश्वर के राज्य के दौरान क्या हुआ था।
- नये नियम के दौर में *वर्तमान काल में* परमेश्वर के राज्य में क्या हो रहा है।
- और *आने वाले समय में* निश्चय तौर पर क्या होने वाला है।

न्याय के अन्तिम दिन में, दृष्टान्त में दर्शायी सभी घटनाएं निश्चय तौर पर पूरी होगीं। इसका अर्थ है कि वर्तमान काल में जीवन व्यतीत करने वाले लोग भी इस दृष्टान्त के वर्णन में शामिल हैं। यीशु मसीह के हर एक दृष्टान्त में आपके और मेरे लिए आज एक संदेश है!!!

राजा। "राजा" (मत्ती 22:2) परमेश्वर को दर्शाता है, वह पहले लोगों को आमन्त्रित करता है और बाद में आमन्त्रित लोगों को बुलाता है। पद 14 के अनुप्रयोग के हिसाब से वह केवल आमन्त्रित करता या बुलाता नहीं है वरन वह चुनता भी है। यह एक प्रासंगिक विवरण है।

पुत्र। यह सुझाव बहुत प्रबल है "पुत्र"(मत्ती 22:2) यीशु मसीह का दर्शाता है, क्योंकि वह ही परमेश्वर का पुत्र है। फिर भी हम इसे पक्के तौर पर नहीं कह सकते, क्योंकि उसका जिक्र बाद में नहीं किया गया है और हर कोई चाहेगा कि यदि वह वास्तव में मसीह को प्रदर्शित करता है तो उसे अधिक मुख्य भूमिका अदा करनी चाहिए थी। क्योंकि इस बात का कोई वर्णन नहीं किया गया, और ही कभी बाद में उसका कोई जिक्र किया गया, इसलिए वह **इस कहानी में** प्रासंगिक पात्र नहीं हे। राजा और उसके बेटे के जिक्र किये जाने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक बहुत महत्वूपर्ण और राजकीय विवाह भोज था।

विवाह का भोज। विवाह का भोज (मत्ती 22:2) एक प्रासंगिक विवरण है। "विवाह का भोज" परमेश्वर के राज्य के अन्तिम स्तर अर्थात मसीह के दूसरे आगमन को दर्शाता है (देखें, प्रकाशितवाक्य 19:7)।

यह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर आनन्द और नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करने के आनन्द को प्रगट करता है, जहां पर हर एक जन के द्वारा मसीह में परमेश्वर के शासन को बहुत से स्वीकार किया जाएगा। इसमें ऐसा दर्शाया गया है कि एक विवाह के भोज का आयोजन एक बड़े सभागार में किया गया है और जहां पर मेहमान एक साथ उस मेज़ के चारों ओर इकट्ठा है जो पूरी तरह से भोजन वस्तुओं से भरी हुई है। मेजबान और मेहमान आपस में बैठकर खुशी से बातें कर रहे हैं।

"विवाह का भोज" मूल रूप से बहुवचन और एकवचन में बिना किसी विशेष मतलब के बोला गया है। (तुलना करें पद 2–4 की 8 पद के साथ)। बहुवचन, अर्थात "अनेक विवाह उत्सव", उस स्थिति में कहा गया होगा जब विवाह उत्सव बहुत दिनों तक चला होगा (न्यायियों 14:17) और उसके उत्सव की बहुत सी गतिविधियां शामिल रही होंगी।

पहले समूह को भेजे गये प्रथम तीन आमन्त्रण। पहले समूह को भेजे गये प्रथम तीन आमन्त्रण (मत्ती 22:3क, 3ख और 4) प्रासंगिक हैं। वे दर्शात हैं कि परमेश्वर सम्पूर्ण पुराने नियम से लेकर यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक इस्राएल राष्ट्र को आमन्त्रण भेज रहे थे। वे उस महान प्रेम और अपरम्पार धीरज को दर्शाते हैं जिसके द्वारा जिसके द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को अपने पास तक बुलाया था (रोमियों 10:21)। इसकी तुलना आप वर्तमान समय में यहूदी और उसके विपरीत अन्यजातियों (2पतरस 3:9) के प्रति उसके प्रेम और धीरज से करें।

- <u>पहला आमन्त्रण।</u> पहला आमन्त्रण प्रासंगिक है। राजा द्वारा भेजा गया मूल या असली आमन्त्रण बहुत दृढ़ता के साथ परमेश्वर द्वारा अब्राहम, इसहाक और याकूब तथा उनके वंशजों को बुलाये जाने को (उत्पत्ती 12:1–3; 26:24; 28:13–15) और किसी हद तक परमेश्वर द्वारा मूसा को बुलाये जाने को दर्शाता है(निर्गमन 3)। उनमें से किसी ने भी परमेश्वर की बुलाहट को अस्वीकार नहीं किया।
- <u>दूसरा आमन्त्रण।</u> दूसरा आमन्त्रण भी प्रासंगिक है। दृष्टान्त की कहानी का मुख्य सन्दर्भ पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के प्रति लोगों द्वारा किया गया बुरा व्यवहार और विरोध था। अतः राजा द्वारा भेजा गया दूसरा आमन्त्रण जो पहले समूह के "दासों" द्वारा भेजा गया था स्वाभाविक तौर पर दर्शाता है कि परमेश्वर इस्रासल से पुराने नियम में शमूएल, एलिय्याह, एलीशा, यिर्मयाह और दूसरे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बार बार बातें कर रहे हैं (मत्ती 21:34–35)।
- <u>तीसरा आमन्त्रण।</u> तीसरा आमन्त्रण भी प्रासंगिक है। राजा द्वारा भेजा गया तीसरा आमन्त्रण स्वाभाविक तौर पर दर्शाता है कि परमेश्वर ने इस्राएल से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, स्वयं यीशु और यीशु के चेलों के द्वारा बातचीत की (लूका 9:1–2; 10:1–2) और बाइ में स्तिफनुस (प्रेरितों के काम 6:8–7:60) और पौलुस (प्रेरितों 13:13–52) के द्वारा बातें की हैं।

ये तीनों की आमन्त्रण पुराने नियम में परमेश्वर के चुने हुए लोगों को दिये गये थे अर्थात *इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र* को दिये गये थे(व्यवस्थाविवरण 4:9–13,32–36)।

राजा के निमन्त्रण के प्रति लोगों का प्रतिउत्तर। यह प्रासंगिक है(मत्ती 22:5–7)। अगर देखा जाये तो, पुराने नियम के समय में इस्राएलियों ने और यीशु मसीह प्रथम आगमन के समय में यहूदियों ने

राजा के निमन्त्रण पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। दृष्टान्त के सन्दर्भ में देखें, तो यह यीशु द्वरा परमेश्वर के राज्य के आमन्त्रण के प्रति इस्राएलियों के उदासीन व्यवहार और अति बैर को प्रगट करता है। इस्राएल के लोग स्वर्गीय बातों, या उद्धार जैसे आत्मिक मुद्दों के कहीं ज्यादा ज़मीनी, व कृषि जैसी भौतिक व वाणिज्य के मामलों में ज्यादा रूची लेने वाले थे (लूका 14:18-20; 17: 26-30)। उन्होंने मसीह के आश्चर्यकर्मों को देखा और उसकी शिक्षाओं को सुना और फिर भी वे पश्चाताप करने और विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे (मत्ती 21:31-32)।

यह भी सच्चाई है कि उन्होंने राजा के दासों के साथ बुरा व्यवहार किया और उन्हें मार दिया। यह इस्राएलियों द्वारा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं से किये गये व्यवहार को दर्शाता है (मत्ती 21:35-36; 23:33-36)। यीशु मसीह के साथ में किया गया उदासीन व बैर, एक बहुत बड़ा कारण होगा जिसके लिए उन्हें मसीह के दूसरे आगमन पर दण्ड मिलेगा, चाहे वह यहूदियों द्वारा किया गया हो या गैर यहूदियों द्वारा।

अस्वीकार करने वालों की सज़ा। यह भी प्रासंगिक है (मत्ती 22:7)। राजा ने अन्त में इस तरह से कहा कि मूल रूप से बुलाये गये मेहमान इस योग्य नहीं ठहरे कि उन्हें उसके विवाह उत्सव में शामिल किया जाये। उन हत्यारों का नाश किया जाना और राजा के सिपाहियों द्वारा उनके शहरों को जला देना सत्य घटनाएं थीं। क्योंकि ये घटनाएं वास्तव में घट चुकी थीं, इसलिए यह आसानी से समझा जा सकता है कि यीशु ने *किन्हें* अपने मन में रखकर ये बातें कहीं। 70 ईसा.पश्चात तीतुस, जो एक रोमी सम्राट का पुत्र था (वैस्पेशियन्स, 69-79ई.प), ने यरूशेलम पर अधिकार कर लिया, उसने वहां के मन्दिर और ज्यादातर यरूशलेम को नाश कर दिया, और दस लाख से ज्यादा यहूदियों को मार डाला, जिससे कि इस्राएल राष्ट्र एक राजनैतिक इकाई का तौर पर खत्म हो जाये (जोसेफस : "हिस्ट्री ऑफ द ज्यूस वार, किताब 4-6)

फिर भी, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान पहले ही परमेश्वर के चुने हुए विशेष लोगों के रूप में इस्राएल का अन्त था (मत्ती 8:11-12; 21:41-43; 27:51;मत्ती 10:5-6 की तुलना मत्ती 28:18-20 से करें)। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि परमेश्वर न सारे यहूदियों को अस्वीकार कर दिया है (रोमियों 11:1-10)। जो लोग उस विवाह भोज में आये उनमें से बहुत से यहूदी थे!

दूसरे समूह के लोगों को दिया गया अन्तिम निमन्त्रण। यह प्रासंगिक है (मत्ती 22:8-10 क)। यह परमेश्वर के उस आमन्त्रण को प्रगट करता है जो हर उस व्यक्ति के लिए है जो उसकी बात को सुनता है। यह निमन्त्रण केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक मान्य रहेगा (2 कुरिन्थियों 6:2)। यह प्रगट करता है कि परमेश्वर अपने लक्ष्य तक पहुचने के लिए धीरज धरते हैं: खास तौर पर, बारात घर को भरने के लिए!

यह दूसरे समूह के लोग चुंगी लेने वालों और पापियों (मत्ती 21:31-32) और अन्यजातियों (मत्ती 8:11) को और उन्हें दर्शाता है जो इस्राएल के धार्मिक व राजनैतिक अगुवों की दृष्टि में तुच्छ जाने जाते हैं। क्योंकि यीशु के प्रथम आगमन का, मन फिराव और पापों से क्षमा का प्रचार परमेश्वर के दासों द्वारा संसार की सभी जातियों में किया गया है (मत्ती 24:14;28: 18-20)। राजा तब तक लोगों को बुलाता रहेगा जब तक कि वह विवाह गृह पूरी तरह से भर न जाएं। राजा ने ठान लिया है और उसकी योजना न असफल हो सकती है और न होगी। यह उल्लेख दर्शाता है कि परमेश्वर ने

अपने उद्देश्य और योजना को निर्धारित कर लिया है जिसे हम नये नियम में पाते भी हैं, वह कभी असफल नहीं हो सकती है और न असफल होगी। (यशायाह 14:24,27)!

विवाह के घर को अच्छी और बुरी चीजें भरना। यह प्रासंगिक है (मत्ती 22:10ख)। क्योंकि यीशु के प्रथम आगमन का, उद्धार का सुसमाचार (और मसीह के राजअधिकार) का प्रचार परमेश्वर के दासों द्वारा बिना वर्ण जाति, राष्ट्रीयता, लिंग और भौतिक दशा में भेदभाव किये संसार की सभी जातियों में किया गया है। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से ही संसार भर में कोई भी राष्ट्र अब परमेश्वर के लिए अनोखा नहीं है (यूहन्ना 1:10-18; रोमियों 10: 12-13; 1कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28 और कुलुस्सियों 3:11)! बहुत से यहूदियों और बहुत से गैर मसीहियों को परमेश्वर के राज्य में लाया जा चुका है।

लेकिन उनमें से सभी लोग आत्मा में नया जनम पाये हुए विश्वासी नहीं हैं।

- जैसा कि गेहूं के बीच में जंगली पौधों का दृष्टान्त भी कहता है (मत्ती 13:24-30)
- मछली के जाल का दृष्टान्त (मत्ती 13:47-50)
- विवाह के घर का दृष्टान्त (मत्ती 22:1-14) हमें बताता है कि परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार लगातार अच्छे और बुरे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मानवीय स्तर के अनुसार लोग "अच्छे" या "बुरे" हो सकते हैं। दुनिया की निगाहों में वे आदरणीय, अति प्रचलित या बहुत धार्मिक हो सकते हैं, लेकिन उनमें चोर, वैश्याएं, चुंगी लेने वाले और हत्यारे भी हो सकते हैं। (मत्ती 21:31)।

या *परमेश्वर के स्तर पर* लोग ''भले'' या ''बुरे'' हो सकते हैं, जो सकता है कि उनके पास विवाह के कपड़े हों या न हों। सच्चे और नामधारी दोनों ही प्रकार के मसीही परमेश्वर के राज्य में जाने का दावा करते हैं (मत्ती 7:21-23) और वे मसीह के दूसरे आगमन तक वर्तमान समय में (कलीसिया में) एक साथ परमेश्वर के राज्य में जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन इस काल के अन्त में, अर्थात अन्तिम न्याय के दिन जब कटनी का दिन होगा, यीशु मसीह और उसके स्वर्गदूत अविश्वासियों(अधर्मियों, नामधारी मसीहियों को) सच्चे विश्वासियों से (धर्मियों से) अलग करेगें (मत्ती 13:41; 25:32)!

विवाह के कपड़ों का पहनना। यह भी प्रासंगिक हैं (मत्ती 22:11-13)। हालांकि दृष्टान्त में मेहमानों को विवाह में आने के लिए विवाह के वस्त्रों को जिक्र नहीं किया गया है, लेकिन इस बात के बहुत से प्रमाण है कि उन दिनों में ऐसा ही किया जाता था। गरीबों में से बुलाये गये लोगों को पास इस प्रकार की पोशाक नहीं होती थी और वे किसी तरह से उसे ले भी नहीं सकते थे। लेकिन राजा को अपेक्षा थी कि हर एक जन राजकीय विवाह में विवाह के वस्त्र पहिनकर ही आये। बिना विवाह के वस्त्र पहिनकर आया व्यक्ति किसी तरह से सफाई पेश नहीं कर पाया कि उसने विवाह के वस्त्र क्योंकि नहीं पहिने थे।

बाइबल में कुछ महत्वपूर्ण गद्यांश हैं जिसमें कपड़ों को प्रतिकात्मक रूप में पेश किया गया है, उदाहरण के तौर पर, वह "मसीह और उसकी धार्मिकता और पवित्रता" (रोमियों 13:14; इफिसियों 4:24)। अन्त में स्वयं राजा ने बिना विवाह के कपड़े पहनकर आये हुए व्यक्ति को गम्भीर दण्ड की आज्ञा दी।

इसलिए इस दृष्टान्त में कपड़े पहिनने का अपना एक महत्व है। यह *उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की एक शर्त है।*

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है ?

ध्यान दें।

मत्ती 22:1-14 में दिया गया विवाह के घर का दृष्टान्त हमें " परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त " के बारे में बताता है।

उस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए लोगों को परमेश्वर के निमन्त्रण का उत्तर देना चाहिए। और वे पमरेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करेगें, न कि अपनी शर्तो पर।" हर एक जन को परमेश्वर के अनुग्रहकारी निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि जब दूसरे उसकी महिमा में प्रवेश कर रहे होंगे, वह अपना स्थान खो देगा।

लेकिन किसी भी जन को यह याद रखना चाहिए कि इस संसार में किसी कलीसिया में सदस्यता लेने का अर्थ नहीं है कि उसकी अनन्त राज्य में सदस्यता पक्की हो गयी है, अर्थात उसके उद्धार की पुष्टि नहीं हो गयी है। उद्धार के लिए वास्तव में यीशु मसीह को उसकी सिद्ध धार्मिकता और पवित्रता के साथ धारण करने की आवश्यकता है। केवल उसी से हमें उद्धार और नवीनीकरण की पुष्टि मिलती है।

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तो पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य की एक बुनियादी विशेषता है। परमेश्वर के सच्चे लोगों ने "एक अच्छी हस्ती", "अच्छे काम" या "अपने मन-पसन्द धर्म" रूपी अपनी शर्तो को त्यागकर, परमेश्वर की शर्तो पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया है और उसमें अपना जीवन व्यतीत कर रहें हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) तीन दृष्टान्तों की तुलनाः

दो पुत्र, दुष्ट दास और विवाह का घर।

पढ़ें मत्ती 21:28-32; मत्ती 21:33-44; मत्ती 22:1-14।

मत्ती 21 और 22 में दिये गये तीन दृष्टान्तों को चरमोत्कर्ष क्रम में रखा गया है।

मत्ती 21:28-32 में दिया गया "दो पुत्रों का दृष्टान्त" यह सिखाता है कि जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते और यूहन्ना बपतिस्मा जैसे उसके दूतों अस्वीकार कर देते हैं, तो अपनी पश्चाताप हीन दशा में वे कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगें।

मत्ती 21:33-44 में दिया गया "दुष्ट दास" का दृष्टान्त सिखाता है कि जिन लोगों ने परमेश्वर के नबियों के साथ दुर्व्यवहार किया और उसके बेटे को भी मार दिया, उनका अन्त बहुत भयानक होगा और *उनका सारा अवसर और सौभाग्य दूसरे लोगों को दे दिया जाएगा।*

"विवाह के घर" का दृष्टान्त सिखाता है कि, जो लोग परमेश्वर के निमन्त्रण को अस्वीकार करते हैं, वे नाश किये जाएंगे और *जिन यहूदियों और यूनानियों को तुच्छ समझा गया वे परमेश्वर के राज्य (कलीसिया) में प्रवेश करेगें।* लेकिन, चाहे यहूदी हो या अन्यजातियों में से एक, प्रभु हर एक जन से यह चाहते हैं कि, वे विवाह के वस्त्र जरूर पहिने हुए हों।

(2) गैर यहूदी देशों के साथ इस्राएल देश के सम्बन्ध के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण।

पढ़ें मत्ती 8:11-12; 21:41-44। तुलना करें मत्ती 10:5-6 की 24:14 और 28:18-20 के साथ। इसके अलावा पढ़ें यूहन्ना 10:14-16; प्रेरितों. 10:24-35,42-43; रोमियों 8:17; 2कुरिन्थियों 1:20; गलातियों 3:8-9; 3:23 से 4:7 तक; इफिसियों 3:4-6; कुलुस्सियों 3:9-12; 1पतरस 2:4-10; प्रकाशितवाक्य 5:9-10।

पुराने नियम के दौरान, इस्राएल के देश को दुनिया के सारे देशों की तुलना में *अधिक विशेषाधिकार प्रदान किये गये* थे (रोमियों 9:4-5; इफिसियों 2:11-12)। फिर भी, इस्राएल के लोग व्यवस्था से बंधा हुआ जीवन बिताते रहे। इस्राएलियों की दशा मसीह के प्रथम आगमन तक "एक नाबालिक की सी थी", जो अपने अभिभावकों और अपने न्यासियों के अधीन रहता है (आनुष्ठानिक नियमों के)(गलातियों 3:18-4:7)।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान ने "बैर ही दीवार" (आनुष्ठानिक नियम) को नाश कर दिया, जिससे इस्राएल दुनिया के बाकि देशों से अलग हो गया(इफिसियों 2:13-22; कुलुस्सियों 2:13-14)।

मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन तक, अन्यजातियों में से आने वाले मसीही लोग इस्राएल लोगों के साथ *बराबरी के हकदार अर्थात वारिस* `(इफिसियों 3:2-6)। वे भी एकमात्र और समान मसीह की देह अर्थात कलीसिया के अंग हैं। वे बराबरी से उन सभी प्रतिज्ञाओं के सहभागी हैं जो पुरानी वाचा के लोगों साथ और नयी वाचा के लोगों के साथ परमेश्वर ने की थी (2कुरिन्थियों 1:20)। वर्तमान में केवल एक ही 'राष्ट्र' का परमेश्वर के साथ विशेष रिश्ता है, वह राष्ट्र यीशु मसीह में नया जन्म पाये हुए विश्वासियों से मिलकर बना है, चाहे वे मूल रूप में यहूदियों में से हैं या अन्यजातियों में से (1कुरिन्थियों 12:13; 1पतरस 2:4-10)। "परमेश्वर द्वारा चुने हुए" एक मात्र लोगों में पुराने नियम के समय के विश्वासी और नये नियम के दौर के विश्वासी शामिल हैं,`जिसमें सभी जातियों, नागरिकता, लिंग और समाज के लोग आते हैं!

परमेश्वर के पास में उद्धार की दो योजनाएं नहीं हैंः एक यहूदियों के लिए और दूसरी गैर यहूदियों

के लिए। लोग चाहे पुराने नियम के हों या नये नियम के, उनका उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही हुआ है (उत्पत्ति 15:6;यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12 ; इफिसियों 2:8-9)।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की बातें "पर्दे" में छुपी रहती हैं और उन्हें केवल नये नियम के प्रकाशन के प्रकाश में ही पूरी तरह समझा जा सकता है। और पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियां केवल उन्हीं लोगों के लिए पूरी होती हैं जो यीशु की ओर फिरते हैं(2कुरिन्थियों 3:7-16)। पुराने नियम के वचन नये नियम की "वास्तविकता" की "परछाईं" है (कुलुस्सियों 2:1; इब्रानियों 8:5; 10:1)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को उस "भेद" के बारे में पता नहीं था, जो केवल नये नियम के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया था, कि, सुसमाचार के प्रचार किये जाने से नये नियम के दौरान सारी धरती पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोग पुराने नियम के समय में इस्राएल में मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों के सोथ *बराबरी के वारिस होगें* (रोमियों 16:25-26; इफिसियों 3:4-6; 1पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:19)! इसलिए, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को, बिना नये नियम की मदद के नहीं समझा जा सकता।

(3) विवाह के वस्त्र पहिनने का अर्थ।

पढ़ें 2 राजा 10:18-22; प्रकाशितवाक्य 19:7-9। हमारे पास में इस बात के प्रमाण हैं कि बाइबल के समय में राजकीय विवाह में जाने के लिए विवाह के वस्त्रों को पहिनना बहुत जरूरी है। राजा येहू ने बाल के सेवकों के लिए एक बड़ी जेवनार का इन्तेज़ाम किया और उसने राजकीय वस्त्रों के प्रबन्धक से कहा कि वह सारे दासों के पहनने के लिए "वस्त्र" ले आये। इस तरह से उन्हें मृत्यु दण्ड देने से पहिले बहुत आसानी से पहिचाना सकता था।

और मसीह के दूसरे आगमन के बाद मेम्ने के विवाह में भी, "उस दुल्हन" ने जो सभी सच्चे मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती है, अपने आपको पूरी तरह तैयार किया जिसे पहिनने के लिए अति उत्तम मखमल के वस्त्र दिये गये थे।

विवाह में आने वाले ज्यादातर लोग समाज के निचले तपके से आये थे (लूका 14:21-23) और उनके पास में शाही पोशाक नहीं हुआ करती थी। फिर भी राजा को अपेक्षा थी कि हर एक मेहमान शाही वस्त्र पहिनकर विवाह में आये। इसलिए, जिस व्यक्ति ने विवाह में विवाह का वस्त्र नहीं पहिना था *उसने विवाह के वस्त्र पहिनने से इनकार कर दिया था।* उस व्यक्ति के पास में कोई बहाना नहीं बचा हुआ था और उसे कठिन दण्ड का सामना करना पड़ा!

पढ़ें यशायाह 64:6; कुलुस्सियों 3:5-14। विवाह के वस्त्र का अभिप्राय, उद्धार के लिए आवश्यक हमारे भले काम या नैतिक भलाईयों से नहीं है, क्योंकि "हमारी मानवीय धार्मिकता और भले काम फटे और मैले चीथड़ों को समान है (गलातियों 3:16,21)। भला काम तो केवल एक ही है अर्थात यीशु मसीह पर उसके द्वारा प्रदान की गयी धार्मिकता पर विश्वास करना(यूहन्ना 6:29)।

पढ़ें अय्यूब 29:14; यशायाह 11:5; 61:10 रोमियों 13:14; गलातियों 3:27; इफिसियों 4:24; प्रकाशितवाक्य 19:7-8। विवाह के वस्त्र पहिने हुए लोग निम्न बातों के प्रतीक हैं:

- "जिन लोगों ने मेम्ने अर्थात यीशु मसीह के लहू से अपने वस्त्रों को धोकर अपने आप को श्वेत बना लिया है (प्रकाशितवाक्य 7:14)

- जिन्हें नये साचें में डाला गया है, जिन्हें परमेश्वर की सच्ची धार्मिकता और पवित्रता की समानता में रचा गया है।(इफिसियों 4:24)
- "जिन्होंने मसीह को पहिन लिया है"(रोमियों 13:14; गलातियों 3:27)। जिन्होंने मसीह में धार्मिकता, पवित्रता और उद्धार को स्वीकार कर लिया है (1कुरिन्थियों 1:30; 2कुरिन्थियों 5:21)।

"विवाह के वस्त्र" मसीह की धार्मिकता को प्रस्तुत करते हैं:

- जिसे मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा *हासिल* किया
- जिसे परमेश्वर ने विश्वासियों में कानूनी तौर पर *जोड़ दिया* है
- जिसे परमेश्वर ने पवित्रता के क्षेत्र में *प्रदान किया* है
- जिससे कि परमेश्वर विश्वासियों को अपनी नज़रों में सिद्ध धर्मी के रूप में *देख सके* और उनके साथ *व्यवहार कर* सके।
- ताकि विश्वासी लोग परमेश्वर की नज़रों में धार्मिकता का *जीवन व्यतीत कर सकें।*

विवाव का वस्त्र विश्वास के द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहराये जाने को दिखाता है। केवल इसी के द्वारा कोई जन पवित्र और धर्मी जीवन जी सकता है।?

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या *समझाने* या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?
ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त केवल राजा पर निर्भर करती है।

"राजा" परमेश्वर को दर्शाता है जो लोगों को धीरज के साथ लगातार परमेश्वर के राज्य में आमन्त्रित करता है। लोगों को उसका आमन्त्रण स्वीकार करके राजा की शर्तों पर प्रवेश करना चाहिए अन्यथा उनका नाश हो जाएगा।

अन्य धर्म और उनके भविष्यद्वक्ता लोगों के सामने कई ऐसी शर्तों को रखते है जिसके द्वारा वे धार्मिकता को प्राप्त कर सकते हैं। जबकि बाइबल का परमेश्वर केवल इतना चाहता है कि एक विश्वोसी यीशु मसीह की सिद्ध धार्मिकता को धारण कर ले, जो परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वासियों को प्रदान किया जाता है। उद्धार के लिए इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है (यूहन्ना14:6; प्रेरितों 4:12)!

(2) यह दृष्टान्त अनेकों अभिप्रायों से भरा हुआ है और इसके तीन भागों को तीन अलग दृष्टान्तों के रूप में देखा जा सकता है, और हर एक दृष्टान्त का अपना ही अलग अर्थ है:

- कहानी का पहला भाग हमें राजा के निमन्त्रण को अस्वीकार किये जाने के बारे में बताता है। इसका अर्थ है कि अत्यधिक धीरजवन्त हैं खास तौर पर संसार में ईश्वररहित और दुष्ट लोगों के साथ। लेकिन परमेश्वर के धीरज की भी एक सीमा है (मत्ती 8:11-12; 21:41-44)।"मेरा आत्मा सदा तक मनुष्य से वाद विवाद करता नहीं रहेगा।" (उत्पत्ति 6:3)।

- कहानी का दूसरा भाग विवाह के घर के विषय में है। इस कहानी का अर्थ यह है कि परमेश्वर की योजना और उसके उद्देश्य कभी असफल न हो सकते हैं और न होगें (यशायाह 14:24,27)। यदि एक राष्ट्र एक उपकरण के रूप में परमेश्वर की योजनाओं को पूरा करने में असफल हो गये, तो परमेश्वर सारी दुनिया के मसीहियों को उसकी योजना को पूरा करने के लिए इस्तेमाल करेगें। (मत्ती 28:19; लूका 24:44-47; 1 पतरस 2:9-10)
- कहानी का तीसरा भाग विवाह के वस्त्र न पहनने वाले व्यक्ति के बारे में बताता है। इस कहानी का अर्थ यह है कि लोग परमेश्वर के राज्य में केवल उसी की शर्तों पर प्रवेश कर सकते हैं अपनी शर्तों पर नहीं। यीशु मसीह मार्ग सत्य और जीवन है और बिना उसके द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता। दृष्टान्त का यह विवाह के वस्त्र को ग्रहण करने और उसे धारण करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में बताता है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)***
	अगले अगले अध्याय के लिए	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2राजाओं 5,6,17 व 25** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियांः प्रेरितों 2:42** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 4:1-16।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 14

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **2राजाओं 5,6,17 व 25**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2राजाओं 5,6,17 व 25) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(2) प्रेरितों. 2:42**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें:***

(2) कलीसिया में पायी जाने वाली गतिविधियां। प्रेरितों 2:42। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों की पत्री)* **रोमियों 4:1-17अ**

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए **रोमियों 4:1-17** का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों अध्याय 3 में, पौलुस कहता है कि उद्धार पाने के लिए विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। रोमियों 4 में वह साबित करता है कि बाइबल में हमेशा से ही विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना ही उद्धार पाने का एकमात्र तरीका रहा है, अतः यह ही पुराने नियम में भी उद्धार पाने का तरीका था।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 4:1-17अ तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

4:1-8

खोज 1. **पौलुस द्वारा दिये गये दो तक इस बात को प्रमाणित करते हैं कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना बाइबल में उद्धार पाने का एकमात्र तरीका रहा है।**

वह पुराने नियम के दो वचनों को आधार पर अपने तक प्रस्तुत करता है।

(1) उसका पहला तर्क रोमियों 4:1-5 से हैं।

अब्राहम का विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया।

पौलुस पूछता है कि "हम क्या कहें हमारे शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ? पौलुस ढ़ोग करते हुए एक बहस करता है, जिसका वह तुरन्त ही खण्डन कर देता है। वह कहता है कि, यदि अब्राहम व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहरा था,जैसे कि बहुत से यहूदी, मसीही और मुसलमान बहस करते हैं, तो उसके पास लोगों के सामने घमण्ड करने के लिए कुछ होता, लेकिन परमेश्वर के निकट नहीं। इस तरह से पौलुस कहता है कि *अब्राहम कामों (खतना) के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया गया था।*

वह बाइबल का एक हवाला देते हुए साबित करता है कि अब्राहम अपने व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहराया गया था। वह उत्पत्ति का हवाला देता है। अब्राहम ने परमेश्वर से बहुत सी प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया था। हालांकि बहुत लम्बे समय तक वे प्रतिज्ञाएं पूरी नहीं हुई थीं,लेकिन अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उससे जो कुछ प्रतिज्ञा की हैं वह सत्य है, और वह अपने समय में उसे पूरा करेगा। परमेश्वर ने उसके इसी विश्वास को धार्मिकता गिना। इस तरह से अब्राहम व्यवस्था द्वारा ठहराये गये कामों (खतना) को करके नहीं वरन विश्वास(परमेश्वर पर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करके) के द्वारा धर्मी ठहरा था। "धर्मी जन के रूप में ठहराना,व्याख्या करना या मानना" "धर्मी गिने जाने से" बेहतर अनुवाद हो सकता है, क्योंकि विश्वास को प्रतिफल नहीं दिया गया है।

2 और 3 पद में "कामों द्वारा धर्मी ठहरना" और "विश्वास द्वारा धर्मी ठहरने" के बीच में विरोध है। यह विरोध केवल "व्यवस्था[1] के अनुसार (धार्मिक काम)काम करने वाले जन" और "व्यवस्था के अनुसार (धार्मिक काम) न करने वाले लोगों" के बीच में ही नहीं वरन "(यहूदी, मसीही, या मुस्लिम) व्यवस्था[2] के अनुसार काम करने" और "*सिर्फ विश्वास* करने वाले जन (जो बाइबल के परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञाओं पर) के बीच में है। अब्राहम का उद्धार व्यवस्था के कामों (खतना) के प्रतिफल के रूप

[1] यहूदियों की तोरह, मसीहियों की "व्यवस्था" और मुसलमानों की "शरिया"।

[2] अन्यजातियां या "गैर विश्वासी लोग" (ऐसे लोग जिनका कोई धर्म नहीं है)।

में नहीं परन्तु बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास (बाइबल में किये गयी उसकी प्रतिज्ञाओं) के द्वारा हुआ था। "विश्वास" कोई मेहनताना या प्रतिफल नहीं है। विश्वासियों को "धार्मिकता (उद्धार) अनुग्रह के द्वारा प्राप्त हुआ है (इफिसियों 2:8-9)।

पद 4 व 5 में "मज़दूरी" (व्यवस्था के अनुसार किसी जन द्वारा किये गये काम का हक) और "अनुग्रह" (विश्वास करने वाले जन के अयोग्य होने के वाबजूद मिले उपहार) के बीच विरोधाभास है। परमेश्वर ने अब्राहम को परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करने के लिए अपने अनुग्रह से धर्मी ठहराया। इसलिए, विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना और अनुग्रह द्वारा धर्मी ठहराया जान समान ही है (इसका अर्थ है कि विश्वासी जन, अयोग्य होने पर भी "धर्मी ठहराया गया")!

इसके अलावा, अब्राहम किसी अन्य ईश्वर या किसी अन्य धर्म में "सामान्य विश्वास करने के द्वारा"(या किसी अन्य धर्म के ईश्वर के द्वारा दी गयी पुस्तक पर किये गये विश्वास पर) धर्मी नहीं ठहराया गया था, लेकिन वह उस परमेश्वर में होकर एक विशेष प्रकार के विश्वास द्वारा धर्मी ठहारया गया था जिसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया है और जो यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ईश्वररहित और अधर्मी को भी धर्मी ठहराता है।

(2) उसका दूसरा तर्क रोमियों 4:6-8 से लिया गया है।
दाऊद के बुरे काम उसके विरूद्ध अधार्मिकता नहीं गिने गये।

पौलुस ने भजन संहिता 32:1-2 को उद्धत किया। दाऊद कहता है कि, क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा (बाइबल में अपने आप को प्रगट करने वाला परमेश्वर) लेखा न ले। जिसे दाऊद "अधर्म का लेखा नहीं लेना" कहता है", उसे ही पौलुस सकारात्मक रूप में "धर्मी ठहराये जाने के रूप में" सम्बोधित करता है। इब्री कविताओं की तुलना करने पर,"पापों का क्षमा (ढांपा जाना) किया जाना" और "धर्मी ठहराया जाना"(पापियों का) एक ही बात है और दोनों की बातों का अर्थ उनकी अधार्मिकता का न गिना जाना है।" न्याय के दिन में इन लोगों के पापों का लेखा नहीं लिया जाएगा। यशायाह कहता है," तमेरे ब पपें को तू ने अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।"(यशायाह 38:17) मीका कहता है कि," वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा। और परमेश्वर कहते हैं कि, "मैं उन के अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उन के पापों को फिर स्मरण न करूंगा।

हालांकि "पापों की क्षमा" धर्मी ठहराये जाने का ही एक भाग है, बाइबल में "धर्मी ठहराया जाने" में बहुत कुछ शामिल है। इसमें निम्न बातें शामिल हैं।

- अपराधों (पापों) की क्षमा
- यह इस बात की घोषणा है कि विश्वास परमेश्वर की नज़रों में 100 प्रतिशत धर्मी है।
- परमेश्वर के राज्य में ग्रहण किया जाना (लोग, कलीसिया, परमेश्वर का राज्य)
- और परमेश्वर के प्रेम का अनुभव (बाइबल के परमेश्वर द्वारा चुना हुए व्यक्ति होना)

लेकिन क्योंकि यह अनुच्छेद "अपराधों अर्थात पापों को न गिने जाने की बातें करता है" इसलिए यह इस बात का प्रमाण है कि पुराने नियम में विश्वासी लोग अपने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाते थे, व्यवस्था के कामों के अनुसार नहीं। यह गद्यांश एक व्यक्ति को धन्य नहीं कहता है क्योंकि वह भले या धर्म के काम कर रहा है, लेकिन इसके विपरीत उसके भले काम और धार्मिक काम उसके विरूद्ध गिने

नहीं गये हैं, और न ही उसे इसके लिए कोई सज़ा मिली है, वरन उसे पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है।

क्योंकि यीशु मसीह ने उसके लिए छुड़ोती का दाम चुका दिया है (मरकुस 10:45; 1पतरस 1:18-19) इसलिए उस पर कोई दोष नहीं लगाया जाएगा, और न ही उसे न्याय के दिन दण्डित किया जाएगा! बाइबल जिस चीज को वास्तव में सच्ची आशीष मानती है वह कुछ नियमों का पालन करने के बाद प्राप्त किया जाने वाला प्रतिफल नहीं है[3], वरन उस आशीष को हम पर उण्डेलना है जिसके लायक हम वास्तव में नहीं थे।

4:9-13

खोज 2. **पौलुस के दो और तर्क हैं जो यह साबित करते हैं कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना ही बाइबल के अनुसार उद्धार पाने का रास्ता रहा है।**

उसका तर्क अब्राहम के पहले विश्वास और उसके बहुत बाद में किये गये खतने के बीच विरोधाभास के बारे में बताता है। और वह व्यवस्था के कामों द्वारा धर्मी ठहराये जाने का विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये जाने के द्वारा विरोध करता है।

(1) उसका तीसरा तर्क रोमियों 4:9-12 से हैं।

अब्राहम बाद में किये गये उसके खतने के द्वारा धर्मी नहीं ठहरा था, वरन वह अपने प्रारम्भिक विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया था।

पौलुस प्रश्न पूछता है, "विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना क्या केवल खतना किये हुए यहूदियों[4] के लिए ही आशीष है या यह अन्यजातियों अर्थात खतनारहित लोगों के लिए भी आशीष है? वह यह सवाल पूछता है कि क्या अब्राहम अपने खतने के पहले धर्मी ठहराया गया था या खतना कराने के बाद धर्मी ठहराया गया था। सच्चाई तो यह है कि अब्राहम ने अपने खतने के करीब 14 साल पहले परमेश्वर पर विश्वास किया (उत्पत्ति 17:1-14) और परमेश्वर ने उसे धर्मी ठहराया (उत्पत्ति 15:4-6) यह इस बात को साबित करता है कि खतना कराना(अर्थात व्यवस्था का पालन करना) न तो धर्मी ठहराये जाने की जरूरी शर्त थी और न यह धर्मी ठहराये जाने का तरीका था। खतने से अब्राहम के विश्वास करने की दशा पर और न ही विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने पर कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि खतना अभी भी परमेश्वर के लोगों में नहीं पाया जाता है। लेकिन जब 14 वर्षों के बाद खतना की विधी को ठहराया गया, तो उसका सम्बन्ध विश्वास से था। खतना को धर्मनिरपेक्ष अनुष्ठान, न ही यह किसी जाति का चिन्ह था, परन्तु इसकी अपना धार्मिक अभिप्राय और मूल्य था। खतना को पुराने नियम में परमेश्वर के द्वारा "अनुग्रह की वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप में" बनाया गया था, जो वाचा उसने अब्राहम और उसके वंशजों के साथ में बांधी थी (उत्पत्ति 17:11)। खतना विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का चिन्ह और उसकी मुहर था। "एक चिन्ह के रूप में" खतने ने यह प्रगट किया कि धर्मी ठहराये जाने वाला विश्वास पहले भी मौजूद था और उस समय में मौजूद था (अब्राहम के विश्वास ने उसे धर्मी ठहराया)। "एक मुहर के रूप में" खतना इस बात का जामिन ठहरा था कि जिस विश्वास के द्वार वह धर्मी ठहरा था वह सच्चा था और परमेश्वर ने उसे स्वीकार किया था। इसलिए, खतना (अब्राहम और घर के सभी

---

[3] धार्मिक नियमों को वर्णन यहूदियों के "आनुष्ठानिक नियमों" और मुसलमानों के "दीन" में किया गया है।

[4] खतना वाले मुसलमान

पुरूष वर्ग का खतना) अनुग्रह की वाचा के चिन्ह और मुहर के रूप मौजूद होने के साथ साथ इस बात चिन्ह और मुहर भी था कि वहां पर विश्वास मौजूद था और उसी विश्वास के प्रभु के द्वारा विश्वास माना गया। बिना इस विश्वास के अनुग्रह की वाचा और मनुष्यों द्वारा किया गया खतना पूरी तरह निरर्थक और बेकार थे।

अब्राहम ने परमेश्वर से खतने को एक चिन्ह और एक मुहर के रूप में इसलिए प्राप्त किया कि वह न केवल सभी खतनारहित विश्वासियों का ही नहीं (अन्यजातियों में से बने विश्वासियों का) वरन वह सभी खतना कराये विश्वासियों (अर्थात यहूदियों में से विश्वासियों) में का भी पिता बन सके। अन्यजातियों में खतनारहित विश्वासियों की बात करें तो, अब्राहम का खतना कराने से कई वर्षों पहले धर्मी ठहराया जाना इस बात को साबित करता है, यीशु मसीह में विश्वास करने वाले खतनारहित विश्वासी(अन्यजातियों में से बने मसीही) भी धर्मी ठहराये जाएगें। अगर हम खतना कराने वाले विश्वासियों की बात करें तो, उनका खतना कराया जाना नहीं, वरन यह तथ्य कि उन्होंने अब्राहम के विश्वास के पदचिन्हों का अनुसरण किया, इस बात को सुनिश्चित करता है कि यीशु मसीह में खतना कराये हुए विश्वासी भी (अर्थात यहूदियों में विश्वास करने वाले) धर्मी ठहरेगें (रोमियों 4:12)! लोगों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया उनके खतना के कारण नहीं(अर्थात व्यवस्था के कामों को कारण नहीं)।

(1) उसका चौथा तर्क रोमियों 4:13 से है।

क्योंकि परमेश्वर की ओर से यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा, न अब्राहम को न उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गयी थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के द्वारा मिली।

यहां पर दी गयी व्यवस्था, मूसा की वह व्यवस्था नहीं थी जो उसे सिनै पर्वत पर 1447 ई.पू दी गयी थी। अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा को 2092 ई.पू प्राप्त कर लिया था। जब वह 75वर्ष का बूढ़ा था(उत्पत्ति 12:4; उत्पत्ति 15:4-19) अर्थात याकूब के मिस्र छोड़ने से 215 वर्ष पहले (1877 ई.पू) और उससे भी 430 वर्ष पहले सिनै पर एक और व्यवस्था दी गयी थी (गलातियों 3:17)। इस तरह से वाचा बांधने के 645 वर्ष के बाद में व्यवस्था दी गयी थी। मूसा को व्यवस्था देते समय अब्राहम से बांधी गयी अनुग्रह की वाचा को नज़रअन्दाज़ नहीं किया गया था (गलातियों 3:17-22)!

"व्यवस्था" भी अपने आप में पूरे पुराने नियम का प्रकाशन नहीं है, क्योंकि पुराने नियम का प्रकाशन भी विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने की बात करता है (रोमियों 3:21)।

यहां पर दी गयी "व्यवस्था" उन करने या नहीं करने वाली आज्ञाओं और आदेशों से मिलकर बनी है जिसके तहत हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करना पड़ता है यह व्यवस्था को पूरा करने की मांग करती है। परमेश्वर की यह धार्मिक और पवित्र मांग है कि जितने लोग शत-प्रतिशत धार्मिक लोग जिये और अधार्मिक लोगों को शत-प्रतिशत दण्ड दिया जाए। व्यवस्था आज्ञापलन करने के लिए कहती हैं, लेकिन अगर उसका उल्लंघन होता है तो परमेश्वर का क्रोध सामने आता है। तुलना परमेश्वर द्वारा दी गयी व्यवस्था जिसमें अपराध या गलती करने पर कृपा की कोई जगह नहीं है और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के बीच में है जिसे उसके अनुग्रह से ही प्रदान किया गया है।

4:14-16

खोज 3. **परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को व्यवस्था के कामों से हासिल नहीं किया जा सकता, वरन केवल विश्वास से ही प्राप्त किया जा सकता है।**

यदि धार्मिक ठहराये जाने की बात करें तो, "व्यवस्था के कार्य" और "परमेश्वर में विश्वास" दोनों अपने आप में अनोखें हैं। यहूदी, मसीही, मुसलिम या कोई भी ऐसे लोग जो व्यवस्था के अनुसार जीते हैं वे अपने आपको परमेश्वर की दृष्टि में अपने आप को धर्मी ठहरवाने की (उद्धार पाने की) कोशिश में लगे हुए लोग हैं (व्यवस्था के कामों को करके या जितना हो सके धार्मिक नियमों का पालन करके (या स्वर्ग[5] व फिरदौस में जाने की)। लेकिन, क्योंकि मनुष्य बार बार नियमों का उल्लघन करता है और वह कभी व्यवस्था का सम्पूर्ण रूप से पालन नहीं कर सकता, वह व्यवस्था परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराये जाने की बजाय परमेश्वर को क्रोध को प्रगट करती है।

रोमियों 4:15 में लिखा है, "जहां व्यवस्था नहीं वहां उसका उल्लंघन भी नहीं होता है।" यहां पर "व्यवस्था" का अर्थ परमेश्वर की धार्मिक मांगों से है, खास तौर पर यह कि सारे लोग धार्मिक हो और धार्मिकता के साथ जीवन व्यतीत करें तथा व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले सभी लोग को दण्ड दिया जाए। यह तो पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका है कि कोई भी जन परमेश्वर की धार्मिक मांगों को पूरा नहीं कर सकता। जब पौलुस कहता है, "जहां व्यवस्था नहीं है, वहां उसका उल्लंघन भी नहीं है" तो उसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने कभी किसी व्यवस्था या नियम का उल्लंघन नहीं किया है क्योंकि उनके पास कोई व्यवस्था थी ही नहीं। लेकिन वह उसके विपरीत बातों को कहने का प्रयास करता हैः क्योंकि संसार के सभी लोग परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध करते हैं, चाहे वह व्यवस्था एक किताब में लिखी हो (रोमियों 2:27; 3:21),या उनके हृदय में लिखी है (रोमियों 2:14-15), उन सभी ने व्यवस्था का उल्लंघन किया है! और क्योंकि सभी लोगों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया हैं, सारे लोग परमेश्वर के क्रोध के अधीन हो गये हैं! क्योंकि व्यवस्था से परमेश्वर का क्रोध उत्पन्न होता है, वह कभी परमेश्वर के अनुग्रह को उत्पन्न नहीं कर सकता, जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर मनुष्य के विश्वास दोनो का आधार है।

इसलिए, जहां कहीं भी, यहूदियों, मसीहीयों या मुस्लिमों ने व्यवस्था के कामों के अनुसार अपने धर्मी ठहरने का प्रयास किया, वहां पर बाइबल की एक भी प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई। मनुष्य का विश्वास विद्यमान नहीं अर्थात पूरी तरह से निरर्थक है! व्यवस्था के अनुसार किये गये मनुष्य के कार्य और ईश्वरीय कृपा पूरी तरह से एक दूसरे का बहिष्कार करते हैं। इसलिए रोमियों 4:16 के अनुसार, व्यवस्था के कामों को करने के द्वारा मनुष्य परमेश्वर की कृपा और परमेश्वर की

प्रतिज्ञाओं को प्राप्त नहीं किया जा सकता! इसीलिए जितने भी लोग व्यवस्था के अनुसार जीवन व्यतीत करते है, वे चाहें यहूदी हो, मसीही या मुसलमान हों परमेश्वर की प्रतिज्ञा और परमेश्वर के अनुग्रह के वारिस नहीं हो सकते!

---

[5] हिंदू धर्म का मानना है कि एक व्यक्ति के व्यक्तिगत कर्म (किसी के अच्छे और बुरे कार्यों के बीच संतुलन का प्रभाव) निर्धारित करते हैं कि वह पुर्नजन्म के चक्र में ऊपर होगा या नीचे। यहूदी और मुस्लमान विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों के बीच का संतुलन अंतिम न्याय के दिन मापदंड पर यह निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति जन्नत में जाएगा या फिर नरक में डाला जाएगा। मानववादी और व्यवस्थावादी मानते हैं कि उनके भले और बुरे कामों के बीच संतुलन उनके भविष्य को निर्धारित करता है।

4:16ब – 17अ

खोज 4. **परमेश्वर की प्रतिज्ञाः प्राप्त करने वाला और सन्तोष।**

(1) परमेश्वर ने अब्राहम और उसके "वंशजों" से प्रतिज्ञा की थी।

गलातियों 3:16-17 में इंगित किया गया "बीज" या वंश किसी और को नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह को दर्शाता है। लेकिन रोमियों 4:16 में, "वंश" अब्राहम के सारे वंशजों को दर्शाता है। परमेश्वर ने अब्राहम के सारे वंशजों से प्रतिज्ञा की थी (रोमियों 4:16) जिसमें बहुत से देश शामिल हैं (रोमियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 21:3, यहां पर बहुवचन में "लोग" कहा गया है। इन लोगों में यहूदियों में से वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने मूसा की लिखित व्यवस्था को प्राप्त किया हैं और वे लोग भी शामिल है जिन्होंने मसीह (वंश) के आने की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया (उत्पत्ति 12:3; 15:5-6;22:17-18) और उनमें गैर मसीहियों में के वे लोग भी शामिल हैं जिन्होंने लिखित व्यवस्था को प्राप्त नहीं किया है, लेकिन जिन्होंने अब्राहम के समान आने मसीह अर्थात यीशु मसीह के आने की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया।

इसलिए, परमेश्वर की प्रतिज्ञा उन लोगों को दी गयी है जो उस वंश, अर्थात मसीह, अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, चाहें वे स्वाभाविक रूप से खतना कराये हुए यहूदी हों या खतना रहित गैर यहूदी हों। अब्राहम केवल दो समुदाय के लोगों का ही पिता नहीं है, अर्थात् :

- इस्राएली (खतना कराये हुए मसीही जिनमें से बहुत से लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते (होशें 1:6,8 और यशायाह 1:10)[6]
- और कलीसिया (खतना रहित गैर यहूदी लोग जिनमें से सभी लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते।) (मत्ती 7:21; मत्ती 13:36-43)।

अब्राहम एक जाति के लोगों का पिता है,[7] विशेष तौर पर उनका जो लोग प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, फिर चाहे वे लोग मूल रूप से इस्राएल के खतना कराये हुए लोगों में से हों या फिर अन्यजातियों के खतनारहित लोगों में से हों।

(2) इस प्रतिज्ञा का सार यह है कि अब्राहम और उसका "बीज" संसार का वारिस होगा।

यह प्रतिज्ञा बार बार उस प्रतिज्ञा की ओर संकेत करती है जो परमेश्वर ने उत्पत्ति 12:3 से की थी, कि परमेश्वर अब्राहम के बीज अर्थात उसके वंश (एकवचनः यीशु मसीह) से संसार की सारी जातियों को आशीष देगें। परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि यीशु मसीह और उसके अनुयायी "संसार" के वारिस होगें (रोमियों 4:13)। उन्हें विश्व व्यापक अधिकार दिया जाएगा। यह प्रतिज्ञा मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी, जब मसीह सभी चीजों को बहाल करेगा (प्रेरितों 3:21), जब सृष्टि को उसकी नाशमान बंधुवाई से छुटकारा मिलेगा (रोमियों 8:21), जब स्वर्ग और धरती पर की सारी चीज़ों को एक के अधीन कर दिया जाएगा (इफिसियों 1:10) और जब मसीह और मसीही लोग नयी धरती अर्थात धार्मिकता के अधिकारी होगें (2पतरस 3:13; प्रकाशितवाक्य 21:1-2)!

---

[6] होशे 1:6,8 में परमेश्वर इस्राएल को "अप्रिय" और "मेरे लोग नहीं" कहकर सम्बोधित करते हैं। यशायाह 1:10 में परमेश्वर इस्राएल को "सदोम और गोमोराह" कहकर पुकारते हैं। रोमियों 9: 6 में पौलुस कहता है कि जितने स्वाभाविक रूप में इस्राएली हैं वे सभी "आत्मिक इस्राएली" या "परमेश्वर का इस्राएल" नहीं हैं।

[7] सच्चे "इस्राएल" को परमेश्वर द्वारा नाश नहीं किया गया, और न ही नये नियम की कलीसिया को उसकी जगह दी गयी, लेकिन उसका उच्च स्तर अपनी जगह पर बना ही रहा और वरन उसकी सीमा का विस्तार गैर यहूदियों में से विश्वासियों को समावेशित करने की वजह से और बढ़ गया।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 4:1-17अ में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

4:3-5

प्रश्न:1. **"आरोपण" (गिना जाना, समझा जाना, दिया जाना, श्रेय देना) शब्द का अर्थ क्या है?**

ध्यान दें। रोमियों 4:3-5 काम करने वाले व्यक्ति के बारे में बात नहीं करता है, लेकिन उसके बारे में बात करता है जो उस पर विश्वास करता है। उसका विश्वास की उसके लिए धार्मिकता गिना गया। यह शब्द "गिना जाना रोमियों की पुस्तक में एक महत्वपूर्ण शब्द है। उसका अर्थ निम्नलिखित है:

- किसी के खाने में डाला जाना (उदाहरण के तौर पर, किये गये काम की मज़दूरी देना)
- किसी की गुणवत्ता या विशेषता को बताना, किसी व्यक्ति के बारे में किसी कथन की पुष्टि करना और फिर उस व्यक्ति के साथ वैसा ही व्यवहार करना। (उदाहरण के लिए: धार्मिक)

"गिना जाना" एक कानूनी वाक्य है और जिसका अर्थ यह है कि एक व्यक्ति के नैतिक व्यवहार के बदलने से पहले उसका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ और उसकी व्यवस्था की मांग के साथ में बदल जाता है।

- बाइबल कहती है परमेश्वर मनुष्य के जीवन में उन चीजों का आरोपण नहीं करता है जिसका वह वास्तव में हकदार है (उदारहण के तौर पर, उसकी अधार्मिकता और उसके पाप)(यशायाह 53:5-6; भजन संहिता 32:1-2; रोमियों 4:7-8)।
- और बाइबल इसके अलावा यह भी कहती है कि परमेश्वर उसके खाते में ऐसी चीजों को जोड़ता या उन्हें आरोपित करता है जिसका वास्तव में वह हकदार नहीं है (उदाहरण के तौर पर, यीशु मसीह की धार्मिकता) (2 कुरिन्थियों 5:21)

यीशु ने हमारे बदले में एक विकल्प बनकर हमारे सारे पापों के दण्ड को अपने ऊपर उठा लिया है (1कुरिन्थियों 5:21)। उसकी धार्मिकता को हमें दे दिया गया है। उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर विराजमान होने के कारण यीशु मसीह, मसीहियों के लिए "उद्धार"(धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा) बन गये हैं (1 कुरिन्थियों 1:30)।

4:3

प्रश्न 2. **किस चीज़ को अब्राहम के खाते में धार्मिकता गिना गया?**

ध्यान दें। "गिने जाने " शब्द का अर्थ है किसी को कोई चीज़ देना है। "यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया" वाक्य का इस्तेमाल जिस प्रकार से उत्पत्ति 15:6 में अब्राहम के लिए किया गया था उसी प्रकार से भजन संहिता 106 :30-31 में पिनहास के लिए किया गया है। लेकिन उनके शब्द समान होने के बाद भी उसका अर्थ बिल्कुल अलग है।

(1) पिनहास के "काम" उसकी दृष्टि में धार्मिकता गिने गये।

गिनती 25:1-9 में, इस्राएलियों के बीच में एक महामारी उत्पन्न हो गयी, क्योंकि वे आत्मिक और यौन सम्बन्धी अनैतिकता करने लगे थे। वे मूर्तिपूजा और व्यवभिचार करने लगे। पिनहास, जो महायाजक का पुत्र था, वह खड़ा हुआ उसने आगे बढ़कर व्यभिचार करने वाले स्त्री पुरूष को दण्डित किया। परमेश्वर में उसके विश्वास ने उसके भीतर अपने परमेश्वर के प्रति जलन और भक्ति को उत्पन्न किया और परमेश्वर की प्रति उसकी इस जलन और उसके काम को उसके लिए धार्मिकता गिना गया। उसके इस काम को *धार्मिक दृष्टिकोण* से भला काम गिना गया, अर्थात उसके व्यवहार के क्षेत्र में शुद्धिकरण, लेकिन उसका नियम या व्यवस्था के कोई सरोकार नहीं था। पिनहास ने परमेश्वर के लिए यह काम किया! उसके भक्ति के काम या परमेश्वर के लिए जलन के कारण उसका उद्धार नहीं हो गया (वह धर्मी ठहराया गया)।

(2) अब्राहम का "विश्वास" उसके लिए धार्मिकता गिना गया।

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि संसार की सारी जातियां "अब्राहम के वंश के द्वारा" आशीषित होगीं (उत्पत्ति 12:3; उत्प. 22:18; प्रेरितों के काम 3:25)। "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया। (उत्पत्ति 15:6; रोमियों 4:3; गलातियों 3:6)। अब्राहम का परमेश्वर व परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा (जो उसने मसीह के सम्बन्ध में की थी) उसे उसके लिए धार्मिकता गिना गया। परमेश्वर ने *धार्मिक दृष्टिकोण* से उसके विश्वास को एक अच्छा प्रतिउत्तर माना, अर्थात परमेश्वर के साथ उसकी स्थिति या सम्बन्ध की कानूनी तौर पर ठीक ठहराये के सम्बन्ध में जिसका धार्मिक मत से कोई सम्बन्ध नहीं था। परमेश्वर ने अब्राहम के लिए कुछ किया! धर्मी ठहराये जाने के क्षेत्र में उसका परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास करना ही उसकी सही प्रतिक्रिया के रूप में गिना गया। अब्राहम को अपने विश्वास के कारण धर्मी (परमेश्वर की दृष्टि में घर्मी ठहरना) ठहराया गया। परमेश्वर उसे 'धर्मी' कहता है, और उसके साथ पूरी तरह से आगे को एक धर्मी के समान व्यवहार करता है।

रोमियों की पुस्तक अध्याय 4 में सारी बहस केवल इस बात पर अड़ी हुई हैं कि "विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाते हैं" और "व्यवस्था के कामों के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। यदि पौलुस ने अब्राहम की जगह पर पिनहास के उदाहरण का इस्तेमाल कर लिया होता तो वह, रोमियों 4 के सम्पूर्ण तर्क का उल्लंधन करने वाला ठहरता। इन दोनों ही स्थानों में सन्दर्भ पूरी तरह से भिन्न है। अब्राहम तो एक विश्वासी बन गया (अर्थात वह व्यक्ति जो पूरी तरह से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराया जा चुका है), लेकिन पिनहास एक विश्वासी के जीवन को जिया, और उसने एक धार्मिक काम करने के द्वारा दिखाया कि वह एक धर्मी व्यक्ति है।

उत्पत्ति 15:6 के अनुसार, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ कुछ खास प्रतिज्ञाएं कीं: अब्राहम की अपना निज पुत्र होगा और उसके वंश आकाश के तारों के समान होगें। हालांकि ये प्रतिज्ञाएं अभी तक पूरी नहीं हुई थी, लेकिन उसने विश्वास किया कि परमेश्वर उसे अपने समय में पूरा करेगा। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर सन्देह नहीं किया गया वरन, उसे विश्वास के द्वारा स्वीकार किया गया। उसके विश्वास को न तो एक विश्वास करने वाले जन के भले कामों के तौर पर माना गया और न ही उसे किसी ऐसे काम के रूप में देखा गया जिसके बदले में उसे कुछ देना जरूरी था (जिसके बदले में उसके खाते में कुछ राशि डालनी पड़े)। इसके विपरीत, उसने विश्वास किया और जिसके कारण उसे मसीह की धार्मिकता प्रदान की गयी। उसका विश्वास खाली हाथ के समान था जिनके द्वारा उसने परमेश्वर के द्वारा वह धार्मिकता(कृपा)प्राप्त की जिसके लिए वह हकदार नहीं था।(रोमियों 5:17)

इसी कारण परमेश्वर ने उसे अपनी दृष्टि में धार्मिक घोषित किया और उसके साथ हमेशा सिद्ध तौर पर एक धार्मिक जन के रूप में व्यवहार किया।

4:13

प्रश्न 3. **इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि वह जगत का वारिस होगा ?**

ध्यान दें। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके सभी आत्मिक बच्चों से यह प्रतिज्ञा की, कि वे यीशु मसीह के साथ मिलकर सारे जगत के वारिस होगें। परमेश्वर ने अब्राहम से तीन प्रतिज्ञाएं कीं:

- अब्राहम व उसके वंशजों को प्रतिज्ञा का देश (फरात नदी से लेकर मिस्र की सीमा के बीच का क्षेत्र) देने के लिए कहा (उत्पत्ति 15:5-7; उत्पत्ति 22:17-18) ।
- उसके वंशज (जिसमें केवल यहूदी ही नहीं होगें) आकाश के तारों और समुद्र के बालू के कणों के समान अनगिनत होगें।
- अब्राहम के "वंश" (एकवचन) सारी जातियां (देश) आशीषित होगीं।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पहले दो भाग तब ही पूरे हो गये थे जब यहोशू ने कनान को जीत लिया था (यहोशू 21:43-45; 23:14-16)। परन्तु परमेश्वर की तीसरी प्रतिज्ञा का पूरा होना केवल तभी प्रारम्भ हुआ जब यीशु का प्रथम आगमन हुआ!

अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया; खास तौर पर यह कि उसके वंशजों में से किसी एक के द्वारा जगत के सारे देशों को आशीषित करेगें! इसका अर्थ है कि अब्राहम ने(लगभग 2000 ई.पू) उद्धारकर्ता अर्थात यीशु मसीह के आगमन पर विश्वास किया (गलातियों 3:16)। आने वाले उद्धारकर्ता अर्थात यीशु मसीह में अब्राहम का विश्वास ही वह उपाय था जिसके द्वारा परमेश्वर ने अब्राहम को धर्मी ठहराया।

यहूदी लोगों को मानना था कि केवल वे ही प्रतिज्ञा के देश के वारिस होगें, क्योंकि उन्होंने ही व्यवस्था का पालन किया है, विशेष तौर पर खतना का। लेकिन, रोमियों 4:13 और 16 के अनुसार, परमेश्वर ने सभी से प्रतिज्ञा की अर्थात " अब्राहम के सभी आत्मिक बच्चों से", जिसका अर्थ है यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर यहूदियों दोनों से।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि यीशु मसीह में विश्वास करने वाले सभी कुलपति और सेवक, यीशु मसीह सभी जगत के वारिस होगें। वे न केवल मध्य पूर्व के (इस्राएल), वरन सारे जगत के वारिस होगें। यह प्रतिज्ञा तब पूरी होगी जब प्रभु यीशु का दूसरा आगमन होगा और जब वह अन्तिम चरण में सम्पूर्ण नयी धरती पर अर्थात पूर्व में, मध्य पूर्व में, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में अपने यशस्वी राज्य की स्थापना करेगा। तब दानिय्येल 7:27 के अनुसार "तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करने वाले उसके आधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेगें।" तब एक नया विश्वास (यीशु मसीह में विश्वास) सारी नयी पृथ्वी को भर देगा।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 4:1-17अ से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 4:1-17अ से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदारहण।

4:2-5. परमेश्वर की उपस्थिति में आकर मसीहियों के पास घमन्ड करने के लिए कुछ नहीं है। वे परमेश्वर की इच्छा का पालन करने या अपने भले कामों पर कभी भी घमण्ड नहीं कर सकते।

4:3. बाइबल की शिक्षाएं सत्य का निर्णायक आधार और उसकी परख है।

4:5-8. यदि आप पाप अभी तक क्षमा नहीं हुए है, तो आप यीशु में विश्वास करें। जब आप यीशु मसीह के द्वारा भक्तिहीन को धर्मी ठहराने वाले परमेश्वर पर विश्वास करते हैं तो, वह आपे सभी पपों को क्षमा करता है और फिर कभी आपको पापी के रूप में नहीं देखता है (इब्रानियों 8:12)। वह आपको अपनी दृष्टि में 100 प्रतिशत मानता है!

4:9-12 परमेश्वर की आशीषों में परमेश्वर द्वारा 100 प्रतिशत क्षमा तथा 100 प्रतिशत ग्रहण किया जाना शामिल है क्योंकि उसकी सन्तानों में केवल खतना कराये हुए यहूदी और यीशु में विश्वास करने वाले मुस्लिम ही शामिल नहीं हैं, परन्तु खतनारहित अन्यजातियों में से भी लोग हैं।

4:13. यीशु मसीह में विश्वास करने के केवल आत्मिक परिणाम ही नहीं है, वरन हर सम्भव शारीरिक परिणाम भी होते हैं। परमेश्वर के द्वारा भविष्य में दी जाने वाली आशीष यह है कि *जगत का हर देश* यीशु मसीह[8] पर विश्वास करने वालों विश्वासियों की मीरास बन जाएगा।

[8] मसीह के दूसरे आगमन के बाद में सारे जगत (नयी धरती) के वारिस होना समृद्धि सुसमाचार से बिल्कुल अलग बात है जिसमें विश्वासियों से वर्तमान समय में भौतिक आशीषों को दी जाने की बात की गयी है।

4:14-16. व्यवस्था के अनुसार जीवन व्यतीत करना इस बात का दावा करता है कि आप कभी परमेश्वर के द्वारा धर्मी नहीं ठहराये जाएंगे और आपको परमेश्वर की कोई भी प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं होगी। लेकिन विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु द्वारा किये गये उद्धार के कार्य के अनुग्रह में जीवन व्यतीत करना इस बात का दावा करता है कि आप पहले से परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहरा दिये गये हो और आपको निश्चय की परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाएं प्राप्त होगी, जिसमें सारे जगत का वारिस बनना भी शामिल हैं।

2. रोमियों 4:1-17अ से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

रोमियों 4:5 में लिखा है कि भक्तिहीनों को मसीह द्वारार धर्मी ठहराने वाले परमश्वेर पर विश्वास करना धार्मिकता गिना जाता है। मैं मानता हूं कि मैं अपने कामों के द्वारा नहीं वरने केवल अपने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया हूं। मेरा मानना है कि मेरा धर्मी ठहराया गया हूं, लेकिन यह नहीं है कि परमेश्वर ने मुझे मेरे कुछ कामों के लिए मज़दूरी दी है या मुझे कोई प्रतिफल दिया गया है वरन परमश्वेर आज़ादी और अनुग्रह के साथ मुझे पूरी तरह से धर्मी मानता हूं और वैसा ही मेरे साथ व्यवहार करता है। मेरा धर्मी ठहराया जाना इस बात पर आधारित है कि मसीह ने मेरे स्थान पर क्या किया है और मेरे विश्वास करने पर वह मेरे लिए वास्तविकता बन गया है।

रोमियों 4:12 में यह नहीं कहा गया है कि खतना कराने वाले लोगों (अर्थात, व्यवस्थ का पालन करने वाले लोग) को धर्मी ठहराया जाएगा, वरन यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले धर्मी ठहराये जाएंगे, चाहे वे पहले से ही खतना किये(यहूदी और मुसलमान) हुए लोग हों। मै यह विश्वास करता हूं कि कोई भी धार्मिक विधी या अनुष्ठान, जैसे कि खतना या बपतिस्मा मेरा उद्धार नहीं कर सकता। लोगों और कलीसिया द्वारा किया गया कोई भी कार्य मुझे धर्मी नहीं ठहरा सकता। पुराने नियम में दिया गया खतना कोई धर्मी ठहराये जाने की शर्त या उपाय नहीं था, परन्तु वह तो विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का चिन्ह व मुहर थी। ठीक इसी प्रकार से नये नियम में बपतिस्मा, धर्मी ठहरने की शर्त या उपाय नहीं है, वह विश्वास द्वारा धर्मी ठहराये जाने का एक चिन्ह व मुहर है (कुलुस्सियों 2:11-12; रोमियों 2:28-29)।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 4:1-17अ में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
		दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अथवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 4:1-17क का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2 इतिहास 16,18,20 और 26** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(3) कलीसिया की सेवाकाईयांः इफिसियों 4:12-13।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 21:28-32 में दिये गये **"दो पुत्रों का दृष्टान्त"** और लूका 13:1-9 में दिये गये **"फल रहित अंजीर के पेड़ के दृष्टान्त"** की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 15

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए **प्रार्थना** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **2इतिहास 16,18,20 व 26**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2इतिहास 16,18,20 व 26) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(3) इफिसियों 4:12-13**

दो-दो करके ***अवलोकन करें।***
(3) कलीसिया की सेवाकाईयां। इफिसियों 4:12-13। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए, जब तक कि हम से के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचानमें एक न हो जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौलतक न बढ़ जाएं।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टांत)* **दो पुत्र और फल रहित अंजीर का वृक्ष**

मत्ती 21:28-32 में "दो पुत्रों का दृष्टान्त"

और लूका 13:1-9 में "फल रहित अंजीर के वृक्ष का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में प्रेवश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता हैं।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. दो पुत्रों का दृष्टान्त

पढ़ें मत्ती 21:28-32।

1. दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी का समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

बढ़ती उम्र के बच्चों के साथ परिवारों का सबसे दुःखद अनुभव यह होता है कि, बच्चे अपने माता पिता की इच्छाओं को पूरा न करने की इच्छा प्रगट कर देते हैं। फिर भी, सबसे सुखद बात यह है कि ज़्यादातर बच्चे पछताकर बाद में उन्हीं कामों को करते हैं जो उनके माता पिता उनसे करने के लिए कहते हैं।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और " व्याख्या या अनुप्रयोग"हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः *कहानी के पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की *कहानी के बाद* में पाया जाता है।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त की संरचना मत्ती 21:23-27 से बहुत घनिष्ठता से जुड़ी हुई है।

प्रधान याजक और इस्राएल के लोगों के पुरनियों ने यीशु द्वारा मन्दिर को शुद्ध करने और विशेष तौर पर मन्दिर परिसर में उपदेश देने और लोगों को चंगा करने के बारे में प्रश्न पूछा। उसने उन्हें उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा प्रश्न किया कि वे उसे बताएं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बपतिस्मा देने का अधिकार किसकी ओर से मिला था, स्वर्ग से या मनुष्य की ओर से? अपने मन की बात को सबके सामने प्रगट करने में रूचि न दिखाने से यह प्रगट हो गया कि वे कपटी हैं। उन्होंने ऐसा दिखाया मानों पता नहीं है, लेकिन हकीकत यह थी कि उन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अस्विकार कर दिया था।

(2) दृष्टान्त की यह कहानी मत्ती 21:28-30 में लिखी हुई है।

(3) दृष्टान्त का अर्थ या उसका अनुप्रयोग मत्ती 21:31-32 में दिया गया है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर

भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

दाख की बारी। क्योंकि यह दृष्टान्त यह नहीं कहता कि "मेरी दाख की बारी" इसलिए इस विवरण को "इस्राएल देश"(परमेश्वर की दाख की बारी) नहीं कह सकते हैं।

पहला बेटा। वह हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो पहले अविश्वास और अनाज्ञाकारी होने से मन फिराता और बाद में विश्वास करने लगता है। यह दृष्टान्त का एक प्रासंगिक विवरण है।

दूसरा पुत्र। यह हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो आज्ञाकारी दिखता है, लेकिन वास्तव में एक अविश्वासी और अनाज्ञाकारी है।यह भी दृष्टान्त में एक प्रासंगिक विवरण है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 21:28-32 में दिया गया दो पुत्रों का दृष्टान्त हमें " परमेश्वर के राज्य मे प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित हैं। "इससे कोई फरक नहीं पड़ता कि कोई जन पहले कोई अविश्वासी था, चुंगी लेने वाला था या कोई वैश्या थी, हर एक जन व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए जिम्मेदार है। वह खुद इस बात का जिम्मेदार है कि वह अपने पुराने अनाज्ञाकारिता के जीवन से पश्चाताप करे और फिर जाकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें।

परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का दिखावा करना, लेकिन वास्तव में वैसा करना, कपट है। वे लोग उस बीज के समान हैं जो पथरीली भूमि पर गिरा, और जल्दी ही मुर्झा गया, या उस व्यक्ति के समान है जो बिना विवाह के कपड़ों के विवाह समारोह में चला गया और जिसे उठाकर घोर अन्धकार में डाल दिया गया।

परमेश्वर के राज्य में व्यक्तिगत जिम्मेदारी एक बुनियादी विशेषता है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई जन पहले अविश्वासी था, सन्देह करने वाला था, आलोचक था या उसने कोई छोटा या बड़ा पाप किया है, *परमेश्वर के राज्य में सच में प्रवेश करने वाले लोगों ने पश्चाताप किया और अब वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहे हैं!*

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व चर्चा करें। ये अनुच्छेद दृष्टान्त में बताये गये शिक्षा को कैसे प्रगट करते हैं?
ध्यान दें।

1शमूएल 15:22-23। राजा शाऊल ने केवल परमेश्वर की आज्ञा के *केवल आधे भाग का ही पालन किया।* उसने दुश्मन को तो समाप्त कर दिया लेकिन उसने, उसकी सम्पत्ति को नष्ट नहीं किया। वरन वह लूट पर टूट पड़ा और राजा अमालेक की बुराई को फैलाया। शमूएल भविष्यद्वक्ता ने उस से कहा "सुन माना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।" क्योंकि राजा शाऊल ने परमेश्वर के वचन को तुच्छ जाना, इसलिए परमेश्वर ने भी उसे राजा होने के लिए तुच्छ जाना है। यह उन सभी अगुवों के लिए एक गम्भीर चेतावनी है जो ऊंचे पदों पर हैं लेकिन परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करते या उसकी इच्छा के आधा अधूरा पूरा करते हैं।

मत्ती 7:21-27; 23:1-4। कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने मुंह से यह तो कहते हैं कि वे परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और अपनी तरह से ऐसे कार्य करते हैं, जिससे निश्चय ही परमेश्वर परमेश्वर होते होगें। लेकिन वे परमेश्वर की प्रगट इच्छ को(जो बाइबल में प्रगट है) पूरा नहीं करते। वे प्रभु की इच्छा को सुनते और जानते हैं, लेकिन वे कभी पिता की इच्छा का अपने जीवन में अभ्यास नहीं करते। जिन लोगों को बाइबल का अधिक ज्ञान है, लेकिन वे उसके अपनुसा अपना जीवन नहीं बिताते, उनके लिए यह एक गम्भीर चेतावनी है।

यूहन्ना 15:14; प्रेरितों 5:29। जितने लोग, यीशु के कहे अनुसार कार्य करते हैं, वे उसके मित्र कहलाते और पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं। सबसे बढ़कर परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम बदलकर यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार करें (यूहन्ना 3:16, 36; 6:29)

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या समझाने या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना अति आवश्यक है।

चुंगी लेने वालों को यहूदी लोग और खास तौर पर उनके धार्मिक और राजनैतिक अगुवों के द्वारा तुच्छ और धृणित माना जाता था, क्योंकि वे लालची हुआ करते थे, और वह उनसे धन एंठने के लिए अन्याय करते और उनके शत्रुओं अर्थात उन पर हुकुम चलाने वाले रोमियों से मिले हुए होते थे। इस्राएल में चुंगी लेने वालों और वैश्याओं को अति धृणित व तुच्छ पापी के रूप में माना जाता था।

अगर उनका ऊधमी व पापमय जीवन यदि लगातार जारी रहे तो सच में वे कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएंगें (1कुरिन्थियों 6:9-10; प्रकाशितवाक्य 21:8,27)। सच कहें तो ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की कोई आशा है।

लेकिन जब उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बातों को सुना, तो उन्होंने पश्चाताप किया। वे यूहन्ना के "धार्मिकता के मार्ग" से प्रभावित थे, जिसके अन्तर्गत वह अपनी धार्मिकता कार्यों के साथ साथ उसने अपने प्रचार के द्वारा लोगों से धार्मिक कार्य करने की मांग की (लूका 3:9-14)। उसने मांग की कि लोग अपने पापों से पश्चाताप करें और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करें। चुंगी लेने वालों और वैश्याओं ने बड़ी संख्या में अपने पापों से पश्चाताप किया और यीशु मसीह पर विश्वास किया (1कुरिन्थियों 6:11)। परमेश्वर चुंगी लेने वालों और वैश्याओं के पश्चाताप और विश्वास को देखकर बहुत खुशी हुई (लूका 5:30 ; 19:10)।

(2) परमेश्वर की इच्छा पूरा करने का दिखावा करना कपट है।

यहूदियों को धार्मिक अगुवों को व्यवस्था का अच्छा जानकार माना जाता था और वे बाहरी तौर पर दिखाते थे कि वे हमेशा ही परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए इच्छुक रहते हैं। लेकिन वास्तव में वे केवल परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का दिखावा ही किया करते थे। उन्होंने परमेश्वर के संदेश वाहक यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अस्विकार किया और अब उन्होंने यीशु मसीह व उसकी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया, वरन वे तो घात करने की योजना बना रहे थे।

(3) इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश था कि
प्रारम्भ में अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के बावजूद पश्चाताप करें।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने बड़े पापी थे और आपने कितने खराब काम किये हैं। मन फिराएं (अर्थात, अपनी सोच को बदलें) यीशु मसीह की ओर फिरे और उस पर विश्वास करें। आप अपने सारे पापों की क्षमा प्राप्त करेगें और बच जाएगें (यशायाह 1:18; 55:7; मीका 7:18-19; लूका 23:40-43)!

ख. फल रहित अंजीर के वृक्ष का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 13:1-9।

1. **दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।**

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें। अंजीर के पेड़ में फल आने के लिए सामान्यतः काफी लम्बा समय लगता है। इस अंजीर के पेड़ को मालिक की बारी में बोया गया था। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, क्योंकि इसका अर्थ केवल इतना सा था कि इससे पेड़ की अच्छी देखभाल की जाएगी। और जब अन्त में वह समय आ गया जब अंजीर के पेड़ से फल पाने की अपेक्षा की जानी चाहिए, मालिक उसके पास में फल पाने की चाह से गया। किसी अंजीर के पेड़ में फल को देख पाना आसान बात नहीं होती है क्योंकि फल पत्तों के नीचे छुपे और दबे हुए होते हैं। अगर कोई फलों को देखना चाहता है तो उसे पास आकर पत्तों को उठाकर देखना पड़ता है।

क्योंकि लगातार तीन वर्षों तक मालिक को पेड़ से कोई फल प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए उसने इसे

काटने का आदेश दिया। मालिक नहीं चाहता था कि वह पेड़ बेकार में ही दूसरे पेड़ पौधों के लिए जरूरी खनिज पदार्थों और नमी को ले ले।

उस दाख की बारी के रखवाले ने मालिक से कहा कि उसे उस पेड़ की देखरेख करने का एक और अवसर प्रदान किया जाए। वह उस पेड़ के आस पास की मिटटी की निराई करेगा और उस में थोड़ी खाद डालेगा। किसी उद्देश्य से, प्रभु यीशु ने यह नहीं बताया कि इस अंजीर के पेड़ में कभी फल आया था कि नहीं। इसका उत्तर श्रोतागढ़ों और पाठकों पर छोड़ दिया है। यीशु चाहते हैं कि हर एक जन इस कहानी का अनुप्रयोग अपने जीवन में करें।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) यह दृष्टान्त लूका 13:1-5 में लिखा हुआ है।
जबकि इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश हैः "पश्चाताप!" इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश हैः "अभी पश्चाताप करें!" लूका 13:2-3 में यीशु कहते हैं, "क्या तुम समझते हो कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुम से कहता हूं, कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे।"

(2) यह दृष्टान्त लूका 13:5-9 में दिया गया है।

(3) दृष्टान्त का अनुप्रयोग या उसका अर्थ अलग से नहीं समझाया गया है, लेकिन यह उसका अर्थ दृष्टान्त में ही समावेशित है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें।

पढ़ें मत्ती 21:18-22, 42-44; लूका 20:15-16; 21:20-24।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त में दी गयी कहानी में किये गये उल्लेख में से कौन सी बातें वास्तव में आवश्यक और प्रासंगिक हैं?
ध्यान दें।

इस दृष्टान्त को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना। कई बार, लोग दृष्टान्त में बतायी गयी कहानी के

प्रत्येक उल्लेख का एक खास मतलब निकालने का प्रयास करते हैं। इसे ही प्रतिकात्मक रूप, या एक दृष्टान्त को प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना कहते हैं। उदाहरण के लिए जॉर्जी महान (540–604) ने इस दृष्टान्त का अर्थ कुछ इस तरह निकालः "मालिक" परमेश्वर है। वह तीन बार फल की तलाश में आशा। "पहली बार" परमेश्वर का आना उसकी व्यवस्था के दिये जाने से पहले था। उसके बाद उसने मनुष्य को यह समझ प्रदान की कि उस व्यवहारिक कारणों का ध्यान रखते हुए किस प्रकार अपने पड़ोसियों से व्यवहार करना चाहिए। "दूसरी बार" वह लिखित व्यवस्था के समय में आया। तब उसने मनुष्य को अपनी व्यवस्था सिखायी। "तीसरी बार" परमेश्वर अनुग्रह के तहत आया। उसके बाद उसने मानव जाति पर अपनी दया प्रगट की। "दाख की बारी की देखभाल करने वाले" कलीसिया के अधिकारियों को दर्शाते हैं। पेड़ों के चारों ओर "गढ़्हा" खोदना उन लोगों को डाटने को प्रदर्शित करता है जो फल लाने में असफल रहे होते हैं। "खाद" पाप को याद करने(और उसके अंगीकार करने) का प्रतीक है। जो लोग अपने पापों का प्रायश्चित करने से इनकार करते हैं।

प्रतिकात्मक सार के आधार पर हम दिये गये सन्दर्भ के परिणाम तक नहीं पहुंच सकते इसलिए इसे अस्विकार कर देना चाहिए।

अंजीर का पेड़। एक टीकाकार कहता है कि "दाख की बारी में लगा हुआ अंजीर का पेड़" "इस्राएल में बसे हुए यरूशलेम" को दर्शाता है। लेकिन, जब हम मत्ती 21 में यीशु द्वारा अंजीर के पेड़ को देखते हैं, तो दाख की बारी में लगाया गया "अंजीर का वृक्ष" संसार में सर्वोच्च अवसर प्राप्त इस्राएल देश का प्रतीक है। यीशु सिखाते हैं कि इस्राएल एक देश के रूप में न तो परमेश्वर की ओर फिरा है और न ही उसने पश्चाताप किया है। "वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया (यूहन्ना 1:11)। जिसके परिणाम स्वरूप इस्राएल का एक धार्मिक व राजनैतिक सत्ता के रूप में और उद्धार पाये हुए लोगों के रूप में इस्राएल का दबदबा खत्मा हो गया। परमेश्वर का राज्य उनके हाथों से छीनकर ऐसे लोगों के हाथों में दे दिया गया जो परमेश्वर के राज्य में फल लाने वाले थे (मत्ती 8:11–12, मत्ती 21:41–43; रोमियों 11:17–24)। 70ई.पू में रोमियों द्वारा यरूशलेम और उसके मन्दिर को नाश कर दिया गया। इस तरह से इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में पूरी तरह से पतन हो गया। लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं था कि परमेश्वर ने सारे यहूदियों को अस्विकार कर दिया था। "परमेश्वर के लोगों" में अब इस्राएल के देश में रहने वाले और सारी अन्यजातियों में से मसीही लोग शामिल हैं। (1पतरस 2:9–10)।

तीन वर्षो का समय। इस काल का भी अलग अलग तरीके से अर्थ निकाला जाता हैः भिन्न टीका करने वालों के नज़रिये तीन वर्षो का अर्थ निम्नलिखित हैः

- इस्राएल का सम्पूर्ण इतिहास
- मसीह की तीन वर्षो की सेवाकाई
- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवाकाई से प्रारम्भ होने वाला काल।

हालांकि, बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि हमें इन "तीन वर्षो को " कोई प्रतीकात्मक अभिप्राय देना चाहिए। इसलिए यह दृष्टान्त का विवरण प्रासंगिक नहीं है।

लेकिन अगर हम इस तथ्य पर गौर करें कि मालिक ने फल ने देने वाले पेड़ को तुरन्त नहीं काट दिया, इस सन्दर्भ में,लोगों के प्रति परमेश्वर के महान प्रेम और उसके धीरज को दर्शाता है, खास तौर पर इस्राएल के देश के प्रति।

दाख की बारी का उदारवादी रखवाला। यह एक प्रासंगिक विवरण है। वह निश्चय तौर पर परमेश्वर को प्रगट करता है जिसने बहुत धीरज के साथ में इस्राएल के लोगों के साथ व्यवहार किया। यहूदियों और गैरयहूदियों के प्रति परमेश्वर का महान धीरज आज भी बना रहता है। (लूका 4:18-21; 2पतरस 3:9)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 13:1-9 में दिया गया फलरहित अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "हर एक जन को तुरन्त मन फिराकर बिना विलम्ब किये यीशु मसीह के पास लौट आना चाहिए या वह हमेशा के लिए अपने प्राणो का नुकसान उठाने के लिए तैयार रहे!"

व्यक्तिगत जिम्मेदारियां परमेश्वर के राज्य की बुनियादी जिम्मेदारियां हैं। परमेश्वर के राज्य के जिम्मेदार लोग महत्वपूर्ण निर्णय लेने में विलम्ब या देरी नहीं करते हैं। वे तुरन्त मन फिरा कर यीशु की ओर फिरते हैं, क्योंकि वे अपने प्राणों के नुकसान का जोखिम नहीं उठाना चाहते।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

चर्चा करें। किस प्रकार से बाइबल अंश में दी गयी शिक्षा की तुलना दृष्टान्त की शिक्षा से की जा सकती है?

ध्यान दें।

(1) यशायाह 55:6-7।

वहां पर लिखा है, "जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो; दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।" हर एक जन यीशु को दिये गये अपने प्रतिउत्तर के प्रति जिम्मेदार है। वह स्वयं तब तक परमेश्वर को खोजने के लिए ज़िम्मेदार है जब तक कि परमेश्वर मिल सकता है। वह अपने जीवन में उस महत्वपूर्ण निर्णय को आज, अभी लेने के लिए जिम्मेदार है कहीं ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाएं।

(2) 2 कुरिन्थियों 6:2।

वहां पर लिखा है, "देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो अभी वह उद्धार का दिन है।" हर एक व्यक्ति तुरन्त यीशु मसीह को प्रतिउत्तर देने के लिए जिम्मेदार है, क्योंकि यह परमेश्वर अनुग्रह का समय है, अभी वह उद्धार का दिन है।

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को सारांश बताएं।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है?यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या समझाने या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें। इस दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा बिना देरी किये हुए यीशु की ओर फिरना है। हालांकि परमेश्वर अपने लोगों के साथ व्यवहार करने में बहुत धीरजवन्त है, लेकिन उसका धीरज सदा तक बना न रहेगाा। एक दिन– और केवल परमेश्वर ही जानते हैं कि वह दिन कब आयेगा– मन फिराने और बचने का अवसर खत्म हो जाएगा। जो मनुष्य फिर भी विलम्ब करता रहे "वह अपने पापों में मरेगा" (यूहन्ना 8:24) और वह हमेशा के लिए नाश हो जाएगा (अर्थात् प्रकाशितवाक्य के आधार पर डरपोक और अविश्वासी)। इसलिए देरी न करें! यीशु मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें!

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की ज़िम्मेदारी से सम्बन्धित मुख्य शिक्षा या दृष्टान्तों की शिक्षाओं का सार

शिक्षा दें। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी धरती पर रहने वाले हर एक जन की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। कोई भी दूसरा जन हमारे लिए इस जिम्मेदारी को नहीं उठा सकता है। कोई भी जन दूसरे व्यक्ति के लिए मसीही को अपनाने तथा उस पर विश्वास करने का निर्णय नहीं ले सकता। कोई भी जन अपने निर्णय के परिणाम के लिए किसी और को दोषी नहीं ठहरा सकता। परमेश्वर हर जन के द्वारा लिये गये निर्णय और निर्णयों के परिणाम के लिए स्वयं उसे ही जिम्मेदार ठहरायेगा। अतः निम्नलिखित दृष्टान्त हर एक जन को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से सम्बन्धित निजी जिम्मेदारी के बारे में बताते हैं:

(1) बाजार में बैठे हुए बच्चों को दृष्टान्त (मत्ती 11:16–19)।

हर एक जन परमेश्वर की बातों को अनसुनी करने का जिम्मेदार है। गैरजिम्मेदार और अनियमित व्यवहार बचकाना होता है। लोग (जिसमें मसीही लोग भी शामिल हैं) को बचकानी हरकतें छोड़ देनी चाहिए और अपनी बातों और अपने कामों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

(2) मौसम से जुड़े चिन्हों का दृष्टान्त (मत्ती 16:1–4)।

समय काल पर दिखाये जाने चिन्हों के प्रति उदासीन रहने के लिए हर एक जन खुद जिम्मेदार है। बदलते मौसम पर नजर लगाये रहने की बजाय, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के प्रारम्भ होने के नये दौर से जुड़े चिन्हों पर नज़र लगाकर रखना चाहिए। यीशु से जुड़ी हुई महान घटनाएं, विशेष तौर पर उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान, इतनी महान और महत्वपूर्ण घटनाएं हैं कि हर एक जन को उसका प्रतिउत्तर जरूर देना चाहिए।

(3) दो पुत्रों का दृष्टान्त (मत्ती 21:28–32)।

हर एक जन परमेश्वर द्वारा प्रगट (बोली या बतायी गयी) उसकी इच्छा के प्रति उदासीन होने के लिए जिम्मेदार है। शुरूआत में अविश्वास और अनाज्ञारिता के बावजूद, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) मन फिराकर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना चाहिए।

(4) फलरहित अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त (लूका 13:1-9)।

हर एक जन परमेश्वर द्वारा उसके जीवन में रखे जाने वाले धीरज के प्रति उदासीन होने के लिए जिम्मेदार है। यदि बीते हुए समय की समीक्षा करें तो, लोगों को (निश्चय ही उसमें मसीही लोग शामिल हैं) पश्चाताप करके अपने जीवन में फल लाना प्रारम्भ कर देना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर के धीरज की एक सीमा है और वह सदा तक धीरजवन्त बना नहीं रहेगा। एक समय ऐसा आएगा जब मन फिराने, उद्धार पाने या फल लाने के लिए बहुत देरी हो चुकी होगी (प्रकाशितवाक्य 6:12-17)

(5) जाल का दृष्टान्त (मत्ती 13:47-50)

यह जानना हर एक जन की जिम्मेदारी है कि परमेश्वर का अन्तिम न्याय निश्चित और अटल है। इस तथ्य को जानकर हर एक व्यक्ति को अधिकायी से मन फिराकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर लेना चाहिए!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)***
	अगले अगले अध्याय के लिए	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **2इतिहास 32,33,34 और 36** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्यः प्रेरितों 20:28।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 4:17-25।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 16

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए **प्रार्थना** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **2 इतिहास 32,33,34 और 36**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि अपने दिये गये अनुच्छेद (2इतिहास 32,33,34 और 36) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(4) प्रेरितों के काम 20:28**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।
(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28 – इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 4:17ब-25**

परिचय। **रोमियों 4:17ब-25** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों के अध्याय 4:17अ में, पौलुस यह साबित करता है कि बाइबल में हमेशा विश्वास के द्वारा न्याय ही उद्धार का एकमात्र सच्चा तरीका रहा है। रोमियों 4:17ब-22 में, वह अब्राहम के चरित्र के द्वारा उसके विश्वास को दर्शाता है ताकि हमें मालूम हो कि वास्तव में सच्चा विश्वास क्या होता है। रोमियों 4:23-25 में वह आज के विश्वासियों को अब्राहम के विश्वास का उदाहरण सिखाता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 4:17ब-25 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन-सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)
आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

4:17ब-22

खोज 1. **अब्राहम के विश्वास की चार विशेषताएँ हैं।**

(1) विश्वास की पहली विशेषता रोमियों 4:17 में पाई जाती है।
अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य जीवित परमेश्वर था।

अब्राहम ने सिर्फ विश्वास नहीं किया। उसने किसी पर विश्वास किया। उसने (बाइबल के) जीवित परमेश्वर पर और जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने उससे की थी, उस पर विश्वास किया। उसने यह विश्वास किया कि परमेश्वर सामर्थी है और वही मरे हुओं को जीवन दे सकता है। उसका मानना था कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी पूर्ति के समान ही बहुत भली है।

(2) विश्वास की दूसरी विशेषता रोमियों 4:18 से है।
अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य सीधे आशा से सम्बन्धित था।

अब्राहम के विश्वास और उसकी आशा दोनों ने साथ मिलकर कार्य किया। उसका यह विश्वास था कि वह इस बात के प्रति आश्वस्त था कि उसकी क्या आशा, वह क्या चाहता है। उसका विश्वास था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को निश्चित रूप से पूरा करेगा। हालाँकि अब्राहम जानता था कि उसकी इन परिस्थितियों ने शारीरिक रूप से सन्तान उत्पन्न करने को असम्भव बना दिया है, फिर भी वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करता था और उसे आशा (उम्मीद) थी कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को ज़रूर पूरा करेगा। यह केवल परमेश्वर का ही उद्देश्य नहीं था कि अब्राहम कई राष्ट्रों का पिता बने (रोमियों 4:11), परन्तु अब्राहम का भी यही उद्देश्य (दृढ़ विश्वास) था कि वह कई राष्ट्रों का पिता बने (रोमियों 4:18)। अब्राहम ने परमेश्वर के इस उद्देश्य को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उसने अपनी आशा की निश्चितता पर विश्वास किया, ताकि ऐसा न हो कि की गई प्रतिज्ञा असफ़ल हो जाए।

(3) विश्वास की तीसरी विशेषता रोमियों 4:19-21 में पाई जाती है।
अब्राहम के विश्वास की ताकत परमेश्वर के स्वभाव के बारे में उसके दृष्टिकोण से निर्धारित होती है।

परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि उसके और उसकी पत्नी के एक पुत्र उत्पन्न होगा, और परमेश्वर उस पुत्र के द्वारा संसार के सभी परिवारों को आशीषित करेगा। लेकिन क्योंकि वह और उसकी पत्नी बहुत ही बूढ़े हो चुके थे, मानवीय और शारीरिक रूप से ऐसा कहना असम्भव-सा लग

रहा था कि यह प्रतिज्ञा पूरी होगी या नहीं। फिर भी, अब्राहम ने अपनी परिस्थितियों को अपने विश्वास को निर्धारित करने की अनुमति नहीं दी। उसने अपने विश्वास को कमज़ोर किए बिना अपनी परिस्थितियों का सामना किया। वह ऐसा कैसे कर सकता है? रोमियों 4:20-21 में लिखा है कि उसका विश्वास परमेश्वर के प्रति उसके दृष्टिकोण से निर्धारित किया गया। क्योंकि वह परमेश्वर को सर्वशक्तिमान और विश्वासयोग्य के रूप में देखता था, उसने सन्देह को जगह ही नहीं दी।

परमेश्वर द्वारा बार-बार की गई प्रतिज्ञाओं से उसका विश्वास और मज़बूत हो गया। जितनी बार उसने सर्वशक्तिमान और विश्वासयोग्य परमेश्वर को महिमा दी, उतनी बार उसका विश्वास मज़बूत हुआ। उसका दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है।

(4) विश्वास की चौथी विशेषता रोमियों 4:22 से है।

अब्राहम के विश्वास का परिणाम यह हुआ, कि परमेश्वर ने
उसके इस दृढ़ विश्वास को (उत्तरदायी धार्मिकता को, माना) धार्मिकता गिना।

उसका विश्वास केवल एक बौद्धिक विश्वास नहीं था। यह आश्चर्यकर्म करने के लिए ज़रूरी विश्वास भी नहीं था। अब्राहम का विश्वास उद्धार का विश्वास था, यानि वह विश्वास जो उद्धार या न्याय की ओर ले जाता है। उसका विश्वास आने वाले मसीह के सम्बन्ध में, परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा को दर्शाता है। जिससे मसीह की मृत्यु और पुरुत्थान के द्वारा संसार के सभी परिवारों (राष्ट्रों) को आशीष मिलेगी। उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। और वह पूरी तरह से उस धार्मिकता पर निर्भर था जो यीशु मसीह के उद्धार के द्वारा प्राप्त होने वाला था, न कि मानवीय कार्यों के द्वारा।

4:23-25

खोजें 2. **आज के विश्वासियों का अब्राहम के विश्वास से निम्नलिखित सम्बन्ध है।**

1 कुरिन्थियों 10:11 में पौलुस इस्राएल के साथ जो कुछ हुआ उनके बारे में कहता है, "ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थी : और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।" यहाँ रोमियों 4:23-24 में पौलुस कहता है, जो कुछ अब्राहम के लिए लिखा गया, *वह सिर्फ उसी के लिए नहीं, वरन् हमारे लिए भी है*। अब्राहम का विश्वास न केवल उसी के लिए धार्मिकता गिना गया, वरन् आज भी सभी विश्वासियों का ऐसा विश्वास धार्मिकता के रूप में गिना जाएगा।

हालाँकि, पुराने नियम में अब्राहम की परिस्थितियाँ और नए नियम में हमारी परिस्थितियाँ दोनों भिन्न हैं, लेकिन अब्राहम और हमारे विश्वास के बीच समानता यह दर्शाती है कि पुराने नियम में विश्वास नए नियम के विश्वास के समान था।

(1) पहली समानता – अब्राहम और हमारे विश्वास के बीच पहली समानता यह है कि अब्राहम के विश्वास का उद्देश्य बाइबल का परमेश्वर था (रोमियों 4:3; 4:24)। अब्राहम और हम, दोनों ही बाइबल के परमेश्वर को मानते हैं, जो विश्वास को धार्मिकता के रूप में गिनते हैं (मानते हैं)। (तुलना करें – रोमियों 3:29-30)।

(2) दूसरी समानता – यह है कि अब्राहम का विश्वास उस परमेश्वर पर था जो मृतकों को जीवन देता है (रोमियों 4:17)। हमारा विश्वास उस परमेश्वर पर है जिसने यीशु मसीह को मृतकों में जी उठाया (रोमियों 4:17)।

(3) तीसरी समानता – यह है कि अब्राहम का विश्वास एक दृढ़ विश्वास था कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को अवश्य पूरा करेगा (रोमियों 4:21)। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि यीशु मसीह की मृत्यु व उसके पुनरूत्थान के द्वारा परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पहले ही पूरी कर चुका है (रोमियों 4:25)।

हालाँकि, हमें परमेश्वर के उद्धार के इतिहास को ध्यान में रखना चाहिए। अब्राहम और हमारी स्थिति के बीच मुख्य अन्तर यह है कि अब्राहम से प्रतिज्ञा की गई थी और उस वचन की पूर्ति हमें प्राप्त हुई। उसका विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर केन्द्रित था जो निश्चित रूप से पूरी होगी और हमारा विश्वास यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के उद्धार के सिद्ध कार्य के साथ इस प्रतिज्ञा को पूरा करने पर केन्द्रित है।

इसलिए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:11 में लिखा, "परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर थीः और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं, लिखी गईं हैं।" और यही कारण है कि इब्रानियों के लेखक ने लिखा है कि यीशु मसीह अब युग के अन्त में एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे (इब्रानियों 9:26)। अब्राहम युग के आरम्भ में रहता था जबकि हम युगों के अन्त या उसकी पूर्णता में रहते हैं।

कदम 3. प्रश्न।	व्याख्या
ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये रोमियों 4:17ब–25 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। ***लिखें:*** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।) ***चर्चा करें।*** (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

4:17

प्रश्न 1. **परमेश्वर के संदर्भ में अब्राहम का विश्वास किस पर था? उस परमेश्वर का अर्थ क्या है जो "मरे हुओं को जीवन देता है" और "उन बातों का नाम, ऐसे लेता है कि मानो वे हैं"?**

ध्यान दें।

(1) अब्राहम उस परमेश्वर पर विश्वास रखता था, "जो मरे हुओं को जीवित कर देता है"।

रोमियों 4:17 में परमेश्वर की उन विशेषताओं का वर्णन किया गया है जो अब्राहम के विश्वास का विशेष उद्देश्य, तब थीं जब उसने परमेश्वर पर विश्वास किया और उसका न्याय हुआ। अब्राहम सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करता था जो मृत्यु और जीवन दोनों पर अधिकार रखता है और मृतकों को जीवित कर सकता है। यह परमेश्वर को संसार के सभी "देवताओं" से अलग करता है। वह न केवल सृष्टिकर्ता और प्रत्येक वस्तु को बनाए रखने वाला है, परन्तु वह मृतकों को जिलानेवाला और जितने लोग पृथ्वी पर रह चुके हैं उन सभी का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:28–29; इफिसियों 1:19–20)।

क्योंकि उसके पास पूरी तरह से मृतकों को जिलाने की सामर्थ्य है, उसके पास अधमुओं को जिलाने की थी सामर्थ्य है। अब्राहम यह विश्वास करता था कि परमेश्वर उन्हें सन्तान उत्पन्न करने के लिए सक्षम बनाएगा और सारा गर्भधारण कर पाएगी, भले ही वह दोनों शारीरिक रूप से बूढ़े और आधे मृत हो चुके थे।

(2) अब्राहम उस परमेश्वर पर विश्वास रखता था जो "उन बातों का नाम, ऐसे लेता है (जिनका अभी तक अस्तित्व नहीं हैं), कि मानो वे हैं (जो अस्तित्व में आ चुकी हों)।"

पौलुस यह नहीं कहता कि परमेश्वर अभी तक उन वस्तुओं को बनाने में व्यस्त है जो देखी हुई न हो (इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर ने सातवें दिन तक सृष्टि की रचना पूरी कर ली थी (उत्पत्ति 2:1-2)।

वह कहता है कि परमेश्वर जो बातें हैं ही नहीं (जो अभी तक पाई नहीं जाती, जिनका अस्तित्व नहीं है) उनका नाम ऐसे लेता है (कहता है) मानो वे हैं (उनका अस्तित्व है)! "जो बातें है ही नहीं" यह दर्शाता है कि जिनकी योजना परमेश्वर ने पहले से ही बना रखी थी, जो भविष्य में पूरी होने वाली हैं, लेकिन अभी तक उनका कोई अस्तित्व दिखाई नहीं देता (उदाहरण के लिए, कि अब्राहम और सारा के बुढ़ापे में सन्तान उत्पन्न होगी)। क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही यह तय कर लिया था कि ये बातें भविष्य में पूरी होंगी, वह उनका नाम लेता है, जैसे कि वह पहले ही हो चुकी हैं, इसलिए यह निश्चित है कि वे पूरी होगी!

इस प्रकार अब्राहम के लिए, परमेश्वर की प्रतिज्ञा (भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में) उनकी पूर्ति के समान भली हैं। विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय है, जो वास्तव में पूरी होगी (तुलना करें - इब्रानियों 11:11)।

4:18

***प्रश्न 2.* अब्राहम ने कैसे आशा रखी?**

ध्यान दें। रोमियों 4:18 में लिखा है, अब्राहम ने निराशा में आशा रखकर (परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर) विश्वास किया (परमेश्वर के स्वभाव : उसकी सामर्थ्य और विश्वासयोग्यता पर)। "निराशा में भी" शब्द उसकी मानवीय परिस्थितियों का उल्लेख करते हैं जो पद 19 में वर्णित है। उसकी मानवीय परिस्थितियों की सारी आशा समाप्त हो सकती है। लेकिन परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा ने उसकी आशा को जीवित रखा!

"आशा रखकर विश्वास किया" का अर्थ यह नहीं है कि अब्राहम को अपनी आशा पर विश्वास था। अब्राहम के विश्वास का मूल उद्देश्य "उसकी अपनी आशा" नहीं थी, लेकिन उसका विश्वास परमेश्वर पर था! "अब्राहम की आशा" एक पूरी होने वाली इच्छा नहीं थी, लेकिन "एक दृढ़ आशा थी कि निश्चित रूप से कुछ होने जा रहा था।" अब्राहम की आशा और विश्वास दोनों साथ कार्य कर रहे थे। अब्राहम के विश्वास का मूल उद्देश्य स्वयं परमेश्वर था। अब्राहम का विश्वास परमेश्वर के स्वभाव पर आधारित था और उसकी आशा सर्वशक्तिमान परमेश्वर (परमेश्वर कर सकता है) और उसकी विश्वासयोग्यता (परमेश्वर यह करेगा) पर थी। परमेश्वर ने बुढ़ापे में उन्हें एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा की थी और उसका विश्वास था कि जो प्रतिज्ञा की गई है परमेश्वर उसे निश्चित रूप से पूरा करेगा।

4:19-21

प्रश्न 3. **अब्राहम का विश्वास किस प्रकार मज़बूत हुआ?**

ध्यान दें।

(1) अब्राहम का परमेश्वर के प्रति दृष्टिकोण उसके विश्वास को दर्शाता है।

पद 19 में लिखा है, "विश्वास में निर्बल हुए बिना अब्राहम ने अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा को जाना।" अपनी परिस्थितियों को नज़रअन्दाज़ करने की कोशिश करने के बजाय, उसने जानबूझकर अपनी परिस्थितियों का सामना किया और वह यह भली-भाँति जानता था कि उसके साथ-साथ उसकी पत्नी का शरीर भी मरा हुआ-सा है। शारीरिक रूप से वे दोनों सन्तान उत्पन्न करने के लिए बहुत ही बूढ़े हो चुके थे (उत्पत्ति 17:17;18:11)।

लेकिन उसकी परिस्थितियाँ उसको कमज़ोर नहीं बना पाईं। वह अपने विश्वास में दृढ़ रहा, क्योंकि उसने अपने विश्वास को परमेश्वर पर बनाए रखा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर सन्देह नहीं किया।

पद 20-21 में लिखा है कि अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर दोहरा विचार करके कभी-भी सन्देह नहीं किया (डगमगाया नहीं) क्योंकि वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर और विश्वासयोग्यता की ओर अपनी दृष्टि को लगाए रहा। वह पूरी तरह से आश्वस्त था कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में सामर्थी है। उसके दृढ़ विश्वास का रहस्य इस पर था कि परमेश्वर *कौन* है और परमेश्वर ने *क्या* कहा है।

(2) परमेश्वर द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रतिज्ञा के कारण अब्राहम का विश्वास दृढ़ हुआ।

पद 20 यह भी बताता है कि परमेश्वर द्वारा बार-बार की जाने वाली प्रतिज्ञा के कारण अब्राहम का "विश्वास दृढ़ हुआ" (उत्पत्ति 12:1-3; 15:4-6,18-21; 17:1-21)। इसने अब्राहम को ताक़त दी और उसे दृढ़ बनाया।

(3) परमेश्वर को महिमा देने के कारण अब्राहम का विश्वास दृढ़ हुआ।

पद 20-21 में लिखा है, "उसने विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की, और निश्चय जाना कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में सामर्थी है।" अब्राहम के विश्वास की सामर्थ्य उसके व्यक्तिगत या उसके कार्यों पर निर्भर नहीं करती, परन्तु परमेश्वर को महिमा देना यह सुनिश्चित करता है कि जो प्रतिज्ञा उसने की है वह उसे पूरा करने में सक्षम है और ऐसा करेगा भी।

4:22

प्रश्न 4. **"यह (उसका विश्वास) उसके लिए धार्मिकता गिना गया" का अर्थ क्या है?**

ध्यान दें। अब्राहम का विश्वास "उसके लिए धार्मिकता" गिना जाने का अर्थ यह नहीं है कि *अब्राहम का विश्वास करना कोई कार्य* था यह उसके *स्वयं के कार्य* के लिए धार्मिकता गिना गया। अगर ऐसा होता तो अब्राहम परमेश्वर के सामने डींग (घमण्ड) मार सकता था कि इसका न्याय उसके स्वयं के कारण ही हुआ है (यानि उसके विश्वास के कार्य के द्वारा) (रोमियों 4:2)

अब्राहम के विश्वास को कभी भी किसी भी प्रकार के धार्मिक कार्य के रूप में नहीं माना जा सकता है, क्योंकि "अनुग्रह के कारण उसके विश्वास को धार्मिकता गिना गया" (रोमियों 4:16)। उसके विश्वास को "परमेश्वर द्वारा दी गई भेंट" के रूप में धार्मिकता गिना गया, न कि "परमेश्वर के कार्य के रूप में"

(रोमियों 4:4)! "गिना जाने" का अर्थ मुआवज़े या दान से नहीं है! यूनानी शब्द "logizó" एक तकनीकी (न्यायिक) शब्द है जिसका अर्थ "थोपना" कारण ठहराना, "गिनना" और "मानना" है। इसलिए ऐसा न हो कि हम मुआवज़े या दान का हवाला देते हुए "गिना जाने" शब्द का उपयोग करना शुरू कर दें, यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा कि अब्राहम का विश्वास "उसकी धार्मिकता के रूप में माना या जताया गया"। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने अपनी दृष्टि में अब्राहम को 100 प्रतिशत धर्मी ठहराया और उसे 100 प्रतिशत धर्मी माना।

"यह (उसका विश्वास) उसके लिए धार्मिकता गिना गया" का अर्थ ठीक उसी प्रकार है कि जैसे "केवल उसके विश्वास के कारण उसका न्याय करना"। जबकि "धार्मिकता" यीशु मसीह में विश्वासियों के लिए परमेश्वर की आवांछित भेंट है, उनका "विश्वास" एक साधन ("खाली हाथ") है जिसके द्वारा विश्वासियों को व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर का दान मिलता है (अर्थात्, यीशु मसीह की 100 प्रतिशत पूर्ण और सिद्ध धार्मिकता जिसे उसने हमारे लिए अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा अर्जित किया।)

इसके अलावा, यह ऐसा ही विश्वास नहीं है जिसके द्वारा न्याय होता है। अब्राहम का विश्वास किसी भी धर्म के किसी भी "देवता" पर सामान्य विश्वास नहीं था, लेकिन एक बहुत ही विशेष उद्देश्य के साथ एक विशिष्ट विश्वास था। उसका विश्वास बाइबल के परमेश्वर और आने वाले मसीह (यीशु मसीह) की प्रतिज्ञा पर था, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पृथ्वी के सभी परिवारों (राष्ट्रों) को आशीषित करेगा (उत्पत्ति 12:3; उत्पत्ति 22:18)। उसका विश्वास परमेश्वर की सर्वशक्तिमान सामर्थ्य और उसकी विश्वासयोग्यता पर था। और उसके विश्वास का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना था।

4:25

***प्रश्न 5.* यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान दोनों पर हमारा न्याय क्यों निर्भर करता है?**

ध्यान दें। लोगों का न्याय परमेश्वर के अनुग्रह (रोमियों 3:24) और विश्वास (यीशु मसीह और उसके उद्धार के कार्य में) के द्वारा होता है (रोमियों 3:23)। इसलिए *उनका न्याय यीशु की मृत्यु* (क्रूस पर बहाए गए उसके लहू के द्वारा) (रोमियों 5:9) और *उसके मृतकों में से जी उठने के द्वारा हुआ* (रोमियों 4:24-25)। यीशु मसीह *हमारे न्याय के लिए मृतकों में से जी उठे,* मतलब, हमारे पापों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए ताकि परमेश्वर हमारा न्याय कर सके। और यीशु मसीह मृतकों में से जी उठा ताकि *हमारे न्याय को पक्का कर सके*। इसलिए हमारे पुनरुत्थान के लिए मसीह की मृत्यु का उसके पुनरुत्थान के अलावा कोई प्रभाव नहीं हो सकता है। मरे हुओं में से यीशु मसीह का पुनरुत्थान यह साबित करता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह द्वारा दिए हमारे पापों के प्रायश्चित के बलिदान को स्वीकार कर लिया है। यीशु मसीह की मृत्यु और उसके जी उठने को अलग नहीं किया जा सकता। उसकी मृत्यु न्याय करती है और उसका जी उठना न्याय को वास्तविकता बनाता है।

मृत उद्धारकर्ता का कोई प्रभाव नहीं होता है। जो भविष्यद्वक्ता अभी तक अपनी कब्र में मृत पड़े हैं उनका कोई प्रभाव नहीं होता। इसलिए कोई अन्य धर्म किसी व्यक्ति का न्याय नहीं कर सकता। यीशु मसीह एकमात्र उद्धारकर्ता है जो अपनी *मृत्यु के द्वारा* एक विश्वासी के पाप को दूर करता है (1 पतरस 2:24) और परमेश्वर के साथ उसका मेल कराता है (1 पतरस 3:18) और जी उठने के द्वारा न्याय करता है (रोमियों 4:24-25) और उसे नया जीवन देता है (रोमियों 6:4)।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच विचार करके रोमियों 4:17ब-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. रोमियों 4:17ब-25 में लिखें हुए संभव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

4:17. परमेश्वर मृतकों और अधमरे लोगों को जीवन देता है। परमेश्वर को यह अनुमति दें कि यीशु मसीह और उसके उद्धार के कार्यों को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करने के द्वारा वह आपकी आत्मा को अनन्त जीवन दे। परमेश्वर को अपने शरीर को नई ताक़त और कार्य करने की क्षमता देने की अनुमति दें, ताकि आप वह कर सकें जो आप पहले कभी न कर पाए हों।

4:17. परमेश्वर उन बातों का नाम, ऐसे लेता है (जिनका अभी तक अस्तित्व नहीं हैं), कि मानो वे हैं (जो अस्तित्व में आ चुकी हों)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर बिना किसी संदेह के विश्वास करें, क्योंकि परमेश्वर की प्रतिज्ञा उसकी पूर्ति के समान ही बहुत भली है।

4:11,18. बाइबल के परमेश्वर के लक्ष्य को अपना लक्ष्य बनाएँ।

4:18. परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करें और उनके पूरा होने की आशा या उम्मीद को कभी न छोड़ें।

4:19-20. अपनी परिस्थितियों को (चाहे वह कितनी भी मुश्किल क्यों न हो) अपने विश्वास के ऊपर हावी होने की अनुमति न दें। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर बार-बार ध्यान लगाकर परमेश्वर को आपके विश्वास को दृढ़ करने की अनुमति दें।

4:20-21. निरन्तर बढ़ते रहें और परमेश्वर के स्वभाव को बेहतर रूप से जानने की कोशिश करते रहें क्योंकि परमेश्वर के प्रति आपका दृष्टिकोण आपके विश्वास को दर्शाता है।

4:23-24. अपने आपको लगातार यह याद दिलाते रहें कि पुराने नियम में पाए गए परमेश्वर के वचन न केवल पुराने नियम के समय में रहने वाले लोगों के लिए हैं बल्कि वह वचन नए नियम के समय के लोगों के लिए भी हैं (इस प्रकार आपके लिए भी) (2 कुरिन्थियों 1:20)!

4:25. अपने आपको लगातार यह याद दिलाते रहें कि यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हम धर्मी ठहराए गए हैं और उसके पुनरुत्थान ने इस बात को साबित करके पक्का कर दिया है।

2. रोमियों 4:17ब-25 में लिखें हुए व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैंने यह महसूस किया कि मेरे विश्वास की दृढ़ता परमेश्वर के प्रति मेरे दृष्टिकोण से निर्धारित होती

है। इसलिए मैं यह दृष्टिकोण बनाए रखना चाहता हूँ कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और उसने जो प्रतिज्ञा की, *उसे वह पूरा करेगा,* और यह दृष्टिकोण भी कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और जो प्रतिज्ञा उसने की उसे वह पूरा *कर सकता है*। मुझे इसका भी एहसास है कि मैं अपने विश्वास से सशक्त हो सकता हूँ। मुझे उस समय सामर्थ्य मिलती है जब मैं परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं को पकड़े रहता हूँ जो परमेश्वर ने मुझसे बाइबल में की हैं और मैं इस बात से आश्वस्त हूँ कि जो प्रतिज्ञाएँ उसने की हैं उन्हें पूरा करने में वह सक्षम है (इफिसियों 3:20)।

मैंने यह महसूस किया कि मेरे और अब्राहम के विश्वास में समानताएँ हैं। मैं भी जीवित परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ। मैं भी उस परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ जो मुर्दों को जिलाता हैं। उसने मुर्दों में से यीशु मसीह को जिलाया। और मैं परमेश्वर द्वारा अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा पर भी विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह के द्वारा जो मर गया और फिर जी उठा, परमेश्वर पृथ्वी पर रहने वाले परिवारों को आशीष दे रहा है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 4:17-25 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5 प्रार्थना (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)*

दूसरों के लिए प्रार्थना

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6 तैयारी (2 मिनट) *(सौंपा गया कार्य)*

अगले अध्याय के लिए

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 4:17-25 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 1,2,5 और 8** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(5) कलीसिया में महिमा : इफिसियों 3:20-21।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 15:1-7 में दिये गये **"खोई भेड़"** के दृष्टान्त और लूका 15:11-32 में दिये गये **"उड़ाऊ पुत्र"** के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।

6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 17

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 1,2,5 और 8**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 1,2,5 और 22) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(5) इफिसियों 3:20-21**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।
(5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21। अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टांत)* **खोई हुई भेड़ और उड़ाऊ पुत्र**

लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त
और लूका 15:11-32 में उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में है

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य जीवन की कहानी या चित्रण है जो आत्मिक सत्य को सिखाती है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए आम जगह और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए छह दिशा-निर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन करेंगे (नियमावली 9 में परिशिष्ट 1 देखें)।

क. लूका रचित सुसमाचार में – खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 15:1–7।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

चरवाही करना या चराना। यीशु ने फिलिस्तीन में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की यात्रा की और अक्सर उन क्षेत्रों से गुजरे जहाँ चरवाहे अपनी भेड़ों को चराया करते थे। एक चरवाहे के चारों ओर चरने वाली भेड़ों का झुण्ड बहुत ही परिचित दृश्य था। लोग एक चरवाहे की ज़िम्मेदारियों को जानते थे। उनकी ज़िम्मेदारी थी कि भेड़-बकरियों को हरे-भरे चारागाहों और सुखदाई जल के पास ले जाएँ जहाँ वे दिन के समय चर सकें, और उन्हें शेर, भालू, भेड़िये और चोरों से बचाएँ, मेम्नों को सम्भालें, खोई हुई भेड़ों को खोजें और उन्हें झुण्ड में वापस ले आये।

एक भेड़ को लेकर चलना। मध्य पूर्वी चलन के अनुसार एक भेड़ को ले जाने का विशेष तरीका उसे अपने कन्धे पर रखकर, उसकी गर्दन और उसके चारों पैरों सहित उसकी छाती को पीठ के पीछे लगा कर चलना होता था।

---

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15:1–2 में पायी जाती है।

पिछले अवसर में, फरीसियों और उनके शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों और पापियों के प्रति उसके दोस्ताना व्यवहार के बारे में चेलों से शिकायत की (लूका 5:29–30)। अब उन्होंने ऐसे लोगों के साथ जुड़ने के लिए यीशु की आलोचना की। फरीसियों और शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों का अपमान किया, क्योंकि वे उन सभी को लालची, जबरन वसूली करने वाले और इस्राएल के गद्दार मानते थे। उन्होंने "पापियों" की ओर भी देखा, जो बुरे लोग थे। वे ऐसे लोग थे जिन्होंने इस्राएल के इन शास्त्रियों द्वारा स्थापित मानकों के अनुसार जीने की कोशिश भी नहीं की। शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ जुड़ाव को "घृणित" माना। वे उनके साथ भोजन करने पर भी विचार करते थे, विशेष रूप से उनके स्वच्छ भोजन के नियमों के अनुसार, इसे वह अपमानजक समझते थे (लूका 5:30)! लेकिन यीशु इन लोगों के साथ

जुड़े रहे। यहाँ तक कि, उसने मत्ती, चुंगी लेने वाले को अपने चेले के रूप में चुना। इसके विपरित, चुंगी लेनेवाले और अन्य पापी लोग शास्त्रियों के प्रति यीशु के स्वभाव के अन्तर को आसानी से पहिचान गए। इसलिए, वे यीशु को अपना मित्र मानते थे, और वे अक्सर यीशु की शिक्षाओं को सुनने के लिए एकत्रित हुआ करते थे।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 15:4-6 में लिखी हुई है।

यीशु ने अपनी भेड़ों के साथ एक चरवाहे की परिचित दृष्टि का उपयोग यह सिखाने के लिए किया कि जब व्यक्ति को नाश होने का ख़तरा होता है तो उसे क्या करना चाहिए। सवाल यह है कि क्या एक खोई हुई भेड़ को नज़रअन्दाज़, या भूलना या अपमानित किया जाना चाहिए या उसे ढूँढ़ना चाहिए?

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 15:7 में दिया गया है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं? *ध्यान दें।*

भेड़। पूरी बाइबल में "भेड़" एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतीक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि चरवाहे का अपनी भेड़ के साथ और परमेश्वर का अपने लोगों के साथ जो सम्बन्ध है उनमें समानताएँ हैं। भेड़ों में भटकने की प्रवृत्ति होती है (यशायाह 53:6), परन्तु जिनको वे जानती हैं यानी अपने चरवाहे को, उनके पास उसका पालन करने की क्षमता भी होती है (यूहन्ना 10:5)। भेड़ अपने शत्रुओं के विरूद्ध असहाय होती हैं और उन्हें अपने चरवाहे की सहायता की आवश्यकता होती है (यूहन्ना 10:11-13)। "खोई हुई भेड़" निश्चित रूप से एक प्रासंगिक विवरण है और पाप में खोए हुए व्यक्ति हो दर्शाती है।

निन्यानवें भेड़। यीशु ने इनकी व्याख्या एक "धर्मी व्यक्ति" के रूप में की है जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह एक प्रासंगिक विवरण है। व्याख्या करने वालों ने निन्यानवें भेड़ की व्याख्या "परमेश्वर की वाचा के वफ़ादार सदस्यों" के रूप में की है, जो आत्मिक रूप से परिपक्व हो चुके हैं जो अब भटक नहीं सकते। उदाहरण के लिए, लोग तीमुथियुस को पसन्द करते हैं। उन्होंने यह धारणा इसलिए बनाई कि परमेश्वर उनसे प्रसन्न होता है, हालाँकि जब कोई पापी मन फिराता है तो वह "ज़्यादा" आनन्दित होता है।

हालाँकि, मूलतः यूनानी शब्दों में केवल "की अपेक्षा" शब्द है और तुलना को "अधिक" या "कि बजाय" के रूप में लेना चाहिए। क्योंकि यीशु निन्यानवे की बजाय उस एक भेड़ के संदर्भ में बताते हैं जो पश्चाताप करती है, पद 7 का अर्थ यह है कि "परमेश्वर एक मन फिराने वाले पापी के विषय में उतना ही आनन्दित होता है, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने

की आवश्यकता नहीं।" जैसे लूका 5:31-32 में, यीशु फरीसियों, शास्त्रियों और उनके शिष्यों के बारे में सोच रहे हैं। वे स्वयं को परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी मानते थे क्योंकि वे व्यवस्था का पालन करने की कोशिश करते थे और इसलिए उन्हें "डाक्टर" यीशु मसीह की कोई आवश्यकता नहीं थी, जो खोए हुओं को बचाने के लिए आया था। वे अपनी धार्मिकता के विषय में आश्वस्त थे और दूसरों को तुच्छ जानते थे (लूका 18:9)। केवल यह व्याख्या लूका 15:1-2 में इस दृष्टान्त के परिचय को ठीक साबित करती है। निन्यानवे भेड़ें उन लोगों को दर्शाती है जो चुंगी लेनेवाले और पापियों के साथ मेल रखने के लिए यीशु की आलोचना करते है। वे केवल स्वयं की दृष्टि में धर्मी हैं, लेकिन निश्चित रूप से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं थे। यूहन्ना 9:39 से तुलना करें।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 15:1-7 में दिए गए खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त हमें "परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के विषय में बताता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर पिता खोए हुए लोगों के प्रति अपनी करूणा से भरे प्रेम के द्वारा उन लोगों को ढूँढ़ता और पाता है। वह उन लोगों के प्रति आनन्दित होता है जो पश्चाताप करके मन फिराते हैं।"

परमेश्वर खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने से मना नहीं करता जिस प्रकार फरीसी और शास्त्री कर रहे थे। वह उन्हें आधे-अधूरे मन से नहीं खोजता, जिस प्रकार उनकी देखभाल करने वाला व्यक्ति करता है। नहीं, वह एक खोए हुए व्यक्ति को लगातार तब तक ढूँढ़ता है जब तक कि वह उसे मिल न जाए।

खोए हुए को ढूँढ़कर बचाना, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग यीशु मसीह के द्वारा दिखाए गए कदमों पर चलते हैं और खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने और उन्हें बचाने के लिए बाहर जाते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

पढ़ें भजन 23; यशायाह 40:11; यहेजकेल 34:15-16।

खोजे व चर्चा करें। बाइबल के इन अनुच्छेदों द्वारा जो शिक्षा मिलती है उसकी तुलना इस दृष्टान्त से किस प्रकार की जा सकती है?

ध्यान दें

परमेश्वर एक चरवाहे के समान है। वह अपनी भेड़ को हरी चराइयों और सुखदाई झरने के पास ले चलता है। वह उन्हें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर और गहरे नालों पर ले जाकर चराता है। वह मेम्ने को अँकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे-धीरे ले चलेगा। वह स्वयं खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ता है और निकाली हुई को लौटा ले आता है। वह घायलों के घाव बाँधता और बीमार को बलवन्त करता है।

ख. उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 15:11-32

1. दृष्टान्त की कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उन वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त के चार भाग हैं :

(1) **उड़ाऊ पुत्र ने अपना घर छोड़ दिया।** छोटा भाई घर में रहकर थक गया था। अन्य युवाओं के समान, वह अपने माता-पिता के नियंत्रण से मुक्त होना चाहता था। वह इस बात से आश्वस्थ था कि जब वह अकेला रहेगा, तो अपने माता-पिता की दृष्टि से भी दूर रहेगा, फिर जो कुछ भी चाहे, वह कर सकता है और यही "आज़ादी" उसे "आनन्द" दे सकती थी। अपनी योजना को पूरा करने के लिए उसे पैसों की आवश्यकता थी। वह शायद जानता था कि कानून के अनुसार (व्यवस्थाविवरण 21:17), उसके पिता के मरने के बाद, पिता की एक तिहाई सम्पत्ति उसकी होगी। छोटा पुत्र ऐसा होने तक इंतजार नहीं करना चाहता था, वह अपना हिस्सा अभी चाहता था। इसलिए, शायद, उसके पिता ने सम्पत्ति का कुछ हिस्सा बेचकर नक़दी में परिवर्तित किया होगा। छोटे पुत्र ने शायद इस बात पर विचार नहीं किया कि इससे उसके पिता और परिवार के बाकी लोगों पर क्या असर पड़ेगा। उसके इस बर्ताव ने, कि उसकी यह आज़ादी उसके अपने पिता से लगातार मिल रहे प्रेम और सुझाव से बेहतर है, अपने पिता को बहुत दुःखित किया होगा। सम्पत्ति के बँटवारे के बाद छोटे पुत्र ने अपने पिता के घर को छोड़ दिया और दूसरे देश में जाकर बस गया।

(2) **उड़ाऊ पुत्र दूर देश जाकर रहने लगा।** उड़ाऊ पुत्र का यह व्यवहार मूर्खता से भरा हुआ था। वह पुत्र सब कुछ, जो उसका था, एकत्रित करके दूर देश को चला गया। यदि उसकी यह योजना सफल नहीं हुई, और उसे घर वापस लौटना पड़े, तो वह पीछे कुछ भी छोड़कर नहीं गया था। इस दूर देश में, उसने अपनी पूरी सम्पत्ति उड़ा दी और उसके पास कुछ भी न बचा। उसकी परिस्थिति को और बुरा बनाने के लिए, वहाँ अकाल पड़ा और अब वह किसी और से मदद की उम्मीद नहीं कर सकता था। अन्त में वह उस देश के निवासियों के यहाँ जा पड़ा और सूअरों को चराने लगा। यहूदी द्वारा

अशुद्ध जानवरों की देखभाल होना बहुत ही अपमानजनक और घृणा की बात थी। शाम को शायद सूअरों को दूसरे लोग खिलाया करते होंगे। उन्हें खाने के लिए फलियाँ दी गईं। हालाँकि, जब वह स्वयं भूखा था, तो किसी ने भी उसे खाने को कुछ नहीं दिया।

आखिरकार, "वह अपने आपने में आया"! इसक मतलब यह है कि घर छोड़ने के बाद उसके साथ जो कुछ भी हुआ, उसके सामने यह सवाल था कि क्या वह स्वयं इन परिस्थितियों के लिए ज़िम्मेदार नहीं था, या इन सब का दोषी कौन है। उसने इस तथ्य के बारे सोचा कि उसके पिता के घर में काम करने वाले मज़दूरों के पास भरपेट भोजन था और वह भूखा है। अपने अपमान, भूख और घर से बाहर रहने के दुःख का एहसास करते हुए वह उस नतीजे पर पहुँचा कि घर को छोड़ देना केवल नासमझ या ग़लती नहीं थी, लेकिन निश्चित रूप से "एक पाप था" (एक ऐसी घटना जिसने परमेश्वर द्वारा निर्धारित उसके जीवन की योजना को धुँधला बना दिया था)! यह न केवल उसके पिता के, बल्कि उससे भी कहीं अधिक "स्वर्ग" (यानी परमेश्वर के विरूद्ध) के विरूद्ध पाप था! पश्चाताप करते हुए, उसने यह महसूस किया कि वह कितना कृतघ्न, स्वार्थी और मूर्ख था!

(3) उड़ाऊ पुत्र का उसके पिता ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। कुछ पवित्र संकल्प लेना बहुत ही मुश्किल होता है। लेकिन इस युवक ने वही किया जिसे करने का संकल्प इसने लिया था। वह अपने घर वापस लौट आया। घर तक की दूरी शायद लम्बी थी, वह कमज़ोर था और यात्रा कठिन थी। लेकिन वह दृढ़ रहा! इस बीच, उसका पिता उसे भूला नहीं था और न ही उसे त्यागा था! इसकी बजाए वह अपने पुत्र के घर वापस लौटने की आशा लगाए रहा।

जब उसके पिता ने दूर से ही उसे आते देखा तो वह दया और तरस से भर गया। वह उसे गले लगाने के लिए उसकी ओर दौड़ा और उसे चूमा। पिता ने उसे सहानुभूति दी, अर्थात्, उसने स्पष्ट रूप से देखा कि उसका पुत्र कितना थका हुआ और निराश था और अपने पुत्र की वापसी को उसने अनुकूल रूप में लिया। उसने यह महसूस किया कि उसके पुत्र ने पश्चाताप किया है और जो कुछ भी उसने किया उसके लिए वह बड़ा ही खेदित है। हालाँकि, संसार के उस हिस्से में एक बुजूर्ग व्यक्ति द्वारा दौड़ा जाना गरिमा की बात नहीं मानी जाती थी, लेकिन यह पिता फिर भी दौड़ा! क्योंकि वह अपने खोए हुए पुत्र का स्वागत करने के लिए उत्सुक था! उसने अपने पुत्र के चारों ओर अपनी बाहों को फैलाया, जो यह दर्शाता है कि वह अपने पुत्र को पहले ही माफ़ कर चुका था। उसका चूमा जाना इस बात का प्रतीक है कि वह अपने पुत्र से स्नेह करता है और परिवार में उसे फिर से स्वीकार करता है।

उड़ाऊ पुत्र ने स्वर्ग में परमेश्वर के और अपने पिता के विरूद्ध किए गए अपने पाप का अंगीकार किया। उसने यह स्वीकार किया कि वह अब अपने पिता का पुत्र कहलाने के योग्य नहीं था। उसने अपने पिता से यह कहने का इरादा किया था कि वह उसे अपने एक मज़दूर के समान रख ले (लूका 15:19,21), परन्तु उसके पिता ने उसे ऐसा कहने का अवसर ही नहीं दिया!

पिता का आनन्द और उसकी क्षमा असीम थी कि वह चाहता था कि उसके पुत्र को एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में समझा जाए! "सबसे अच्छे वस्त्र" एक प्रतिष्ठित स्थिति का प्रतीक था, "अंगूठी" अधिकार का प्रतीक थी, और "जूतियाँ" यह दर्शाती थी कि वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है न कि दास। "पला हुआ बछड़ा" केवल विशेष अतिथि के आने के अवसर पर मारा जाता था। वहाँ एक समारोह मनाया गया! पद 24 में पिता के शब्दों की व्याख्या आत्मिक अर्थ में की जानी चाहिए (इफिसियों 2:1;

लूका 19:10)। छोटा पुत्र "आत्मिक रूप से मर गया और आत्मिक रूप से जीवित भी हो गया था। वह आत्मिक रूप से खो गया था और आत्मिक रूप से मिल भी गया था!"

(4) उड़ाऊ पुत्र को उसका बड़ा भाई निर्दयी रूप से अस्वीकार कर देता है। कहानी का यह भाग दृष्टान्त के अन्तर्गत आता है। बड़े पुत्र का यह व्यवहार अपने पिता के व्यवहार के विपरित है। यीशु स्पष्ट करना चाहते थे कि जब बड़े भाई ने निर्दयता से अपने छोटे भाई को अस्वीकार कर दिया, तब पिता ने उत्साहपूर्वक अपने पुत्र का स्वागत किया। इसलिए यीशु ने बड़े भाई के व्यवहार की निन्दा की लेकिन पिता के व्यवहार की प्रशंसा की। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें :

- बड़ा पुत्र *नाराज़* हो गया, क्योंकि वह उचित और न्यायपूर्ण (कानून) रूप से सोच रहा था, जबकि पिता पश्चाताप करने वाले एक पापी के मन फिराने से आनन्दित था। पिता बड़ी दया के साथ अपने बड़े पुत्र के पास आकर यह विनती करने लगा कि जो सही है वही किया जाना चाहिए (उत्पत्ति 4:6-7), यानि अपने पश्चाताप करने वाले छोटे भाई का स्वागत करना चाहिए।
- बड़ा पुत्र *मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला व्यक्ति था।* उसने अपने पिता के साथ अपने सम्बन्धों की व्याख्या करते हुए यह कहा कि "मैं इतने वर्षों से आपकी सेवा कर रहा हूँ"। बड़ा पुत्र इस बात से असन्तुष्ट था और उसने सारी उम्र गुलामी की भावना से सेवा की थी (गलातियों 1:10 से तुलना करे)।
- बड़ा पुत्र स्वधर्मी था, उसने यह दावा किया कि उसने कभी भी अपने पिता की आज्ञा को नहीं टाला। लेकिन उसे इस बात का एहसास नहीं था कि एक पुत्र से केवल एक बाहरी आज्ञाकारिता की उम्मीद की जाती है।
- बड़ा पुत्र *ईर्ष्या* करता था। उसने कहा, " कि आपने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। परन्तु उसके लिये आपने पला हुआ बछड़ा कटवाया"। वह यह भूल गया कि पिता ने पहले से ही दो-तिहाई सम्पति उसे सौंप दी थी और वह उसे आनन्द से और कुछ भी दे सकता था।
- बड़े पुत्र ने अपने भाई को *अस्वीकार* कर दिया। उसने उसे "अपना भाई" नहीं, बल्कि "आपका यह पुत्र" कहा!
- बड़े पुत्र ने *सच को झूठ में बदल दिया।* उसने अपने भाई पर "पिता की सम्पत्ति" छीनने का आरोप लगाया। लेकिन वह भूल गया कि उसके छोटे भाई ने "अपनी ही सम्पत्ति" ली थी, क्योंकि पिता ने उसके हिस्से की सम्पत्ति को पहले ही उसे दे दिया था।
- बड़ा बेटा *निंदक* था। उसने अपने भाई से बहुत ही बदतमीज़ी से बात की, जैसा कि "वेश्याओं के साथ" समय बिताना।

लेकिन अपने बड़े पुत्र की शिकायतों के बावजूद, पिता ने अपना व्यवहार या निर्णय नहीं बदला! उसने अपने बड़े पुत्र से फिर से वही कहा जो उसने अपने सभी सेवकों से कहा था, " क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है।" इसलिए आनन्द मनाना ही सही और उचित कार्य है! उसने कहा, "आनन्द करना और इसमें मगन होना चाहिए!"

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो

सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या *उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15:1-2 में पायी जाती है।

यह खोई हुई भेड़ों के दृष्टान्त और लूका 15:1-10 में खोए हुए सिक्के के दृष्टान्त के समान है। लूका के सुसमाचार में लिखे हुए खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त को देखें।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका अध्याय 15:11-22 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग कहानी में दिया गया है।

इस दृष्टान्त की व्याख्या लूका 15:20-24 और 32 में दी गई है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें

(दृष्टान्त को एक रूपक (उपवाक्य) के रूप में मानना।

कुछ अनुवादकों ने दृष्टान्त को बताने के निम्नलिखित तरीक़े बताए हैं। क्योंकि इनकी व्याख्याएँ संदर्भ के द्वारा नहीं निकाली जा सकती, उन्हें अस्वीकार कर देना चाहिए :

सिंकदरिया के क्लेमेंट (150-216) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार से की : "अच्छे वस्त्र" अमरता को दर्शाते हैं, "अंगूठी" महिमा को दर्शाती है, "जूतियाँ" सीढ़ी और रथ को दर्शाती हैं जो उसे स्वर्ग की ओर ले जाएँगे, "पला हुआ बछड़ा" मसीह, परमेश्वर का मेम्ना और "पर्व" प्रभु भोज है।

रिचर्ड सी. ट्रेंच (1807-1886) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार से की : "सबसे अच्छे वस्त्र" मसीह की धार्मिकता या आत्मा की पवित्रता को दर्शाते है और बड़ा भाई प्रेरित युग के यहूदियों को दर्शाता है जो मेल-मिलाप के महान उत्सव में हिस्सा नहीं लेंगे जिसमें परमेश्वर के राज्य में विश्व की अन्यजातियों का स्वागत किया जा रहा था (इफिसियों 2:14-15; 3:2-6 से तुलना करें)।

झूठे शिक्षकों का दावा है कि पापों का प्रायश्चित आवश्यक नहीं है। वे कहते हैं कि यह दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर मध्यस्थ यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के बिना किसी भी व्यक्ति को क्षमा कर सकते हैं। वे कहते हैं कि लोगों को केवल परमेश्वर के पास वापस लौटने की आवश्यकता है। हालाँकि, बाइबल स्पष्ट रूप से यह सिखाती है कि : "बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22; रोमियों 3:21-25अ) (यूहन्ना 6:28-29 से तुलना करें)।

(1) प्रासंगिक विवरण की व्याख्या :

यीशु स्वयं दृष्टान्त के विषय में कहते है कि परमेश्वर पश्चाताप करने वाले पापियों का स्वागत कैसे करते है और दूसरी ओर यहूदियों के धर्म गुरूओं ने कैसे अस्वीकार कर दिया। इसलिए, केवल पिता और दोनों पुत्र विशेष व्यक्तियों को दर्शाते हैं।

पिता। यह त्रिएक प्रेम से भरे स्वर्गीय पिता, जो पापियों को बचाना चाहते हैं, को दर्शाता है। परमेश्वर न केवल पश्चाताप करने वाले पापियों के पापों को क्षमा करते है बल्कि न्याय के दिन उनके पापों को फिर से याद न करने का भी वायदा करते हैं (इब्रानियों 8:12)। और वह उन दानों को भी वापस देते हैं जो उन्होंने पापियों (सभी विश्वासियों की विरासत : अनन्त जीवन, नई सृष्टि, आदि) से छीन लिए थे।

उड़ाऊ पुत्र। यह हर पापी की स्थिति का प्रतीक है जो अपनी पापी स्थिति से घृणा करता है और परमेश्वर की कृपा की ओर लौट आता है। इस संदर्भ में निश्चित रूप से चुँगी लेनेवाले और पापी शामिल थे, जिन्होंने यीशु में एक सच्चा मित्र पाया था और उसकी शिक्षाओं को उत्सुकता से सुन रहे थे।

बड़ा पुत्र। यह स्पष्ट रूप से स्वयं को धर्मी कहने वाले और शास्त्रियों की ओर इशारा करता है, जिन्होंने स्वयं को सही ठहराया, और चुंगी लेनेवालों और पापियों को तिरस्कृत और करूणारहित कर दिया। यह उन लोगों की बुरी भावना और व्यापकता को दर्शाता है जो खोए हुए पापियों के प्रति परमेश्वर की करूणा को नापसन्द करते हैं।

इस दृष्टान्त की कहानी के अन्य सभी विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया गया है और इनका प्रयोग केवल कहानी को रोचक बनाने के लिए किया जाता है। इसलिए हमें अन्य विवरणों का आकलन नहीं करना चाहिए (उनका विशेष अर्थ नहीं निकालना चाहिए)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।.

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 15:11-32 में दिया गया उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के विषय में बताता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "जबकि इस्राएल के धर्मगुरूओं ने अधीरता और कुढ़कुढ़ाहट के साथ पश्चाताप करने वाले पापियों को अस्वीकार कर दिया था, तब बाइबल के परमेश्वर ने अपने राज्य में इन लोगों को स्वागत उत्साहपूर्वक किया। वह अभी भी उनका स्वागत करता है।"

खोए हुए लोगों को बचाना परमेश्वर के राज्य की मूलभुत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह द्वारा बताए मार्गों पर चलते है और पश्चाताप करने वाले पापियों को अपने हृदय और अपनी कलीसिया में उत्सुकता से स्वागत करते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) लूका अध्याय 15 में पाये जाने वाले तीन दृष्टान्त।

चर्चा करें। लूका 15 में पाये जाने वाले तीनों दृष्टान्तों की तुलना एक दूसरे से किस प्रकार की जा सकती है?

यह सुझाव दिया गया है कि इन तीनों दृष्टान्तों का क्रम एक अनुपात है : सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक : *सौ में से* एक भेड़ खो जाती है; *दस में से* एक सिक्का खो जाता है और *दो में से* एक पुत्र खो जाता है। हमें नहीं मालूम कि इस क्रम का कोई महत्व है या नहीं। फिर भी, उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त सबसे लम्बा और सबसे ज़्यादा हृदय को छू लेने वाला भी है।

तीनों दृष्टान्तों का मुख्य विषय यह है कि वे खोए हुए लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर के असीम प्रेम को दर्शाते हैं। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर तब तक उन्हें ढूँढ़ता रहता है जब तक कि वे उन्हें मिल नहीं जाते, किस प्रकार वह उन्हें वापस लेकर आता है, जब कोई पापी वास्तव में सच्चाई से पश्चाताप करता है तो परमेश्वर किस प्रकार आनन्दित होता है और किस प्रकार उनके जीवन को ज्यों का त्यों कर देता है!

(2) 1 यूहन्ना 2:9-11 ।

चर्चा करें। बाइबल के इस पाठ की तुलना खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त से की जा सकती है?

आपके भाई से आपका सम्बन्ध यह दर्शाता है कि वास्तव में आप कौन हैं!

स. परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षा क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें *क्या बनना* या *क्या करना* सिखाता है?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को, परमेश्वर के पिता रूपी हृदय को जानना चाहिए। इन दृष्टान्तों का मुख्य उद्देश्य है कि यह हमें बताते हैं कि वास्तव में परमेश्वर कौन है और जब कोई पापी पश्चाताप करता है तो वह उनके साथ क्या करता है। खोए हुए के लिए परमेश्वर का असीम प्रेम

उसे ढूँढ़ने और उसे फिर से ज्यों का त्यों बनाने का कारण बनता है। तीनों दृष्टान्त प्रत्येक पापी को अपने हृदय और जीवन को परमेश्वर के सामने समर्पित करने के मार्ग को आसान बनाते हैं।

(2) मसीहियों को खोए हुओं को जीतने की इच्छा विकसित करनी चाहिए।

इन दृष्टान्तों के द्वारा मुख्य शिक्षा यह मिलती है कि वे हमें बताते हैं कि परमेश्वर मसीहियों से क्या करने और बनने की अपेक्षा करता है। मसीहियों को बाहर जाकर खोए हुओं की तलाश करके आनन्द के साथ उन्हें परमेश्वर के पास लाना चाहिए और पश्चाताप करने वाले पापियों का अपने जीवन और कलीसिया में स्वागत करना चाहिए।

लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त और लूका 15:8-10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के बारे में सिखाता है।

इन दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "परमेश्वर के पास स्वर्गदूतों की अनगिनत संख्या है और जिनके बीच वह निवास करता है, वह खोए लोगों (पापियों) को ढूँढ़ता है और जब भी कोई पापी पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर अपने मन को फिराता है, तो वह बहुत आनन्दित होता है।"

"खोए हुओं को ढूँढ़कर बचाना" परमेश्वर के राज्य की मुख्य विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य में लोग यीशु द्वारा दिखाए गए मार्गों पर चलते हैं और खोए हुए लोगों को ढूँढ़ते है जिन्हें मसीह बचा सकता है।

(3) विश्वासयोग्य मसीहियों को पापियों के मन फिराने के द्वारा कुढ़कुढ़ाना नहीं चाहिए।

लूका 15:11-32 में उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त यह भी सिखाता है कि मसीहियों को फरिसियों (जो बड़े पुत्र द्वारा दर्शाया गया) के समान नहीं बनना चाहिए, जिन्होंने परमेश्वर द्वारा खोए हुए लोगों का स्वागत करने का विरोध किया। ऐसे फरीसी आज भी मसीहियों के बीच पाए जाते हैं। वे परमेश्वर द्वारा खोए हुए लोगों का स्वागत करने का विरोध करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह अन्यायपूर्ण है कि जब कोई बुरा व्यक्ति मन फिराता है तो उसके लिए आनन्द मनाया जाए बजाय उसके जो सदैव परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की कोशिश करता रहता है। वे ऐसे लोगों से ईर्ष्या करते हैं, संभवतः क्योंकि वे गुप्त रूप से उड़ाऊ पुत्र के पापपूर्ण जीवन का अनुभव करना चाहते है या क्योंकि वे गुप्तरूप से परमेश्वर के सबसे पसन्दीदा पुत्र होने की इच्छा रखते हैं। आमतौर पर यह देखा गया है कि खोए हुए व्यक्ति की पापपूर्ण जीवनशैली उसके आकर्षण का कारण हो सकती है, लेकिन हमें यह महसूस करना चाहिए कि इससे उस व्यक्ति को उद्धार पाने का कोई आश्वासन नहीं मिलता और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के अनुभव, सहयोग और प्रतिदिन मिलने वाले अनुग्रह को त्यागना पड़ा (भजन 73 से तुलना करें)। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दुष्ट (अधर्मी) कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं कर पाएगा (यशायाह 57:20-21), जबकि धर्मी जन लगातार परमेश्वर की भलाई और परिपूर्णता का अनुभव करता रहेगा (भजन 84 से तुलना करें)।

(4) मसीहियों को अन्य मसीहियों की निन्दा या उन्हें अस्वीकार करने से बचना चाहिए।

लूका अध्याय 15:11-32 में लिखा हुआ उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त यह निम्नलिखित बातें भी सिखाता है। यद्यपि बड़े पुत्र ने निन्दा और अस्वीकृति के कठोर दृष्टिकोण को अपनाया, लेकिन पिता ने छोटे पुत्र को अस्वीकार नहीं किया! यह दृष्टान्त एक ऐसे दर्पण के समान है जिसके द्वारा मसीही जन दूसरे मसीहियों के प्रति अपने दृष्टिकोण को देख सकते हैं। कुछ ऐसी परिस्थितियों में, मसीही जन दूसरों मसीहियों के प्रति निन्दा, अस्वीकृति या आलोचना के कठोर दृष्टिकोण को अपना लेते हैं। कुछ मसीही

जन हैं जो स्वयं को न्यायी या धर्मी समझते हैं और शायद परमेश्वर के सुसमाचार को भूल चुके हैं कि यह संदेश खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में है। अन्य दृष्टिकोण से देखें तो यह मसीही "खो" चुके हैं। उन्होंने पश्चाताप करने वाले पापियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम की भावना को खो दिया है। एक मसीही जन को अन्य मसीहियों से प्रेम करना चाहिए और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कराने और अन्य जातियों और न्यायी और स्वयं को धर्मी मानने वाले मसीहियों से प्रेम करने में सहायता करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, हम मसीहियों को अन्य मसीहियों की निन्दा या अस्वीकृति के दृष्टिकोण से छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

जबकि लूका 15:1–7 में लिखा हुआ है कि खोई हुए भेड़ का दृष्टान्त "संसार के सभी खोए हुए गैर–मसीहियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम" के विषय में सिखाता है, मत्ती 18:12–14 में खोई भेड़ का दृष्टान्त "संसार के सभी खोए हुए मसीहियों" के विषय में सिखाता है। मत्ती के सुसमाचार में खोई हुई भेड़ के दृष्टांत में दी गयी मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "परमेश्वर की इच्छा यह है कि उसकी एक भी भेड़ नाश न हो (यूहन्ना 17:12). अंततः नए सिरे से जन्म लेने वाले प्रत्येक मसीही जन पूरी तरह से बचाए जाएंगे। यही कारण है कि परमेश्वर भी ऐसे मसीहियों की तलाश में रहता है जो भटके हुए हैं ताकि वे उन्हें वापस फेर लाये।
"खोई हुई भेड़ को ढूँढ़कर वापस लाना और उसे बचाना", परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग यीशु मसीह के द्वारा दिखाए गए मार्गों पर चलते हैं और उन लोगों को ढूँढ़ने के लिए बाहर जाते हैं जो मसीही विश्वास और मसीही कलीसिया से भटक गए हैं उन्हें ढूँढ़कर वापस लाते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***(प्रतिक्रियाएँ)*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी–छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) ***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "खोई भेड़ के दृष्टान्त" और "उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 10,11,14 और 15** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. स्मरण करना। **'ज' श्रृँखला "मसीही कलीसिया" का पुनरावलोकन करें**। (1) कलीसिया का स्वभाव। 1 पतरस 2:5, (2) कलीसिया में होने वाली गतिविधियाँ। प्रेरितों के काम 2:42, (3) कलीसिया की सेवकाइयाँ। इफिसियों 4:12-13, (4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28, (5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 5:1-11।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 18

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 10,11,14 व 15**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 10,11,14 और 15) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **'ग' – श्रृँखला का पुनरावलोकन करें**

दो-दो करके **ग-श्रृँखला "मसीही कलीसिया" का *पुनरावलोकन*** करें।

(1) कलीसिया का स्वभाव। 1 पतरस 2:5। तुम भी, आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिस से याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहण हो।

(2) कलीसिया में गतिविधियाँ । प्रेरितों के काम 2:42। और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

(3) कलीसिया में सेवकाइयाँ। इफिसियों 4:12-13। जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।

(4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28। इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो; जिससे पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

(5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21। अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों की पत्री)* **रोमियों 5:1-11**

परिचय। **रोमियों 5:1-11** का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों की विधि का उपयोग करें।

रोमियों 3:19-20 में, पौलुस ने अपने अध्ययन का निष्कर्ष निकाला है कि कोई भी अन्यजाति या यहूदी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं है और हर एक व्यक्ति परमेश्वर के सामने निंदनीय (अपराधी) (यूहन्ना 3:18,36 से तुलना करें) है। वह यह भी निष्कर्ष निकालता है कि व्यवस्था का पालन करने से धार्मिकता को प्राप्त नहीं किया जा सकता। रोमियों 3:21-31 में, पौलुस सिखाता है कि धार्मिकता कैसे प्राप्त की जा सकती है।

रोमियों अध्याय 1:1 से 3:20 में यह साबित किया गया कि अन्यजातियों और यहूदियों को *परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।* रोमियों अध्याय 3:21-4:25 में *परमेश्वर की धार्मिकता को पाने के मार्ग के बारे में* बताया गया है। रोमियों 3 में, मसीह की बलिदान स्वरूप मृत्यु *परमेश्वर की धार्मिकता का आधार या मूल है।* और रोमियों 4 में, अब्राहम का उदाहरण दिखाता है कि *विश्वास परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त करने का साधन है।*

रोमियों के अध्याय 5 से 8 में *परमेश्वर की धार्मिकता की प्रभावशीलता और परिपूर्णता* का पता चलता है। रोमियों 5:1-11 बताता है कि *परमेश्वर की धार्मिकता का वरदान* मसीही जन द्वारा शान्ति और अनुग्रह का अनुभव करके आशा और प्रेम का जीवन व्यतीत करना है।

कदम 1 - पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन-सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)

आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

5:1-2

खोज 1. **विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के दो परिणाम।**

(1) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का पहला परिणाम रोमियों अध्याय 5:1-2 में पाया जाता है। हमारे पास परमेश्वर द्वारा शान्ति पाने का आश्वासन है।

पद 1 के अनुसार, हमारा परमेश्वर के साथ नया सम्बन्ध है, जिसे "परमेश्वर में शान्ति" के रूप में व्यक्त किया जाता है। परमेश्वर ने मसीह के बलिदान के द्वारा हमें धर्मी ठहराते हुए शान्ति दी।

और हम परमेश्वर के साथ विश्वास के माध्यम से उसकी धार्मिकता को प्राप्त करके शान्ति पाते हैं।

इस प्रकार, परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति इस तथ्य पर आधारित है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा हमारे साथ शान्ति स्थापित की! हम तीन बातों के गहरे आश्वासन के रूप में परमेश्वर के साथ इस शान्ति का अनुभव करते हैं :-

- हमारे सभी *पुराने पापों* को पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है (रोमियों 5:1-2)
- *वर्तमान* में सभी बुराइयों को हमारे भले के लिए ही समाप्त किया जा रहा है (रोमियों 8:28)
- और *भविष्य* में होने वाली कोई भी घटना हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:38-39)!

पद 1-2 के अनुसार, हम अनुग्रह और यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ एक अनन्त सम्बन्ध या धार्मिकता की स्थिति में दृढ़ता के साथ खड़े हुए हैं। इस अवस्था या स्थिति का अर्थ है कि हम लगातार और आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं।

(2) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का दूसरा परिणाम रोमियों अध्याय 5:2 में पाया जाता है। हमारे पास यह आश्वासन है कि भविष्य की सभी आशाएँ वास्तविकता बन जाएँगी।

"आशा" यह निश्चितता है कि भविष्य के लिए प्रतिज्ञाओं की आशा वर्तमान की वास्तविकता बन जाएगी। हम जिन बातों की वास्तविकता बनने की आशा रखते हैं, उन्हें परमेश्वर की "महिमा" द्वारा संक्षिप्त में बताया गया है और इसमें निम्नलिखित तीन बातें शामिल हैं। भविष्य में मसीही जन :-

- मसीह को आमने सामने देखेंगे और उनकी शारीरिक आत्मा (व्यक्तित्व) पूरी तरह से मसीह की महिमान्वित रूप के अनुरूप हो जाएगी (1 यूहन्ना 3:1-3)।
- मरे हुओं में से फिर जी उठेंगे और उनकी दीन-हीन देह का रूप बदलकर मसीह की महिमान्वित देह के अनुकूल हो जाएगी (फिलिप्पियों 3:20)।
- नई सृष्टि पर विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, स्वतंत्रता को प्राप्त करेंगें (रोमियों 8:21)।

क्योंकि मसीहियों को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया है, उनके पास यह आश्वासन है कि वे भविष्य में परमेश्वर की महिमा का हिस्सा होंगे। यद्यपि, वर्तमान में अपने वास्तविक दैनिक जीवन में इसकी आशा धुँधली दिखाई पड़ती है, उनकी आशा (अपेक्षा) का आश्वासन एक अनुमान नहीं, बल्कि एक विशेषाधिकार है। यही कारण है कि मसीही जन "परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं"।

5:3-11

खोज 2. **विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के दो और परिणाम।**

(3) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का तीसरा परिणाम रोमियों अध्याय 5:5 में पाया जाता है। हमें यह विश्वास है कि परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा हमारी देह में रहता है और हमसे प्रेम करता है।

हालाँकि हम परीक्षाओं, दबावों (कठिनाइयों) और सताव का अनुभव करते है, यह कष्ट सीधे मसीही स्वभाव और आशा को बनाए रखने में अपना योगदान देते हैं। याकूब 2:2-4, इब्रानियों 12:5-11 और 1 पतरस 4:12-16 के अनुसार, हमारे कष्टों से भी मसीही परिपक्वता, पवित्रता, परिपूर्णता, और निश्चितता उत्पन्न होती है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं और परमेश्वर की महिमा के भागी होंगे।

हालाँकि हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम मुश्किल समय में दृढ़ता से खड़े रहें, क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते है, यह तथ्य कि हम ऐसा कर सकते हैं और दृढ़ रहेंगे, इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं! अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से, परमेश्वर बहुतायत से और लगातार हमारे हृदयों में अपने प्रेम को भरते हैं और हमें एक चेतना से भर देते हैं कि हम उसके प्रेम का मुख्य उद्देश्य हैं। परमेश्वर का हमारे प्रति प्रेम हमें अत्यधिक आशा से भर देता है कि अन्त में हम सभी परमेश्वर की महिमा के भागी होंगे। यही कारण है कि परमेश्वर में हमारी आशा (परमेश्वर से हमारी अपेक्षा) अपरिवर्तनीय है जिस प्रकार परमेश्वर का प्रेम हमारे प्रति कभी नहीं बदलता बल्कि सदैव एक जैसा रहता है!

(4) विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का चौथा परिणाम रोमियों अध्याय 5:6–11 में पाया जाता है। हमें अपने परम सम्पूर्ण उद्धार का आश्वासन है।

जबकि पृथ्वी पर लोग धर्मी और भले लोगों के लिए किसी के मरने की आशा लगाए हुए थे (रोमियों 5:7), यीशु मसीह ने वह किया जिसकी किसी को आशा नहीं थी : वह अधर्मी और दुष्ट लोगों के लिए मर गया! परमेश्वर के प्रेम ने यीशु मसीह को हमारे पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में देने के लिए विवश किया (रोमियों 5:8)।

केवल यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा

परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता

उसकी दया और प्रेम से मेलं रखा

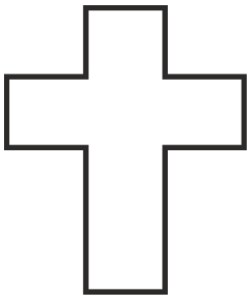

(क्रूस कस आड़ा बीम)

(क्रूस का सीधा खड़ा हुआ बीम)!

यदि मसीह की मृत्यु द्वारा, हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर रहे हैं,
तो हम निश्चित रूप से मसीह के पुनरुत्थान द्वारा अन्तिम न्याय के दिन में
परमेश्वर के क्रोध से बच जाएँगे।
(रोमियों 5:9–10)।

यदि परमेश्वर ने कम लाभ दिया होता, अर्थात्, हमे पूर्ण रूप से *धर्मी ठहराना* और परमेश्वर के साथ हमारा *मेल करवाना,* तो निश्चित रूप से उसे भी अधिक लाभ, अर्थात्, हमारी पूर्ण पवित्रता और महिमा, नहीं मिलेगी! यही कारण है कि मसीही जन यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर में आनन्द मनाते हैं और उस उद्धार के द्वारा आनन्दित होते हैं जिसका आरम्भ पृथ्वी पर पहले से ही हो चुका है और अन्त में एक दिन स्वर्ग में यह पूरा होगा (रोमियों 5:11; तुलना करें फिलिप्पियों 1:6)!

कदम 3. प्रश्न। व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आइये रोमियों 5:1–11 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

5:1–2

प्रश्न 1. **परमेश्वर के द्वारा लोगों को शान्ति कैसे मिलती है?**

ध्यान दें। एक व्यक्ति, जो अपने भले या धर्म के कामों (व्यवस्था को ध्यान में रखकर) पर भरोसा करता है ताकि परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया जा सके, उसे कभी भी परमेश्वर के द्वारा शान्ति नहीं मिलेगी, या वह अपने हृदय में शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता। वह अपने सभी भले और धर्म के कामों के द्वारा अपने पापों के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध से बच नहीं सकता, और न ही परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले दण्ड के भय से बच सकता है।

परमेश्वर के द्वारा शान्ति तभी प्राप्त हो सकती है जब परमेश्वर स्वयं हमें यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा धर्मी ठहराते हैं जिसे उसने अपने बलिदान और पुनरुत्थान द्वारा प्राप्त किया था। व्यवस्था को मानने के द्वारा परमेश्वर से शान्ति को प्राप्त करना हमारी अपनी सामर्थ्य से नहीं होता, बल्कि ये परमेश्वर है जो मसीह के प्रायश्चित के बलिदान द्वारा हमारे साथ शान्ति स्थापित करते हैं! परमेश्वर द्वारा शान्ति प्राप्त करने के बाद ही हम बदले में उसके साथ शान्ति स्थापित कर सकते हैं और वास्तव में उसकी शान्ति का अनुभव कर सकते हैं! परमेश्वर द्वारा हमसे मेल करने के बाद ही, हम स्वयं का परमेश्वर से मेल करवा सकते हैं! जब परमेश्वर हमारे साथ अपने सम्बन्ध को बदल देता है, तब उसके बाद ही हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को बदल सकते हैं! परमेश्वर के साथ हमारी शान्ति स्थापित होना तब आरम्भ होती है जब स्वयं परमेश्वर इस शान्ति को हमारे साथ स्थापित करते हैं।

5:3–5

प्रश्न 2 **– मसीही जन अपने क्लेशों में भी घमण्ड क्यों करते हैं?**

ध्यान दें। रोमियों 5:3 में लिखा है, "हम क्लेशों में भी घमण्ड करें।" हमारे क्लेशों में टूटे-फूटे संसार में पाए जाने वाले लोगों के साधारण क्लेश भी शामिल हैं। मसीही लोगों पर भी बीमारी, दुर्बलता, असमर्थता, परेशानी, असफलताएँ, निराशा, और महामारी, भूकम्प, बाढ़, सूखे और अकाल जैसी सामान्य आपदाएँ आती हैं। लेकिन मसीहियों को संसार में मसीहियों के विरुद्ध उत्पीड़न के कारण होने वाले विशेष क्लेशों को भी सहना होगा।

लेकिन क्या इन सभी कष्टों के कारण मसीही लोग दुखी नहीं होंगे? पौलुस यह कैसे कह सकता है कि मसीहियों को क्लेशों में भी आनन्द मिलता है? इसका उत्तर इस प्रकार से है : पृथ्वी पर होने वाली सभी बातें परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करती हैं! यहाँ तक कि मनुष्यों द्वारा दुःख उठाया जाना भी परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करता है। इससे पहले जब हम मसीही नहीं थे, तो हमने इन क्लेशों को परमेश्वर की हमारे प्रति नाराज़गी के रूप में माना। हालाँकि, जब परमेश्वर के साथ हमारा

सम्बन्ध बदल जाता है, तो लोगों, चीज़ों और घटनाओं के प्रति भी हमारा सम्बन्ध बदल जाता है! जब हम मसीह जन बन जाते हैं, तब हमें इस बात का एहसास होने लगता है कि क्लेश भी हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति है! मसीह के लिए कष्ट उठाने को भी मसीही जन आदर के रूप में लेते हैं, क्योंकि जब मसीही जन मसीह के क्लेशों में शामिल होते हैं, तो वे मसीह की महिमा के भी भागी होंगे (मत्ती 5:4-12; रोमियों 8:17; कुलुस्सियों 1:24; 1 पतरस 4:13-14)। यीशु मसीह मसीहियों के क्लेशों को अपने ऊपर भोगे गए क्लेशों के रूप में मानते हैं!

मसीहियों ने भी अपने क्लेशों के *बीच* आनन्द उठाया। उनकी पीड़ाएँ परमेश्वर को एक ऐसा अवसर प्रदान करती हैं जिनमे परमेश्वर उनके लिए अपने समर्थन और उद्धार में अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर पाता है। मसीहियों की समस्याएँ परमेश्वर के लिए संभावनाएँ बन जाती हैं! मसीहियों की अपनी निर्बलता परमेश्वर की सामर्थ्य को बढ़ाने का कार्य करती है (2 कुरिन्थियों 12:9)! जब मसीहियों को ठीक प्रकार से यह पता चलता है कि वे निर्बल हैं, लेकिन परमेश्वर सामर्थी और मदद करने के लिए तैयार है, तब वे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। क्योंकि परमेश्वर की सहायता काफ़ी है, जिससे मसीहियों का विश्वास मजबूत होता है। क्योंकि उनका विश्वास और मजबूत हो जाता है, इसलिए मसीही जन दृढ़ रहना चाहते हैं और वे ऐसा करके दृढ़ रह सकेंगे। मसीही जन यह महसूस करते हैं कि परमेश्वर इन क्लेशों के द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण करता हैं, उन्हें इस दुनिया के लिए उपयोगी बनाता है और उन्हें आने वाली नई सृष्टि के लिए तैयार करता है। इसलिए, क्लेशों के द्वारा मसीही लोगों को कभी भी आश्चर्यचकित या विफ़ल नहीं होना चाहिए, क्योंकि क्लेश ये दर्शाता है कि हम पूरी तरह से परमेश्वर की सन्तान हैं। क्लेशों के बीच दुखी होना मसीही होने के साथ असंगत नहीं है। लेकिन मसीही लोग अपने क्लेशों में भी घमण्ड कर सकते हैं।

5:6-8

प्रश्न 3. **परमेश्वर हमारे लिए अपने प्रेम को कैसे दर्शाता है?**

ध्यान दें। रोमियों 5:6-10 कहता है कि, परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरा।

(1) परमेश्वर प्रेमी स्वभाव का है।

यह सच नहीं है कि पुराने नियम के समय में स्वयं को प्रगट करने वाला परमेश्वर "युद्ध और प्रतिशोध का परमेश्वर" था, बल्कि नए नियम के समय में स्वयं को प्रगट करने वाला परमेश्वर "प्रेमी परमेश्वर" है। पुराने और नए नियम दोनों स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि परमेश्वर एक पवित्र परमेश्वर है, जो पाप से घृणा करता है, और एक प्रेमी परमेश्वर है, जो पापियों को बचाने के लिए उन्हें ढूँढ़ता है।

उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कहा, "मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है" (यिर्मयाह 31:3)।
और "परमेश्वर प्रेम है। प्रेम इस में नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा" (1 यूहन्ना 4:8,10)।

बाइबल में "युद्ध"[1] देखें।

(2) परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम को क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा दर्शाया। क्रूस पर मसीह की मृत्यु यह साबित नहीं करती है कि परमेश्वर प्रेम है, लेकिन यह दर्शाता है कि परमेश्वर का प्रेम क्या है। खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम उसे एकमात्र सम्भव काम करने के लिए विवश करता है जो खोए हुए लोगों को बचाने के लिए न्याय की परमेश्वर की इच्छा को अलग किए बिना बचा सकता है! ऐसा नहीं है कि परमेश्वर पापों को दण्डित किए बिना पापों को क्षमा कर देता है। एक प्रेम करने वाला परमेश्वर जो पापों को दण्ड दिए बिना छोड़ देता है वह एक अपवित्र और अधर्मी परमेश्वर है! बाइबल का परमेश्वर एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर है और एक ही समय में एक पवित्र और धर्मी परमेश्वर है!

इसलिए, अपने प्रेम और दया (क्रूस का आड़ा बीम) के साथ अपनी पवित्रता और धार्मिकता (क्रूस का सीधा खड़ा हुआ बीम) का मेल कराने के लिए, परमेश्वर ने यीशु मसीह में मानवीय स्वभाव को धारण किया, उसने पृथ्वी पर एक सिद्ध पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत किया और जितने पापी लोग उस पर विश्वास करते हैं उसने उन लोगों की जगह अपने प्राणों को दे दिया! यीशु मसीह केवल विश्वासियों के लिए एक उदाहरण के रूप में नहीं, ना ही एक शहीद के रूप में मरा, लेकिन विश्वासियों के विकल्प के रूप में उसने अपने प्राणों को दे दिया! जितने लोग उस पर विश्वास करते हैं उनके लिए यीशु मसीह की मृत्यु प्रायश्चित के बलिदान के रूप में हुई।

- परमेश्वर ने पापियों के अपराधों के प्रायश्चित का बलिदान दिया (मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर की धार्मिक इच्छा को पूरा किया, पाप के विरुद्ध अपने पवित्र और धर्मी क्रोध को प्रगट किया और पापों को दूर कर दिया)। परमेश्वर ने पापियों को शान्ति प्रदान की।
- परमेश्वर ने उस पापी का परमेश्वर के साथ फिर से मेल करवा दिया जो परमेश्वर से अलग हो गया था। पापी ने परमेश्वर द्वरा शांति को प्राप्त किया।

(3) परमेश्वर निर्बल और अधर्मी लोगों के जीवन में मसीह के उद्धार के लगातार कार्य को लागू करके हमारे लिए अपने प्रेम को दर्शाता करता है।

पौलुस कहता है कि यीशु मसीह की मृत्यु, अधर्मी लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम का उच्चतम संभव या बोधगम्य प्रमाण है। पद 6 में लिखा है, "जब हम निर्बल (कमजोर) ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा"। हमारी निर्बलता यह है कि हमारे पास परमेश्वर की दृष्टि में जो

---

[1] बाइबल में ऐतिहासिक विवरणों में युद्ध। परमेश्वर ने युद्ध में अधर्मी कनानियों का नाश करने के लिए इस्राएल का उपयोग किया (व्यवस्थाविवरण 7:1-10)। उसने इस्राएल की अधर्मी जाति का नाश करने के लिए अश्शूरियों (यशायाह 8:6-9; 2 राजा 17:6-23) और बेबीलोन का यहूदा की अधर्मी जाति को बाबेल में ले जाने के लिए उपयोग किया (2 इतिहास 36:14-21) । उसने युद्ध में अधर्मी अश्शूर को हराने के लिए बेबीलोन का उपयोग किया (यशायाह 10:5,15,33)। उसने युद्ध में अधर्मी बेबीलोन को हराने के लिए फारसियों का उपयोग किया (यशायाह 13:3-11,17-22; दानिय्येल 5:22-30)। और उसने युद्ध में अधर्मी फारसियों को हराने के लिए यूनानी का भी उपयोग किया (दानिय्येल 8:20-21)।

बाइबल के शिक्षा-सिद्धान्तीय भागों में युद्ध। सभी युद्ध (जिसमें "पवित्र युद्ध" भी सम्मिलित है) निन्दनीय है। अपने पहले आगमन पर यीशु मसीह ने सभी युद्धों की निन्दा की। उसने कहा, "जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएँगे" (मत्ती 26:52)। "परमेश्वर का राज्य इस संसार का नहीं है। यदि ऐसा होता, तो मसीही युद्ध में लड़े होते" (यूहन्ना 18:36)। दुनिया में सभी युद्ध और संघर्ष लोगों की इच्छाओं (लालच और सत्ता की लालसा) से होते हैं। परन्तु इस सांसारिक युद्ध से मित्रता करना बाइबल के परमेश्वर का बैरी बनाती है (याकूब 4:1-4)।

बाइबल की सर्वनाश भविष्यवाणी में युद्ध। मसीह-विरोधी संसार विशेषकर मसीहियों से युद्ध लड़ते रहते है (प्रकाशितवाक्य 12:17)। अन्त में, अन्तिम मसीह-विरोधी मानव इतिहास में अन्तिम युद्ध के लिए सभी गैर-मसीहियों को इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7; 16:14,16; 17:14; 19:11,19; 20:8-9)।

मसीह-विरोधी मानव इतिहास में अन्तिम युद्ध के लिए सभी गैर-मसीहियों को इकट्ठा करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:7; 13:7; 16:14,16; 17:14; 19:11,19; 20:8-9)।

आत्मिक और नैतिक रूप से भला है उसे करने की सामर्थ्य नहीं है। स्वभवतः, हम परमेश्वर के नियमों को नहीं मानते हैं, हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करते हैं और हम वास्तव में भले कार्य भी नहीं करते। हमारी निर्बलता हमारे पाप के कारण उत्पन्न होती है और पाप में मानवजाति के पतन के प्रभावों से स्वयं को बचाने की क्षमता हमारे अन्दर नहीं होती है। हमारी निर्बलता यह है कि हम स्वयं को परमेश्वर के मृत्युदण्ड (अन्त), संसार की आत्मिक और नैतिक दुराचारिता और क्लेश और मृत्यु से नहीं बचा सकते हैं। साधारण लोग यह कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर को भले, धर्मी, पवित्र और भक्त लोगों से प्रेम करना चाहिए। लेकिन कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता है कि पवित्र और धर्मी परमेश्वर को अपवित्र और अधर्मी लोगों से प्रेम करना चाहिए और उन्हें छुड़ाने के लिए उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया! तथ्य यह है कि बाइबल के परमेश्वर ने ऐसा ही किया और यह सबसे बड़ा आश्चर्य है!

अगर परमेश्वर ने हमसे इसलिए प्रेम किया होता क्योंकि हम उससे प्रेम करते थे, तो वह हमसे इस शर्त पर तब तक प्रेम करता रहता जब तक हम उससे प्रेम करते रहते! तब हमारा उद्धार हमारे कपटी हृदयों की विवशता पर निर्भर करता। हालाँकि, क्योंकि परमेश्वर ने हमें सबसे पहले प्रेम किया और उसने हमसे भक्तिहीन, अधर्मी लोगों और अपने बैरी के रूप में प्रेम किया, और क्योंकि यीशु मसीह *भक्तिहीन, अधर्मी और बैरियों* के लिए मरा (रोमियों 5:6,8,10), हमारा उद्धार इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं, बल्कि केवल हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की निरंतरता पर निर्भर करता है। (तुलना करें 1 यूहन्ना 4:10)!

इतने लोगों में से, शायद ही कोई व्यक्ति किसी धर्मी मनुष्य के लिए अपने प्राणों को दे, एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो हमेशा नियमों को मानता हो। वह एक भले मनुष्य के लिए मर सकता है, यानी उस मनुष्य के लिए जो उसके प्रति अपने प्रेम और दया को दर्शाता हो (रोमियों 5:7)। लेकिन यीशु मसीह ने पूरी तरह से इसके विपरीत किया जिसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती : वह अधर्मी और दुष्ट मनुष्यों के लिए मरा! क्रूस पर मसीह की मृत्यु इतिहास में किसी भी मानवीय उदाहरण के बिना परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति थी! रोमियों 5:6-8 में, पौलुस परमेश्वर के प्रेम की महानता का विस्तार करता है।

5:9-11

***प्रश्न 4* – "धार्मिकता", "मेल" और "उद्धार" में क्या अन्तर है?**

ध्यान दें।

(1) "धार्मिकता" परिस्थिति (स्थिति) के बदलाव का वर्णन करती है।

धार्मिकता एक कानूनी या न्यायिक अभिव्यक्ति है और इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था के अनुसार एक पापी को पूरी तरह से धार्मिक *घोषित कर दिया है,* क्योंकि अधार्मिकता का मूल्य चुकाया जा चुका है। परमेश्वर अब से इस पृथ्वी पर और बाद में न्याय के अन्त के समय में उसे एक धर्मी मनुष्य के रूप में मानते हैं और उसके साथ वैसा ही व्यवहार भी करते हैं (उसे अब दोषी नहीं मानते हैं, उसे माफ़ कर दिया गया है) (यूहन्ना 5:24 से तुलना करें)।

धार्मिकता में निम्नलिखित बातें शामिल हैं।

- मूल्य चुकाना और प्रायश्चित्त के बलिदान के द्वारा ऋणी का छुटकारा (पाप का शोधन)

- परमेश्वर की धार्मिक इच्छा को पूरा करना, पाप (अन्याय) के विरुद्ध उसके पवित्र और धार्मिक क्रोध (रोष) को शान्त करना
- विश्वासी के सभी अपराधों को क्षमा करना
- पापी का परमेश्वर के साथ मेल करवाना, उसे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पहले जैसा और परमेश्वर के ग्रहण योग्य बनाना
- इस बात का आश्वासन देना कि पवित्रता और महिमा जैसी आशीषें निश्चित रूप से मिलेंगी (रोमियों 8:29-30)।

रोमियों 5:9 में लिखा है, "कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे". बाइबल में इस अभिव्यक्ति का अर्थ हमेशा से यह रहा है कि, "क्रूस पर यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा"। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि हमारी धार्मिकता की नींव, कारण या आधार :

- मनुष्य का कार्य, विश्वास या आज्ञाकारिता नहीं है
- हममें मसीह का कार्य भी नहीं है
- लेकिन विश्वासियों के स्थान पर हमारे लिए मसीह का कार्य है (रोमियों 3:25; इफिसियों 2:13; इब्रानियों 9:12 से तुलना करें)।

(2) "मेल" सम्बन्ध में बदलाव का वर्णन करता है।

"मेल" का अर्थ है कि दोनों पक्ष, जो पूर्व में बैरी थे, उन्होंने एक दूसरे के साथ शान्ति बना ली है। बाइबल तीन प्रकार के मेल की बात करती है :-

- रोमियों 5:9-11 में पापियों के साथ परमेश्वर के मेल की बात की गई है। हमारे पापों के कारण, पूर्ण रूप से पवित्र और धर्मी परमेश्वर हमसे अलग हो गया है (यशायाह 59:1-2)। वह हमारे लिए एक बैरी की तरह है, जो हमारे पापों को दण्डित करता है (अन्यथा वह पवित्र या धर्मी नहीं होगा)! लेकिन मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के कारण, हमारे पापों के विरुद्ध उसके पवित्र और धर्मी क्रोध को शान्त किया गया है और हमारे (हमारी अपवित्रता और अधर्म के) प्रति उसके बैर को हटा दिया गया है। इसलिए, परमेश्वर अब हमसे अलग नहीं हुआ है!
- रोमियों 5:1 में परमेश्वर के साथ पापियों के मेल की बात की गयी है, अर्थात् विश्वासी परमेश्वर के साथ शान्ति का अनुभव करते हैं। इस तथ्य के कारण कि वे मसीह के प्रायश्चित के बलिदान में विश्वास करते हैं, परमेश्वर ने उन्हें धर्मी ठहराया और वे परमेश्वर के साथ शान्ति का अनुभव करते हैं। उन्होंने महसूस किया कि पवित्र और धर्मी परमेश्वर पापों से घृणा करता है, लेकिन अब वे अपने प्रति उसके क्रोध का अनुभव नहीं करते। इसलिए, हम अब परमेश्वर से अलग नहीं हुए हैं!
- मत्ती 5:23-24 में कलीसियाओं में भाइयों का एक दूसरे के साथ मेल की बात की गयी है। और इफिसियों 2:14-16 में अन्य जातियों से जुड़े लोगों का एक दूसरे के साथ मेल की बात कही गई है। क्योंकि परमेश्वर ने मसीहियों से अपना सम्बन्ध बदल लिया है, मसीही परमेश्वर के साथ, कलीसियाओं में अपने भाइयों के साथ, दूसरे राष्ट्र के लोगों के साथ और यहाँ तक की अपने बैरियों के साथ अपने सम्बन्धों को बदल सकते हैं। इसलिए, अन्यजाति के मसीही अब एक दूसरे से अलग नहीं हैं!

(3) "उद्धार" परिवर्तन की एक सतत प्रक्रिया को व्यक्त करता है।

उद्धार की *शुरुआत* होती है :-

- धार्मिकता से (पाप के *दोष से* छुटकारा)
- और मेल के साथ (पाप की *शर्म से* छुटकारा)
- जो नए जन्म (पाप की *दासता से* छुटकारा) की ओर ले जाता है (तुलना करें यूहन्ना 1:12-13)।

जीवनभर उद्धार *बना रहता है* :-

- शुद्धिकरण की एक लगातार चालने वाली प्रक्रिया में (पाप की सामर्थ्य और अन्धकार से छुटकारा)

और उद्धार *सिद्ध* है:-

- महिमा में (जो पाप की उपस्थिति और उसके सभी परिणामों से छुटकारा है : शारीरिक मृत्यु, पृथ्वी पर आने वाली आपदाएँ, इस वर्तमान दुनिया का भ्रष्टाचार और दुष्टात्माएँ)।

जब "उद्धार" को "धार्मिकता" से अलग किया जाता है (जैसा कि रोमियों 5:9-10 में दिया गया है), तो "उद्धार" उस कार्य के *पूरा* होने का संकेत देता है, जिसकी शुरुआत धार्मिकता है। इसमें दुष्ट संसार से, शैतान और दुष्टात्माओं के बुरे प्रभाव से, सभी प्रकार के क्लेशों और मृत्यु से छुटकारा, विनाश के सभी कारणों से बचाव, और स्वर्ग में और नई पृथ्वी पर अनन्त जीवन की विरासत शामिल हैं! रोमियों 5:9-10 में अन्तिम न्याय के दिन परमेश्वर के क्रोध से छुटकारा मिलता है। क्योंकि धार्मिकता पूर्ण है, यह अपरिवर्तनीय और स्थिर है। जो मसीह यीशु में हैं उनके लिए कोई दण्ड (नाश) की आज्ञा नहीं है (रोमियों 8:1)! "उद्धार" मसीहियों के लिए एक पूर्ण निश्चितता है! बाइबल का परमेश्वर कभी भी अपने कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता है!

रोमियों 8:29-30 सिखाता है कि जिन लोगों को वह बुलाता है, वह उन्हें धर्मी ठहराता है, और जिन लोगों को वह धर्मी ठहराता है, उन्हें वह महिमान्वित भी करता है! और फिलिप्पियों 1:6 सिखाता है कि परमेश्वर भले कार्य आरम्भ करेगा, जो उसने हम में पूरा होने तक आरम्भ किये! यही कारण है कि रोमियों 5:10 में लिखा है, "क्योंकि बैरी होने की दशा में, तो मसीह की मृत्यु ने हमारा मेल परमेश्वर के साथ करवा दिया, और पुनर्जीवित मसीह का जीवन हमारे अन्तिम और पूर्ण उद्धार को हमेशा के लिए सुरक्षित कर देगा!" मसीह की मृत्यु और मसीह के पुनरुत्थान (रोमियों 4:25) के बीच एक स्थायी सम्बन्ध है। जो उसकी मृत्यु के लाभार्थी हैं, वे उन सभी बातों के लाभार्थी भी होने चाहिए जो उसके पुनरुत्थान के जीवन के भागी हैं। यह तथ्य कि मसीह पुनर्जीवित हुआ और महिमान्वित उद्धारकर्ता, महायाजक, भविष्यद्वक्ता और राजा के रूप में रहता है, एक सुरक्षित गारंटी है कि मसीह में सभी विश्वासियों को जिलाया जाएगा और वे हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

यह तथ्य कि मसीह में विश्वासी पहले से ही धर्मी ठहराए जा चुके हैं और उनका मेल हो चुका है और भविष्य में वे पूरी तरह से बचाए जाएँगे, उन्हें आनन्दित करता है। मसीही जन "परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:2), "अपने क्लेशों में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:3) और "प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं" (रोमियों 5:11)। मसीही जन उद्धार में आनन्दित होते हैं, जिसकी शुरुआत पहले से ही हो चुकी है, वह प्रतिदिन जारी है और मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी!

अपनी सेवकाई के आरम्भ में यीशु ने कहा, "और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ" (यूहन्ना 6:39)। और अपनी सेवकाई के अन्त में उन्होंने कहा, "जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।" (यूहन्ना 18:9)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आइये हम आपस में सोच-विचार करके रोमियों 5:1-11 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या पिफर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. रोमियों 5:1-11 में लिखें हुए सम्भव अनुप्रयोगों के उदाहरण।

5:1. हमारी जगह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान पर विश्वास करके परमेश्वर की शान्ति को प्राप्त करें।

5:2. भले या धर्म के कामों द्वारा परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने की कोशिश करने के बजाय, यीशु मसीह पर विश्वास करके परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करें।

5:3-4. अपने वर्तमान के क्लेशों में आनन्द मनाएँ, क्योंकि परमेश्वर इन क्लेशों का उपयोग आपकी दृढ़ता, मसीही व्यक्तित्व और आशा के लिए करता है जो कभी भी आपको निराश नहीं कर सकते।

5:5. यह जान लें कि यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण करके, परमेश्वर की पवित्र आत्मा आपके हृदय और जीवन में वास करती है। अपने पवित्र आत्मा के द्वारा, परमेश्वर आपके हृदय में अपने प्रेम को डालते हैं। एक मसीही जन प्रेम कर सकता है!

5:6-10. यह समझें कि स्वभाव से आप निर्बल, अधर्मी, पापी और परमेश्वर के बैरी हैं। यह एहसास करें कि यह सब तब बदलता है जब आप मानते हैं कि यीशु मसीह आपकी जगह पर मर गए। यह जानिए कि क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता को अपने प्रेम और दया के साथ मिलाने का एकमात्र सम्भव तरीका था!

5:9-11. इस बात से आश्वस्त रहें कि जब आप यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो आपको धार्मिकता, उसके साथ मेल-मिलाप और उद्धार प्राप्त हो जाता है!

"धार्मिकता" का अर्थ है कि आपको पाप के दोष और मृत्युदण्ड से छुटकारा मिल गया है। परमेश्वर ने आपके सभी अपराधों को क्षमा कर दिया है, अब आप उसकी दृष्टि में 100% धर्मी बन चुके हैं और भविष्य में वह आपको अपनी दृष्टि में 100% धर्मी होने का आदर-सम्मान देगा और आपके साथ एक धर्मी की तरह ही व्यवहार करेगा!

'फिर से मेल कराने' का अर्थ है कि आपको पाप की शर्म और अस्वीकृति से छुटकारा मिल गया है। परमेश्वर ने आपके साथ और आपने परमेश्वर के साथ शान्ति स्थापित की है। आपके और उसके बीच के आपस के सम्बन्ध पूरी तरह से फिर से पहले जैसे हो चुके हैं।

"उद्धार" का अर्थ है कि आप पहले से ही पाप के दोष और मृत्युदण्ड से बचाए जा चुके हैं, कि आप इस वर्तमान संसार में पाप की शक्ति और अन्धकार से अधिक से अधिक बचाए जा रहे हैं और मसीह के दूसरे आगमन पर आप पाप के सभी परिणामों और यहाँ तक कि पाप की उपस्थिति से पूरी तरह से बच जाएँगे।

2. रोमियों 5:1–11 के व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने मुझे धर्मी ठहराया है और मुझे शान्ति दी है, क्योंकि मैं यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में मानता हूँ। इसलिए मैंने भी परमेश्वर द्वारा शान्ति प्राप्त की है। "परमेश्वर द्वारा शान्ति" प्राप्त होने में निम्नलिखित बातें जानना शामिल हैं कि :–

हमारे सभी *पुराने पापों* को पूरी तरह से क्षमा कर दिया गया है।
वर्तमान में सभी बुराइयों को हमारे भले के लिए ही समाप्त किया जा रहा है।
और *भविष्य* में होने वाली कोई भी घटना हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती!

क्योंकि मैं यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में मानता हूँ, इसलिए मुझे विश्वास है कि मसीह में मेरे सभी दबाव, क्लेश और सताव बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे मुझमें मसीही परिपक्वता और व्यक्तित्व उत्पन्न करते हैं और मुझे अपनी सेवकाई के लिए अधिक फलवन्त बनाते हैं। मुझे यह भी एहसास है कि यह परमेश्वर के लिए मेरा प्रेम नहीं है, वरन् मेरे लिए उसका प्रेम है, जिसकी वजह से मैं हर प्रकार के सताव और क्लेशों में दृढ़ बना रहता हूँ! मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि वह मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ता! उन्होंने स्वयं कहा है कि, "मैं न तो तुम्हें कभी अकेला छोड़ूँगा, न कभी त्यागूँगा।" इसलिए हम विश्वास के साथ कहते हैं : "प्रभु मेरा सहायक है, मैं किससे डरूँ। मनुष्य मेरा क्या बिगाड़ सकता है?"

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये रोमियों 5:1–11 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 16,18,19 और 22** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(6) रोमियों 4:5।**
   पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 10:29-37 में दिये गये **"भले सामरी"** के दृष्टान्त की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 19

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 16,18,19 और 22**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 16,18,19 और 22) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(6) रोमियों 4:5**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।
(6) रोमियों 4:5। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहराने वाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टांत)* **भला सामरी**

लूका 10:29-37 में दिया गया दृष्टान्त भले सामरी का दृष्टान्त है जो

परमेश्वर के राज्य में प्रगट होने वाले प्रेम को दर्शाता है।

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें लूका 10:25-37

1. दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

यरीहो और यरूशलेम के बीच सड़क। यरूशलेम पहाड़ की चोटी पर बसा हुआ है, जबकि यरीहों वहां से 27 किमी की दूरी पर 1200 मीटर गहरी घाटी में बसा हुआ है। इन दोनों के बीच में बनी हुई सड़क बहुत उबड़ खाबड़ और बहुत एकान्त थी। ज्यादातर डाकू और अपराधी उस इलाके में पायी जाने वाली गुफाओं में ही रहा करते थे। वह एक खतरनाक सड़क के रूप में जानी जाती थी।

वह व्यक्ति यरूशलेम से यरीहो की ओर जा रहा था। यह व्यक्ति एक यहूदी था; नहीं तो यीशु ने ऐसा नहीं कहा होता। डाकुओं ने उस पर आक्रमण किया, उसके सारे समान को लूट लिया, और उसे अधमरा छोड़कर चले गये।

याजक और लेवी। यरीहो में बहुत से याजकों के परिवार रहा करते थे इसलिए प्रायः वे यरूशलेम और यरीहो के बीच में यात्रा किया करते थे। यह याजक नीचे की ओर जा रहा था, इसका अर्थ है कि वह शायद यरूशलेम में अपने याजकीय कार्य को समाप्त करने के बाद में अपने घर जा रहा था। उसने इस व्यक्ति को सड़क पर पड़े हुए देखा,लेकिन वह उसे देखकर आगे बढ़ गया। वह उस मसले में अपना हाथ डालना नहीं चाहता था। हो सकता है कि बहुत से बहाने उसके मन में आये हो जैसे कि," यह आदमी हम याजकों के समाज में से नहीं हैं!" "मैं इस अशुद्ध व्यक्ति के सम्पर्क में आने से अशुद्ध हो जाऊंगा।" हालांकि उसके पास बहाना बनाने के लिए कोई बहाना नहीं था क्योंकि पुराने नियम में स्पष्ट तौर पर परदेशियों पर और यहां तक कि शत्रुओं पर भी दया करने के लिए आदेश दिया गया है (लैव्य 19:34; निर्गमन 23:4-5; 2 राजा 6:8-23)।

लेवी, जिसका काम मन्दिर के कामों में याजक की मदद करना था, वह भी बिना उस व्यक्ति पर दया किये हुए चला गया। हालांकि उसके पास भी इस कर्तव्य को निभाने से मना करने हेतू कोई बहाना नहीं, जिसके तहत वह उस असहाय व्यक्ति पर दया कर सकता था।

सामरी वासी। सामरी और यहूदी आपस में दुश्मन थे और एक दूसरे को नफरत किया करते थे (यूहन्ना 4:9; 8:48; लूका 9: 51-56)। कोई भी जन अपेक्षा नहीं कर सकता है कि कोई सामरी किसी यहूदी की मदद करेगा। लेकिन इस मामले में बिल्कुल ऐसा ही हुआ। जब उस सामरी ने यहूदी को सड़क पर पड़े हुए देखा, उसने उस पर तरस खाया। उसने दाखरस से उस घायल व्यक्ति के जख़्मों को साफ किया, जो कि किटाणु विनाशक के रूप में काम करता है(1तीमुथीयुस 5:23), उसके बाद उसने उस पर तेल मला जो मरहम के समान काम करता है (यशायाह 1:6)। उसने उस घायल को अपने गदहे पर लादा और सम्भवतः वह गदहें के साथ साथ घायल को पकड़ कर उसे सराय तक ले गया। सराय में पहुंचकर उसने यह नहीं सोचा कि उसका काम अब खत्म हो गया है, परन्तु उसने निजी तौर पर उस घायल व्यक्ति की रात भर देखभाल की। और अगले दिन भी, उसने ऐसा नहीं सोचा कि उसका काम खत्म हो गया है, लेकिन उसने सराय के मालिक को इतना पैसा

दिया जिससे कुछ दिनों तक उसे व्यक्ति की देखभाल की जा सकती थी। वरन उसने यह भी वायदा किया कि उस पर होने वाले अतिरिक्त को वह आकर भर देगा।

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और " व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है, कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त का उल्लेख हम लूका 10: 25-29 में पाते हैं।

यहां पर प्रश्न यह था कि अनन्त जीवन को किस तरह से प्राप्त किया जा सकता है। पुराने नियम की व्यवस्था के एक ज्ञाता ने यीशु को लज्जित करने की कोशिश की। वह सब को यह दिखाने की कोशिश कर रहा था कि यीशु कठिन प्रश्नों के जवाब नहीं दे सकता है। उसका प्रश्न किसी के लिए भी उत्तर देने के लिए अति कठिन प्रश्न था, "अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूं?" वह शास्त्री स्वयं इस बात को जानता था कि सही उत्तर था कि: " अनन्त जीवन पाने के लिए, मनुष्य को व्यवस्था का पालन करना चाहिए।"

उसे उत्तर देने की बजाय यीशु ने उल्टा उससे एक प्रश्न पूछा, " व्यवस्था में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" इस तरह से यीशु ने तख्ता पलट दिया और उसे अपने जी सवाल का जवाब देने के लिए मज़बूर कर दिया। ऐसा करने के द्वारा, यीशु ने सभी को यह भी दिखाने का प्रयास किया कि वह कोई नयी शिक्षा नहीं दे रहा था, वरन वह बहुत गम्भीरता के साथ परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था को पालन कर रहा था (अर्थात बाइबल में पाये जाने वाले प्रकाशन का पालन)।

बाइबल में पाया जाने वाला उत्तर परमेश्वर और पड़ोसियों को सिद्ध प्रेम करना है। शास्त्री के द्वारा दिया गया उत्तर व्यवस्थाविरण 6:5 और लैव्यवस्था 19:18 का पूरी तरह से दोहराव था। यह अनुच्छेद बताता है कि एक सच्चे धर्म का वास्तविक अर्थ परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करना है। हर एक जन को अपने पूरे मन और अपनी पूरी योग्यता के साथ परमेश्वर को प्रेम करना चाहिए। और जब कोई अपने पड़ोसी से प्रेम करे तो वह बिल्कुल वैसा ही होना चाहिए जैसा ,कि वह अपने आप से प्रेम करता है (मरकुस 12:30-31)! फिर यीशु ने उस से कहा, "ऐसा ही कर और तू जीवित रहेगा।" यीशु का मतलब था कि, "यदि तू इस नियम का ईमानदारी के साथ पालन करेगा, अर्थात, यदि तू परमेश्वर और अपन पड़ोसी से प्रेम करेगा, तो तू अनन्त जीवन का वारिस होगा।"

यहां पर समस्या उस ईश्वरीय सिद्धान्त में नहीं है जिसके अनुसार आज्ञाकारिता का परिणाम अनन्त जीवन होता है (लैवव्यवस्था 18:5; गलातियों 3:12), या सिद्ध प्रेम से अनन्त जीवन प्राप्त होता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि, जगत की उत्पत्ति से लेकर आज तक यीशु को छोड़कर कोई ऐसा जन पैदा ही नहीं हुआ है जो पूरी तरह से आज्ञा पालन कर सके या सिद्धता के साथ प्रेम कर सके! इस शास्त्री के साथ में समस्या यह थी कि वह अभी भी यह विश्वास करता था कि वह अपनी

अपूर्ण या *सिद्धताहीन* आज्ञाकारिता के द्वारा अनन्त जीवन को *हासिल* कर सकता है। वह इस बात को बिल्कुल नहीं समझा था कि वह "आत्मिकता हीन प्राणी है, जो पापों कें हाथों गुलाम के रूप में बिका हुआ है (रोमियों 7:14)! उसे बिल्कुल विश्वास नहीं था कि, "कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं(रोमियों 3:10)। यदि वह अपने गुनाहों व अपने पापी स्वभाव को पहिचानकर पुकारता, "पिता मुझ पापी पर दया कर"(लूका 18:13)! तब निश्चय ही यीशु ने उसे सुसमाचार(मत्ती 11:28) पर विश्वास करने के लिए आमन्त्रित किया होता! लेकिन उस शास्त्री की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि उसने अपने आप को बहुत अधिक बुद्धिमान दिखाने का प्रयास किया और वह सारे लोगों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराने का प्रयास कर रहा था।

इस बारे में प्रश्न कि मेरा पड़ोसी कौन है। यहूदियों में इस प्रश्न "मेरा पड़ोसी कौन है?" के जवाब में बहुत अलग अलग विचार मौजूद थे। बहुत से ऐसे लोगों ने प्रभु की आज्ञा को दूषित करके नये धारणा को क्रियान्वित कर दिया था जिसके अनुसार " तुम अपन पड़ोसी से प्रेम करो लेकिन अपने शत्रु से बैर।" यीशु ने मत्ती 5:43-48 में इस विचार धारा का खण्डन किया।

आम तौर पर लोगों के द्वारा स्वीकृत धारणा यह थी कि, "अपने पड़ोसी अर्थात इस्राएलियों को प्रेम करो", इसका अर्थ है, "अपने देश और अपने समाज के लोगों को प्रेम करो।"

और फरीसियों ने इसे और भी क्षीण बना दिया," अपने पड़ोसी अर्थात केवल फरीसी को ही प्रेम करो।" अर्थात, "केवल अपनी पार्टी और अपने समूह के लोगों से ही प्रेम करो।"[1] वे बाकि के सभी लोगों को तुच्छ समझा करते थे और आम लोगों को श्राप दिया करते थे, जो लोग उनकी नज़रों में व्यवस्था का पालन नहीं किया करते थें (यूहन्ना 7:49)। कुमरान में पायी जाने वाला यहूदी समाज इस बात का दावा करता है कि यदि कोई भी उनके छोटे समूह कुमरान का हिस्सा नहीं है वह "अन्धकार की सन्तान है" और उसे नफरत की जानी चाहिए।

अतः, इस प्रश्न के द्वारा " मेरा पड़ोसी कौन है?" यह व्यवस्थापक अपने विवेक को स्थिर करना और सारे लोगों के सामने यीशु को नीचा दिखाना चाहता था।

इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त कहा।

(2) यह दृष्टान्त लूका 10:30-35 में पाया जाता है।

(3) दृष्टान्त की व्याख्या लूका 10:36-37 में पायी जाती है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय जरूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दू या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

[1]या अपनी कलीसिया संप्रदाय

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में जरूरी या प्रासंगिक हैं? ***ध्यान दें।***

(1) दृष्टान्त का इस्तेमाल एक रूपक के रूप में करना।

निम्नलिखित चार मसीहियों ने बहुत अच्छी बातों को लिखा, लेकिन उन्होनें इस दृष्टान्त का इस्तेमाल "रूपक" के रूप में किया और बहुत सी चीज़ों का एक विशेष अर्थ बताया, जिन्हें उस कहानी के मूल अर्थ से जोड़कर नहीं देखा जा सकता। इसलिए, हमें उनके द्वारा इस दृष्टान्त के बताये हुए अर्थ को स्वीकार नहीं करना चाहिएः

ईरनीआऊस नामक, एक कलीसिया के फादर (130–200) ने इस दृष्टान्त का सार परमेश्वर और मनुष्य के रिश्ते के रूप में प्रस्तुत किया। "मनुष्य" डाकुओं के बीच में गिर गरा था, लेकिन "परमेश्वर" ने उस पर तरस खाया और उसके जख्मों पर पट्टी बांधी। दो "राजकीय सिक्के" पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों में परमेश्वर पिता और पुत्र को प्रगट करते हैं, ताकि वे उन सारी चीजों के फलवन्त बना सकें जो उन विश्वासियों के हाथों में सौंपी गयी है।

अगस्टिन नाम, कलीसिया के फादर (354–430) ने इस दृष्टान्त के द्वारा अधिक विस्तार से परमेश्वर और मनुष्य के बीच में सम्बन्ध को दर्शाने का प्रयास किया। यरूशलेम से यरीहो जाने वाला "व्यक्ति" आदम को दर्शाता है, जो वास्तव में मानव जाति को प्रगट करता है। "यरूशलेम" वह स्वर्गीय शहर है जहां से मनुष्य गिर गया है। "यरीहो" मनुष्य की नश्वरता को प्रगट करता है। "डाकू" शैतान और उसके दूतों के दिखाते हैं, जिन्होंने मनुष्य को अनश्वरता से वंचित कर दिया है। "उसके जख्म" जो उसे लगे थे वे पापों को दर्शाते हैं, जिन्हें क्षमा किया जाना जरूरी है। वह मनुष्य अधमरा छोड़ दिया गया, जो यह दर्शात है कि हालांकि उसकी आत्मा और प्राण जिन्दा है लेकिन, पाप से दूषित मनुष्य का भाग मर चुका है। "याजक और लेवी" पुराने नियम को दर्शाते हैं, जिसके लोग उद्धार तक नहीं पहुंच पाये। "सामरी" (जिस शब्द का अर्थ "रखवाला" या "संरक्षक" है) यीशु मसीह को दर्शाता है। उसके "पट्टी बांधने का" अर्थ है कि वह पापों को मिटा देता है। "तेल" उसे आशा दिलाने के प्रतीक है, जबकि "दाखरस" उसके जाशीले जज़्बे की बढ़ाई करता है। जिसे "गधे" पर लादकर उस व्यक्ति को सराय तक ले जाया गया वह यीशु की मानवीय प्रवृति को दर्शाता है जिसके तहत वह इस दुनिया में आये। "गधे पर सवार होने का अर्थ" यीशु मसीह के देहधारण पर विश्वास करना है। "सराय" कलीसिया का दर्शाती है, जहां पर यातायात का कार्यभार संभालने वाले अपने तीर्थयात्रियों को ठहराते हैं जो अपने घर अर्थात अपने स्वर्गीय यरूशलेम की ओर वापिस लौट रहे होते हैं। मनुष्य अभी भी सराय में पहुंचाये जाने की प्रक्रिया में है, क्योंकि वह अभी भी चंगा होने की प्रक्रिया में है। "प्रारम्भ में उस व्यक्ति पर तेल और दाखरस का उंडेला जाना" जो उस पर सड़क पर पड़े हुए ही डाल दिया गया था, वह बपतिस्मा को दिखाता है, और घायल को शक्ति प्रदान करता है। "अगले दिन" जब वह सामरी सराय के मालिक को दो चांदी के सिक्के देता है वह यीशु के मृतकों में से जी उठने को दर्शाता है। "इन दो चांदी के सिक्कों को" या तो परमेश्वर और अपने पड़ोसी को प्रेम करने वाली आज्ञाओं के रूप में देखा जा सकता है या फिर वर्तमान और भविष्य के लिए की गयी प्रतिज्ञाओं के रूप में। "सामरी द्वारा वापस आने की प्रतिज्ञा को" मत्ती 19:29 में यीशु द्वारा प्रतिफल के साथ लौटने की प्रतिज्ञा के रूप में देखा जाता है। "सराय का मालिक" माना जाता है कि वह प्रेरित पौलुस है।

मार्टिन लूथर नामक एक महान कलीसियाई क्रान्तिकारी (1483–1546) ने इस दृष्टान्त का अर्थ कुछ इस प्रकार से बतायाः "वह व्यक्ति" आदम को दर्शाता है, जो पाप में फंस गय और जिसके कारण हम सब भी पापी हो गये। "सामरी" यीशु मसीह को दर्शाता है, जो हमें बचाता है, हमें 'सराय' में लेकर जाता है, जो कलीसिया का प्रतीक है, और अब वह हमें चंगा कर रहा है।
लेकिन, एक और स्थान पर, लूथर इस दृष्टान्त का सही तरीके से इस्तेमाल करता है जब वह कहता है, "जब कोई अपने पड़ोसी को किसी जरूरत या किसी खतरे में देखत है, उसे अपने पड़ोसी को याजक और लेवी के जैसे नज़रअन्दाज करके मरने के लिए नहीं छोड़कर जाना चाहिए। सबत के दिन को पाक मानने के नाम पर, एक व्यक्ति अपने भाई की हत्या करने वाला बन सकता है।"

रिचर्ड सी ट्रेंच ने (1807–1886) इस दृष्टान्त का मतलब कुछ इस तरह से बतायाः "वह सराय" कलीसिया का प्रतीक, अर्थात आत्माओं को चंगा करने का स्थान है। "चांदी के दो सिक्के" सारे वरदानों और अनुग्रह को दर्शाते हैं, जिन्हें प्रभु यीशु ने जाने से पहले कलीसिया को सौंप दिया है, ताकि कलीसिया उसके पुनः आगमन तक घर की भली प्रकार से देखभाल कर सकें। वे दो सस्कारों को, वचन और संस्कार को, बाइबल में दो नियमों और चंगाई की सामर्थ्य और पापों की क्षमा को दर्शाते हैं।

(2) निम्नलिखित उल्लेख अति आवश्यक और प्रासंगिक हैं।

यीशु ने स्वयं इस दृष्टान्त का इस्तेमाल यह समझाने के लिए किया कि वह स्वयं किस प्रकार का परमेश्वर है और वह हमें किस प्रकार के लोग बनते हुए देखना चाहता है। उसने इस दृष्टान्त के किसी एक खण्ड या भाग को कोई विशेष से नहीं जोड़ा। इसलिए हमें भी इस दृष्टान्त में पाये जाने वाले हर एक तत्व व तथ्य को एक रूपक के रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए (जैसा कि उपरोक्त चार लोगों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार करने का प्रयास किया)। वह दृष्टान्त परमेश्वर की उद्धार की योजना के इतिहास के बारे में नहीं बताता है, अर्थात, पिछली शताब्दियों में परमेश्वर का मनुष्य के साथ में किस प्रकार का रिश्ता बना रहा था। वरन वह हमें जरूरत मन्द लोगों के प्रति परमेश्वर की इच्छा के बारे में बताता है, जिसे उसने हम पर प्रगट किया है। यीशु ने व्यवस्थापकों और हमें यह दिखाने के लिए इस कहानी का इस्तेमाल किया कि, वास्तव में जरूरत मन्द व्यक्ति के लिए "पड़ोसी" कौन है। और उस व्यवस्थापक ने बिल्कुल सही जवाब दिया कि, "जिस ने उस पर तरस खाया वहीं उसका पड़ोसी था"।

एक मसीही जन को कभी अपने आस पास देखकर यह नहीं पूछना चाहिए, " मेरा पड़ोसी कौन है? (मेरे लिए पड़ोसी कौन है?)" यह प्रश्न मसीही को कटघरे में लाकर खड़ा कर देता है। उसे जरूरत मन्द व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए अपने आप से प्रश्न करना चाहिएः "मैं किसके लिए एक पड़ोसी हूं?" हर एक जन जिसे परमेश्वर आपके जीवन में आने की अनुमति देता या आपके सामने लाकर रखता है वह जन हो सकता है जिसके आप पड़ोसी हो सकते हैं। "मैं किस जरूरत मन्द व्यक्ति के लिए आज एक पड़ोसी हूं?"

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग

किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। *दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात एक केन्द्र बिन्दू होता है।* इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। " जब मैं किसी पर अपने प्रेम को प्रगट करता हूं तो मैं उसका पड़ोसी हूं, अर्थात, अगर मैं किसी ऐसे जरूरत मन्द की मदद करता या उस पर कृपा करता हूं जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में अद्भुत रीति से लाकर रख दिया है।"मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यीशु ने उल्टा उससे प्रश्न पूछ लिया : वह यह नहीं पूछता, "मेरा मित्र कौन है?" वरन "मैं किसका पड़ोसी हूं?" यदि आप आपके जीवन में परमेश्वर द्वारा रखे गये किसी व्यक्ति पर दया करते है तो आप उसस व्यक्ति के लिए पड़ोसी ठहरते हैं।

यीशु याजकों और व्यवस्थकों का विरोधी नहीं है। उसकी मनसा याजक या लेवी के खिलाफ बोलने की नहीं थी, लेकिन वह तो केवल यह ही दिखाना चाहता था कि प्रेम और दया का अभाव हर एक जन को प्रभावित करता है, फिर चाहे वह कोई याजक हो या फिर लेवी। और वह यह शिक्षा देता है कि हर एक जन को वरन एक तुच्छ समझे जाने वाले सामरी को भी अपने जीवन में आने वाले हर जरूरतमन्द पर दया करनी चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमारे जीवन में रखा है! यीशु ने इस विचार धारा का विरोध किया कि आपका पड़ोसी आपके देश में रहने वाले या आपकी संस्कृति के लोगों या फिर आपके दल या आपके मित्रों के समूह तक ही सीमित होता है (लैवव्यवस्था 19:34; मत्ती 5:43-47)।

जरूरत मन्द व्यक्ति पर दया करना एक प्रगट प्रेम का उदारहण और परमेश्वर के राज्य की विशेषता है। यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर बलिदान किये जाने की वजह से, हर एक विश्वासी को एक मुफ्त वरदान के रूप में अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है। इसलिए परमेश्वर यह चाहते हैं कि विश्वासी जन परमेश्वर और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेम प्रगट करने वाला जीवन व्यतीत करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपना आभार प्रगट करें। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग परमेश्वर की महिमा के लिए जीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि जब तक कि वे इस धरती पर जीवित हैं वे *सिद्धता* के साथ अपने परमेश्वर और अपने पड़ोसी को प्रेम नहीं कर सकते, लेकिन सैद्धान्ति तौर पर वे प्रेम की व्यवस्था(और दया) के अनुसार अपना दैनिक *जीवन जीना प्रारम्भ कर देगें।* प्रेम की व्यवस्था को कभी भी खत्म नहीं किया गया है। (रोमियों 13:8-10; 1कुरिन्थियों 9:21; 13:13; गलातियों 6:2; याकूब 2:8)।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

पढ़ें गलातियों 2:16; 3:6-9,12-14।

खोजें और चर्चा करें। ये गद्यांश, दृष्टान्त में दिये गये सत्य का किस प्रकार समर्थन करते या शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

गलातियों 3:12। "पर जो उन को मानेगा (अर्थात व्यवस्था को मानेगा) वह उन के कारण जीवित रहेगा। इसका अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति *सिद्ध* तौर पर परमेश्वर को प्रेम कर सके, उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो सकता है।

गलातियों 2:16। लेकिन "व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा"। इतिहास के किसी भी काल में, प्रभु यीशु को छोड़कर, किसी ने भी परमेश्वर को सिद्धता के साथ प्रेम नहीं किया है। यीशु को छोड़कर किसी और ने *सिद्ध* पड़ोसी साबित नहीं हुआ है! इस धरती पर पाये जाने वाले पापी लोगों के लिए परमेश्वर और अपने पड़ोसी के लिए इस तरह का सिद्ध प्रेम कर पाना असम्भव है (रोमियों 3:10-12, 23)

गलातियों 3:13। "मसीह ने हमारे लिए श्रापित बन कर, हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया।" इतिहास के किसी भी काल में कोई भी जन परमेश्वर की व्यवस्था की मांगों को पूरा नहीं कर पाया, लेकिन यीशु मसीह ने उन्हें पूरा किया। वह पूरी तरह से आज्ञाकारी रहा और अपने में परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा किया (इब्रानियों 5:8-9)। सिद्ध रूप में आज्ञाकारी होकर और प्रायश्चित के लिए अपने आप को एक विकल्प के रूप में क्रूस पर बलिदान करके, यीशु ने *हमारे बदले में* वह काम कर दिया जो हम कभी नहीं कर सकते थे (रोमियों 8:1-3; 2 कुरिन्थियों 5:21)।

गलातियों 3:6-9। अतः, हर एक जन जो यीशु मसीह पर *विश्वास* करता है उसके साथ परमेश्वर पूरी तरह धर्मी *जानते* और उसके साथ *वैसा ही व्यवहार करते हैं।*
इसीलिए हम मसीही लोग हमेशा इस बात को गम्भीरता के साथ अंगीकार करते हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए अपने कामों से परमेश्वर की व्यवस्था की मांग को पूरा करना असम्भव है। परमेश्वर के अनुग्रह और हमारे भीतर पवित्र आत्मा के कामों के द्वारा ही, हम प्रभु यीशु मसीह और हमारे बदले में उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा *परिपूर्ण की गयी धार्मिकता* के पर भरोसा करते हैं। और हम उसे और अपने पड़ोसियों को प्रेम करने के द्वारा अपनी कृतज्ञता को प्रगट करते हैं।

---

6. परमेश्वर के राज्य के प्रेम के प्रगट किये जाने से सम्बन्धित दृष्टान्त की शिक्षा का सार।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य के प्रेम के प्रगट किये जाने से सम्बन्धित दृष्टान्त की शिक्षाएं क्या हैं?

ध्यान दें।

(1) दुष्टात्मा के फिर से वापस आने का दृष्टान्त (मत्ती 12:43-45)।

यह परमेश्वर के राज्य में "प्रगट होने वाले प्रेम के बारे में" सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर का राज्य आन्तरिक रूप में बढ़ने वाले नकारात्मक धर्म या विचार धारा(मत्ती 12:24 के अनुरूप नकारात्मक आलोचनाओं और मत्ती 12:39 के अनुसार "योना के चिन्ह" की मांग करने वालों) की बजाय बाहरी तौर पर प्रगट होने वाली सकारात्मक विचारधारा है। कानूनी उदासीनता/ फरीसियों की उदासीनता की बजाय (मत्ती 12:2) यीशु मसीह का प्रगट प्रेम चंगाई, छुटकारा और उद्धार प्रदान करता है (मत्ती 12::9-14)।

प्रगट प्रेम (कहीं कुछ गलत न हो जाए से डरते हुए कुछ न करने की बजाय आगे बढ़कर जो सही है उस काम को करना) परमेश्वर के राज्य की एक अद्भुत विशेषता है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोगों का घर एक भरा हुआ या पहले से अधिकृत घर होता है, झाड़ बुहारा खाली घर (मत्ती 12:44) होने के बजाय सकारात्मक गतिविधियों से भरा हुआ घर होता है। ये लोग विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाये गये लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति अपने आभार को नुकसान से बचते हुए उदासीन रूप में कर्तव्य को पूरा करने की बजाय सक्रिय प्रेम और पवित्रता के द्वारा प्रगट करते हैं।

(2) भले सामरी का दृष्टान्त(लूका 10:29-37)।

यह परमेश्वर के राज्य में "प्रगट होने वाले प्रेम के बारे में बताता है।"

इस दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "अगर मैं किसी पर अपना प्रेम प्रगट करता हूं तो मैं उसका पड़ोसी हूं, अर्थात, जब मैं किसी जरूरतमन्द की मदद करता हूं या उस पर दया करता हूं जिसे परमेश्वर ने मेरे जीवन में रखा है।" वहां पर प्रश्न यह नहीं होना चाहिए, "मेरा पड़ोसी कौन है? परन्तु प्रश्न होना चाहिए कि "मैं किसका पड़ोसी हूं?"

प्रेम प्रगट करना जो जरूरतमन्द लोगों की मदद कर(ना भी हो सकता है परमेश्वर के राज्य की बुनियादी विशेषता है। क्रूस पर मसीह के बलिदान के कारण, परमेश्वर के राज्य के लोगों को निःशुल्क उपहार के रूप में अनन्त जीवन प्राप्त हुआ है। इसीलिए, वे परमेश्वर और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम से भरा जीवन व्यतीत करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग परमेश्वर की महिमा के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि जब तक कि वे इस वर्तमान धरती पर जीवित हैं वे परमेश्वर और अपने पड़ोसियों को *सिद्धता* के साथ प्रेम नहीं कर सकते हैं, फिर भी वे अपने जीवन भर परमेश्वर और अपने पड़ोसियों को प्रेम करने की कोशिश करते हैं। प्रेम की व्यवस्था को पुनः स्मरण नहीं किया जाएगा(रोमियों 13:8-10)

(3) दो कर्जदारों का दृष्टान्त (लूका 7:40-50)

यह "परमेश्वर के राज्य में प्रगट प्रेम" के बारे में शिक्षा देता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "प्रेम प्रगट किये जाने के परिणामस्वरूप व्यक्ति को क्षमा प्राप्त करने का आभास होता है। और क्षमा प्राप्त करने के आभास सुसमाचार पर विश्वास उत्पन्न होता है। जिस व्यक्ति, का ज़्यादा कर्ज़ माफ किया जाता है, वह ज़्यादा प्रेम करता है और जिसका कम क्षमा होता है वह कम प्रेम करता है।"

यीशु मसीह के प्रति प्रेम प्रगट करना परमेश्वर के राज्य की मुख्य विशेषता है। यूहन्ना 8:42 और 1यूहन्ना 5:1 की तुलना करें। परमेश्वर के राज्य के सच्चे विश्वासी लोग यीशु मसीह के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने के द्वारा अपने आभार को प्रगट करते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उनके सारे पापों को (चाहे उनकी संख्या कितनी भी थी) क्षमा कर दिया है।

यीशु ने उस महिला के क्षमा प्राप्त करने के बोध की तुलना फरीसी के क्षमा प्राप्त करने के बोध न करने से की। वह फरीसी सोचता था कि वह धर्मी है और उसे किसी तरह की क्षमा की आवश्यकता नहीं है। उसे इस बात पर विश्वास नहीं था कि वह एक पापी है और परिणाम स्वरूप उसे यह आभास नहीं था कि उसे भी क्षमा की जरूरत है। क्योंकि उसे किसी बात के लिए क्षमा नहीं मिली

थी, इसी लिए उसने किसी पर प्रेम प्रगट नहीं किया। क्योंकि उसने यीशु से कोई क्षमा नहीं प्राप्त की थी, इसीलिए उसने यीशु मसीह को प्रेम नहीं किया। लेकिन इसके विपरीत, उस स्त्री पर पाप का बोझ बहुत ज्यादा था और वह अपने पापों से पूरी तरह से क्षमा प्राप्त करना चाहती थी। और क्योंकि उसके अधिक पाप क्षमा किये गये इसीलिए उसने ज्यादा प्रेम किया। क्योकि उसने अपने अनेकों पापों को लिये यीशु मसीह से क्षमा पायी थी, इसी लिए उसने यीशु मसीह को प्रेम किया।

इस घटना में दो ऐसे लोगों के बीच में तुलना की गयी थी जिनमें से एक को पाप तो क्षमा किये गये थे और दूसरे का कोई पाप क्षमा नहीं किया गया था। जितने लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं उन सभी को पूर्ण रूप से क्षमा प्रदान की जाती है। लेकिन जैस जैसे मसीही जन आत्मिक रूप में बढ़ता चला जाता है और वह इस बात को समझ पाता है कि उसका मानवीय स्वभाव कितना पाप से भरा हुआ है और वास्तव में यीशु मसीह ने उनके बदले में क्या किया है, उतना ही ज़्यादा उनका प्रेम यीशु मसीह के लिए बढ़ता है।

(4) परमेश्वर कैसा है।

सभी लोगों, वरन् खास तौर पर भटके हुए लोगों के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे है। इन दृष्टान्तों की एक महान शिक्षा यह है कि वे चंगाई और छुटकारा चाहने वाले जरूरतमन्दों के प्रति यीशु मसीह में होकर परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करते हैं। वह लोगों को दुष्टात्माओं से आज़ाद करता, उनकी बीमारियों को चंगा करता है, उनके पापों को क्षमा करता है, और वह हमेशा जरूरत मन्द लोगों की मदद करने के लिए तैयार रहता है। मत्ती ने यीशु के बारे में लिखा, "जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे(मत्ती 9:36)।"

(5) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

म्सीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें कैसा होना है। इन दृष्टान्तों से हमें एक और शिक्षा यह मिलती है कि परमेश्वर हमें किस प्रकार के व्यक्ति बनते देखना और कैसे काम करवाना चाहते हैं। "प्रगट प्रेम" वह भाव है जो हम परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त उद्धार के प्रति आभार प्रगट करते हुए दिखाते हैं। हमें जोखिम रहित उदासीन प्रेम के बदले, दूसरों पर सक्रिय अर्थात कामों के द्वारा प्रेम प्रगट करना चाहिए। यीशु मसीह के प्रति उदासीनता दिखाने की बजाय, हमें उसके प्रति अपना प्रेम उण्डेल देना चाहिए। हमें व्यवस्था का पालन करते हुए अपनी झूठी धार्मिकता को बचाये रखने की बजाय, परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम और लोगों के प्रति अपनी दया को प्रगट करना चाहिए। एक मसीही होने के नाते हमारा छुटकारा हुआ है हम बच गये है, इसलिए हम ऐसा करने के योग्य है क्योंकि हम अपने उस उद्धार के लिए (क्षमा, चंगाई, बहाली इत्यादि) आभारी है, जिसे हमने विश्वास करने पर प्राप्त किया है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर **"भले सामरी"** के दृष्टान्त का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 23,24,25, और 27** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(7) रोमियों 5:1-2अ।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 5:12-21।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 20

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 10,11,14 व 15**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 23,24,25 व 27) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(7) रोमियों 5:1-2अ**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।

(7) रोमियों 5:1-2अ। अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बनें हैं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों की पत्री)* **रोमियों 5:12-21**

परिचय। एक साथ मिलकर रोमियों 5:12-21 का अध्ययन करने के लिए अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करें।

रोमियों 5:1-11 में धर्मी ठहराये जाने की कुछ आशीषों के बारे में बताया गया है। रोमियों 5:12-21 मसीहियों के कानूनी अर्थात व्यवस्था के आधार पर अधिकार के बारे में बताया गया है खास तौर पर कि हर मसीही परमेश्वर की नज़रों में धर्मी है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 5:12-21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन-सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)

आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

5:12-19

खोज 1. **आदम और मसीह के बीच तुलना दर्शाती है कि परमेश्वर लोगों के साथ केवल उनके *व्यक्तित्व* (उनके कार्यों) के आधार पर ही व्यवहार नहीं करते, लेकिन साथ ही उनकी आदम में या फिर मसीह में एकता (उनके स्थान) के आधार पर भी करते हैं।**

''आदम के साथ एकजुट होने में हमारा गिरना'' और ''मसीह के साथ एकजुट होने में हमारा धर्मी ठहरना'' के बीच एक महत्वपूर्ण समानता है। जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं उनका धर्मी ठहरना, उन लोगों के गिरने के द्वारा *चित्रित* किया गया है जो आदम के वंशज हैं। जिस प्रकार से ''पाप, दोष और मृत्यु'' को, जिसमें समस्त मानवजाति शामिल है, कभी भी शुद्ध रूप से व्यक्तिवादी शब्दों में नहीं समझाया जा सकता, लेकिन केवल आदम के साथ एकजुट (अर्थात, उनके शारीरिक वंश से) होने के द्वारा ही समझाया जा सकता है, उसी प्रकार, ''धार्मिकता, न्याय और जीवन'', जिसमें सभी मसीही शामिल हैं, कभी भी शुद्ध रूप से व्यक्तिवादी शर्तों (विश्वास के प्रयास) द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता, लेकिन केवल यीशु मसीह के साथ एकजुट (अर्थात, मसीह में उनका स्थान) होने के द्वारा!

(1) वचन 12 तुलना के केवल पहले भाग की व्याख्या करता है,
''जिस प्रकार लोग आदम में मरे हुए हैं,
(उसी प्रकार मसीह में धर्मी ठहराए गए है)''।

जिस प्रकार आदम के पाप (उसकी अनाज्ञाकारिता) ने उन सभी लोगों के लिए दोष और मृत्यु के निश्चित परिणाम को निर्धारित किया जो सभी लोग आदम के वंशज थे, तो मसीह की धार्मिकता (उनकी आज्ञाकारिता) ने उन सभी लोगों के लिए जो समीह में विश्वास करते हैं, धर्मी ठहरने और जीवन के अनिर्वाय परिणामों को संचालित किया (रोमियों 5:18-19)!

(2) वचन 13-14 यह बताता है कि आदम का एक अपराध समस्त मानव जाति के पतन का कारण था।

यह पहला कोष्ठक है (अंतराल, व्याकरणिक रूप से पिछले वाक्य से नहीं जुड़ा)। यह तथ्य, कि लोग मूसा की व्यवस्था के दिए जाने (1446 ईसा पूर्व) से बहुत पहले ही मर चुके थे, यह सिद्ध करता है कि पतन का कारण लोगों के व्यक्तिगत पाप नहीं थे, बल्कि आदम का एक अपराध था। इसलिए आदम पृथ्वी पर सभी स्वभाविक रूप से उत्पन्न हुए मनुष्यों का प्रतिनिधि या मुखिया है। जब आदम पाप में गिरा, समस्त मानव जाति पाप में गिर गई!

आदम यीशु मसीह का *एक उदाहरण (चित्र या प्रकार)* था, वह जो आने वाला था। इसी तरह, यीशु मसीह पृथ्वी पर आत्मिक रूप से नया जन्म् पाए हुए लोगों (जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं) के *प्रतिनिधि या मुखिया* हैं (यूहन्ना 1:12-13)। आदम और मसीह परमेश्वर के छुटकारे के प्रकाशन के

दो ऐतेहासिक चित्र हैंः आदम ने छुटकारे को आवश्यक बनाया और मसीह ने छुटकारे को वास्तविकता बनाया।

(3) वचन 15-17 बताते हैं कि पतन और उद्धार के बीच समानता पूर्ण रूप से समानांतर नहीं है।

यह दूसरा कोष्ठक है। यह बताता है कि एक तरफ पाप में गिरना और दूसरी तरफ पाप से उद्धार के बीच समानता पूर्ण रूप से समानांतर नहीं है। मसीह का अनुग्रह पूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की अपेक्षा विस्तार और परिणाम में कहीं अधिक बड़ा है।

(4) वचन 18-19 सम्पूर्ण तुलना की व्याख्या करते हैं,
"जिस प्रकार आदम से जुड़े सभी लोग मरते हैं,
उसी प्रकार सभी लोग जो मसीह से जुड़े हैं धर्मी, ठहरते हैं"।

जिस प्रकार आदम के अपराध (उसके पाप में गिरने) के कारण उसके सभी स्वभाविक वंशज (इतिहास में सभी मनुष्य प्राणी) दोषी ठहरे, तो मसीह की धार्मिकता (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) मसीह में सभी विश्वासियों के धर्मी ठहरने का कारण बनी (अर्थात, वे सभी लोग जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह का प्रचूर प्रयोजन और धार्मिकता का वरदान प्राप्त किया (रोमियों 5:17)। जिस प्रकार आदम की अवज्ञा कारण बनी की परमेश्वर सभी स्वभाविक मनुष्यों को पापी घोषित करे, उन्हें पापी समझे और उनके साथ व्यवहार करे, तो मसीह की आज्ञाकारिता कारण बनी की परमेश्वर मसीह में सभी विश्वासियों को पूर्ण रूप से धर्मी घोषित करें, धर्मी माने और धर्मी के समान उनके साथ व्यवहार करें।

5:20-21

खोज 2. **मनुष्यों के पाप और परमेश्वर के अनुग्रह के बीच तुलना का सांराश।**

(1) व्यवस्था को एक अपराध में जोड़ा गया था
जिससे कि पाप बढ़े।

"व्यवस्था बीच में आ गई की अपराध बहुत हो" (रोमियों 5:20)। "व्यवस्था" को आदम और मसीह के बीच के समय (1446 ईसा पूर्व) में अनुग्रह की वाचा में जोड़ा गया (गलातियों 3:17,19)। यहाँ "व्यवस्था" का तात्पर्य मूसा की सम्पूर्ण व्यवस्था, पुराने नियम की सम्पूर्ण संगठित प्रणाली से है। मसीह के प्रथम आगमन से पहले और इससे पहले कि मसीह में विश्वास एक वास्तविकता बनता, "सम्पूर्ण सांसर पाप का कैदी था।" यहाँ तक कि पुराने नियम के समय के विश्वासी भी व्यवस्था द्वारा कैदी थे, तब तक बंधे हुए थे जब तक कि यीशु मसीह में विश्वास प्रगट नहीं हुआ। व्यवस्था को काम में लाया गया कि यह लोगों की अगुवाई मसीह की ओर करे और लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जांए" (गलातियों 3:22-24)। व्यवस्था को अनंत जीवन प्राप्त करने का माध्यम के रूप में बीच में नहीं लाया गया, बल्कि पाप और मृत्यु की अधिकता और उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार की आवश्यकता का एहसार दिलाने वाले माध्यम के रूप में बीच में लाया गया। जितना अधिक मनुष्य को व्यवस्था का ज्ञान था, उतनी ही बड़ी उसकी जिम्मेदारी थी, क्योंकि जहाँ व्यवस्था है, वहाँ अपराध भी है (रोमियों 4:5)। जितना अधिक व्यवस्था ने मनुष्य के दिमाग और हृदय में काम किया, उतना अधिक मनुष्य का विरोध परमेश्वर के प्रति बढ़ा और उतना ही अधिक यह परमेश्वर की धार्मिक

आज्ञाओं को भ्रष्ट करने का कारण बना (रोमियों 7:8,11,13)। इसप्रकार, आदम और मसीह के बीच के समय में व्यवस्था का योगदान केवल अपराधों और पापों को बढ़ाना था!

(2) मनुष्य के पाप बढ़ने से परमेश्वर का अनुग्रह उससे भी अधिक बढ़ जाता है।

परमेश्वर की योजना अच्छाई को बुराई से बाहर निकालने की थी। उनकी योजना मनुष्य के पापों को बहुतायत से अनुमति देना था (क्योंकि उन्होंने व्यवस्था को बनाए नहीं रखा, और व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकते थे), ताकि उनका अनुग्रह अत्यधिक बहुतायत से हो! ''जब पाप बहुत हुआ, तब परमेश्वर का अनुग्रह उससे भी अधिक हुआ''। संसार के सभी पाप परमेश्वर के अनुग्रह से सबसे अद्भुत प्रदर्शन को दिखाने के लिए अवसर बने! पाप के बजाय अनुग्रह ने यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा शासन करना शुरू कर दिया, (अर्थात, उस धार्मिकता के द्वारा जिसे यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पूर्ण किया और उसके पश्चयात अपनी आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन पर उसे लागू किया)!

हालाँकि व्यवस्था अभी भी लोगों द्वारा की जाने वाली बुराई को बहुगुणित करने के लिए एक बहुत प्रभावशाली माध्यम है (रोमियों 7:7-8), परमेश्वर का अनुग्रह धार्मिकता और नया जन्म् दोनों को उत्पन्न करने के लिए (व्यवस्था की तुलना में) कहीं अधिक प्रभावशाली माध्यम बना! यद्यपि अभी भी संसार पर बुराई का प्रभाव बहुत अधिक है, अपने पूर्ण अर्थों में मृत्यु शब्द का कारण है (आत्मिक मृत्यु, शारीरिक मृत्यु और अनंत मृत्यु), संसार पर परमेश्वर की धार्मिकता का प्रभाव उससे कहीं अधिक है और अपने पूर्ण अर्थ में जीवन शब्द का करण है (फिर से जन्म् पाया हुआ नया जीवन जो अब एक परिपूर्ण और सिद्ध अंनत जीवन में बढ़ता है)।

परमेश्वर के अनुग्रह के लाभकारी प्रभाव पाप के बुरे प्रभाव से बढ़ कर है। परमेश्वर का अनुग्रह इस संसार में पाप से उत्पन्न होने वाली बुराई से कहीं अधिक भलाई उत्पन्न करता है। लोगों की बढ़ती हुई संख्या उद्धार पाती है और अनुग्रह के द्वारा बदले जाते हैं। आदम के पाप में गिरने के कारण बुराई का प्रभाव उस भलाई के प्रभाव की तुलना में बहुत हल्का जो यीशु मसीह के प्रथम आगमन के द्वारा लाया गया!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 2:1-16 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिय गये हैं।)

5:14

प्रश्न 1. **पौलुस के कहने का क्या अर्थ है जब वह कहता है कि आदम आने वाले यीशु मसीह का एक उदाहराण (नमूना, प्रकार) था?**

ध्यान दें। प्रेरित पौलुस सिखाता है कि संसार का हर एक व्यक्ति आदम और मसीह दोनों के साथ एक निश्चित रिश्ते में खड़ा होता है। आदम के एक अपराध के कारण, संसार के सभी लोग परमेश्वर की दृष्टि में भ्रष्ट थे। और मसीह के एक धार्मिक कार्य (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) के द्वारा, मसीह में सभी विश्वासी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए गए हैं।

रोमियों 5:12 की व्याख्या लोगों द्वारा मुख्य रूप से अलग अलग प्रकार से की गई है क्योंकि लोगों का अपने पूवर्जों के कामों और उनके वंशजों पर इसके परिणामों के बीच संबंध के विषय में अलग अलग दृष्टि कोण है।

(1) आधुनिक युग का प्रचलन व्यक्तिवाद पर जोर देता है।

व्यक्तिवाद के इस वर्तमान युग में, लोग इस विचार को अस्वीकार कर देते हैं की उनके पुवार्जों के पापों और उनके वंशज होने के नाते उनके लिए इसके परिणामों के बीच संबंध है। वे मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बुरे कार्यों के लिए जिम्मेदाम है और इसके परिणामस्वरूप *केवल* अपने ही पापों[1] के कारण दुःख उठाता है।

वे रोमियों 5:12 की व्यख्या इस प्रकार करते हैंः पहला व्यक्ति जिसने व्यक्तिगत पाप किया वह आदम था। इसलिए पहला व्यक्ति जो दुःख उठाने और मृत्यु के योग्य था वह केवल आदम था। पाप और मृत्यु ने मानव इतिहास में पहली बार आदम के द्वारा प्रवेश किया। उसके सभी वंशजों ने *केवल उसके बुरे उदाहरण का अनुसरण किया!* उन्होंने भी व्यक्तिगत पाप किया और इसके परिणामस्वरूप मर गए। केवल इस प्रकार से ही आदम का बुरा उदाहरण लोगों के पाप में गिरने का कारण बना। मृत्यु सब मनुष्यों में आ गई क्योंकि सब ने आदम के बुरे उदाहरण का अनुसरण किया और व्यक्तिगत रूप से पाप किया।

(2) बाइबल दोनों ही सिखती है, एक दूसरे के साथ हमारी एकजुट्ता साथ ही साथ हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी।

हमारे पूवर्जों के पापों और उनके वंशजों के रूप में हमारे लिए इसके परिणामों के बीच एक संबंध है। बाइबल सिखाती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने बुरे कामों (पापों) और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार है, न केवल स्वंय के लिए, बल्कि अपने वंशजों के लिए भी! बाइबल कई उदाहरण देती हैः

भविष्यद्वक्ता यहेजकेल और यिर्मयाह। बेबीलोन में बंधुवाई में रह रहे इस्त्राएलियों ने अपने वर्तमान दुःखों के लिए अपने पुर्वजों के पापों को दोषी ठहराया। उन्होंने कहा, ''खट्टे अंगूर तो खाए पुरखा लोगों ने, परन्तु दाँत खट्टे हुए बच्चों के'' (यहेजकेल 18:2)। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने अपने पापों और उनके परिणामों के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया। ''जो कोई प्राणी पाप करे वही मर जाएगा'' (यहेजकेल 18:4)। प्रत्येक पापी अपने स्वयं के पापों के लिए मर जाएगा। साथ ही प्रेरिता पौलुस ने भी यही सिखायाः ''परमेश्वर हर एक को उसके कर्मों के अनुसार बदला देगा'' (रोमियों 2:6)!

---

[1] हिंदू धर्म का मानना है कि एक व्यक्ति के व्यक्तिगत कर्म (किसी के अच्छे और बुरे कार्यों के बीच संतुलन का प्रभाव) निर्धारित करते हैं कि वह पुर्नजन्म के चक्र में ऊपर होगा या नीचे। यहूदी और मुसलमान विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों के बीच का संतुलन अंतिम न्याय के दिन मापदंड पर यह निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति जन्नत में जाएगा या फिर नरक में डाला जाएगा। मानववादी और व्यवस्थावादी मानते हैं कि उनके भले और बुरे कामों के बीच संतुलन उनके भविष्य को निर्धारित करता है।

इस्त्राएलियों ने अपनी बेगुनाही बनाए रखीः ''यहोवा ने हमारे विरूद्ध इतनी बड़ी विपत्ति क्यों डाली है? हमारा अधर्म क्या है? हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध कौन सा पाप किया है?'' तो तू इन लोगों से कहना,

- एकजुटताः ''यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरखा मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दंडवत किया, और मुझे त्याग दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया (यह उनके पुर्वजों के पापों के साथ उनकी एकजुटता को संदर्भित करता है)
- व्यक्तिगतः ''लेकिन जितनी बुराई तुम्हारे पुरखाओं ने की थी, उससे भी अधिक तुम (व्यक्तिगत रूप से) करते हो। क्योंकि तुम अपने बुरे मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते।

इस कारण, मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूगाँ, जिसको न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा जानते थे; और तुम रात दिन दूसरे देवताओं की उपसना करते रहोगे (यिर्मयाह 16:10-13)।'' भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने व्यक्तिगत पापों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी और पुर्वजों के पापों के साथ एकजुटता, दोनों पर जोर दिया।

इसलिए परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को उनके पापों के लिए व्यक्तिगत और एक राष्ट्र (एकजुटता) के रूप में दंडित किया और उन्हें व्यक्तिगत रूप से और एक राष्ट्र के रूप में बेबीलोन की बंधुवाई में भेज दिया।

निर्गमन 20 में दस आज्ञाएँ मानव जाति में प्रत्येक व्यक्ति की अन्य लोगों के साथ एकजुटता पर जोर देती हैं।

आशीषों में एकजुटताः एक ओर, दस आज्ञाएँ लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति व्यक्तिगत आज्ञाकारिता के लिए प्रोत्साहित करती हैं, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का उनके वंशजों पर सकारात्मक प्रभाव होता है। निर्गमन 20:6 में परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं, ''जो मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, मैं उनकी हजारों पीढ़ी पर दया करता हूँ।''

श्रापों में एकजुटताः लेकिन निर्गमन 20:5 में वे चेतावनी भी देते हैं कि ''जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दंड दिया करता हूँ।'' हम हर दिन पूर्वजों के प्रभावों को उनके बच्चों में देख सकते हैं उन देशों में जहाँ लोग भूमि के नियमों, नशीले पदार्थों के दुरूपयोग, अवैध यौन संबंध, अपराध, जातिवाद, घृणा और धार्मिक अतिवाद जैसे नियामों के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं।

इसलिए हमारे और हमारे बच्चों और हमारे बच्चों के बच्चों के बीच एकजुटता है। बाइबल केवल प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में ही नहीं सिखाती, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की अपने परिवार, धार्मिक समूह, अपने देश, अपने राष्ट्र और यहाँ तक की समस्त संसार की मानवता के साथ एकजुटता के बारे में भी सिखती है। जो कुछ भी दूसरों लोगों के साथ होता है वह निश्चित रूप से मुझ पर भी प्रभाव डालता है! जो कुछ मेरे साथ होता है वह निश्चित रूप से दूसरे लोगों को प्रभावित करता है!

रोमियों 5:12–19 में, प्रेरित पौलुस भी सभी मनुष्यों की अपने पूर्वज (आदम) के साथ (प्राकृतिक) एकजुटता और सभी मसीहियों की उनके उद्धारकर्ता (मसीह) के साथ (आत्मिक) एकजुटता पर जोर देता है! वह सिखाता है कि जो कुछ भी आदम के साथ हुआ उसने सम्पूर्ण मानव जाति पर प्रभाव डाला। और वह यह भी सिखता है कि जो कुछ भी मसीह से साथ हुआ वह उन सब लोगों पर प्रभाव डालता है जो यीशु मसीह के हैं। इसलिए पौलुस आदम को मसीह का ''एक उदाहरण (नमूना, प्रकार)'' कहता है। आदम के व्यक्तिगत अपराध (पाप) और उसके अनाज्ञाकारिता के परिणाम (मृत्यु शब्द अपने पूर्ण अर्थ में) का सभी मनुष्यों पर प्रभाव है जो स्वभाविक रूप से पैदा हुए हैं। इसी तरह, यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य और उनकी आज्ञाकारिता के परिणाम (अंनत जीवन शब्द अपने पूर्ण अथ में) का उस प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव है जिसका नया जन्म् हुआ है (यीशु मसीह में विश्वासी) (यूहन्ना 1:12–13)। आदम के व्यक्तिगत पाप ने प्रत्येक व्यक्ति को (आत्मिक, शारीरिक और अनंत) मृत्यु तक पहुँचा दिया। इसी तरह, ''अनुग्रह के असीम प्रयोजन की स्वीकृति और धार्मिकता का वरदान'' (मसीह की आज्ञाकारिता द्वारा प्राप्त की गई) हर उस व्यक्ति को अनंत जीवन में राज्य करने की ओर ले जाता है जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

रोमियों 5:12–19 में, पौलुस आदम के व्यक्तिगत पाप और मृत्यु की तुलना उन लोगों के पाप और मृत्यु से नहीं करता जो उसके बाद हुए। बल्कि वह आदम के द्वारा संसार के सभी लोगों में लाए गए पाप और मृत्यु की तुलना, यीशु मसीह द्वारा संसार में सभी मसीहियों के लिए लायी गई धार्मिकता और जीवन से करता है! मसीह के साथ एक विश्वासी की एकजुटता की तुलना स्वभाविक व्यक्ति की आदम के साथ एकजुटता से की गई है।

वचन 19 में वह कहता है कि एक मनुष्य, आदम, के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी *ठहरे।* ''ठहरे'' शब्द (यूनानीः कथिस्टमी) का अर्थ है ''कानूनी रूप से गठित होना''। आदम के अनाज्ञाकारिता के एक काम ने मानव जाति के प्रत्येक व्यक्ति को कानूनी रूप से *दोषी, एक पापी* ठहरा दिया! ''एक पापी'' का अर्थ होता है एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ, दूसरे लोगों के साथ और स्वयं के साथ एक सही संबंध स्थापित करने में चूक गया, क्योंकि वह अभी भी यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता (यूहन्ना 16:9)। ''एक पापी'' आर्थात वह व्यक्ति जो परमेश्वर एक साथ व्यक्तिगत संबंध में चूक गया, जो अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य से चूक गया, जिसके जीवन में परमेश्वर के पवित्र चरित्रगुणों का अभाव है, क्योंकि वह अभी तक वह नहीं बना जो परमेश्वर चाहते हैं कि लोग बनें। बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य जाति का एक भी व्यक्ति पवित्र और धर्मी नहीं है! परमेश्वर सम्पूर्ण मानव जाति के प्रत्येक व्यक्ति को उनकी स्वभाविक स्थिति में आदम के अपराध के अनुसार ''एक पापी'' *समझते हैं, घोषित करते हैं, और व्यवहार करते हैं।*

वचन 19 में, पौलुस यह भी कहता है कि एक मनुष्य, मसीह, के आज्ञामानने से ''बहुत से ठर्मी ठहरते (यूनानीः कथिस्टमी) हैं।'' मसीह के आज्ञकारिता के एक काम ने (यूहन्ना 10:11) बहुतों को (मसीह में सभी विश्वासी, अर्थात, ''वे सब जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह के असीम प्रयोजन और धार्मिकता के वरदान को स्वीकार किया'') (रोमियों 5:17–18) कानूनी रूप से *क्षमा किए हुओं और धर्मी ठहराए* हुओं की स्थिति में संगठित किया। बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में सभी (नया जन्म् पाए हुए) मसीही धर्मी हैं! परमेश्वर यीशु मसीह के आज्ञाकारिता के एक काम (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) के आधार पर यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को ''एक धर्मी व्यक्ति'' *घोषित करते, मानते और व्यवहार करते हैं।*

पौलुस सिखाता है कि जिस प्रकार सभी लोग स्वभाविक रूप से अपने प्रतिनिधि आदम के साथ एकजुटता में पापी है, और परिणाम स्वरूप आदम के साथ एकजुटता में मृत्यु के लिए अभिशप्त हैं, उसी प्रकार यीशु मसीह में सभी विश्वासी अपने प्रतिनिधि, यीशु मसीह के साथ एकजुटता में मारे गए और मुर्दों में से जी उठे। यीशु मसीह द्वारा प्राप्त की गई धार्मिकता उन में अध्यारोपित की गई है (2कुरिन्थियों 5:21)।

बेशक, सभी स्वभाविक मनुष्यों ने आदम के माध्यम से शाब्दिक रूप से पाप नहीं किया और मसीह में सभी विश्वासी शाब्दिक रूप से मसीह के साथ नहीं मरे। लेकिन आदम का एक पाप न्यायिक और वास्तविक अर्थ में सभी स्वभाविक लोगों के लिए उनके पाप के लिए उत्तरदायी (कारण) ठहरा। इसी प्रकार यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान न्यायिक और वास्तविक अर्थ में मसीह में सभी विश्वासियों के लिए उनके पुराने जीवन की मृत्यु और नए जीवन के पुनरुत्थान के लिए उत्तरदायी (कारण) ठहरा।

मसीहियों को ''एकजुटता'' को कैसे देखना चाहिए? ''एकजुटता'' केवल आदम के *पापी उदाहरण* का अनुसरण करने से कहीं अधिक है।

भजन 51:5 में, दाऊद कहता है कि वह पापमय स्वभाव के साथ पैदा हुआ है। और अय्यूब 14:4 में, अय्यूब कहता है कि कोई अशुद्ध वस्तु में से शुद्ध वस्तु नहीं निकाल सकता। केवल आदम का पापमय उदाहरण ही नहीं, लेकिन आदम का पापमय स्वभाव भी मनुष्य जाति में उसके वंशजों तक पहुँचा। आदम के पापमय कार्य ने सभी स्वभाविक लोगों को दोषी ठहराया।

और रोमियों 5:12-19 में, पौलुस कहता है कि केवल आदम का पापमय स्वभाव ही नहीं, बल्कि आदम की पापमय स्थिति (कानूनी स्थिति) भी मानव जाति में उसके वंशजों तक पहुँची।

इस प्रकार, इतिहास में सभी मनुष्यों ने न केवल आदम के पापमय उदाहरण का अनुसरण किया, बल्कि साथ ही आदम के पापमय कार्य, पापमय स्थिति और पापमय स्वभाव का भी अनुसरण किया!

5:15-17

प्रश्न 2. **आदम के कार्य से मसीह का कार्य किस प्रकार बड़ा है?**

ध्यान दें। रोमियों 5:15-17 बताता है कि ''पाप में गिरना'' और ''पाप से उद्धार'' के बीच की समानता पूर्णरूप से समानांतर नहीं है। मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य से विस्तार (विषयवस्तु पर दृष्टिकोण) और निर्देश में कहीं बड़ा है।

(1) मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की तुलना में कहीं अधिक बड़ा है।

मसीही बचाए गए हैः

- आदम के एक अपराध (मूल पाप) के परिणामों से (मृत्यु अपने पूर्ण अर्थ में)
- हमारे स्वयं के असंख्य व्यक्तिगत पापों के परिणाम से
- अन्य लोगों के असंख्य अपराधों के परिणाम से

परिणाम हैः दोष और निंदा, शर्म और अस्वीकृति, अशुद्धता और बीमारियाँ, हार और अनन्त दंड (नरकदंड)!

एक मनुष्य (आदम) के एक अपराध को (और अन्य अपराधों को नहीं) उसके सभी वंशजों के लिए भी माना गया, ताकि उसके स्वभाविक वंशज (सभी लोगों) ''अधर्मी'' घोषित हो जाएं। उसकी अधार्मिकता से मनुष्यों के लिए कुछ भी भालाई उत्पन्न नहीं हुई। अपने न्याय को प्रगट करने के लिए, परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले किए गए सभी पापों को बिना दंड़ित किए छोड़ दिया'' (रोमियों 3:25-26)।

लेकिन सभी विश्वासियों के सभी अपराध (बिना अपवाद के) उनके एक प्रतिनिधि (मसीह) पर डाल (अध्यारोपित) दिए गए हैं (1पतरस 2:24), ताकि उसके सभी आत्मिक वंशज (मसीही लोग) ''धर्मी'' घोषित कर दिए जाएं! उसकी धार्मिकता ने मसीह में अनगिनत विश्वासियों के लिए असंख्य भलाईयों (फायदा, लाभ) को उत्पन्न किया।
इसलिए, परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण उद्धार के कार्य का दायरा, आदम के विनाशकारी कार्य के दायरे कहीं अधिक बड़ा है!

(2) मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की तुलना में कहीं अधिक सकारात्म है (रोमियों 5:17)।

आदम के अपराध ने सभी को और सभी चीजों को नकारात्मक दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित किया, ''धार्मिक निंदा'' के लिए और ''मृत्यु'' अपने पूर्ण अर्थ में। लेकिन मसीह की धार्मिकता हर चीज को सकारात्मक दिशा में ले जाने का कारण बनती है, ''पूर्णरूप से धर्मी ठहरना'' और ''जीवन'' अपने पूर्ण अर्थ में। इससे सिद्ध होता है कि परमेश्वर न्याय की अपेक्षा अनुग्रह प्रदान करने से अधिक प्रसन्न होते हैं (यहेजकेल 18:23; 33:11; रोमियों 5:15,20)। पौलुस न्याय के नकारात्मक संचालन को पहचानता है। न्याय निष्ठुर दृग से कार्य करता है, ताकि बहुत से मारे जाएं (आत्मिक, शारीरिक और अनन्त रूप से)!

लेकिन पौलुस अनुग्रह के सकारात्मक संचालन को भी पहचानता है। अनुग्रह न सिर्फ न्याय और मृत्यु के नकारात्मक संचालन को रोकता है, बल्कि इसके विपरीत, धर्मी ठहरने और जीवन के लिए भी पर्याप्त है! मसीह के द्वारा पूर्ण किया गया उद्धार का कार्य परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य की कानूनी स्थिति को ''निश्चित नकारात्मक से सामान्य'' (शून्य-रेखा) में पुर्नस्थापित ही नहीं करता, बल्कि ''निश्चित नकारात्मक से निश्चित सकारात्मक भी करता है''! पाप ने दोष के द्वारा मृत्यु तक राज्य किया, लेकिन अनुग्रह ने धार्मिकता के द्वारा जीवन तक राज्य किया (रोमियों 5:21)! परमेश्वर के न्याय के बहुत बड़े परिणाम हैं, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह की उपलब्धियां कहीं अधिक हैं! मसीही केवल मृत्यु और अर्थहीनता से ही नहीं बचाए गए हैं, बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए बचाए गए हैं, जिसमें एक अर्थपूर्ण अनन्त जीवन और नई पृथ्वी पर नियत कार्य शामिल हैं!

''दया न्याय पर जयवंत हाती है'' (याकूब 2:13)!

5:18

प्रश्न 3. **क्या बाइबल सिखाती है कि संसार के सभी लोग बच जाएँगे?**

ध्यान दें। यदि वचन 18 को संदर्भ से बाहर कर दिया जाए, *तोऐसा लगता है* कि यह सार्वभौमिक उद्धार सिखाता हैः ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दंड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।''

बाइबल में ''सभी मनुष्यों'' शब्द का अर्थ हमेशा ''प्रत्येक व्यक्ति जो कभी पृथ्वी पर बिना अपवाद के रहा'' से नहीं है।

(1) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'', आशीषों से जुड़ी आवश्यकशर्त के द्वारा सीमित होना चाहिए।

रोमियों 5:17 कहता है कि धर्मी ठहरने की शर्त ''परमेश्वर के अनुग्रह के असीम प्रयोजन और धार्मिकता के उपहार को स्वीकार करना है।'' इसी प्रकार, बाकि बाइबल सिखाती है कि वे लोग जो ''यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं (उस पर विश्वास करते हैं) केवल वे ही उद्धार पाएंगे (यूहन्ना 1:12–13; 3:16–18,36)। इस प्रकार, बाइबल सार्वभौमिक उद्धार नहीं सिखती। उद्धार प्राप्त करने के लिए शर्त यीशु मसीह पर विश्वास करना है (खाली हाथों से मसीह को स्वीकार करना)।

(2) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'', विषय या प्रसंग की प्रकृति के द्वारा सीमित होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, मरकुस 1:37, 5:20, और 11:32 में, ''सभी लोग'' शब्द को संदर्भ में वर्णित लोगों को तक सीमित होना चाहिए, क्योंकि ''पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति यीशु को नहीं खोज रहा''। ''पृथ्वी पर सभी मनुष्य इस बात से हैरान नहीं थे कि यीशु ने उनके लिया क्या किया।'' और ''पृथ्वी पर हर कोई यह नहीं जानता था कि यूहन्ना बपतिस्मादात एक भविष्यद्वक्ता था''।

इसी प्रकार, रोमियों 5:18 में, ''सब मनुष्यों के लिए दंड की आज्ञा'' इन शब्द को उन लोगों तक सीमित होना चाहिए जो सामान्य पीढ़ी के द्वारा आदम के वंशज थे, क्योंकि मसीह स्वंय अपवाद है। और इसी प्रकार, ''धर्मी ठहरना जो सभी लोगों के लिए जीवन को लाता है'' ये शब्द उन लोगों तक सीमित होने चाहिए जो विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़े हैं (1कुरिन्थियों 15:22–23)। पौलुस संख्याओं के बारे में नहीं सोचता है, परन्तु परमेश्वर की योजना के सचांलन के तरीके बे बारे में! परमेश्वर आदम से जुड़े सभी लोगों को दोषी ठहराते हैं, लेकिन मसीह से जुड़े सभी लोगों को धर्मी ठहराते हैं।

(3) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'' का प्रायोग सामन्य रूप से यहूदियों में पापयमय रवैये की विशिष्टता का मुकाबला करने के लिए किया गया, जब वे कहते हैं कि यहूदी अन्यजातियों (गैर–यहूदियों) से बेहतर हैं।

पौलुस इस बात पर जोर देता है कि यहूदी और अन्यजातियों में अनिवार्य रूप से कोई अतंर नहीं है।

- ''सभी लोग'' जिन्होंने उद्धार पाया है, एक ही तरीके से उद्धार पाया है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की मूल रूप से वे यहूदी हैं या गैर–यहूदी। (प्रेरितों 10:34–35; रोमियों 2:11; 3:22; 10:12)! जिसके पास यीशु मसीह है, उसके पास जीवन है, लेकिन जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी (अभिशप्त) ठहर चुका (यूहन्ना 3:18,36; 1यूहन्ना 5:11–13)।

- ''सभी लोगों'' का, परमेश्वर के रूप में एक ही परमेश्वर हो सकता है (रोमियों 3:29-30)।
- ''सभी लोग'' जिन्होंने उद्धार पाया है वे परमेश्वर के केवल एक ही लोग हो सकते हैं (यूहन्ना 10:16; 1कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28; इफिसियों 2:11-22; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:10-11; प्रकाशितवाक्य 21:9-16)। सभी यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु पर विश्वास करते हैं वे यीशु मसीह के ''भाई'' हैं (मत्ती 12:50; 25:40; इब्रानियों 2:11-12)।

इफिसियों 1:10, फिलिप्पियों 2:10 और कुलुस्सियों 1:20 में ''सभी'' शब्द के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।[2]

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 5:12-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 5:12-21 के संभावित लागूकरण के उदाहरण।

5:12. समझें कि परमेश्वर न केवल मेरे बहुत से व्यक्तिगत (व्यक्तिविशेष) *पापमय कार्यों* का लेखा रखते हैं बल्कि आदम के साथ मेरी एकजुटता के कारण मेरी *पापमय स्थिति* (कानूनी स्थिति) और *पापमय स्वभाव* (दशा) का भी लेखा रखते हैं।

5:13-14. समझें कि एक स्वभाविक मनुष्य होने के नाते आदम का पाप मुझे दोषी ठहरने की कानूनी स्थिति (स्थान) में ले आया। आदम के अपराध ने मेरे उद्धार (छुटकारे) को

---

[2]''सभी'' शब्द *सार्वभौमिक उद्धार* के संदर्भ में *सार्वभौमिक मेल* मिलाप नहीं सिखाता। पाप ने संसार और जो कुछ इस में है सब कुछ बर्बाद कर दिया। पाप ने प्राणियों के बीच एक दूसरे के साथ और सृष्टि और सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बीच सामंजस्य को बर्बाद कर दिया। सिद्धांत रूप में, मसीह के लहू द्वारा ''पाप'' पर जय पायी गई। व्यवस्था की मांग (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता) को संतुष्ट किया गया (रोमियों 3:25)। सृष्टि पर श्राप का जन्म् हुआ है (गलातियों 3:13)।

फलस्वरूप, मेल मिलाप पुर्नस्थापित हुआ और शांति स्थापित की गई। मसीह का सम्पूर्ण सृष्टि पर कलीसिया के हित और परमेश्वर की माहिमा के लिए शासन करने के अर्थ में सृष्टि का परमेश्वर के साथ उचित संबंध फिर से पुर्नस्थापित किया गया है। अपने सिद्ध आज्ञाकारिता के पुरस्कार के रूप में, यीशु मसीह को परमेश्वर के दाहिनीं ओर सब लोगों और सब चीजों पर सारी सामर्थ्य और सारे अधिकार के स्थान तक ऊँचा किया गया (मत्ती 28:18)। हालाँकि, जिस तरीके से विभिन्न प्राणी यीशु के अधिकार और शासन के अधीन हैं उसमे अंतर है और इस प्रकार, इस तरीके से उनका ''मेल मिलाप'' परमेश्वर से हुआ है।

एक ओर दुष्ट दूतों और बुरे लोगों को जबरदस्ती, अनिच्छा से अधीन किया जाएगा। उनके मामले में शांति (सामंजस्य) को थोपा गया, लेकिन स्वागत नहीं किया गया। सिंद्धात रूप में उनकी शक्ति छीन ली गई है (कुलुस्सियों 2:15)। उन्हें अधीनता में लाया गया है (1कुरिन्थियों 15:24-28; इफिसियों 1:21-22)। ''शांति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा'' (रोमियों 16:20)। और उनके सभी बुरे काम लगातार भालाई के लिए रद्द किए जा रहे हैं।

दूसरी ओर, अच्छे स्वर्गदूत और मसीह में विश्वासी आनंद, स्वेच्छा और उत्सुकता से अधीन होते हैं! यीशु मसीह का यह अधिकार और सामर्थ्य सीधे नई सष्टि और नई पथ्वी की ओर ले जाता है जिसमें केवल धार्मिकता वास करती है (2पतरस 3:14; प्रकाशितवाक्य 21:1)।

निश्चित आवश्यकता बना दिय! लेकिन साथ ही यह भी समझें कि मसीह की धार्मिकता (मेरे लिए मेरे स्थान पर अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा प्राप्त की) मुझे एक विश्वासी के रूप में कानूनी रूप से धार्मिकता की स्थिति (स्थान) में ले आयी। मसीह की आज्ञाकारिता मेरे उद्धार को निश्चित गारन्टी बनाती है।

5:17-19. निश्चित रूप से आश्वस्त रहें की परमेश्वर का अनुग्रह जो यीशु मसीह के द्वारा आया, मनुष्य के उस पाप पर जयवंत होता है जो आदम के द्वारा आया। निश्चित रूप से आश्वस्त रहें कि परमेश्वर न्याय से अधिक कृपा करने से प्रसन्न होते हैं।

5:20. बाइबल में व्यवस्था (उदाहरण के लिए दस आज्ञाएँ) का प्रयोग करें यह भलि-भाँति समझने के लिए कि ''पाप'' क्या है और यह महसूस करने के लिए कि पापमय लोग अपनी स्वभाविक स्थिति में कैसे हैं।

2. रोमियों 5:12-21 से व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह नहीं भूलना चाहता कि परमेश्वर लोगों के साथ केवल *व्यक्तिगत रूप से* ही व्यवहार नहीं करते, बल्कि एक समझ के रूप में उनकी आदम या मसीह के साथ *एकजुटता* के अनुसार भी व्यवहार करते हैं। मैं यह याद रखता चाहता हूँ कि मैं जिस प्रकार जीता हूँ उसका प्रभाव केवल मुझे पर ही नहीं पड़ता, बल्कि दूसरों पर भी पड़ता है और विशेषरूप से मेरे बच्चों पर।

मुझे यह जानकर बड़ा आनंद हुआ की इस संसार पर परमेश्वर के अनुग्रह का भला प्रभाव इस संसार पर बुराई के प्रभाव से कहीं अधिक है! परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य के पाप पर जयवंत होता है। मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि मेरे जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह का शासन यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने से और इस संसार में यीशु मसीह के साथ एक नया और धर्मी जीवन जीने के द्वारा व्यक्त किया गया है।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये रोमियों 5:12-21 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना**(8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी**(2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 31,32,33 व 34** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(8) रोमियों 5:3-4।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 14:8-11ग में निहित **"विवाह के भोज में आरक्षित स्थान"** और लूका **"फरीसी और चुंगी लेने वाला" दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 21

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	***साझा करना*** *(20 मिनट)* ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 31,32,33 व 34**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 23,24,25 व 27) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **(8) रोमियों 5:3-4**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:
(8) रोमियों 5:3-5। केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टांत)*** **"भोज में आरक्षित स्थान"** **और "फरीसी और चुंगी लेने वाला"**

लूका 14:8-11 में भोज में आरक्षित स्थान और
लूका 18:8-11 में फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में नम्रता के विषय में हैं।

''एक दृष्टांत'' स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनीकरण की

आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामन्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (देखें नियमावली 9, संपूरक 1)।

क. भोज में आरक्षित स्थान का दृष्टांत

पढ़ें लूका 14:1-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

यह दृष्टांत एक प्रोत्साहन के रूप में है।

सम्मान के स्थान। हर देश की सभ्यता के अपने नियम होते हैं। विवाह में मेज पर सम्मान की सभ्यता के संबंध में इस्त्राएल के नियम काफी सख्त थे। जबकि एक घर में एक मेज हो सकती है, वहीं विवाह के भोज में मेहमानों की सख्यां के आधार पर कई मेज हो सकती हैं। उन दिनों में, लोग कुर्सियों पर नहीं बैठते थे, बल्कि सोफे पर लेटते थे। तीन सोफों को एक नीची मेज के साथ "U" के आकार में व्यवस्थित किया जाता था। तीनों सोफों में से प्रत्येक पर एक एक व्यक्ति अपने बांए हाथ के सहारे से अपना सिर मेज की ओर किए हुए और अपने पैरों को मेज के किनारे से दूर लटका कर लेटा करते थे। वे खाने के लिए अपने दाहिने हाथ का प्रयोग करते थे। मेज के चारों ओर तीन सोफों के यह नौ स्थान इस्त्राएली लोगों के मन में अलग अलग महत्वपूर्ण स्थानों या "सम्मान के स्थान" का प्रतिनिधित्व करते थे।

एक यहूदी विद्वान के अनुसार, सम्मान के स्थानों को निम्नलिखित तरीके से व्यवस्थित किया जाता थाः बांए पैर के शीर्ष से दाहिने पैर के शीर्ष तकः संख्या 5,4,6, फिर 2,1,3 फिर 8,7,9। हालाँकि, किसी ने सोचा होगा क्योंकि "दाहिनां हाथ" एक व्यक्ति को विशेष सम्मान प्रदान करता था (यूहन्ना 1:18; 13:23-25) सम्मान के स्थानों को निम्नलिखित तरीकों से व्यवस्थित किया जा सकता थाः बांए पैर के शीर्ष से दाहिने पैर के शीर्ष तकः सख्यां 9,7,8 फिर 3,1,2, फिर 6,4,5। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह एक निश्चित क्रम था जिसमें लोग बैठे थे। बेशक, लोगों के मन में स्थान 1,2 और 3 सबसे महत्वपूर्ण सम्मान के स्थान थे।

स्थानों की नियुक्ति। मेजबान, जो कि अक्सर घर का मालिक हुआ करता था, उन स्थानों को निर्धारित किया करता था जहां प्रत्येक आंमत्रित मेहमान को बैठना चाहिए। यीशु ने कहा, "जब कोई तुझे विवाह के भोज में बुलाए, तो मुख्य जगह में न बैठना..... लेकिन जब तू बुलाया जाए, तो सबसे नीची जगह जा बैठ।" कहानी का पहला भाग एक मेहमान की कल्पना करता है, जो कि एक ऐसे स्थान में बैठ गया जो उसके लिए नहीं था। वह किसी दूसरे व्यक्ति के लिए था, जिसे मेजबान

अधिक आदर के योग्य समझता था। तो, जब मेजबान ने देखा कि क्या हुआ, तो उसने आकर उस पहले अनाधिकृत मेहमान से कहा, ''इस व्यक्ति को अपना स्थान दे।'' सार्वजनिक रूप से इस अपमान से शर्मिंदा और अपमानित होने पर इस ढ़ीठ मेहमान को अपना स्थान छोड़ कर सबसे नीची जगह में जाकर बैठना पड़ा, क्योंकि इस समय तक सारे स्थान भरे जा चुके थे। और, यदि अभी भी वहां कुछ खाली स्थान होते भी, फिर भी वह दूसरी बार इस तरह के अपमान का अनुभव नहीं करना चाहेगा। कहानी का दूसरा भाग इस मेहमान को सबसे नीचा स्थान लेते हुए कल्पना करता है। तो, जब मेजबान ने देख कि क्या हुआ, वह आया और उसने इस विनम्र मेहमान से कहा, ''हे मित्र आगे बढ़ कर एक बेहतर स्थान पर बैठ।'' सभी मेहमानों की उपस्थिति में सम्मानित होकर, वह अपना स्थान ग्रहण करता है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 14:1-7 में पाया जाता है।

सब्त के दिन का महत्वपूर्ण भोज। यीशु ने कई बार फरीसियों के साथ खाया (लूका 7:36; 11:37; 14:1)। इस बार उन्हें सब्त के दिन के महत्वपूर्ण भोज में आमंत्रित किया गया। फरीसियों के सख्त सब्त कानूनों के कारण, भोज की तैयारी एक दिन पहले कि गई थी। हम नहीं जानते कि यीशु को क्यों आमंत्रित किया गया था, लेकिन बाइबल बताती है कि वे उसे करीब से देख रहे थे। यीशु को आमंत्रित करने का उद्देश्य शायद यही था कि यह फरीसी उन अन्य फारीसियों और व्यवस्थापकों के साथ मिलकर जिन्हें उसने अमंत्रित किया था, यीशु के विरूद्ध दोष लगाने का आधार खोज रहे थे। शायद उन्होंने जलन्धर के रोग से ग्रस्त व्यक्ति को भी वहाँ इसलिए रखा ताकि वह यीशु को सब्त के दिन चंगा करने का प्रलोभन दे सकें। हलाँकि, यह निश्चित नहीं है, क्योंकि उन दिनों लोगों का बिना बुलाए चले आना असमान्य नहीं था (लूका 7:37-38)।

यीशु ने सबसे पहले इन फरीसियों और व्यवस्थापकों से पूछा, ''क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?'' *कोई भी* उत्तर देने के लिए *राजी नहीं था।* तो यीशु ने उस बीमार व्यक्ति को चंगा किया और वापस भेज दिया। फिर उन्होंने इन फरीसियों और व्यवस्थापकों से पूछा, ''तुम में से ऐसा कौन है, जिसका गदहा या बैल कुएँ में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाले?'' इस बार, *कोई भी उत्तर न दे सका,* क्योंकि वह यह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे कि वे गलत थे।

सम्मान के स्थानों के लिए अनुचित छीना झपटी। यीशु मसीह द्वारा बीमार व्यक्ति को चंगा करने के बाद, आमंत्रित मेहमान (फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक) मेज के चारों और अपना आपना स्थान लेने लगे। लेकिन उन्होंने मेजबान का इंतजार नहीं किया कि वह उनके लिए स्थान निर्धारित करे। उन्होंने

सम्मान के सबसे उच्च संभावित स्थान को प्राप्त करने के लिए छीना झपटी शुरू कर दी! यह निश्चित रूप से मेज की उचित सभ्याता का उल्लंघन था! इस मुद्दे पर यीशु ने आरक्षित स्थानों का दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 14:8-10 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण लूका 14:11 में निहित है।

यीशु ने सिखाया, "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई आपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। दृष्टांत रूपक कथा नहीं है! प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक महत्व नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत की कहानी के किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय दें. दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 14:8-11 में विवाह के भोज में आरक्षित स्थान का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में नम्रता" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई आपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

नम्रता परमेश्वर के राज्य में मूलभूत विशेषताओं में से एक है! इस दृष्टांत के संदर्भ में, हम देखते हैं कि यीशु मसीह विनम्र है। वह ऐसे लोगों के साथ मिलने के लिए भी इच्छुक हैं जो अक्सर उनके दुश्मने थे। फिलिप्पियों 2:5-11 सिखाता है कि यीशु मसीह ने अपना अलौकिक स्वभाव छोड़ कर मनुष्य का स्वरूप धारण कर लिया, मनुष्यों के दास बने और क्रूस पर एक अपराधी के समान मरे।

इसलिए, परमेश्वर के राज्य के नागरिक यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलते हैं और साथ ही स्वयं को नम्र भी करते हैं। वे सम्मान के स्थानों के लिए या अगुवेपन के स्थानों के लिए छीना झपटी नहीं करते, लेकिन नम्रता से दूसरों को स्वयं से बेहरत समझते हैं (फिलिप्पियों 2:3-4)। इस दृष्टांत के लागूकरण में हम सीखते हैं कि परमेश्वर स्वयं वह हैं जो घमंड़ी व्यक्ति को नम्र करते हैं, लेकिन नम्र व्यक्ति को ऊँचा करते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

खोजें और चर्चा करें। यह लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

नबूकदनेस्सर का घमण्ड। *पढ़ें* दानिय्येल 4:29-37। राजा नबूकदनेस्सर अपने दिनों में पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली राजा था। उसने एक महान साम्राज्य पर शासन किया और बड़े बड़े काम किए। लेकिन जब वह यह सोचने लगा कि वह बेबीलोन का निर्माण अपनी सामर्थ्य से करेगा, तब परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और उसे एक जानवर के समान रहने तक नीचा किया। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा! लेकिन सालों बाद, जब उसने परमेश्वर की महिमा और सम्मान किया, तो उसका मानसिक संतुलन और सिंहासन फिर से पुर्नस्थापित किया गया और वह पहले से भी बड़ा हो गया। जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा!

हेरोदेस का घमण्ड। *पढ़ें* प्रेरितों 12:21-23। राजा हेरोदेस अपने दिनों में कोई बड़ा या महान राजा नहीं था। लेकिन फिर भी उसने इस प्रकार व्यवहार किया कि जैसे वह महत्वपूर्ण और बड़ा राजा था। जब लोगों ने उसके विषय में कहा कि वह परमेश्वर के समान है, तब उसने उन्हें नहीं डाँटा और न ही बाइबल के परमेश्वर को सम्मान दिया। तब परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसे मारा, और उसके मरने से पहले ही कीड़ों ने उसे खा लिया। ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा।''

पौलुस की नम्रता। *पढ़ें* 1कुरिन्थियों 15:9-10; 2कुरिन्थियों 12:9-12; इफिसियों 3:7-9; 1तीमुथियुस 1:15-16। प्रेरित पौलुस अपने आप को ''प्रेरितों में सबसे छोटा'', ''परमेश्वर के लोगों में सबसे छोटा'', ''संसार के पापियों में से सबसे बड़ा'', और यहाँ तक कि ''कुछ भी नहीं'' (2कुरिन्थियों 12:11) समझता। वह स्वंय को लगातार नम्र करता है (गलातियों 2:20; 6:14)। और फिर भी, परमेश्वर का अनुग्रह उसके जीवन में बढ़ा। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण उसने अन्य प्रेरितों से अधिक कठिन परिश्रम किया (1कुरिन्थियों 15:10)। इस प्रकार, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई किस पद पर है, नम्रता एक व्यक्ति के हृदय की मनोवृत्ति में, जिस प्रकार वह अपनों और दूसरों के विषय में बोलता है, और दूसरों के प्रति व्यवहार, में व्यक्त की जाती है।

पुराने नियम में नम्रता और घमण्ड। *पढ़ें* नीतिवचन 25:6-7; 26:12; यशायाह 2:6-22; 14:12-15; 57:15। पुराने नियम में ऐसे कई लेखांश हैं जो परमेश्वर के राज्य के लोगों के बीच नम्रता की आवश्यकता के बारे में सिखाते हैं। इस दृष्टांत को बाताते समय शायद यीशु मसीह के मन में नीतिवचन 25:6-7 रहा होगा। यह कहता है, ''राजा के सामने अपनी बड़ाई न करना और बड़े लोगों के स्थान में खड़ा न होना; क्योंकि जिस प्रधान का तू ने दर्शन किया हो उसके सामने तेरा अपमान न हो वरन् तुझ से यह कहा जाए, 'आगे बढ़ कर विराज'।'' ''यदि तू ऐसा मनुष्य देखे जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनता हो, तो उससे अधिक आशा मूर्ख ही से है'' (नीतिवचन 26:12)।

यशायाह 14:12-15 में, बेबीलोन के राजा के पतन के संदर्भ में शैतान के पतन का वर्णन किया गया है। दोनों परमेश्वर के तुल्य होना चाहते थे और दोनों घमंड़ के कारण गिर गए। यशायाह 57:15 सिखाता है कि ''परमेश्वर जो ऊँचे और पवित्र स्थान में वास करता है (अर्थात स्वर्गीय मंदिर), वह उनके संग भी रहता है जो खेदित और नम्र हैं, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करे!'' और यशायाह 2:6-22 चेतावनी देता है कि प्रभु के दिन, अर्थात यीशु मसीह के दूसरे अगमन पर अंतिम न्याय के दिन, आदमियों की घमंड़ भरी आँखे नीची की जाएँगी और मनुष्यों का घमंड़ दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल यहोवा ही ऊँचे पर विराजमान रहेगा! इसलिए नम्रता एक व्यक्ति के आत्म-आंकलन, मनोवृत्ति, बोलने और व्यवहार द्वारा व्यक्त की जाती है।

नए नियम में नम्रता और घमण्ड। *पढ़ें* मत्ती 18:4; 20:25-28; 23:8-12; लूका 22:27; यूहन्ना 13:1-15; फिलिप्पियों 2:1-8; याकूब 4:6; 1पतरस 5:5-6। नए नियम में ऐसे बहुत से लेखांश है जो परमेश्वर के राज्य के लोगों के बीच नम्रता की आवश्यकता के विषय में सिखाते हैं: मत्ती 18:4 कहता है, ''जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा!'' मत्ती 20:25-28 कहता है कि जबकि, संसार के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं और अधिकार जताते हैं, वहीं मसीही कलीसिया के अगुवों को लोगों की देख रेख में उनका सेवक होना चाहिए। मत्ती 23:8-12 कहता है कि फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों को ''गुरू'', ''पिता'' या ''शिक्षक'' कहलाना पंसद है, लेकिन मसीहियों को ''भाई'' या ''सेवक'' कहलाने का चुनाव करना चाहिए। लूका 22:27 दर्शाता है कि यीशु स्वयं लोगों के बीच में एक सेवक थे! और 1पतरस 5:5 चेतावनी देता है कि परमेश्वर घमंड़ का सामना करता है, परन्तु नम्र व्यक्ति को अनुग्रह देता है! इस प्रकार, नम्रता विशेषरूप से अगुवेपन के स्थान में लोगों पर अधिकार जता कर नहीं, बल्कि उन गुणों के द्वारा लोगों की सेवा करने के द्वारा व्यक्त की जाती है जो परमेश्वर ने प्रत्येक के सौंपे हैं।

वंचितों के साथ जुड़ना। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है *अतिथि-सत्कार* करना (रोमियों 12:13)।

पढ़ें लूका 14:12-14; मत्ती 25:34-40। यीशु के पास केवल आमंत्रित मेहमानों के लिए ही सबक नहीं है। उनके पास मेजबान के लिए भी सबक है। वह कहते हैं, ''जब तू दिन या रात का भोज करे, तो अपने मित्रों या भाईयों या कुटुम्बियों को मत बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला पूरा हो जाए। परन्तु जब तू भोज करे तो कगांलों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे धार्मियों के जी उठने पर इस का प्रतिफल मिलेगा।'' यीशु सिखाते हैं कि उनके राज्य के लोगों के लिए यह बहुत

महत्वपूर्ण है कि वे *अपने समाज के वंचित लोगों के साथ जुड़े!* यदि अमीर केवल अमीर के साथ, ज्ञानी केवल ज्ञानी के साथ और प्रभावशाली केवल प्रभावशाली के साथ ही जुड़ेंगे तो बाकि समाज का क्या होगा?

परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उनके वंचित भाईयों और दूसरों के प्रति प्रेम और सहयोग, चाहे वे दुनिया में कहीं भी हों (मत्ती 25:34-40)।

इस प्रकार नम्रता को निम्न के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है:

- अतिथि सत्कार करना (रोमियों 12:13)
- समाज में वंचितों के साथ मेलजोल (लूका 14:12-14)
- वंचित मसीहियों के लिए प्रेम प्रदर्शित करना (मत्ती 25:34-40)।

ख. फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत

पढ़ें लूका 18:9-14।

1. **दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।**

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

दो व्यक्ति। मंदिर सभी धार्मिक गतिविधियों के लिए एक स्थान था। वहां सर्वजनिक धार्मिक सभाएँ होती थी और व्यक्तिगत रूप से लोग बलिदान चढ़ाने और प्रार्थना के लिए आते थे। यहूदियों में, हर दिन तीन बार प्रार्थना करने का रिवाज था (दानिय्येल 6:10)। ये दो व्यक्ति संभवतः प्रार्थना के नियमित समय पर मंदिर में प्रार्थना करने के लिए आए थे।

फरीसियों को आम तौर पर बहुत ही धर्मनिष्ठ माना जाता था और वे स्वयं भी खुद को बहुत धर्मनिष्ठ मानते थे। ऐसे स्थान में प्रार्थना करना जहाँ लोग उन्हें देख सकें, उनके पंसदीदा शौक़ में से एक था (मत्ती 6:5; लूका 20:47)।

चुंगी लेने वालों को आम तौर पर लालची, लूटरें और विश्वासघाती के रूप में देखा जाता था। उस समय इस्त्राएल में चुंगी लेने की प्रणाली निम्नानुसार काम करती थी। रोमि सरकार ने बहुत से यहूदियों को चुंगी लेने का अधिकार बेच दिया था जिन्होंने इसके लिए बहुत पैसा चुकाया (''कर-किसान'')। उन्हें आयात और निर्यात के साथ-साथ उन व्यापारियों से भी चुंगी लेने का विशेषाधिकार प्राप्त था जो उस क्षेत्र से गुजरते थे। चुंगी लेने के मुख्य कार्यालाय कैसरिया, कफरनहूम और यरीहो में स्थित थे। इन कर-किसानों ने चुंगी लेने का अधिकार जक्कई (लूका 10:2) जैसे ''मुख्य चुंगी लेनेवालों'' से किराए पर लिया होगा। इन मुख्य चुंगी लेने वालों ने लेवी (लूका 5:27) के समान सामान्य चुंगी लेने वालों को चुंगी वसूलने के काम पर रखा होगा। ये चुंगी लेने वाले, लोगों से जो कुछ निकलवा सकते थे, वसूल किया करते थे और यह अक्सर एक बड़ी धनराशि होती थी। इसलिए चुंगी लेनेवालों की जबरन वसूली करने वालों के रूप में प्रसिद्ध थे। यदि चुंगी लेने वाले

यहूदी होते, तो उन्हें भी विश्वासघाती के रूप में देखा जाता क्योंकि उन्होंने विदेशी उत्पीड़कों का सहयोग किया। बेशक, विदेशी उत्पीड़नकर्ता (रोमि सरकार) चुंगी लेने वालों को बचाते थे।

दो प्रार्थनाएँ। फरीसी खड़ा हुआ और प्रर्थाना की। हाथों और आँखों को उठा कर, खड़े होकर प्रार्थना करना, असमान्य नहीं था (1तीमुथियुस 2:8)। वह संभावित रूप से उस स्थान में खड़ा हुआ जहाँ अधिक लोग उसे देख पाएं। बाहरी रूप से वह परमेश्वर को सम्बोधित कर रहा था, लेकिन अंदरूनी रूप से वह स्वयं से स्वयं के बारे में ही बात कर रहा था। अपनी प्रार्थना के दौरान वह स्वयं को श्रेय दे रहा था। उसने अपनी तुलना दूसरे व्यक्ति से की। उसने अपनी तुलना सच्चे समर्पित व्यक्ति जैसे शमूएल या दाऊद से नहीं की, लेकिन वास्तव में बुरे व्यक्ति से की।

उसकी प्रार्थना के पहले भाग में *नकारत्मक* बातें शामिल थी। उसने कहा कि वह अंधेर करने वाला, अन्यायी (एक धोखेबाज) और व्याभिचारी *नहीं* है। और जब उसने कुछ ही दूर खड़े हुए चुंगी लेने वाले को देखा तो उसने यह भी जोड़ दिया कि *न ही* इस चुंगी लेने वाले के समान! उसकी प्रार्थना के दूसरे भाग में *उसके अच्छे कर्मों का घमंड़ शामिल है।* वह साल में केवल एक बार ही उपवास नहीं किया करता था जैसा कि लैव्यव्यवस्था 16:29-31 में पता चलता है, लेकिन सप्ताह में दो बार से कम नहीं करता था! वह केवल उन चीजों का ही दशमांश नहीं देता था जो व्यवस्थाविवरण 14:22-23 के अनुसार अनिवार्य थी, बल्कि जो आवश्यक था उस से भी अधिक सब भाँति के साग पात का भी दशमांश दिया करता था (लूका 11:42)। उसकी प्रार्थना में कहीं भी पाप का अंगीकार और क्षमा का निवेदन नहीं है। वह अपनी प्रार्थना को केवल दूसरों के सामने यह घोषणा करने के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करता है कि वह कितना अच्छा व्यक्ति था। उसने कुछ नहीं मांगा – उसने कुछ पाया भी नहीं (याकूब 4:2)!

चुंगी लेने वाला कुछ दूरी पर खाड़ा था, अर्थात, मंदिर परिसर में वास्तविक भवन से दूर। वह अपनी आँखें नीची किए हुए खड़ा था, क्योंकि वह अपने पापमय आचरण के प्रति शर्मिन्दा था। उसने आत्म-दोष और निराशा के चिन्ह् के रूप में अपनी छाती पीटी। उसने अपनी तुलना दूसरों से नहीं की लेकिन स्वयं को *एक पापी* जाना! उसकी प्रार्थना में केवल पाप का अंगीकार और क्षमा का निवेदन शामिल था। उसने कहा, "हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।" वह अपने स्वयं के पापों और परमेश्वर की दृष्टि में दोषी होने और क्षमा की तत्काल आवश्यकता के प्रति सचेत था। वह क्षमा का भूखा और प्यासा था, अर्थात्, कि उसके पापों के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध दूर किया जाए और वह परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करे।

दो परिणाम। फरीसी बिना किसी बदलाव के अपने घर गया! शायद वह अपने घर पर ही रहा। लेकिन चुंगी लेने वाला धर्मी ठहरकर अपने घर गया। "धर्मी ठहरने" का अर्थ है कि परमेश्वर ने चुंगी लेने वाले को अपनी दृष्टि में पूर्ण रूप से धर्मी मानकर उसके साथ व्यवहार किया। इसका अर्थ है कि वह पूर्ण रूप से क्षमा किया गया और पूर्ण रूप से परमेश्वर के द्वारा स्वीकार किया गया!

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टांत का समायोजन लूका 18:9 में निहित है।

''जो लोग अपनी स्वयं की धार्मिकता के विषय में आश्वस्त थे और दूसरों को छोटा समझते थे, उन से यीशु ने यह दृष्टांत कहा।'' इस प्रकार यह सबसे अधिक संभावना है कि यीशु ने यह दृष्टांत फरीसियों के एक समूह से कहा (लूका 16:15; यूहन्ना 7:48-49)। वे अपनी ''स्वयं की धार्मिकता के प्रति आश्वस्त थे'', अर्थात, वे स्वयं को परमेश्वर की दृष्ट में धर्मी समझते थे, और परिणामस्वरूप धार्मिकता के भूखे और प्यासे नहीं थे। क्योंकि वे अपने स्वयं के अनुमान में धर्मी थे, इसलिए उन्हें एक चिकित्सक की आवश्यकता महसूस नहीं हुई और निश्चित रूप से पश्चयाताप की भी नहीं (लूका 5:31-32)! उन्होंने स्वयं के विषय में परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया, अर्थात, उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया कि वे अपने पापों का पश्चयाताप करें और पापों की क्षमा प्राप्त करें (लूका 7:30)!

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 18:10-13 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 18:14 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

सिखाएं। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 18:9-14 में, फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में नम्रता'' के विषय में सिखात है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।''

नम्रता परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों का रवैया घमंड़ी और आत्म-धर्मी नहीं होता, बल्कि इसके बजाय यर्थातवादी आत्म-ज्ञान और परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण क्षमा की आवश्यकता को ईमानदारी से स्वीकार करना होता है। वे अपनी नम्रता को परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा व्यक्त करते हैं। और परमेश्वर अपनी स्वीकृति को उनके पापों को क्षमा करने के द्वारा व्यक्त करते हैं, अर्थात, अपनी दृष्टि में उन्हें धर्मी ठहरा कर। जो लोग, अपने घमंडी और आत्म-धर्मी रवैये को परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करने के द्वारा छोड़ देते हैं, वे इस बात का अनुभव करेंगे कि परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है!

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

भजन 14:1-3। यहाँ तक कि पुराने नियम के अनुसार, कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं! कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं! इसलिए फरीसियों की धारणा और रवैया बिल्कुल गलत था (रोमियों 3:10-12)।

भजन 32:1-5। जो कोई अपने पापों का अंगीकार करने से इंकार करता है, वह सब प्रकार की समस्याओं का अनुभव करेगा। लेकिन जो कोई अपने पापों को मान लेता है, परमेश्वर उसे क्षमा करते और आशीषित करते हैं।

भजन 51:1-12,15-17। दाऊद ने परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार किया। टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, वह टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानते।

भजन 103:12। ''उदयाचल अस्ताचल से जिपनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमे से उतनी ही दूर कर दिया है।''

यशायाह 38:17। ''परमेश्वर ने हमारे सारे पापों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।''

यशायाह 43:25। ''परमेश्वर अपने नाम के निमित्त हमारे अपराधों को मिटा देते हैं, और हमारे पापों को याद नहीं रखते।''

यशायाह 44:22। ''परमेश्वर ने हमारे अपराधों को काली घटा के समान और हमारे पापों को बादल के समान मिटा दिया है।''

मीका 7:18-19। ''तेरे समान *परमेश्वर* कहाँ है, जो अधर्म को क्षमा करे... वह करूणा से प्रीति रखता है... वह हमो सारे पापों को समुद्र में डाल देगा।''

संक्षेप में: परमेश्वर एक नम्र व्यक्ति से प्रसन्न होते हैं, जो अपने पापमय स्वभाव और कजोरियों को जानता है, जो टूटे और पिसे हुए मन का है, और अपने पापों का अंगीकार करता है और जो परमेश्वर की क्षमा में आनंदित होता है (धार्मिकता)।

ग. परमेश्वर के राज्य में नम्रता के विषय में दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं और पाठों का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में नम्रता के बारे में दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाँए या पाठ क्या हैं?

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर कैसा है।

सभी लोगों को, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को पता होना चाहिए कि बाइबल के परमेश्वर और यीशु मसीह कैसे हैं। दृष्टांत के संदर्भ से हमने सीखा की यीशु मसीह नम्र हैं! वह विशेष रूप से अपने समाझ में वंचित लोगों के साथ जुड़े। वह ''पापियों और चुंगी लेने वालों के मित्र थे'' (लूका 7:34)। लेकिन साथ ही उन्होंने विशेषाधिकार प्राप्त लोगों, जैसे फरीसियों के साथ भी मिलना अस्वीकार नहीं किया, भले ही उनमें से कई उनके दुश्मन थे।

मत्ती 11:28-30 में यीशु कहते हैं, ''हे सब परिश्रम करनेवालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन मे दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है''।

अपने आप और अपने पापों और कमजोरियों के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण रखने के लिए नम्रता की आवश्यकता होती है। यह स्वीकार करने के लिए नम्रता की आवश्यकता है कि आप 613 मानव निर्मित (यहूदी) धार्मिक नियमों के जूए तले थके हुए और बोझिल हैं। अपने बोझ को यीशु मसीह के पास लाने के लिए नम्रता की आवश्यकता है। अपने पापों और बोझों को यीशु मसीह के पास लाने के लिए नम्रता की आवश्यकता है।

आप तब अपने आप का एक यर्थाथवादी दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, जब आपः

- पवित्र आत्मा को यह अनुमति देते हैं कि वह आपको आपके जीवन में पाप और जो कुछ परमेश्वर की दृष्टि में सही है, उसके प्रति कायल करे और समझाए (यूहन्ना 16:8)
- बार-बार अपने आप को परमेश्वर के वचन के दर्पण में देखते हैं (याकूब 1:22-25)
- परमेश्वर के वचन के दर्पण में देखते हैं कि यीशु मसीह कौन है और उससे सीखते हैं कि नम्रता क्या है (मत्ती 11:29)।

दृष्टांत के लागूकरण से हम देखते हैं कि परमेश्वर संप्रभु हैं। वह घमंड का सामना करते हैं, लेकिन नम्र व्यक्ति को अनुग्रह देते हैं (1पतरस 5:5-6)। वे लोग, जो इस जीवन में मुख्य स्थानों को प्राप्त करने के लिए एक हाथापाई करते हैं, और दूसरों को धक्का मार कर रास्ते से हटाते हैं, सब लोगों की उपस्थिति में नम्र किए जाएंगे; अंतिम न्याय के दिन वे सभी लोगों की उपस्थिति में शर्मिंदा होंगे।

लेकिन वे लोग जो अपने पद पर बने रहते हुए भी नम्र होते हैं, जो अपनी देखभाल करने के लिए सौंपे गए लोगों पर भी प्रभुत्व नहीं जताते, लेकिन उनकी सेवा करते हैं, वे ऊँचे किए जाएंगे। वे इस जीवन में छोटे से छोटा स्थान लेने और छोटे से छोटा काम करने के लिए भी तैयार होंगे (जैसे कि पैर धोना)। अंतिम न्याय के दिन वे परमेश्वर और उनके सभी स्वर्गदूतों और सभी मनुष्यों की उपस्थिति में ऊँचे किए जाएंगे।

(2) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

मसीहियों को जानना चाहिए कि उन्हें कैसा होना चाहिए। मसीहियों को नम्र होना चाहिए! दृष्टांता सिखाता है कि परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं कि हम हों या करें। यह सिखाता हैः ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा वह, वह बड़ा किया जाएगा।'' नम्रता परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अगुवेपन के पद या सम्मान के स्थानों के लिए छीना झपटी नहीं करते, लेकिन नम्रता के साथ दूसरों को स्वयं से बेहतर समझते हैं। वे वह करते हैं जो फिलिप्पियों 2:3-4 में लिखा है, ''विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक केवल अपने ही हित की नहीं वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करें।''
व्यवहारिक रूप से, जब आप नम्र होते हैं, तबः

- आप दूसरों को स्वयं से बेहतर समझते हैं
- आप इस बात के प्रति कायल होते हैं कि आप अपने आप को तभी नम्र कर सकते हैं जब आप पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर होते हैं
- आप दूसरे व्यक्ति की सामर्थ्य और गुणों को स्वीकार करते हैं और उनकी सराहना करते हैं

- आप अपने स्वयं के दोष और गलतियों को स्वीकार करते हैं
- आप दूसरे व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनते हैं, उसे गंभीरता से लेते हैं और उसे स्वीकार करते हैं
- आप दूसरों के हितों को बढ़ावा देने की खोज में रहते हैं, विशेषरूप से उनके जीवन में परमेश्वर के राज्य के हितों को।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(सौंपा गया कार्य)* **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 37, 38, 40 और 49** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(9) रोमियों 6:13।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 6:1-11।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 22

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 37,38,40 व 49**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि आपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 37,38,40 व 49) में से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(रोमियों में प्रमुख वचन)* **(9) रोमियों 6:13**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:

(9) रोमियों 6:13। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपों, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपों।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों की पत्री)* **रोमियों 6:1-11**

परिचय। बाइबल अध्ययन के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए रोमियों 6: 1-11 का साथ मिलकर अध्ययन करें।

रोमियों 1:16 में लिखा है कि, "हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। रोमियों 3 से लेकर 5 अध्याय सिखाते हैं कि वह मसीह पर विश्वास करने वालों के लिए "छुटकारा देने या धर्मी ठहराने के वाली शक्ति है।" रोमियों अध्याय 6 सिखाता है कि वह "मसीह में विश्वासी को पवित्र बनाने की सामर्थ्य है।"

जबकि रोमियों अध्याय 5 मसीह के *कानूनी अधिकार (अर्थात उसकी स्थिति)* के बारे बताता है, अर्थात, यह कि वह सदा के लिए धर्मी ठहराया जा चुका है। रोमियों 6 मसीही जन के *नैतिक स्तर (या अवस्था)* (पवित्रीकरण की प्रक्रिया के बारे में नहीं) के बारे में बताता है, जिसका अर्थ है कि वह सदा के लिए पवित्र किया जा चुका है।

रोमियों 6:1-10 हमें सिखाता है कि "हमें क्या विश्वास करना चाहिए", जबकि रोमियों 6:11 हमें सिखाता है कि "हमें कैसे जीना चाहिए"।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिल कर रोमियों 6:1–11तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक–एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार करें या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

6:1–7

खोज 1. **पौलुस का तर्क यह है कि एक मसीही के लिए पाप में बने रहना असंभव है।**

रोम में, एक पक्ष, जिसे कर्मकांडवादी (व्यवस्था समर्थक) कहा जाता है, ने झूठ सिखाया की मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी ठहरता है। विरोधी पक्ष, जिसे व्यवस्थाहीन (व्यवस्था विरोधी) कहा जाता है, ने झूठ सिखाया की एक व्यक्ति जो धर्मी ठहर चुका, उसे व्यवस्था के अनुसार जीने की कोई आवश्यकता नहीं; वह पाप में रखना जारी रख सकता है।

प्रेरित पौलुस ने दोनों झूठी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया। कर्मकांडवादी लोगों के विरूद्ध, पौलुस ने सिखाया कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं, बल्कि अनुग्रह के द्वारा मसीह यीशु में विश्वास से धर्मी ठहरता है। व्यवस्थाहीन लोगों के विरूद्ध, उसने सिखाया कि, एक व्यक्ति जो अनुग्रह के द्वारा विश्वास से धर्मी ठहर चुका है उसे (नैतिक) व्यवस्था[1] के अनुसार जीना चाहिए।

पौलुस ने सिखाया कि व्यवस्था उद्धार का *माध्यम* नहीं है, लेकिन यह वह *मानक* है जिसके अनुसार धर्मी (उद्धार पाए हुए) लोगों को जीना चाहिए।

(1) रोमियों 6:1–2 सिखाता है कि व्यवस्थाहीनों का सिद्धांत एक विरोधाभास है।

पौलुस का कहना है कि यह इसके विरूद्ध है कि एक व्यक्ति को पापों से छूटने के लिए मसीह के पास आना चाहिए, पापों में जीना जारी रखने के लिए।

(2) रोमियों 6:3–4 सिखाता है कि मसीही यीशु के साथ उसकी मृत्यु में एकजुट हैं और इसलिए पापों की सामर्थ्य के लिए मर गए हैं।

अपने तर्क में, पौलुस ने मसीही बपतिस्में की अपील की। वह कहता है कि, जिन लोगों ने मसीह का बपतिस्मा (पवित्र आत्मा के साथ)[2] पाया है, वे मसीह की मृत्यु में उसके साथ एकजुट हो गए हैं। इसप्रकार, जबकि मसीह ''*पापों के लिए* मरा (एक प्रायश्चित बलिदान के रूप में)'', मसीही ''पापों के लिए मरे''।

---

[1] नैतिक व्यवस्था, उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ।

[2] इसे पानी के बपतिस्में के रूप में संदर्भित नहीं किया जा सकता, क्योंकि लोग का नया जन्म् उससे नहीं होता जो वे स्वयं करते हैं (पानी का बपतिस्मा) – केवल उससे जो परमेश्वर करते हैं (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) (यूहन्ना 1:13)

एक बार–सब के लिए पापों से छुटकारे की यह निश्चितता, मसीही की पहचान है! एक मसीही के लिए पापों से छुटकार हैः

- पाप के *दण्ड* से छुटकारा (पापी को *धर्मी ठहराया गया,* धर्मी बनाया गया)
- पाप की सामर्थ्य से छुटकारा (पापी को *शुद्ध किया गया,* पवित्र बनाया गया)। ''यीशु मसीह हमारी धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा है'' (1कुरिन्थियों 1:30)!
  प्रत्येक मसीही, मसीह के साथ उसकी मृत्यु में एकजुट है, पापों की समार्थ्य के प्रति मरा है! वह अब पाप का दास नहीं है।
- इसलिए, एक व्यक्ति जो कि मसीही बन चुका है, वह पाप में जीवन नहीं जी सकता।
- और इसलिए एक व्यक्ति जो लागातार पाप में जीवन जीना जारी रखता है, वह एक मसीही नहीं हो सकता (1यूहन्ना 3:6–9)!

(3) रोमियों 6:5–7 सिखाता है कि मसीही, मसीह के पुनरूत्थान में एकजुट हैं और इसलिए नया जीवन जीना *चाहते हैं,* जी *सकते हैं और जीयेंगे*।

अपने तर्क में पौलुस मसीह के पुनरूत्थान की अपील करता है। वह कहता है कि जो लोग मसीह के साथ उसकी मृत्यु की समानता में एकजुट हो गए हैं, वे उसके पुनरूत्थान में भी एकजुट हो जाएंगे। मसीह की मृत्यु और पुरनरूत्थान में एक कारणात्मक संबंध है। जैसा कि निश्चित है कि उसके पुनरूत्थान द्वारा उसकी मृत्यु का अनुसरण किया जाएगा, वैसे ही एक नए और पवित्र जीवन के द्वारा एक मसीही की दोष और पाप की सामर्थ्य के प्रति मृत्यु का अनुसरण किया जाएगा।

यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान विश्वासी को *धार्मिकता का कानूनी स्तर* और *पवित्रता का नैतिक स्तर* प्रदान करता है। एक विश्वासी यीशु मसीह के पुनरूत्थान में सहभागी होने के लिए उसकी मृत्यु में भी सहभागी होता है। मसीही लोग यीशु मसीह के पुनरूत्थान के आनंद का लाभ उठाए बगैर मसीह की मृत्यु के लाभ का आनंद नहीं उठा सकते। पवित्र (शुद्ध) होने के लिए, पहले परमेश्वर को उन्हें धर्मी ठहराना होगा। लोग बिना धर्मी (क्षमा किए गए) ठहराए, पवित्र (शुद्ध) नहीं बन सकते! बाइबल में धार्मिकता की कानूनी स्थिति (धर्मी ठहरने के नाते, क्षमा किए गए) और पवित्रता की नैतिक स्थिति (पापों से शुद्ध होने के नाते) अविभाज्य है! (वचन 5 और 8 में भविष्यकाल, भविष्य को नहीं बल्कि निश्चितता को व्यक्त करता है!)

6:8–11

***खोज 2.* पौलुस का तर्क है कि मसीही निश्चित रूप से बदले गए हैं।**

इस लेखांश में, पौलुस अपने तर्क का निष्कर्ष निकालता है। यीशु मसीह इतिहास में एक बार सब के लिए मरे और उनकी मृत्यु को कभी दोहराया नहीं जाएगा। अपने पुनरूत्थित मानव स्वभाव में अब वह परमेश्वर को समर्पित जीवन जीते हैं।

इसी प्रकार, एक मसीही इतिहास में एक बार हमेशा के लिए पापों की सामर्थ्य के प्रति मर गया और अब परमेश्वर के प्रति समर्पित जीवन जीने में सक्षम है। पाप की सामर्थ्य से मसीही को अलग करना अंतिम है और उसकी नया और पवित्र जीवन जीने की योग्याता निश्चित है। ''मसीह के साथ मर गए'' के इतिहास में एक बार–हमेशा के लिए की यह दृढ़ घटना दर्शाती है कि उसकी ''पाप की

सामर्थ्य के प्रति मृत्यु'' एक स्थिर अवस्था या स्थिति है। इसी प्रकार, ''मसीह के साथ जीलाए गए'' के इतिहास में एक बार–हमेशा के लिए की यह घटना दर्शाती है कि उसका ''परमेश्वर के लिए जीवित होना'' भी एक स्थिर अवस्था या स्थिति है। एक मसीही का जीवन अब दोषी (नाश) ठहरने के लिए, भ्रष्ट होने या हमे दास बनाने के लिए पाप की सामर्थ्य के द्वारा नियत्रिंत या प्रतिबंधित नहीं है। मसीही अब न तो अपने पुराने पापमय स्वभाव के द्वारा नियत्रिंत या अनुबंधित हैं न ही उन पापमय कार्यों के द्वारा जो उन्होंने अपने शरीर के द्वारा किए हैं।

''पाप की समार्थ्य के लिए मृत होना'' और ''मसीह की आज्ञाकारिता में नए जीवन जीने की क्षमता'' की इस स्थिति को ''पवित्रता'' कहा जाता है। पवित्रता की यह स्थिति उन पापों के द्वारा नष्ट नहीं होती जो एक मसीही भविष्य में करता है। जिस प्रकार मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान उनके लिए *एक बार में हमेशा के लिए* था उसी प्रकार उन लोगों के लिए जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, धार्मिकता और पवित्रता की स्थिति प्राप्त करना, एक बार में हमेशा के लिए हैं! रोमियों 6:11 में, पौलुस आज्ञा देता है,

''अपने आप को पापों के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह में जीवित समझो''।

ध्यान दें कि मसीहियों को पाप के लिए मृत होने या परमेश्वर के लिए जीवित रहने की आज्ञा नहीं दी गई, क्योंकि यह माना जाता है कि मसीही *पहले से ही* पाप के लिए *मर चुके हैं* और *पहले से ही* परमेश्वर के लिए *जीवित हैं!* ध्यान दें कि इन चीजों को तथ्य गिनने (विश्वास करने) के द्वारा यह चीजें तथ्य नहीं होंगी, क्योंकि इसकी घोषणा *पहले ही* की जा चुकी हैं कि ये *तथ्य हैं!* यह तथ्य है कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान में उनके साथ एकजुट हो चुके हैं (2000 साल पहले)! इसलिए यह भी एक तथ्य है कि जो लोग यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे पहले से धर्मी (क्षमा किए गए) ठहराए गए और पवित्र किए गए हैं। वे पाप की सामर्थ्य के प्रति दोषी ठहरने (नाश), अशुद्ध होने और दास बनने के प्रति मर चुके हैं और परमेश्वर के लिए एक पवित्र और नया जीवन जीने में सक्षम हैं। पौलुस मसीहियों को आज्ञा देता है कि विश्वास करें की उनकी धार्मिकता की स्थिति और पवित्रता की स्थिति तथ्य है और इन तथ्यों की सराहना करें!

कदम 3.प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 6:1–11 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

6:1

प्रश्न 1. **वे लोग कौन थे जो यह मानते थे कि मसीही लोग पाप करते रह सकते है?**

ध्यान दें। रोमियों 5 का समापन इस कथन के साथ होता है ''व्यवस्था बीच में आ गई की अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ'' (रोमियों 5:20)। लोगों के एक विशेष समूह ने इससे एक गलत सिद्धांत विकसित किया। उन्होंने झूठ सिखाया कि, ''परमेश्वर ने व्यवस्था इस उद्देश्य से दी की लोगों को पाप अधिक करना चाहिए; और जितना अधिक लोग पाप करेंगे उतना अधिक परमेश्वर इन पापियों के प्रति अनुग्रह दिखाएंगे और परमेश्वर की महिमा होगी।'' इसलिए उन्होंने निष्कर्ष निकालाः ''लोगों को लगातार पाप करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''आओ हम पाप करना जारी रखें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़े!'' जाहिर है कि यह शिक्षा निश्चित रूप से झूठी शिक्षा है। जिन लोगों ने बाइबल के अनुग्रह के सिद्धांता को नष्ट किया उन्हें व्यवस्थाहीन कहा गया (वे लोग जो व्यवस्था के विरोध में हैं)।

(1) व्यवस्थाहीनों ने परमेश्वर के काम पर जोर दिया,
लेकिन मनुष्यों की जिम्मेदारी को नजरअंदाज कर दिया।

उन्होंने मसीह के पूर्ण किए गए कार्य पर इस हद तक जोर दिया कि लोगों की पश्चयाताप करने, नया जन्म् पाने और शुद्धिकरण की आवश्यकता को अस्वीकार कर दिया। यद्पि यह सत्य है कि मसीह ने मसीहियों के लिए छुटकारे के कार्य को पूर्ण किया है, लेकिन यह सत्य नहीं है कि मसीहियों को उद्धार पाने के लिए कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है।

(2) व्यवस्थाहीनों ने परमेश्वर के अनुग्रह पर इस हद तक जोर दिया
कि परमेश्वर की व्यवस्था को अस्वीकार कर दिया।

उन्होंने गलत विश्वास किया कि मसीही केवल ''अनुग्रह के अधीन'' हैं और इसलिए उन्हें व्यवस्था कि कोई आवश्यकता नहीं। उन्होंने झूठी शिक्षा दी कि जिन भले कामों को कारने के लिए व्यवस्था आज्ञा देती है, वे मसीहियों को करने की आवश्यकता नहीं। साथ ही उन्होंने यह भी झूठी शिक्षा दी कि मसीहियों के बुरे काम जिनके लिए व्यवस्था माना करती हैं वे अनुग्रह से नजरअंदाज़ कर दिये जाएंगे। व्यवस्थाहीनों ने गलत तरीके से विश्वास किया कि मसीहियों के सभी बुरे काम उनके ''पुराने स्वभाव'' से संबंधित हैं, जो उद्धार का वारिस नहीं होगा। इसलिए उन्होंने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ा की मसीही अपने शरीरों के द्वारा क्या करते हैं।

व्यवस्थाहीनों की गलत शिक्षा (अनुग्रह के सिंद्धात की विकृति) के विरोध में पौलुस का तर्क यह है कि यीशु मसीह द्वारा उद्धार की *प्राप्ति* यीशु मसीह द्वारा उद्धार के *लागूकरण* को निष्काषित नहीं करती। यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी बलिदानपूर्ण मृत्यु द्वारा उद्धार प्राप्त किया। हालाँकि, वे इस प्राप्त उद्धार को लोगों पर पवित्र आत्मा द्वारा उनके नए जन्म् और नवीनीकरण द्वारा (तीतुस 3:5), पश्चयाताप और सुसमाचार पर उनके विश्वास (मरकुस 1:15) और नैतिक व्यवस्था के प्रति उनकी आज्ञाकारिता (यूहन्ना 14:21,23) के द्वारा लागू करते हैं। पौलुस तर्क देता है कि धार्मिकता को पवित्रता से और धर्मी ठरहने को शुद्धिकरण से अगल नहीं किया जा सकता! धर्मी ठरने की कानूनी स्थिति और पवित्रता की नैतिक स्थिति एक साथ अविभाज्य हैं। एक व्यक्ति जो यीशु मसीह की मृत्यु का लाभ उठाता है, वह यीशु मसीह के पुरनरूत्थान का भी लाभ उठाता है। धर्मी ठहरने या उद्धार को कभी भी नए और पवित्र जीवन जीने से अलग नहीं किया जा सकता!

6:3-4

प्रश्न 2. **मसीही बपतिस्में का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। रोमियों 6:1-7 *पानी के* बपतिस्मे की बात नहीं करता, बल्कि *पवित्र आत्मा के* बपतिस्मे की बात करता है! यह पानी के बपतिस्मे की *विधि* के बारे में नहीं सिखाता, लेकिन आत्मा के बपतिस्मे का *अर्थ* सिखाता है!

रोमियों 6:3, ''मसीह में बपतिस्मा'' मसीह के साथ *एकजुट* होने, मसीह *के साथ संगति* और मसीह में सभी विशेषाधिकारों में *सहभागिता* को दर्शाता है। मसीह के साथ यह एकता मसीह के द्वारा आत्मा के बपतिस्मे द्वारा स्थापित की गई है (मरकुस 1:8) और किसी मनुष्य (इ.जी. ए पासबांन) द्वारा पानी के बपतिस्मे से नहीं (मरकुस 1:8)। पानी का बपतिस्मा केवल एक प्रतीक है आत्मा के बपतिस्मे का (प्रेरितों 10:47-48)।

रोमियों 6 में बपतिस्मा (आत्मा का) विशेष रूप से मसीह के साथ उनकी मृत्यु में एकजुट होने और उनकी मृत्यु के सभी लाभों मे भागिदारी का प्रतीक है। यह समीह जो कुछ है और एक मध्यस्थ के रूप में उद्धार के उनके कार्य के सभी चरणों में उनके साथ हमारी एकता का प्रतीक है। स्वयं मसीह के साथ हमारी एकता को उनके द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य से अलग नहीं किया जा सकता और उनकी मृत्यु में उनके साथ एकजुट होने को उनके पुनरूत्थान में उनके साथ एकजुट होने से अलग नहीं किया जा सकता।

(1) उनकी मृत्यु में एकजुट होना।

रोमियों 6:3-4 और कुलुस्सियों 2:12 सिखाते हैं कि मसीही जिन्होंने ''मसीह का बपतिस्मा (आत्मा के द्वारा) लिया है'' उन्होंने ''उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है''। मसीह के साथ उनका ''गाड़ा जाना'' इस बात का प्रमाण है कि वे वास्तव में मर चुके हैं (यह केवल मृत्यु का रूप नहीं था)। जबकि आत्मा का बपतिस्मा (अर्थात, पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म्) आत्मिक रूप से विश्वासी को 2000 साल पूर्व मसीह की मृत्यु के साथ एकजुट करता है, वहीं पानी का बपतिस्मा मसीह के साथ उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान में विश्वासी की आत्मिक एकता को प्रदर्शित (दर्शाता) करता है। रोमियो 6:3-4 में क्रियाओं के काल (यूनानीः एओरिस्ट काल) दर्शाते हैं कि मसीही *एक बार में हमेशा के लिए* आत्मिक रूप से मर गए और अपने पिछले इतिहास में गाड़े गए हैं (पुराने मनुष्य को फिर से नहीं खोदना चाहिए)! मसीही पाप के दायरे, पापमय संसार और शैतान के राज्य से उतने ही प्रभावशाली रूप से बाहर हैं, जितना की कब्र में पड़ा हुआ एक मृत व्यक्ति पृथ्वी पर मानव जीवन से बाहर होता है। मसीही एक बार में हमेशा के लिए धर्मी ठहराए (क्षमा किए) गए हैं। रोमियों 6:5 में क्रिया का पूर्ण काल (यूनानीः जिओगामेनेन) यह दर्शाता है कि यह धर्मी ठहरना (क्षमा) एक स्थायी या वर्तमान में चल रही वास्तविकता है!

(2) उनके पुनरूत्थान में एकजुट होना।

रोमियों 6:5 सिखाता है कि मसीही लोग यीशु मसीह के पुनरूत्थान में भी निश्चित रूप से उनके साथ एकजुट हुए हैं। पुनरूत्थान पहले तो इस पृथ्वी पर वर्तमान पुनरूत्थित जीवन को संदर्भित करता है और दूसरा यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय देह के पुनरूत्थान को। रोमियों 6:5 का तर्क यह है कि यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने में आत्मिक एकता को यीशु मसीह के पुनरूत्थान के साथ आत्मिक एकता से अलग नहीं किया जा सकता। पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म् (और यीशु मसीह में विश्वास) मसीहियों को आत्मिक रूप से 2000 साल पूर्व यीशु मसीह की मृत्यु और गाड़े जाने से जोड़ता है और परिणामस्वरूप विश्वासियों को धर्मी बनता है। इसी प्रकार,

पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म् (और यीशु मसीह में विश्वास) मसीहियों को आत्मिक रूप से 2000 साल पूर्व यीशु मसीह के पुनरूत्थान से जोड़ता है और परिणामस्वरूप विश्वासियों को पवित्र बनाता है!

प्रत्येक मसीही 2000 साल पूर्व यीशु मसीह द्वारा पूर्ण किए गए (अधिगृहीत, पूरा किए गए) उद्धार के कार्य के आधार पर और पवित्र आत्मा द्वारा इसके लागूकरण से यहाँ और अभी अपने जीवन में ''एक संत'' है। पाप के प्रयश्चित बलिदान के रूप में यीशु मसीह की मृत्यु धर्मिकता (धर्मी ठहरने) कि स्थिति के लिए आवश्यक और निश्चित है। इस प्रकार, यीशु मसीह का पुनरूत्थित जीवन पवित्रता की स्थिति (और निम्नलिखित शुद्धिकरण) के लिए आवश्यक और निश्चित है।

मसीहियों को परमेश्वर द्वारा पहले ही ''पूर्ण रूप से धर्मी और पवित्र'' समझा जाता है।
मसीह में *उनका स्थान या स्थिति* धार्मिकता और पवित्रता (उनके स्थान पर यीशु मसीह द्वारा पूर्ण की गई) है।
मसीही एक पवित्र जीवन में यहाँ और अभी इस पृथ्वी पर अधिक से अधिक यीशु के अनुरूप *होंगे*।
उनकी निरंतर पवित्रता मसीह में एक *प्रक्रिया या (जीवन) शैली* है।
यीशु मसीह के दूसरे आगमन में मसीही आत्मा और देह में पूर्ण रूप से यीशु के समान होंगे।
उनकी अंतिम महिमा मसीह में *उनकी अंतिम मंजिल* है।

रोमियों 6 में पूरी चर्चा धर्मी ठहरने की (कानूनी) स्थिति और पवित्रता की (नैतिक) स्थिति के बीच आवश्यक संबंध के चारों ओर घूमती है।

6:6

***प्रश्न 3.* ''पुराने मनुष्यत्व'' और ''नए मनुष्यत्व'' में क्या अंतर है?**

ध्यान दें। मसीहियों को इन शब्दों के बीच फर्क पता होना चाहिएः ''पुराना मनुष्यत्व'', ''पापमय स्वभाव'' और ''बाहरी मनुष्यत्व''।

(1) पुराना मनुष्यत्व निश्चित रूप से मर चुका है और नया मनुष्यत्व अब एक वास्तविकता है।
''पुराना मनुष्यत्व'' ''अधर्मी प्रवृत्ति'' का प्रतिनिधित्व करता है (रोमियों 6:6)। यह ''स्वभाविक मनुष्यत्व'' है जिसने पापमय स्वभाव का दास बने रहने का चुनाव किया (रोमियो 6:16) और इसलिए पूर्ण रूप से पापमय स्वभाव के द्वारा शासित हुआ (रोमियों 8:6-8)। ''नया मनुष्यत्व'' मसीही के ''नया जन्म् पाए स्वभाव'' का प्रतिनिधित्व करता है।
यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा पुरान स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *क्रूस पर चढ़ा दिया गया* (रोमियों 6:6; गलातियों 2:20) और उनका नया स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए आत्मिक मृत्यु से *जी उठा* (रोमियों 6:4-5)। फिर पुराना स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *उतार दिया गया* (इफिसियों 4:22) और नया स्वभाव एक बार में हमेशा के लिए *पहन लिया गया* (4:24)! पुराने मनुष्यत्व को उतार दिया गया जब नया मनुष्य पहना गया (कुलुस्सियों 3:9-10)। वे एक समय पर एक साथ मौजूद नहीं हो सकते!

(2) हालाँकि, नए मनुष्यत्व में अभी भी एक पापी स्वभाव है।
जबकि गैर-मसीही पापमय स्वभाव के प्रभुत्व और दासत्व की सामर्थ्य से स्वतंत्र नहीं हैं, मसीही एक बार में हमेशा के लिए पापमय स्वभाव के प्रभुत्व और दासत्व की सामर्थ्य से स्वतंत्र किए गए हैं।

फिर भी, ''उनका पापमय स्वभाव'' उनके जीवन में वर्तमान और शक्तिशाली सामर्थ्य बना रहता है (रोमियों 6:7, 7:18; 8:2) और नए मनुष्यत्व में रहने वाले पवित्र आत्मा के साथ लगातार संघर्ष करता है (रोमियों 6:13,19; गलातियों 5:16-23)।

वास्तविक मसीही बार-बार पवित्र आत्मा के द्वारा नियत्रिंत होने का चुनाव करते हैं अपने पापमय स्वभाव के द्वारा नहीं (रोमियों 8:9,13)। वह बार-बार पापमय संसार के अनुरुप होने का विरोध करता है और मसीह की समानता में बदलने का चुनाव करता है। इस तरह से नया मनुष्यत्व आत्मिक रूप से बढ़ता जाता है (रोमियों 12:1-2)। इस लगातार नवीनीकरण का उद्देश्य और स्तर यीशु मसीह और यीशु मसीह की समानता है (इफिसियों 4:13-14), नया मनुष्यत्व लगातार परमेश्वर के स्वरूप में नवीनीकृत होता रहता है (कुलुस्सियों 3:10)।

(3) नए मनुष्यत्व को बाहरी मनुष्यत्व और नए अनंरुनी मनुष्यत्व के रूप में पहचाना जा सकता है।

मनुष्य के बाहरी स्वरूप को ''बाहरी मनुष्यत्व'' कहा जाता है और उसके अंदरुनी जन को ''अंदरुनी मनुष्यत्व'' कहा जाता है। ''जबकि बाहरी रुप से (बाहरी मनुष्यत्व) हम नष्ट होते जाते हैं (हम बुढ़े और कमजोर होते जाते हैं), फिर भी अंदरुनी रूप से (अंदरुनी मनुष्यत्व) हम दिन प्रतिदिन नए होते जाते हैं'' (2कुरिन्थियों 4:16)।

''बाहरी मनुष्यत्व''''मिट्‌टी का बर्तन'' है (2कुरिन्थियों 4:7), ''नाशवान देह'' (2कुरिन्थियों 4:10-11), पुरान अनवीनीकृत मनुष्यत्व नहीं। यह संपूर्ण मानव संरचना है अपनी सभी ऊजाओं और संकायों के साथ, मानसिक और शारीरिक दोनों, ज्ञानविषयक और प्रायौगिक दोनों के साथ जो नष्ट होता जा रहा है और कब्र की ओर बढ़ रहा है। सतत् वर्तमानकाल सकेंत करता है कि यह नष्ट होना एक स्थिर और अपरिवर्तनीय प्रक्रिया है। ''बाहरी मनुष्यत्व'' वह ''नया मनुष्यत्व'' है जो कि बाहरी रूप से प्रगट और लोगों के लिए दृश्यमान है।

''अंदरुनी मनुष्यत्व'' मसीही हृदय है जिसमें परमेश्वर का प्राकाश चमकता है, जिससे उसे मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा का वास्तविक और अनुभवात्वक ज्ञान प्राप्त होता है'' (2कुरिन्थियों 4:6)। अंदरुनी मनुष्यत्व मसीही हृदय है जिसमें पवित्र आत्मा वास करता है जो परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने की गारंटी के लिए बयाना है'' (2कुरिन्थियों 1:22; 5:5)। अंदरुनी मनुष्यत्व में पवित्र आत्मा ने नए जीवन के सिद्धांतों को डाला दिया; वहाँ वह अपने नियंत्रित करने वाले प्रभाव को काम में लाता है और वहाँ वह सभी मसीही गुणों में बढ़ने की सामर्थ्य डालता है (इफिसियों 3:16-17)। अंदरुनी मनुष्यत्व संसार के लोगों की दृष्टि से और उनके दुर्गम विशलेषण से छिपा है। नए जन्म् के बाद, मसीही अभी भी एक अविभाज्य व्यक्तित्व है (अर्थात, एक जीवित प्राणी / एक अर्दश्य मानव आत्मा और दृश्यमान मावन देह के साथ एक प्राण) जिसे मनुष्य बाहर से और परमेश्वर भीतर से देख सकते हैं। पौलुस महान मसीही सत्य की बात कर रहा है कि बाहरी दृश्यमान मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन अंदरुनी नवीनीकरण के अनुभव के साथ नष्ट होता जाता है (2कुरिन्थियों 4:16)!

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग
विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 6:1-11 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 6:1-11 से संभावित लागूकरण के उदाहरण।

6:1. अपनी पापमय आदतों के बारे में सोचें। इन पापमय आदतों से छूटने की कोशिश करें और पाप करना जारी न रखें।

6:3-4. पहचानें की जब आपने यीशु मसीह में विश्वास किया है तो अब आप पाप के दासत्व की सामर्थ्य के अधीन नहीं हैं। यदि आप चाहें तो आप पापमय विचारों, शब्दों, कार्यों, आदतों और चरित्र लक्षणों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

6:3-4. अपने मसीही बपतिस्मे का अर्थ स्पष्ट रूप से समझें। समीही बपतिस्मा सब से ऊपर है "आत्मा का अदृश्य बपतिस्मा" (मरकुस 1:8; प्रेरितों 11:14-18; 1कुरिन्थियों 12:13; तीतुस 3:4-8) जिसका प्रतीक "पानी का दृश्यमान बपतिस्मा" है (मत्ती 28:19; प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 10:47-48; प्रेरितों 22:16)। मसीही बपतिस्मे (आत्मा के साथ) का अर्थ है मसीह के साथ एकजुट होना, मसीह के साथ संगति और भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल में उनके उद्धार के कार्य में सहभागी होना। यह विशेषरूप से हमारे स्थान पर उनकी मृत्यु में भागिदारी का प्रतीक है, अर्थात, आपके पाप धुल गए हैं (प्रेरितों 22:16)। इसका अर्थ है कि आप क्षामा किए गए हैं (प्रेरितों 2:38) और आप धर्मी ठहराए गए हैं (रोमियों 6:7)।

याद रखें कि ये चीजें किसी मनुष्य द्वारा पानी के बपतिस्मे द्वारा नहीं (पासबांन द्वारा किए गए अनुष्ठानिक रिवाज), लेकिन केवल मसीह के द्वारा आत्मा के बपतिस्मे (वास्तविक नया जन्म) के द्वारा पूरी की गई हैं! रोमियों 6:3-7 पानी के बपतिस्मे की बात नहीं करता साथ ही पानी के बपतिस्मे की विधि के बारे में भी नहीं (उदाहरण के लिए, डुबाने के द्वारा)। यह आत्मा के बपतिस्मे की बात करता है जिसे बाइबल में हमेशा ऊपर से और विश्वासियों के ऊपर आत्मा के ऊंडेले जाने के रूप में चित्रित किया गया है (प्रेरितों 2:3; 2:17,33; 2:38; 10:44; 11:16)। और पानी के बपतिस्मे को "उन्हें पानी देना (ऊपर उसे ऊंडेलना और ऊपर डालना) (2राजा 3:11), जिससे उनके पाप धुल जाते हैं" (प्रेरितों 22:16) के रूप में चित्रित किया गया है।

6:5-6 यह समझें कि धर्मी ठहरने की कानूनी स्थिति को पवित्रता की नैतिक स्थिति से अलग नहीं किया जा सकता। जब एक मसीही, मसीह की मृत्यु में सहभागी हो जाता है तो वह उनके पुनरूत्थान में भी सहभागी हो जाता है। इसलिए एक मसीही को मसीह के लिए नया जीवन जीना चाहिए।

6:10-11 आपना नया जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीएं।

2. रोमियों 6:1-11 से व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं स्वयं को पाप की सामर्थ्य के प्रति मृत और परमेश्वर के लिए जीवत समझना चाहता हूँ। मैं आपने आप को इस तथ्य में प्रसन्न करता हूँ कि मेरे पापमय स्वभाव की सामर्थ्य टूट गई है और मैं पाप की नियमित गुलामी से स्वतंत्र हूँ। मैं इस तथ्य को याद रखाना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर के लिए जीवित हूँ और यह कि मुझे न केवल एक नया और पवित्र जीवन जीना *चाहिए,* बल्कि मैं जी *सकता* हूँ और *जीऊँगा।*

मैं याद रखना चाहता हूँ कि मसीही न केवल मसीह की मृत्यु के लाभों में, बल्कि उनके पुनरूत्थान के सभी लाभों में भी सहभागी होते हैं! मसीह के साथ मेरी आत्मिक मृत्यु का परिणाम मेरे पापी स्वभाव की सामर्थ्य का पूर्ण रूप से टूटना है। रोमियों 6:7 के अनुसार, मेरे पापमय स्वभाव को पहले ही मृत्यु की सजा सुना दी गई है और मेरे जीवन भर इस न्याय का संचालन होता रहेगा। मुझ में पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा मेरे पापमय स्वभाव की सामर्थ्य को बार-बार तोड़ा जाता है और बार-बार मुझे नया और पवित्र जीवन जीने की योग्यता प्रदान की जाती है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 6:1-11 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 50,51,58 व 62** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(10) रोमियों 6:23।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।

5. शिक्षा देना। मत्ती 18:23-35 में निहित **"निर्दयी सेवक" के दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 23

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	***साझा करना*** *(20 मिनट)* ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 50,51,58 व 62**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में **साझा करें** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 50,51,58 व 62) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **(10) रोमियों 6:23**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन*** करें:
(10) रोमियों 6:23। क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।

4	**शिक्षा** *(85 मिनट)* ***(यीशु के दृष्टांत)*** **निर्दयी सेवक**

मत्ती 18:15-35 में निर्दयी सेवक का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में क्षमा के बारे में हैं।

''एक दृष्टांत'' स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी है। यह एक सच्ची जीवन कहानी या चित्रण है जिसे आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए बनाया गया है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और नवीनिकरण की आवश्यकता के साथ सामना कराने के लिए सामन्य और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम इस दृष्टांत का अध्ययन करने के लिए दृष्टांत अध्ययन के छः दिशानिर्देशों का प्रयोग करेंगे (देखें नियमावली 9, संपूरक 1)।

पढ़े मत्ती 18:15-35

1. <u>दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।</u>

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

इस दृष्टांत की कहानी के तीन भाग हैंः

एक राजा अपने भारी कर्ज को रद्द करके अपने सेवक पर दया दिखाता है। एक राजा अपने नौकरों से हिसाब चुकता करना चाहता था। ये सेवक कोई आम दास नहीं थे, लेकिन उच्च अधिकारी थे सम्भवतः प्रांतीय गर्वनर (स्थानीय शासक, दानिय्येल 6:1-2)। उनका कार्य अपने प्रांतों में शाही करों को इकट्ठा करना और उचित समय पर इस बड़ी रकम को राजा को सौंपना था। एक एक करके इन सेवकों को राजा के सामने बुलाया गया। एक सेवक भुगतान करने में सक्षम नहीं था वह राजा के दस हजार तोड़ों का कर्जदार था! एक तोड़ा छः हजार दीनार के बाराबर था। एक दीनार एक मजदूर द्वारा दिन भर में कामायी जाती थी। एक मजदूर को एक तोड़ा कमाने के लिए लगभग बीस साल तक काम कराना पड़ता था! इस प्रकार सेवक पर राजा का यह ऋण बहुत भारी था वह कभी भी राजा को यह ऋण चुका नहीं सकता था! हमें यह नहीं बताया गया की उस पर यह भारी ऋण क्यों बकाया था। हो सकता है कि वह करों को इकट्ठा करने में असफल रहा हो, या उसे सुरक्षित रखने में असफल रहा हो या फिर उसने अपने स्वयं के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उसे खर्च कर दिया हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि <u>उसका कर्ज चुकाना बिल्कुल असंभव था!</u>

राजा ने आज्ञा दी कि कर्ज का एक छोटा सा हिस्सा चुकाने के लिए उसे और उसके पूरे परिवार को गुलामी में बेच दिया जाए। जो लोग अपना ऋण चुकाने में असमर्थ थे उन्हें बेचने का कार्य इस्त्राएल में अनुमोदित नहीं था, लेकिन यह इस्त्राएल के पड़ोसी देशों में यह आम और प्रसिद्ध कार्य था।

सेवक राजा के चरणों में गिर गया और दया की भीख माँगने लगा। उसने इस बात से इंकार नहीं किया कि उस पर यह भारी ऋण बकाया है। उसने यह समझाने की भी कोशिश नहीं की कि वह इस कठिन परिस्थिति में कैसे पड़ा। उसे यह एहसाह अवश्य हुआ होगा की यह भारी ऋण चुकाना असंभव है, और फिर भी उसने धैर्य रखने का निवेदन किया और सारा ऋण चुकाने का वादा किया! उसने भयानक दंड से बचने की उम्मीद में यह बात कही।

राजा को उस पर दया आ गई। अपार करूणा के कारण राजा ने उसका सम्पूर्ण ऋण रद्द कर दिया और उसे जाने दिया! जितना उसने माँगा या अपेक्षा की थी उससे बढ़कर राजा से उसके लिए किया! दृष्टांत का पहला भाग राजा की अकल्पनीय और निश्चित रूप से अवांछित दया और करूणा को दर्शाता है।

वह सेवक अपने साथी सेवक का थोड़ा सा ऋण क्षमा करने से इंकार कर देता है। बाहर, वह अपने एक साथी सेवक से मिलता है जिस पर उसका सौ दीनार का ऋण था। उसके स्वयं के बड़े ऋण की तुलना में यह रकम बहुत ही कम थी। सौ दीनार लगभग तीन महिने की मजदूरी के बाराबर थी! इससे पहले की उसका साथी सेवक कुछ कह पाता, उसने उसका गला पकड़कर घोंटा। उसने तुरंत ऋण

चुकाने की मांग की। कहानी हमें यह नहीं बताती की क्यों उसने इतना निर्दयी व्यवहार किया। हो सकता है कि उसके घमंड को पहुँची ठेस और दूसरों की दृष्टि में भले भंड़ारी होने की असफलता के कारण गहन अपमान ने उसे यह इच्छा प्रदान की हो कि वह सबसे पहले मिलने वाले व्यक्ति से अपने इस अपमान का बदला ले।

उसका साथी सेवक भी उसके चरणों में गिर पड़ा और दया की भीख माँगता रहा। यह सेवक अपने कर्ज के विषय में यर्थातवादी था। निर्दयी सेवक के समान, उसने सब कुछ चुका देने का वादा नहीं किया, लेकिन बस पैसे चुकाने का वादा किया। लेकिन निर्दयी सेवक ने उसकी बात न मानी और उसे बंदीगृह में डाल दिया। क्योंकि उसके साथी सेवक का कर्ज बहुत थोड़ा था इसलिए कानूनी रूप से उसे गुलामी में बेचने की अनुमति नहीं थी, लेकिन कानूनी रूप से यह अनुमति थी की उसे बंदीगृह में डाल दिया जाए और उसे तब तक मजदूरी करने के लिए विवश किया जाए जब तक कि वह अपना सार ऋण न चुका दे। ऐसे लोगों को बंदीगृह में डालना और यहाँ तक कि उन्हें यातना देना आम बात थी यह पता लगाने के लिए कि उन्हेंने अपने धन को कहाँ छिपा रखा है या उनके रिश्तेदारों और मित्रों को कर्ज चुकाने के लिए प्रेरित किया जात था। दृष्टांत का दूसरा भाग उस सेवक की क्रूरता को दर्शाता है जिसे क्षमा कर दिया गया था, लेकिन वह निर्दयी बना रहा।

राजा ने निर्दयी सेवक के पूर्व दंड को फिर से लागू कर दिया, और यहाँ तक कि इस और बदतर बना दिया। जब अन्य सेवकों ने निर्दयी सेवक की क्रूरता देखी, तब उन्होंने जा कर सब कुछ राजा को बता दिया। राज ने उस सेवक को बुलवाय जिसे उसने क्षमा कर दिया था और उस पर दुष्ट सेवक, एक बदमाश होने का आरोप लगाया। निर्दयी और क्रूर सेवक को अपने साथी सेवक के प्रति दया दिखानी चाहिए थी *जिस प्रकार राजा से उसके प्रति दया दिखाई थी।* यह उसका कर्तव्य था कि न सिर्फ राजा की दया के प्रति आभारी रहे, वरन अपने चाल चलन में अपने साथियों के साथ राजा के उदाहरण का अनुसरण भी करे। यह उसका स्थायी दायित्व था कि वह उन सभी को क्षमा करे जिन्होंने उसके कुछ भी गलत किया था। राजा ने क्रोध में आकर इस निर्दयी सेवक को दंड देने वालों के हाथ में सौंप दिया जब तक कि वह सब कुछ न भर दे जो कुछ उस पर बकाया था।

2.तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का *समायोजन* दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 18:15-22 में पाया जाता है।

अनुशासन का नियम। मत्ती 18:15-17, में यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि उन्हें उस भाई से साथ मेल मिलाप के लिए पहल करनी चाहिए जिसने उनके विरूद्ध पाप किया हो। हालाँकि, ये शब्द, ''तेरे विरूद्ध'' प्राचीन हस्तलेखों में नहीं पाए जाते (लूका 17:3-4), वे लागू होते हैं क्योंकि गलती करने वाले भाई से साथ बातचीत ''केवल आप दोनों के बीच होनी थी''। साथ ही वचन 21 में पतरस

के प्रश्न का तात्पर्य अधिक निजी प्रकृति के पाप से है। फिर भी, जब भी कलीसिया के हितों की मांग करें या इसे अनुमति दें, तो मत्ती 18:15 का नियम लागू होना चाहिए, केवल व्यक्तिगत पाप नहीं, लेकिन सार्वजनिक पाप के लिए भी।

क्षमा का प्रश्न। हालाँकि पतरस ने महसूस किया कि एक मसीही को एक पूर्ण मेल मिलाप के लिए *पहल करनी चाहिए,* वह जानना चाहता था कि *कितनी बार* एक मसीही को गलती करने वाले अपने भाई के प्रति दया दिखानी चाहिए (मत्ती 18:21–22)। आत्मिक ममलों को देखने का यह दृष्टिकोण और बहस करने का यह तरीका व्यवस्था के यहूदी शिक्षकों के समान जान पड़ता है। वे सिखाते थे कि पहले, दूसरे और तीसरे अपमान को क्षमा कर देना चाहिए, लेकिन चौथे अपमान को दंडित करना चाहिए! यह ऐसा सुनाई पड़ता है कि मानों ''क्षमा'' एक सामग्री है जिसे मापा जा सकता है या इसमे फेर–बदल की जा सकती है; जैसे कि इसे थोड़ा–थोड़ा करके बाहर निकाला जा सकता हो जब तक कि यह एक निश्चित मापदंड तक न पहुँच जाए, जिसके परे एक व्यक्ति को क्षमा नहीं किया जा सकता! पतरस का प्रश्न क्षमा करने की *सीमा* पर था, और वह स्वयं यह सोचता था कि ''सात बार'' बहुत ही पर्याप्त था!

हालाँकि, यीशु ने उत्तर दिया कि क्षमा किसी प्रकार की सामग्री नहीं थी और साथ ही इसे मापने योग्य मात्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता था। क्षमा करना उन लोगों के प्रति एक व्यवहार है जिन्होंने आपके साथ कुछ गलत किया है। उन्होंने यह भी कहा कि एक व्यक्ति को अपने गलती करने वाले भाई को ''सात के सत्तर गुने तक'' क्षमा करना चाहिए! उनके कहने का शाब्दिक अर्थ 490 बार नहीं था। वह *समयों की सही संख्या से परे कुछ* इंगित करने के लिए यहूदियों के अंलकारिक अंक शास्त्र का प्रयोग कर रहे हैं। दो संपूर्ण अंको ''7'' और ''10'' को एक और संपूर्ण अंक ''7'' से गुणा करने के द्वारा, यीशु ने यह दर्शाने के इरादा किया कि वास्तविक क्षमा सीमाओं को या एक निश्चित सीमा को मान्यता नहीं देती। क्षमा हृदय की दशा है, गणना का मुद्दा नहीं।

इस अवसर पर यीशु ने निर्दयी सेवक का दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 18:23–34 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण मत्ती 18:35 में निहित है।

''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।''

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक श्रेय नहीं देना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत की कहानी के किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते। इसलिए, प्रासंगिक विवरण संदर्भ या बाइबल के अन्य भागों से लिया जाना चाहिए।

राजा और उसके दो सेवक। मत्ती 18:35 में, अपने लागूकरण में यीशु, केंद्रीय बिंदु को परमेश्वर, मसीही और उनके दोषि भाईयों पर लागू करते हैं। केवल यही पहलू प्रासंगिक हैं। वह कहते हैं, ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।'' ''राजा की करूणा और दया'' परमेश्वर की दया का प्रतिनिधित्व करती है। ''सेवक की दया और करूणा'', जो उसे अपने साथी सेवक पर दिखानी चाहिये थी, वह उस क्षमा का प्रतिनिधित्व करती है जो एक मसीही को अपने अपराधी भाई को देनी चाहिए।

दस हजार तोड़े और सौ दीनार। ''10000 तोड़ो'' की भारी रकम परमेश्वर के विरोध में एक व्यक्ति द्वारा किए गए विशाल पापों के ऋण (दोष) का प्रतिनिधित्व करता है! स्वभाव से ही हर एक मनुष्य का पमेश्वर के प्रति यह भारी ऋण है। यह रकम इतनी बड़ी है कि इसे दर्शाने के लिए कोई भी व्यक्ति इस ऋण को परमेश्वर को नहीं चुका सकता! अपने स्वंय के पापों के कारण यह ऋण अपने स्वयं के तरीके से परमेश्वर को चुकाना मानवीय रूप से असम्भव है! केवल परमेश्वर ही इतना बड़ा अपराध क्षमा कर सकते हैं!

''100 दीनार'' की छोटी रकम पहले मसीही के विरूद्ध दूसरे मसीही के ऋण का प्रतिनिधित्व करती है। यह रकम अभी भी अच्छी मात्रा में है (तीन महिने की मजदूरी के बराबर), लेकिन इस ऋण को मनुष्य द्वारा चुकाना संभव है! एक मसीही हमेशा उन छोटे पापों को क्षमा करने में सक्षम है जो उसके विरूद्ध दूसरे मसीही ने किए हैं!

यह दो धन राशियाँ विशिष्ट पापों का और विशिष्ट मात्राओं का भी प्रतिनिधित्व नहीं करती। यह केवल एक बड़ी अकल्पनीय रकम की तुलना में एक छोटी धन राशि का प्रतिनिधित्व करती हैं।

दण्ड देने वाले जो यातना देते हैं। इन विवरणों को कोई विशिष्ट अर्थ नहीं दिया गया, लेकिन यह अंतिम न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब प्रत्येक व्यक्ति वह प्राप्त करेगा जो उस पर बकाया है। ''क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले भुरे कामों का बदला जो उसने दे हके द्वारा किए हों पाए'' (2कुरिन्थियों 5:10)।

इस दृष्टांत की कहानी के अन्य सभी विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए। वे सब दृष्टांत की कहानी को मजबूती प्रादन करने का काम करते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक

विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 18:23-35 में निर्दयी सेवक का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में क्षमा" के बारे में है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मनुष्य की क्षमा और अलौकिक क्षमा में एक सीधा संबंध है। अर्थात, जो क्षमा हम परमेश्वर से प्राप्त करते हैं और जो क्षमा हम उस व्यक्ति को देते हैं जो हमारे विरुद्ध पाप करता है, उसमें सीधा संबंध है। एक मसीही, जिसके पाप क्षमा किए गए हैं, उसे सदैव उन उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार रहना चाहिए जिसने भी उसके विरोध में पाप किया हो।"

उसे ऐसा केवल यह आभार व्यक्त करने के लिए नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसके पापों को क्षमा किया है, लेकिन साथ ही इसलिए भी कि परमेश्वर मांग करते हैं कि वह परमेश्वर का अनुसरण करे और दूसरों के साथ वही करे जो परमेश्वर ने उसके साथ किया। क्योंकि परमेश्वर ने एक मसीही को क्षमा किया है, एक मसीही को भी उन सभी को क्षमा करना चाहिए जिन्होंने उसके विरुद्ध कोई अपराध किया हो! एक मसीही को अपने अधिकारों के दावों को छोड़ देना चाहिए और अनुग्रह को अधिकारों के ऊपर विजयी होने देना चाहिए! *सच्चा प्रेम प्राकृतिक स्व-प्रेम के बहिष्कार की मांग करता है!*

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोगों को आपने अपराधी भाईयों के प्रति निर्दयी या क्रूर नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके अपराधों के लिए उन्हें लागातार क्षमा करते रहना चाहिए (मत्ती 6:12,14-15)।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।

(1) मुद्दई का दृष्टांत।

पढ़ें मत्ती 5:25-26।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय पर इन दो दृष्टांतों की तुलना कैसे करें?

ध्यान दें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "अपने मुद्दई के साथ मेल मिलाप का समय सदैव अभी है!"

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग उस भाई या बहन के साथ जिससे वे क्रोधित हैं, मेल मिलाप करने को कभी टालते नहीं, *क्योंकि "कल" शायद बहुत देर हो सकती है!* वह व्यक्ति जो मेल मिलाप करने का प्रयास करने से इंकार करता है, वह कभी अपना ऋण नहीं चुका पाएगा।

जबकि ''निर्दयी सेवका का दृष्टांत'' सिखाता है कि परमेश्वर के साथ मेल मिलान करने के लिए एक अपराधी भाई या बहन के साथ मेल मिलाप करना निश्चित रूप से आवश्यक और अनिर्वाय है, वहीं ''मुद्दई का दृष्टांत'' सिखाता है कि ऐसे मेल मिलाप को करने में देरी नहीं हो सकती!

(2) गुलामी और यातना।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल गुलामी और यातना के बारे में क्या सिखाती है?

ध्यान दें।

किसी को गुलामी में बेचने की प्रथा। पढ़े निर्गमन 22:3; लैव्यव्यवस्था 25:8-10,39-43; 2राजा 4:1; नहेम्याह 5:4-6; यशायाह 50:1; आमोस 2:6; 8:6। निर्गमन 22 के अनुसार एक व्यक्ति को गुलामी में बेचने की अनुमति केवल एक चोर या डाकू के मामले थी। लैव्यव्यवस्था 25 के अनुसार, गुलामी में बेचे गए एक इस्त्राएली के साथ एक दास के समान नहीं परन्तु एक अस्थायी किराए के मजदूर के समान व्यवहार किया जाना चाहिए और उसे जुबली के वर्ष में स्वतंत्र किया जाना चाहिए। 2राजा 4 में गुलामी को मंजूरी नहीं दी गई है, केवल इसकी सूचना दी गई है। बाद में, नहेम्याह 5 में ऋण के लिए गुलामी की निंदा की गई है।

यशायाह 50 के अनुसार, प्रभु ने दो चित्रों के माध्यम से कहा कि उन्होंने इस्त्राएल को बेबीलोन की गुलामी या दासत्व में नहीं भेजा, लेकिन इस्त्राएल स्वयं दासत्व या गुलामी का कारण था। परमेश्वर ने इस्त्राएल को एक तलाक पत्र नहीं दिया, जिससे यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर ने इस्त्राएल को त्याग दिया। परमेश्वर ने *इस्त्राएल को गुलामी में नहीं बेचा।* तथ्य यह है कि इस्त्राएल अपने स्वयं के पापों के कारण त्यागा गया और गुलामी में बेच दिया गया!

भविष्यद्वक्ता आमोस के अनुसार, परमेश्वर ने लोगों को गुलामी में बेचने की निंदा की! निष्कर्ष यह है कि लोगों को गुलामी में बेचने की प्रथा को अनाधिकृत तरीके से स्वीकृति नहीं दी गई थी। इस्त्राएल से बाहर के देशों में जो लोग अपना ऋण नहीं चुका पाते थे उन्हे बेचना आम था। निर्दयी सेवक का दृष्टांत इसी प्रथा को संदर्भित करता है।

यातना देने की प्रथा। पढ़ें प्रकाशितवाक्य 9:5; 18:6-7। मत्ती 18:34 कहता है कि, ''और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दंड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज न भर दे, तब तक उनके हाथ में रहे''। प्राचीन मध्य पूर्व में ये दंड देने वाले अधिकारी न्यायालय द्वारा उन लोगों को दंड देने के लिए नियुक्त किए गए थे जिन्होंने भयानक अपराध किए हों। फिर से, बाइबल याताना देने की स्वीकृति नहीं देती, लेकिन केवल सूचना देती है कि संसार के इस भाग में ऐसा हुआ। यह यीशु की शिक्षा का हिस्सा नहीं था, लेकिन यीशु की ''कहानी'' का एक भाग था।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, परमेश्वर अपने पवित्र क्रोध को बाहर निकालने वाले साधनों को बेबीलोन के अपवित्र नगर के विरूद्ध आज्ञा देते हैं कि जो कुछ भी उसने दूसरों के साथ किया है उसका पूरा बदला लिया जाए। वह ऐसा अंलकारिक भाषा में करते हैं। वह यह स्पष्ट नहीं करते कि दंड देने के यह साधन कौन हैं। वे हर एक जन और हर वह चीज है जिसका प्रयोग परमेश्वर अपने न्याय को प्रगट करने के लिए करते हैं।

''दो गुना भुगतान'' का अर्थ है ''उसे पूर्ण समकक्ष'' दंड देना जिसकी वह हकदार है। क्योंकि बेबीलोन के पापों के लिए कोई पश्चयाताप नहीं है, ''उसके पाप'' और ''उसके पापों के अनुसार दंड'' दोनों समान अनुपापत में हैं और दो ऐसे आधे हिस्से हैं जो मिलकर एक पूर्ण भाग हो जाता हैं, इसलिए पूर्ण रूप से उचित है! दूसरों के प्रति उसके कामों में क्रूरता और निर्दयी यातनाएँ और लोगों की हत्या शामिल थी। वह दूसरों के लिए अकल्पनीय दुःख का कारण थी। परमेश्वर के न्याय में वह अपना उचित दंड प्राप्त करेगी!

(3) क्षमा के विषय में शिक्षाएँ।

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

रोमियों 3:23। ''इसलिए सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं''। *पृथ्वी पर सभी लोग कर्जदार हैं और सबको परमेश्वर की क्षमा की आवश्यकता है!* (भजन 130:3-4; मत्ती 18:23)

भजन 49:7। ''उनमें से कोई अपने भाई को किसी भाँति छुड़ा नहीं सकता और न परमेश्वर को उसके बदले कुछ दे सकता है - क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है वह अंत तक कभी न चुका सकेंगे।'' *कोई भी किसी दूसरे की ओर से ऋण नहीं चुका सकता।* (मत्ती 18:25; रोमियों 3:20)

रोमियों 3:19। हर एक मुँह बंद किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दंड के योग्य ठहरे। परमेश्वर के ऋण का भुगतान दूसरे तरीके से होना चाहिए! (मत्ती 18:23-24; उत्पत्ति 2:17; रोमियों 5:18)।

रोमियों 3:24। परमेश्वर के अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं सभी विश्वासी सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं। वह पापों के लिए प्रायश्चित का माध्यम ठहरा। इसका अर्थ है कि जिस क्षण एक व्यक्ति यीशु मसीह में विश्वास करता है, यीशु मसीह उसके पापों के लिए प्रायश्चित बलिदान बना जाते हैं और उसके पापों का दोष रद्द हो जाता है (मत्ती 18:27; 20:28; 2कुरिन्थियों 5:21)। 2कुरिन्थियों 9:15 ''परमेश्वर का उसके उस दान के लिए धन्यवाद हो जो वर्णन से बाहर है!'' किसी दूसरे व्यक्ति को जिसने आपके विरूद्ध अपराध किया है, क्षमा करना बहुत कठिन नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो परमेश्वर का हम पर बकाया है, वह उससे कहीं अधिक है जो हमारा दूसरों पर बकाया है!

मत्ती 6:12-15। ''इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।'' यह सिखात है कि एक व्यक्ति अपने ऋण या पापों के क्षमा होने के प्रति तभी सुनिश्चित हो सकता है जब वह स्वयं दूसरों के ऋण को क्षमा करता है जिन्होंने उसके विरूद्ध अपराध किया हो। क्षमा की गारंटी तभी संभव है जब एक व्यक्ति उन लोगों को क्षमा करता है जिन्होंने उसके विरूद्ध पाप किया हो। परमेश्वर निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति को क्षमा नहीं करेंगे, जो घृणा या प्रतिशोध को थामे रखता है! मसीहियों को दूसरों को वैसे ही क्षमा करना चाहिए जैसे परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया है। लेकिन यदि वे अपने विरोध में दूसरों के पापों को क्षमा नहीं करेंगे, तो परमेश्वर भी अपने विरोध में उनके पापों को क्षमा नहीं करेंगे। परमेश्वर ऐसे व्यक्ति को क्षमा नहीं

करते जो दूसरों को क्षमा करने से इंकार करता है (मत्ती 18:32-34; इफिसियों 4:32; कुलुस्सियों 3:12-14)!

मत्ती 5:23-24; 18:17। मेल मिलाप करने की ओर पहला कदम किसे बढ़ाना चाहिएः वह व्यक्ति जिसने चोट पहुँचाई या वह व्यक्ति जिसने चोट का सामना किया? यीशु का उत्तर है, ''दोनों!'' मत्ती 5:23-24 कहता है ''इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।'' यहाँ यीशु सिखाते हैं कि *दोषी व्यक्ति को पहल करनी चाहिए।*

मत्ती 18:15 कहता है, ''यदि तेरा भाई तेरे विरूद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।'' यहाँ यीशु सिखाते हैं कि *निर्दोष व्यक्ति को पहल करनी चाहिए।*

परमेश्वर की दृष्टि में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि समस्या की शुरूआत किसने की, लेकिन यह कि मेल मिलाप हो! परमेश्वर दोनों पक्षों को मेल मिलाप की दिशा में पहल करने के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

---

6. परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय पर इन दृष्टांतों की मुख्य शिक्षाओं या पाठों का सांराश।

(1) परमेश्वर कैसे हैं।

सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसे हैं। इन दृष्टांतों का एक बड़ा सबक यह है कि वे परमेश्वर की अकल्पनीय दयालु और क्षमा करने वाली आत्मा को दर्शाते हैं। परमेश्वर की दृष्टि में हमारे पापों की तुलना दस हजार तोड़ों के भारी ऋण से की जा सकती है, एक ऐसा ऋण जिसे कोई भी कभी भी परमेश्वर को नहीं चुका सकता! जबकि अपने पापों के कारण, परमेश्वर का जो ऋण हमारे ऊपर बकाया है, उसे हम में से कोई भी नहीं चुका सकता, यीशु मसीह ने सभी के ऋण को चुकाया है जो उस पर विश्वास करते हैं! वह क्रूस पर उन सभी लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिए मरा जो उसे स्वीकार करते (यूहन्ना 1:12), और उन सभी लोगों के लिए जो उसके हैं (यूहन्ना 10:11)! ''जो कोई भी प्रभु (यीशु मसीह) का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा'' (रोमियों 10:13)।

(2) मसीहियों को कैसा होना चाहिए।

मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें कैसा होना चाहिए। दूसरा जो मुख्य पाठ यह दृष्टांत हमें सिखाते हैं वह यह है कि परमेश्वर हमसे क्या चाहते हैं कि हम बनें और करें। यह सिखाता है कि हमें हर उस व्यक्ति के पास जाना चाहिए और मेल मिलाप करना चाहिए जिसके प्रति हमारे मन में कोई शिकायत है या जिनके मन में हमारे प्रति कोई शिकायात है! यह सिखाता है कि हमें क्षमा करने और मेल मिलाप करने में देरी नहीं करनी चाहिए। हमें अभी क्षमा करना है, और तुरन्त मेल मिलाप करना है, क्योंकि *''कल'' शायद बहुत देर हो सकती है!* क्षमा करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग न तो किसी के विरूद्ध कड़वाहट को थामे रखते हैं, न ही अपने विरोध में दूसरों के पापों का लेखा रखते हैं, लेकिन तुरन्त क्षमा करने के लिए पहल करते हैं और मेल मिलाप करते हैं (1कुरिन्थियों 13:5)। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक

लोगों को अपराध करने वाले भाई के प्रति निर्दयी या क्रूर नहीं होना चाहिए, लेकिन उनके अपराधों को बार बार लगातार क्षमा करना चाहिए (मत्ती 6:12, 14-15)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थनाकरने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *(निर्धारित कार्य)* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "बोने वाले के दृष्टांत" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 71,73,78 और 82** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(6) रोमियों 4:5, (7) रोमियों 5:1-2अ, (8) रोमियों 5:3-4, (9) रोमियों 6:13, (10) रोमियों 6:23।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 6:12-23।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य अध्याय 24

1	प्रार्थना

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) (शांत समय) भजन संहिता 71,73,78 और 82

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 71,73,78 और 82) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(रोमियों में प्रमुख वचन)* रोमियों के प्रमुख वचनों की समीक्षा करें

दो-दो करके रोमियों की आखरी पाँच याद किये हुए प्रमुख वचनों का ***पुनरावलोकन*** करें।
(6) रोमियों 4:5। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।
(7) रोमियों 5:1-2अ। क्योंकि जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बनें हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।
(8) रोमियों 5:3-4। केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।
(9) रोमियों 6:13। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
(10) रोमियों 6:23। क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह में अनन्त जीवन है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *(रोमियों की पत्री)* रोमियों 6:12-23

परिचय। अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें **रोमियों 6:12-23** साथ में।

रोमियों 6:1-10 में बताया गया है कि "क्या विश्वास करना है", जबकि रोमियों 6:11-16 में सिखाया गया है कि "कैसे जीना है"।
रोमियों 6:17-23 पहले से की गई उन्नति के संबंध में दिया गया प्रोत्साहन है। यह अध्याय मसीहियों के निर्माण के अच्छे क्रम का एक उदाहरण हैः अर्थात दृढ़ विश्वास, लगातार आवेदन और दृढ़ता के लिए प्रोत्साहन।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिल कर रोमियों 6:12-23 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार करें या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखेंः हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

6:12-15

खोज 1. **पौलुस ने मसीहियों को समझाया की अब यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे अन्यजातियों के समान अधर्म और अपवित्र जीवन न जीएँ, जैसे कि वे अन्यजातियां स्वभाव से और झूठे शिक्षक, और जैसे रोम में रहने वाले (एंटीनोमियंस) अर्थात अनुग्रह पर विश्वास न करने वाले लोग सिखाते हैं।**

(1) वह पुराने स्वभाव व पापी स्वभाव को नया बनाता है।

- रोमियों 6:1-11, पौलुस कहता है कि उसने पहले ही "पुराने मनुष्त्व" (पुराने स्वभाव या पुराने पापी स्वभाव की सारी शक्तियों को) दूर कर दिया है (रोमियों 6:6)।
- रोमियों 6:12-23 में वह मसीहियों को प्रोत्साहित करता है कि उन्हें अब 'पाप' की व्यवस्था का पालन करने की कोई जरूरत नहीं है (नश्वर देह में शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करने की, जो आज भी उनके नये मनुष्यत्व में पायी जाती हैं) (रोमियों 6:12)।

रोमियों 6:12-13 मसीहियों को अपने नश्वर शरीर पर पाप को राज्य नहीं करने देना चाहिए। यह मसीहियों की एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि वे अपने पापी स्वभाव के अनुसार जीवन नहीं, वरन् अपने नये मनुष्यत्व के अनुसार जीवन जीएं (गलातियों 5:16-18)।

इसके बजाय मसीहियों को अपने शरीर के अंगों को (उनके मन, आंखों, कानों, उनके मुंह, पैरों इत्यादि को) "धार्मिकता के हथियार" होने के लिए सौंपना चाहिए (रोमियों 6:13)। हालांकि पापी

स्वभाव पहले की तरह ही नया जन्म पाये हुए मसीहियों में बना रहता है, लेकिन उनकी उकसाने वाले पाप की शक्ति का नाश हो चुका है! मसीही वैध रूप से "पाप से आजाद"[1] हो गये हैं (रोमियों 6:7), अर्थात् वे *हमेशा के लिए* दोष भावना, अशुद्धता और पाप की शक्ति से स्वतन्त्र हो गये हैं। नया जन्म पाये हुए मसीहियों में पाप का स्वभाव पहले ही निष्क्रिय हो चुका है। परमेश्वर अब मसीहियों के द्वारा न्याय कर रहे हैं "जिन्होनें देह की क्रियाओं को आत्मा के द्वारा मार दिया है" और जो पवित्र आत्मा की शक्ति में नया और पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हैं (रोमियों 8:13)। इस तरह से मसीही लोगों को यह योग्यता प्रदान की गयी है कि वह पापी अभिलाषाओं का सामना करके अपने आपको नये और पवित्र जीवन के लिए समर्पित कर सके।

(2) व्यवस्था या अनुग्रह के अधीन रहना।

रोमियों 6:14-15 से हमें शिक्षा मिलती है कि मसीहियों को "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए। पौलुस व्यवस्था और अनुग्रह के बीच संबंध के बारे में सिखाता है। वह मसीहियों को उनकी अशुद्ध अभिलाषाओं से बचने और उनका विरोध करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे वे "अनुग्रह के अधीन" जीवन व्यतीत कर सकें (अर्थात "आत्मा के अनुसार जीवन बिता सकें", गलातियों 5:16-26)।

- बहुत से लोग आज भी "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत कर रहे हैं, अर्थात् वे अपनी शक्ति से उद्धार पाने और अपने व्यवस्था के कामों (यहूदियों की तोरह,[2] मसीहियों के द्वारा बनाये गये कुछ नियमों और मुसलमानों[3] की शरिया का) परम्पराओं का पालन करके परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। बाइबल कहती है कि जो लोग अपने आप को व्यवस्था के कामों के बल पर धर्मी ठहराने का प्रयास करते हैं, वे असफल होगें! बाइबल कहती है कि यहूदियों, व्यवस्था का पालन करने वाले मसीही और मुसलमान न तो धर्मी हैं और न ही पवित्र हैं। वे नया, धर्मी और पवित्र जीवन इसलिए नहीं जी पाते हैं क्योंकि वे अपने बल से ऐसा करने का प्रयास करते हैं।
- लेकिन जो 'अनुग्रह के अधीन' जीवन व्यतीत कर रहे हैं वे यीशु मसीह में विश्वास करने के कारण परमेश्वर के अनुग्रह से बचाये गये हैं। वे न केवल व्यवस्था के अनुसार धर्मी ठहरे हैं, वरन् वे पवित्र भी हैं। बाइबल कहती है कि इस प्रकार के मसीही लोग कभी भी पाप में जीवन नहीं बिता सकते। हो सकता है कि उनसे पुनः पाप हो जाए, लेकिन पाप में *न* तो जीना *चाहते हैं*, *न* जी *सकते हैं* और *न ही जीएंगें* (1यूहन्ना 3:6-9)। वे अपने पापों से पश्चाताप करेगें, अपने पापों का अंगीकार करेगें और लगातार उन पापों को सामना करने के

[1]ग्रीक : हर एक जन जो विश्वास करता है(अपूर्ण वर्तमान काल) , वह *हमेशा के लिए* (सामान्य भूतकाल)उन सारी चीजों से स्वतन्त्र हो जाता है (अपूर्ण वर्तमान काल), जिनसे वह मूसा की व्यवस्था से स्वतन्त्र नहीं (सामान्य भूतकाल) हो पाया था (प्रेरितों के काम 13:38-39)। इस तरह से रोमियों 6:7 के अनुसार "वह सदा के लिए (दोष, अशुद्धता और पापों की शक्ति से) पापों से स्वतन्त्र होकर (Greek: dedikaiótai (perfect tense) apo tés hamartias. तथा धर्मी और निर्दोष और स्वतंत्र घोषित किया गया है।

[2] व्यवस्था के कामों में(यहूदियों की तोरह में) (ई.पू 1444 मे पहल विद्यमान थी) निम्न बाते शामिल होती हैं: आपको यह विश्वास करना है कि परमेश्वर एक है(व्यवस्थाविवरण 6:4) ; आपको दिन में तीन बार प्रार्थना करनी है (दानिय्येल 6:11); आपको वर्ष में चार बार(जर्कयाह 8:19) और सप्ताह में दो बार (लूका 18:12) उपवास करना है; आपके अपने धर्म के अनुसार अपनी कमाई का दशमाशं देना है (मलाकी 3:10); आपको वर्ष में तीन बार यरूशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाना है (व्यवस्था 16:16); इसके अलावा भी अन्य महत्वपूर्ण नियम हैं: लड़कों का खतना कराना जरूरी है (लैवव्यवस्था 12:3) और स्त्रियों को कुछ समय के लिए अशुद्ध और अपवित्र माना जाता है (लैवव्यवस्था 12:4-5); आपको शनिवार के दिन सबत को मानना है (निर्गमन 12:3); आपको सूअर का मांस नहीं खाना है(व्यवस्था विवरण 14:8) और महिलाओं को केवल महिलाओं की ही पोशाकें पहिननी है (व्यवस्थाविवरण 22:5)।

[3] व्यवस्था के कार्य (मुस्लिमों की शरिया) (722ई.प.) (लगभग 2000 वर्ष के बाद) जिसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं: तुम्हें यह विश्वास करना है कि खुदा एक है; तुम्हें दिन में पांच बार नमाज़ पढ़नी है; तुम्हें हर वर्ष एक महीने के रोज़े रखने हैं; तुम्हें अपने मजहब के हिसाब से खुदा के कामों के लिए अपनी कमाई का चालीस प्रतिशत दान देना है; और आपको अपने जीवन में एक बार हज़ करने के लिए मक्का पर जरूर से जाना है। इसके अलावा भी अन्य महत्वपूर्ण नियम इस प्रकार से हैं: तुम्हारा खत्ना जरूर हो, तुम्हें जुम्में की सभा में शरीक होना है; आपको सूअर का मीट नहीं खाना है और महिलाएं केवल महिलाओं के वस्त्र ही पहिन सकती हैं। यह स्पष्ट है कि इस्लाम की शरिया में यहूदियों की व्यवस्था तोरह का ही अनुसरण किया गया है।

लिए परमेश्वर से क्षमा और अनुग्रह प्राप्त करते रहेगें! अतः नया, धार्मिक और पवित्र जीवन लगातार जीने के लिए मसीहियों को परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाना चाहिए और उसके अनुग्रह का उपयोग करना चाहिए (इब्रानियों 12:14-15)! विश्वास के द्वारा लगातार परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के द्वारा वे पाप के स्वभाव का विरोध करना *चाहते हैं,* कर *सकते हैं* और वे *करेगें* तथा नया, धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत *करेगें।* पापी स्वभाव तो उनके भीतर लगातार बना रहता है, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह में निर्भर होने के कारण, पापी स्वभाव उनके मसीही जीवन पर प्रभुता नहीं कर पाता (रोमियों 6:14)

- 15 वें वचन में, पौलुस कहता है कि विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराये जाने की शिक्षा किसी भी मसीही जन को परमेश्वर के नियमों (दस आज्ञाओं) को अस्वीकार करने और लगातार दण्डाभाव के साथ पाप करने की अनुमति प्रदान नहीं करती है। हालांकि व्यवस्था के मानने से कोई मसीही जन धर्मी नहीं ठहराया जाता, उन्हें यह दिखाने के लिए कि मसीही जीवन कैसे जिया जाता है नैतिक शिक्षाओं को आवश्यकता पड़ती हैं।(अध्याय 7)

6:16-23

***खोज 2.* पौलुस मसीहियों को उत्साहित करते हुए कहता है कि उनकी यह जिम्मेदारी है कि वे एक धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत करें।**

मसीहियों को अब भविष्य में अपने पापी स्वभाव का या उनके पापी स्वभाव से जुड़े कामों का गुलाम बनकर रहने की आवश्यकता नहीं है। इसकी बजाय मसीहियों को धार्मिकता के अधीन रहना है, अर्थात उन्हें धार्मिक और पवित्र स्थिति के प्रति समर्पित रहना है उसी के अनुसार जीवन बिताना है और उसी अवस्था में बने रहते हुए धार्मिक और पवित्र कामों को करना है। जबकि यूहन्ना 15:15 और गलातियों 5:1 यह सिखाता हैं कि केवल मसीह के अधीन होने से हमें सच्ची आज़ादी प्राप्त होती है, पौलुस इस सम्बन्ध में हमें दास और उसके स्वामी के बीच की दो तस्वीरों की रचना करते हुए बताते हैं कि मसीही की वास्तविक अवस्था क्या है।

(1) पापी स्वामी के या धर्मी स्वामी के अधीन रहना।

मन परिवर्तन होने से पहले, मसीही लोगों ने स्वेच्छा से अपने पुराने ईश्वर के अधीन रहने व जीवन बिताने का निर्णय लिया था, अर्थात, "पाप के अधीन" अर्थात पापी स्वभाव जिसमें अनाज्ञाकारिता भी शामिल थी। "पाप" ने उन पर इतनी शक्तिशाली ढंग से प्रभुता कर रखी थी, कि वे कुछ भी भला काम (परमेश्वर की दृष्टि में) नहीं कर पा रहे थे, वरन् वे केवल "बुराई" ही कर रहे थे। पाप के अधीन जीवन बिताने का परिणाम यह हुआ कि वे "आत्मिक तौर पर मर गये" (इफिसियों 2:1), वे "शारीरिक तौर पर मरेगें" (इब्रानियों 9:27) और उसके बाद वे "अनन्त मृत्यु"(नरक) के भागीदार होगें (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

लेकिन जब उनका मन परिवर्तन हुआ, तो मसीहियों ने अपना जीवन अपने नये प्रभु अर्थात् "धार्मिकता" के अधीन कर दिया, जिसमें आज्ञाकारिता प्रगट करना शामिल था। यहां पर "धार्मिकता" का अर्थ हर एक पहलू में धार्मिकता है और जिसका वास्तविक अर्थ हर दृष्टिकोण से छुटकारा है (रोमियों 5:17)। "धार्मिकता" ऐसा शक्तिशाली प्रभु है कि मसीही लोग हर एक "भली" (परमेश्वर की दृष्टि में) आज्ञा का पालन कर सकते हैं। धार्मिकता के अनुसार जीवन व्यतीत करने का परिणाम यह

होता है कि मसीही व्यक्ति "आत्मिक तौर पर जीवित रहता है" (इफिसियों 2:4-10), वह मसीह के दूसरे आगमन पर "शारीरिक रूप से मृतकों में से जीवित होगा" और उस पर कोई "दण्ड की आज्ञा नहीं होगी" (नरक कुण्ड में) (यूहन्ना 5:24)।

(2) दुष्टता और अशुद्धता के अुनसार जीवन व्यतीत करने या धार्मिकता के अुनसार की अगुवाई में जीवन व्यतीत करना जो पवित्रता में अगुवाई करता है के परिणाम (रोमियों 6:19)।

इस प्रकार, पौलुस शिक्षा देता है कि कोई भी जन बिना प्रभु (स्वामी) के जीवन व्यतीत नहीं कर सकता! इस संसार में शायद ही कोई व्यक्ति हो जो वास्तव में, इस तरह से "स्वतन्त्र" या "स्वाधीन" हो, कि उस पर प्रभुता करने वाला कोई स्वामी या प्रभु नहीं है। हर एक जन पर कोई न कोई स्वामी जरूर होता है जिसकी अधीनता में होकर मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करता है, चाहे वह "पाप" हो या "धार्मिकता"।

लेकिन प्रभु कहते हैं कि "पाप", मनुष्य को इस कदर मज़बूर करता है कि वह अपने शरीर को अधार्मिकता की सेवा करने के लिए हथियार के रूप में देता है। जिससे वह स्वयं "अधार्मिक" बन जाता है, जिसकी वजह से वह पाप का विरोध या प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं कर पाता। इसका अर्थ हुआ कि वह परमेश्वर के वचनों के लिए पूरी तरह से "मर चुका है"।

परन्तु परमेश्वर मसीहियों को "धार्मिकता" के तहत अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के हथियार होने देने के लिए बुलाते हैं। जो हमारी अगुवाई "पवित्रता की ओर" करते हैं जिसके द्वारा वह पाप का सामना करके परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर सकता है।

जब एक मसीही को यह पता चलता है कि पाप या धार्मिकता की सेवा करने के क्या परिणाम होते हैं, तो वह अपने आप को लगातार यीशु मसीह की सेवा करने के लिए समर्पित कर देता है।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आइये रोमियों 6:12-23 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

अध्याय 6

प्रश्न 1. **रोमियों अध्याय 6 पवित्रता के बारे में क्या सिखाता है?**

ध्यान दें।

(1) पवित्रता क्या है (नया मनुष्य बनना)?

पुराना मनुष्य। रोमियों 6:6 कहता है, "हमारा पुराना मनुष्य" या "हमारा पुराना जीव" यीशु मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है। इस क्रिया का काल यह दर्शाता है कि पुराना मनुष्यत्व अपनी संपूर्ण दशा में *हमेशा के लिए* मृतक हो चुका है। हमारा "पुराना मनुष्य" हमारे अंदर की अवस्था तथा बाहरी अवस्था में नये जन्म से पहले की दशा है। कुछ समय तक पुराने मनुष्यत्व को धीरे–धीरे मृतक अवस्था को प्राप्त करने के रूप में स्वीकार *नही* किया जाता है, लेकिन जब उसका नया जन्म हो जाता है तो उसे पूरी तरह से पुराने मनुष्य के लिए मरा हुआ मान लिया जाता है।

नया मनुष्य। "पवित्रता" (यूनानीः हागियास्मोस) "हमारे नए मनुष्य" को दर्शाती है और यह हमारी आंतरिक स्थिति और वह बाहरी स्थिति है जो हमारे *विश्वासी होने* का प्रमाण देती है। रोमियों 6:9 और 22 में, शब्द "पवित्रता" पवित्रता की प्रक्रिया का उल्लेख नहीं करता है जिसमें हमारा व्यवहार अधिक पवित्र हो जाता है, बल्कि पवित्रता की इस स्थिति में अपने नये जन्म के बाद मसीही व्यक्ति तुरंत और पूरी तरह से "पवित्र" (पाप से अलग और धार्मिकता के लिए समर्पित) हो जाता है "यीशु मसीह हमारी.... धार्मिकता है" (1कुरिन्थियों 1:30)। "पवित्रता के बिना कोई भी परमेश्वर को नहीं देख सकेगा" (इब्रानियों 12:14) (यूहन्ना3:3,7)। यह परमेश्वर द्वारा पाप का विरोध करने की दी गई क्षमता को दर्शाती है, पूरी ईमानदारी से उसकी आज्ञा को माने और नया जीवन जीएं। रोमियों अध्याय 6 में *ज़ोर पवित्रीकरण की प्रक्रिया पर नहीं है, लेकिन पवित्रता की स्थिति पर दिया गया है। लेकिन* ज़ोर पाप और पाप की शक्ति से सम्बन्ध को तोड़ने तथा धार्मिकता के प्रति क्षमता और प्रतिबद्धता पर दिया गया है।

(2) पवित्रता(नया मनुष्य बनने) का उद्देश्य क्या है?

नए मनुष्य बनने का उद्देश्य यह है कि आगे को उसके शारीरिक देह के अंग अब उसके पापी स्वभाव(पापी प्रवृत्ति) के प्रति प्रतिबद्ध और नियंत्रित में न हों और अब हमें अधर्म (पाप) की सेवा में हथियार या यंत्र के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाए।

"पाप का शरीर" (रोमियों 6:6) हमारी शारीरिक देह है जिसको पापी प्रवृति द्वारा पाप की सेवा करने के लिए एक हथियार या साधन के रूप में निर्धारित, नियंत्रित और उसका दुरुपयोग किया जाता (जो अभी भी मसीहियों में मौजूद) है। रोमियों 6:6 के अनुसार हमारे "पुराने मनुष्य" (पुराने स्वभाव) को *हमेशा के लिए एक बार* क्रूस पर चढ़ाए जाने (मसीह के साथ मरना) का उद्देश्य "पाप से दूर करना" और "पाप की दासत्व को रोकना" है। हमारे पुराने स्वभाव का क्रूसित होना हमारे भौतिक शरीर के अंगों को हमारे पापी स्वभाव का दास होने से बचाता है। हथियार या उपकरण के तौर पर हमारे शारीरिक देह के अंग शक्तिहीन, अप्रभावी हो जाते हैं, यहां तक कि उनका अस्तित्व खत्म हो जाता है। पाप के शरीर को पहले ही विनाश की सजा दी जा चुकी है और यह सजा अब पवित्र आत्मा की शक्ति में नए और पवित्र जीवन जीने के माध्यम से लागू की जा रही है (रोमियों 8:13)।

जब कोई व्यक्ति (नया जन्म पाया हुआ) मसीही बन जाता है, तो उसका शरीर अब उसके पापी स्वभाव के द्वारा संचालित या उसके अधीन नहीं रहता, वरन उसे रोमियों 6:16 के अनुसार, अपने नये जन्म पाये हुई अवस्था के द्वारा संचालित या उसके अधीन होना चाहिए, अर्थात उसकी धार्मिकता

की स्थिति के (परमेश्वर की दृष्टि में उसको धर्मी ठहराये जाने और छुटकारा पायी हुई स्थिति) जो कि उसकी पवित्रता की स्थिति (पाप का प्रतिकार करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने की क्षमता) में ही प्रकट होती है (रोमियों 6:18-19; गलातियों5:16-26)।

(3) जीवन में पवित्रता का क्या प्रमाण है ?

किसी व्यक्ति के एक नया (नया जन्म पाया हुआ) व्यक्ति बन जाने का प्रमाण यह है कि, वह पवित्रता की स्थिति में रहता है, अर्थात, उस अवस्था या स्थिति में जिसमें उसके पाप की शक्ति टूट गई है (मर गया) (रोमियों 6:2,7,11,14)।

मसीही दर्शाते हैं कि वह अब पुराने स्वभाव द्वारा संचालित अवस्था अर्थात अपने पापी स्वभाव के दास नहीं हैं (रोमियों 6:6) क्योंकिः

- वह मसीही दिखाता है कि "वह एक नया जीवन जी रहा है": विश्वासी, धर्मी और पवित्र (रोमियों 6:4)।
- वह खुद को पाप के लिए मृत और परमेश्वर के लिए जीवित गिनता है": एक मसीही जो परमेश्वर के शासन में और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है (रोमियों 6:11)
- वह "परमेश्वर की सेवा में अपने शरीर के अंगों को हथियार या धार्मिकता के उपकरण के रूप में प्रदान करता है"(रोमियों 6:13,19)
- वह "पूरी तरह से शिक्षण के रूप का पालन करता है(यूनानीः टुपोस डिडाचेस) जिसे मसीह ने उसे सौंपा था"(रोमियों 6:17)।

(4) पवित्रता का उद्देश्य क्या है ?

रोमियों अध्याय 6 में सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि, व्यवस्था नहीं, बल्कि धार्मिक और पवित्र जीवन जीने के लिए अनुग्रह आवश्यक है, अर्थात् नए मनुष्यत्व में होकर जीवन जीना (रोमियों 6:14)।

जो लोग "व्यवस्था के अनुसार" जीवन व्यतीत करते हैं उनमें आत्म-धर्मी या अपने आप को सही साबित करने वाली आत्मा होती है, जिसके कारण वे व्यवस्था का पालन करने का भरपूर प्रयास करते हैं और अपने आप को धर्मी ठहराते हैं (वे यह सुनिश्चित करते हैं कि वे व्यवस्था के कामों को पूरा कर रहें हों)। वे व्यवस्था का पालन इसलिए करना चाहतें है क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं उन्हें परमेश्वर से सज़ा न मिले या वे अपने आप अपना उद्धार अर्जित करने या उसे एक पुरस्कार के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं।

हालाँकि, जब लोग "अनुग्रह के अधीन" रह रहे होते हैं, तो वे गहराई से जानते हैं कि वे *पहले से ही* परमेश्वर की संप्रभुता और स्वतंत्र अनुग्रह से *धर्मी ठहरे हैं,* जो उन्होंने यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से प्राप्त किया है। परमेश्वर को मानने की उनकी प्रेरणा उनके लिए परमेश्वर का प्रेम है। उनका परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है।

(5) पवित्रता की निश्चितता क्या है?

एक मसीही जन का (नया जन्म पाने) नया मनुष्य होने का यकीन, अर्थात् पवित्रता की स्थिति में आना एक तरफ तो मसीह की 2000 साल पहले की *मृत्यु* और पुनरुत्थान पर आधारित है और दूसरी तरफ मसीह के साथ स्वयं मसीही व्यक्ति की मृत्यु व उसके पुनरुत्थान पर आधारित है, जो

तब हुआ जब उसने विश्वास किया था। जिस तरह मसीह की मृत्यु का निश्चित परिणाम उसका पुनरुत्थान था, उसी तरह पाप की शक्ति के लिए मसीही के मरने का निश्चित परिणाम एक नया, धर्मी और पवित्र जीवन है! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान कुछ मसीहियों की धार्मिकता(धर्मी ठहराये जाने) और पवित्रता(पवित्रीकरण) का प्रतिपादन करता है! मसीही लोग मसीह की मृत्यु में हिस्सा इसलिए लेते हैं ताकि वे मसीह के पुनर्जीवित जीवन में साझा कर सकें। उनकी निर्णायक आध्यात्मिक मृत्यु और मसीह के साथ पुनरुत्थान के द्वारा, मसीही लोग चाहते हैं कि वे प्रभु के द्वारा दिए गए पुनर्जीवित जीवन *को जिएं* , वे जी *सकते हैं* और वे *जीएंगें* (रोमियों 6:8-11)! इसलिए, मसीहियों को केवल अपने आप को दास (रोमियों 6:13) के रूप में ही प्रभु को अर्पित नहीं करना *चाहिए,* बल्कि उनमें प्रभु की इच्छा (रोमियों 6:16) का पालन भी करना *चाह होनी चाहिए, वे* कर *सकते हैं* और वे *करेगें!* मसीही न केवल पालन करने के लिए बाध्य हैं, बल्कि वे अभी भी पूरी तरह से पवित्र प्रकृति के प्रतिरोध के बावजूद पालन करने के लिए बने हैं। वे अपनी शक्ति से आज्ञा नहीं मान सकते, लेकिन फिलिप्पियों 2:13 कहता हैः "क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है (रोमियों 8:30; फिलिप्पियों 1:6; 1पतरस 1:1-2)। इसलिए मसीहियों को यह आश्वासन है कि उनके पापी स्वभाव का भविष्य में उन पर कोई प्रभुत्व या नियंत्रण नहीं होगा, न तो अभी और न ही भविष्य में कभी! उनकी आत्मिक मृत्यु और मसीह के साथ पुनरुत्थान के द्वारा उन्हें परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान किया गया है। सुनिश्चित जानें कि वे जो करना चाहते हैं उसे पूरा कर सकते हैं! विजय निश्चित है (रोमियों 8:31,37)। पाप के खिलाफ संघर्ष निराशाजनक नहीं है, क्योंकि पापी स्वभाव की शक्ति प्रभावी रूप से (पर्याप्त रूप से) टूट गई है। पवित्रता की विजय मसीह के पूर्ण उद्धार कार्य द्वारा सुरक्षित की गई है (यूहन्ना19:30)। यह वास्तव में अच्छी खबर है! यह सुसमाचार है!

6:17

***प्रश्न 2.* सिद्धांत (शिक्षण) के रूप (प्रतिरूप, उदाहरण) का पूरी तरह से पालन करने का क्या अर्थ है, जिसे मसीहियों को सौंपा गया था।?**

ध्यान दें।

(1) शिक्षा का यह रूप क्या है?

"शिक्षा का रूप" (ग्रीकः ट्यूपोस डिडाचेस) "मसीही शिक्षा का सीखना या मानक" है (इसके विषय और इसकी विधि दृष्टिकोण के संबंध में), जिसका उपयोग सभी प्रेरितों द्वारा किया गया था और इसे नए नियम में दर्ज किया गया था। यह मसीही सिद्धांतों को सिखाने का सही और निश्चित स्वरूप है (2तीमुथियुस 1:13)। यह विशेष रूप से रोमियों की पुस्तक में चित्रित किया गया है और प्रेरित पतरस के लिए भी जाना जाता है(2पतरस 3:12,14-16)। यह "सही और निश्चित स्वरुप या मसीही सिद्धांतों को सिखाने का प्रारूप" मसीहियों की सोच (सिद्धांत) और (व्यवहार) को नियन्त्रित करता है। उदाहरण के लिए यह, धर्मी ठहराये जाने और पवित्रीकरण की शिक्षा का एकमात्र सही तरीका है। यह मसीहियों के विश्वास और व्यवहार का संपूर्ण नियम है, अर्थात, सभी वे सिद्धांत जो दुनिया के सभी मसीहियों को विश्वास करना चाहिए और सभी मसीहियों अभ्यास करना चाहिए और विश्व के सभी मसीहों को पालन करना चाहिए।

प्रेरितों के काम 20:17-35 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं कि यह परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को बिना किसी हिचकिचाहट के गवाही देना और "परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा" की घोषणा करना था।

उन्होंने उदाहरण के लिए सिखाया कि यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, पश्चाताप करने की आवश्यकता और यीशु मसीह में विश्वास और परमेश्वर के राज्य से संबंधित चीजें, जैसे यीशु मसीह ने अपने सभी दृष्टांतों में की थी।

उदाहरण के लिए, उन्होंने सिखाया कि एक कलीसिया (मण्डली):

- प्राचीनों की एक परिषद के नेतृत्व में होनी चाहिए
- प्राचीनों को एक-दूसरे को देखना चाहिए
- प्राचीनों को मण्डली की देखरेख करनेवाले बिशप होने चाहिए
- विशेष रूप से झूठे शिक्षकों से बाइबल की सच्चाई को मोड़ने से बचने के लिए
- प्राचीनों को मण्डली का चरवाहा(पासबान) होना चाहिए
- विशेष रूप से कमजोर और जरूरतमंदों की देखभाल करने के लिए।

पौलुस ने उद्धार पाने का (धर्मी ठहराये जाने और शुद्धिकरण) का एकमात्र सही तरीका भी सिखाया (रोमियों 6:17)। मसीही आज "मसीही सिद्धांत या व्यवहार के रूप या स्वरुप" को सम्भवतः नजरअंदाज करने, बदलने या जोड़ने का काम नहीं कर सकते। (1कुरिन्थियों 4:6; 2कुरिन्थियों 4:2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)!

(2) मसीहियों को शिक्षण के इस रूप के अधीन किया जाता है।

पौलुस यह नहीं कहता है कि शिक्षा का यह सही और निश्चित रूप मसीहियों को सौंपा गया था, ताकि वे जैसा चाहे उस तरीके से इसकी व्याख्या और इसका पालन कर सकें। इसके विपरीत, इतिहास के सभी मसीहियों को सिद्धांत और जीवन (शिक्षा और अभ्यास) के इस सही और निश्चित रूप को सौंपा गया है! परमेश्वर ने एक पवित्र तरीके से विश्व के सभी मसीहियों और मनुष्यों के इतिहास में और बाइबल में बताए गए विश्वास और व्यवहार के पूरे नियम को उजागर किया। इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही लोग विश्वास करें और उसके उद्देश्य को पूरा करें। यह किसी के अधीन नहीं है और समय, परिस्थितियों या लोगों की अपनी व्याख्या पर निर्भर नहीं है। बाइबल की विषय वस्तु का आविष्कार या उसका तैयार किया जाना लोगों द्वारा नहीं किया गया है, बल्कि परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है (1कुरिन्थियों 2:9-10)। मसीही सिद्धांत और व्यवहार की बात परमेश्वर द्वारा तय कि गयी थी न की किसी कलीसिया, परिषद या अगुवों द्वारा (उदाहरण के लिए, पोप)! एक संप्रभु तरीके से परमेश्वर ने मसीहियों को आज्ञा दी है कि उन्हें क्या विश्वास करना है और उन्हें कैसे जीना है। मसीही विश्वास करने और अभ्यास करने के लिए कुछ चीजों का चुनाव करके बाकि के निर्देशों की उपेक्षा नहीं कर सकते। मसीही लोग एक संप्रभु तरीके से "परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा (योजना)" के अधीन हैं।

(3) मसीही सम्पूर्ण मन से इस शिक्षा को मानते हैं।

मसीहियों को निष्क्रिय रूप से एक स्वामी की अधीनता से दूसरे की अधीनता में स्थानांतरित नहीं किया गया था। रोमियों 6:16-17 के अनुसार, परमेश्वर ने एक संप्रभु तरीके से उनके अंदर पाप की शक्ति को तोड़ दिया, मसीहियों ने स्वेच्छा, ईमानदारी और खुशी से अपनी दासत्व को पाप के लिए त्याग दिया और खुद को परमेश्वर और परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए दे दिया है! इसका तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य यीशु मसीह को *उद्धारकर्ता* के रूप में ग्रहण करता है वह उसे *प्रभु या*

स्वामी के रूप में ग्रहण करता है! जो मनुष्य यीशु मसीह के पास धर्मी ठहराये जाने के लिए आता है वह शुद्धिकरण के लिए भी आता है! यीशु मसीह को अपनी धार्मिकता मानते हुए उसमें अपनी आस्था (विश्वास) रखने के आह्वान का पालन करना, और अपनी धार्मिकता के रूप में, उसकी संपूर्ण इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता को प्रगट करता है (प्रेरितों. 20:27)! और जैसा कि बाइबल में बताया गया है परमेश्वर के प्रकट शैक्षिक सिद्धांत और अभ्यास के सही और निश्चित रूप हमारे सामने प्रगट होते हैं! मसीही सिद्धांत के इस सही और निश्चित रूप को समझने के लिए, मसीहियों को अधिकाई से बाइबल अध्ययन करना चाहिए और अपनी कलीसियाओं के अंदर बाइबल की कुछ यहां वहां बिखरी आयतों पर आधारित कलीसियाई सिद्धान्तों और विश्वास का अंगीकर करने के बजाय, बाइबल की सभी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

6:19

प्रश्न 3. **मसीही लोग व्यवहारिक तौर पर अपनी देह के अंगों को किस प्रकार धार्मिकता की सेवा करने के लिए सौंप सकते हैं?**

ध्यान दें। पुराना और नया नियम दोनों ही पाप के खिलाफ लड़ाई में हमारी देह के अंगों और अन्य मानवीय चीजों को सौंपने के महत्व पर ज़ोर डालते हैं। आपकी देह के अंगों का सकारात्मक रूप में सौंपा जाना निम्न तरीके से होता है।

- नीतिवचन 4:23। सबसे अधिक अपने *मन* की रक्षा करें।
- नीतिवचन 4:26-27। केवल उन्हीं मार्गों का चुनाव करें जो दृढ़ हो और बुराई का मार्ग न हो।
- नीतिवचन 15:30। हमेशा अपना *चेहरे* को हंसमुख बनाये रखें जिससे लोगों को उससे खुशी प्राप्त हो सकें।
- नीतिवचन 19:20। सलाह सुनने और निर्देश स्वीकार करने के लिए अपने *कानों* का उपयोग करें।
- नीतिवचन 24:16। आप चाहे सात बार भी गिर जाएं, लेकिन हमेशा अपने *पैरों* का उपयोग दुबारा उठने के लिए करें।
- नीतिवचन 24:27। अपनी उच्च प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए अपने *हाथों* का उपयोग करें।
- नीतिवचन 24:32। अपनी *आंखों* का उपयोग निरीक्षण करने और सबक सीखने के लिए करें।
- नीतिवचन 25:15। अपने *मुंह* का उपयोग धैर्यपूर्वक और कोमलता से बोलने के लिए करें, जो बहुत प्रेरक है।
- फिलिप्पियों4:8। अपने *दिमाग* का उपयोग जो भी सच, नेक, सही, शुद्ध, प्यारा, प्रशंसनीय, उत्कृष्ट और प्रशंसनीय है, उसके बारे में सोचने के लिए करें।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन–से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक–दूसरे के साथ विचार–मंथन करें और रोमियों 6:12–23 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग–अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

6:12. यीशु मसीह के आधिपत्य को प्रस्तुत करने के लिए एक प्रतिबद्धता बनाएं और अब अपने नश्वर शरीर में अपने पापी स्वभाव को राज्य करने की अनुमति न दें। अब अपने पापी स्वभाव की बुरी इच्छाओं का पालन न करें।

6:13,19. अपने शरीर के अंगों (अपने मन, हृदय, आंख, कान, जीभ, हाथ, पाँव, आदि) को ऐसे उपकरणों के रूप में पेश करने की प्रतिज्ञा करें जो परमेश्वर की दृष्टि में सही और पवित्र हैं।

6:14. "व्यवस्था के अधीन" जीवन न बिताने का निर्णय लें, अर्थात, अपने आप को बचाने के लिए या व्यवस्था के नियमों का पालन करने के लिए अपनी शक्ति में प्रयास करना, उदाहरण के लिए, किसी विशेष दिन पर आराधनालय, कलीसिया या मस्जिद में जाना, धार्मिक परंपराओं का पालन करना (जैसे अनुष्ठान प्रार्थना, उपवास और पैसे देने की तरह) और धार्मिक वस्त्र पहनना जो किसी व्यक्ति को दूसरे से अलग करते हैं, या विशेष धार्मिक त्यौहार मनाना, और भोजन संबंधी धार्मिक नियमों का पालन करने पर मानते हैं कि ऐसा करने से वे अपने परिवार के लोगों या दूसरों से ऐसे काम करवाने के द्वारा अपने "परमेश्वर" को प्रसन्न करते हैं। बल्कि आप इसके बजाय आप "अनुग्रह के अधीन" जीना शुरू करें, अर्थात, इस तथ्य पर निर्भर करना कि आप पहले से ही यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बचाये गए हैं। परमेश्वर ने आपको पहले से ही धार्मिकता का राज्य दिया है, अर्थात, उसने आपको पहले से ही धर्मी घोषित कर दिया है और इसलिए आपको पूरी तरह से धर्मी मानता है! और परमेश्वर ने आपको पहले से ही पवित्र ठहरा दिया है, अर्थात, उसने आपको पाप का विरोध करने और उसे न मानने की क्षमता दी है। परमेश्वर के आत्मिक बालक के रूप में, आप पहले से ही परमेश्वर के सबसे अनुकूल रिश्ते में खड़े हैं। परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लें और नए जीवन को जीने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का लगातार उपयोग करें, अर्थात, अपने शरीर के अंगों को परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता के साधन के रूप में पेश करें।

6:16. यह महसूस करें कि वह व्यक्ति जो अपने पापी स्वभाव की बुरी इच्छाओं का पालन करने के लिए खुद को अपने पापी स्वभाव के अधीन करता है, वह अभी भी अपने पापी स्वभाव का दास है। पापी स्वभाव का पालन करना मृत्यु की ओर ले जाता है (रोमियों 6:23अ)।

6:17. "सिखाने के प्रारूप" का पालन करें, जिसे सभी मसीहियों को सौंपा गया है। जिसका अर्थ है कि आप, मसीही सिद्धांतों की शिक्षा देने के सही और निश्चित स्वरुप को जानें और मानें, जो मसीहियों की सोच और व्यवहार को बदल देते हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों अध्याय 6 हमें धर्मी ठहराये जाने और शुद्धिकरण का एकमात्र सही तरीका सिखाता है।

2. रोमियों 6:12-23 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैंने अपना जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए नया, धार्मिक और पवित्र जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध किया है।

मैं सिद्धांतों के मसीह शिक्षण के सही और निश्चित रूप को सीखने का अधिकाई से प्रयास करना चाहता हूं। मुझे अहसास है कि रोमियों की पुस्तक, परमेश्वर की इच्छा के शिक्षण के सही और निश्चित रूप का बाइबल में सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है। इसीलिए मैं अपने लिए रोमियों की पुस्तक का अध्ययन करना जारी रखूंगा और हर जगह अन्य मसीहियों को भी रोमियों की पुस्तक पढ़ाता रहूंगा।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 6:12-23 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 6:12-23 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 84,90,91 और 92** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. स्मरण करना। (1) **परमेश्वर अतुलनीय हैः यशायाह 40:25-26।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 15:14 में निहित **"अंधे की अगुवाई करनेवाले" का दृष्टांत** और मत्ती 7:24-27 में **"बुद्धिमान और मूर्ख घर बनाने वाले" के दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

राज्य परिशिष्ट 4

(यीशु मसीह के दृष्टान्त)
सकेत फाटक और बड़े भोज का दृष्टांत

सकेत फाटक का दृष्टांत मत्ती 7:13-14
और लूका 14:15-24 में बड़े भोज का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त के विषय में है।

क. सकेत फाटक

पढ़ें। मत्ती 7:13-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत की कहानी अलंकारिक भाषा में बताई गई है और दृष्टांत का आध्यात्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें।

कहानी को एक प्रोत्साहन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रोत्साहन संसार के सभी लोगों के लिए है। उन्हें प्रोत्साहित किया गया है कि सकेत फाटक से प्रवेश और संकरे मार्ग का अनुसरण करें, और चौड़े फाटक और सरल मार्ग का अनुसरण न करें। संकरा मार्ग और चौड़ा मार्ग दोनों की मंजिल निश्चित है। यह जीवन की वास्तविकता है।

सकेत फाटक। यह चक्रद्वार की याद दिलाता है, जो एक समय में एक ही व्यक्ति को स्वीकार करता है।

संकरा मार्ग। यह दो ऊँची चट्टानों के बीच एक कठिन मार्ग से मिलता-जुलता है, जो यात्रियों को दोनों ओर से घेरता है।

चौड़ा फाटक। यह इतना चौड़ा है कि एक ही समय में अपने सभी समान के साथ लोगों की भीड़ इसमें प्रवेश कर सकती है। यह ऐसा है कि मानों इसके ऊपर एक चिन्ह् लिखा है कि, "जितने लोग संभव हों सबका स्वागत है!"

सरल मार्ग। यह एक चौड़े और सरल मार्ग के समान दिखाई देता है जिसमें कई यात्री यात्रा कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों इस मार्ग के साथ यह चिन्ह् है जो कहता है, "जहां आप चाहें यात्रा करें।" और जितनी जल्दी हो सके यात्रा करें।"

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समायोजन दृष्टांत को बताने के अवसर या दृष्टांत को बताने के समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती अध्याय 5–7 में पाया जाता है।
पहाड़ी उपदेश में यीशु ने *परमेश्वर के राज्य के नागरिकों,* उनकी आशीषों और संसार के साथ उनके संबंधों का वर्णन किया (मत्ती 5:1–16) और उस धार्मिकता का जो राजा मसीह यीशु, एक और उन्हें प्रदान करते हैं और दूसरी और उनसे उसकी मांग करते हैं (मत्ती 5:17–7:12)। अंत में वह उन सभी लोगों से कहते हैं जिन्होंने उनका संदेश उस समय या बाद में सुना, कि परमेश्वर के राज्य में सकेत फाटक से प्रवेश करें (मत्ती 7:13–14)। यदि वे पहले ही ऐसा कर चुके हैं, तो वे लागातार उस मार्ग पर बने रहें जिस पर फाटक उन्हें स्वीकार करता है। वह विशेष रूप से उन्हें झूठे भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं के विरूद्ध चेतावनी देते हैं और अंत में वह उन दोनों मंजिलों में फर्क बताते हैं जिन तक वे दो मार्ग पहुँचाते हैं (मत्ती 7:15–27)।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 7:13–14 में निहित है।
इसमें प्रोत्साहन का एक रूप है।

(3) इस दृष्टांत का स्पष्टीकरण या लागूकरण।
वास्तव में यह इसके प्रोत्साहन में निहित किया गया है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु ने दृष्टांत की कहानी में हर एक विवरण का इरादा कुछ विशेष आत्मिक महत्व समझाने के लिए नहीं किया था। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए हमें दृष्टांत की कहानी के हर एक विवरण को विशेष मनमाना आत्मिक श्रेय नहीं देना चाहिए।
चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

दो फाटक और दो मार्ग। ''फाटक'' जीवन में महत्वपूर्ण चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है और इसके बाद ''मार्ग'' इसका प्रतिनिधत्व करता है कि एक व्यक्ति अपने जीवन को किस प्रकार जीता है। इसलिए दोनों फाटक और मार्ग इस दृष्टांत में प्रासंगिक विवरण है।

दो प्रकार के यात्री। ''बहुत से'' और ''थोड़े'' कई बार बाइबल में पाए जाते हैं और यह निश्चित रूप से प्रासंगिक विवरण हैं।

दो मंजिलें। ''विनाश'' और ''जीवन'' भी अक्सर बाइबल में पाए जाते हैं और बहुत ही प्रांसगिक विवरण हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय। दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषयवस्तु) या तो स्पष्टीकरण या लागूकरण में पाया जाता है या फिर स्वयं कहानी में। जिस प्रकार यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया, हम जानते हैं कि हमें दृष्टांतों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। एक दृष्टांत में समान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ, स्थापित करने के लिए एक केंद्रीय बिंदु होता है। इसलिए हमें कहानी के हर एक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन इसके बजाय हमें एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 7:13-14 में सकेत फाटक का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''जीवन में किसी व्यक्ति के द्वारा किया गया प्रारंभिक चुनाव इस पृथ्वी पर उसके जीने के तरीके और साथ ही साथ उसकी अंतिम मंजिल को निर्धारित करता है!'' सकेत फाटक से प्रवेश करने और चौड़े फाटक से प्रवेश न करने के दो गुना प्रोत्साहन में दो अधीनस्थ तर्क शामिल हैं। पहले स्थान में संकरे और संकीर्ण की अपेक्षा चौड़े, सरल और पहुँच में आसान को पंसद करना स्वभाविक है। दूसरे स्थान में थोड़े लोगों के बजाय भीड़ का अनुसरण करना स्वभाविक है। इसलिए, सवधान रहें कि आप क्या चुनते हैंः आप किस फाटक से

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। कोई भी स्वयं की शर्त पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करता (स्वयं व्यवस्था को बनाए रखना, स्वयं के भले काम या स्वयं का धर्म)! परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त सकेत फाटक से प्रवेश करना है और इसके बाद संकरे मार्ग में चलना है। बाइबल से हम जानते हैं कि ''सकेत फाटक'' केवल यीशु मसीह में विश्वास और उनके पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य को ही संदर्भित कर सकता है (लूका 10:25-26; यूहन्ना 10:9; 14:6; प्रेरितों 4:12)। संदर्भ से हम जानते हैं कि ''संकरा मार्ग'' पहाड़ी उपदेश को संदर्भित करता है, अर्थात उसे राज्य की संस्कृति के अनुसार परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में रहना चाहिए (मत्ती अध्याय 5-7)। एक व्यक्ति का अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार होने के बाद उसे पहाड़ी उपदेश के अनुसार चलना चाहिए (मत्ती अध्याय 5-7)। परमेश्वर के राज्य के लोग सकेत फाटक से प्रवेश करते हैं और इसके बाद संकरे मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार यह यीशु मसीह में विश्वास के साथ शुरू होता है और यह सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है जो कि एक मनुष्य कभी ले सकता है।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता

है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें। ***खोजें और चर्चा करें।*** इसमें से प्रत्येक लेखांश इस दृष्टांत के साथ कैसे तुलना करता है?

(1) कौन सा पहले हैः मार्ग या फाटक?

पढ़ें लूका 13:23-30

क्या ये दो मार्ग अंत में दो फाटकों तक ले जाते हैं? या फिर ये दो फाटक जीवन में दो अलग मार्गों में ले जाते हैं? क्या एक व्यक्ति दोनों में एक फाटक में प्रवेश करने के लिए किसी एक मार्ग का चुनाव करता है? या फिर वह किसी एक फाटक में प्रवेश करता है कि वह एक मार्ग को स्वीकार करे? यह प्रस्तुतिकरण कि मार्ग पहले आते हैं और फाटक बाद में, मसीही और *मसीही कलाकारों* के बीच काफी लोकप्रिय है।

कुछ मसीही लूका 13:23-30 से अपील करते हैं यह साबित करने के लिए कि मार्ग पहले आता है और फाटक तक ले जाता है। यीशु कहते है, ''सकेत द्वारा से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे।'' हालाँकि, लूका 13:23-30 की शब्दावली और संदर्भ निश्चित रूप से मत्ती 7:13-14 की शब्दवली और संदर्भ से अलग है। मत्ती 7 में वह ''एक फाटक'' (यूनानीः पूले) और ''एक मार्ग'' (यूनानीः होदोस), की बात करते हैं, जबकि लूका 13 में वह किसी की भी बात नहीं करते, लेकिन केवल ''एक द्वार'' (यूनानीः थुरा)। मत्ती 7 में यीशु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने और वर्तमान समय में पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में जीवन की बात करते हैं। हालाँकि, लूका 13:23-30, में, वे यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक दृढ़ता और परमेश्वर के राज्य में अंतिम प्रवेश (अंत का समय) की बात करते हैं (मत्ती 25:10)।

मत्ती 7 में यीशु ने दोनों मार्गों का उल्लेख करने से *पहले* दोनों फाटकों का उल्लेख किया है। विषय वाक्य मार्ग और फाटक के बीच घनिष्ठ संबंध पर जोर देता है। लेकिन यह ''फाटक या मार्ग'' नहीं कहता, जैसा कि इनका क्रम प्रतिवर्ती है। विषय वाक्य स्पष्ट रूप से कहता है ''फाटक *और* मार्ग'', जो दर्शा रहा है कि <u>फाटक मार्ग से *पहले* आता है!</u>

मत्ती 7 में, फाटक में प्रवेश करने के द्वारा यीशु मृत्यु या अपने दूसरे आगमन के बारे में नहीं सोच रहे, लेकिन उस महत्वपूर्ण चुनाव के बारे में जो कि एक व्यक्ति अपने जीवन में इसी समय कर सकता है। एक व्यक्ति का आरंभिक चुनाव उसके पृथ्वी पर जीवन जीने के तरीके और साथ ही साथ उसकी अंतिम मंजिल को निर्धारित करेगा! ''फाटक'' जीवन में आरंभिक चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है और ''मार्ग'' यह चुनाव करने के बाद व्यक्ति के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) अंततः कितने लोग उद्धार पाएंगे?

पढ़ें मत्ती 22:14; रोमियों 9:27।

यीशु कहते हैं, ''बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए *थोड़े* हैं'' (मत्ती 22:14)। पौलुस कहता है, ''चाहे इस्त्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो, <u>तौभी उनमें से *थोड़े* ही बचेंगे</u>'' (रोमियों 9:27)। बाइबल में अन्य लेखांश यह स्पष्ट करते हैं कि बहुत से लोग इस जीवन में गलत

प्रारंभिक चुनाव करते हैं। वे चौड़े फाटक और सरल मार्ग का चुनाव करते हैं, यह एहसास होने से पहले कि यह उन्हें उनके विनाश की ओर ले जाता है।

फिर भी, बाइबल यह स्पष्ट करती है कि ''थोड़े'' लोग जो अंततः उद्धार पाएंगे (धर्मी ठहराए जाएंगे) उनकी संख्या बहुत होगी! उद्धार पाए हुए लोगों की *संख्या अनगिनत* होगी! ''इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है'' (प्रकाशितवाक्य 7:9)!

(3) इस संसार में दो जीवन-शैली क्या हैं?

पढ़ें यूहन्ना 8:34; यशायाह 57:20-21

बहुत से लोग सोचते हैं कि जो लोग चौड़े फाटक से प्रवेश और सरल मार्ग से यात्रा करते हैं उनके पास असीमित स्वतंत्रता और खुशी होती है, जबकि जो लोग सकेत फाटक से प्रवेश करते और संर्कीण मार्ग से यात्रा करते हैं, जिसमें वे कई कानूनों और व्यवस्था से प्रतिबंधित हैं, बहुत उबाऊ होगा और उन्हें बहुत दुःखी करेगा!

ऐसा सोचने वाले लोग केवल स्वयं को धोखा देते हैं। वास्तव में उनकी तथाकथित स्वतंत्रता और खुशी बहुत ही सतही है। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि जो लोग पाप में जीवन यापन करते हैं वे ''पाप के दास'' हैं! ''दुष्ट तो लहराते हुए समुद्र के समान हैं जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। दुष्टों के लिए शांति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यही वचन है'' (यशायाह 57:20-21)। सरल मार्ग से यात्रा करने वाले लोग वास्तव में जंजीरों में जकड़े कैदियों के समान हैं जो दूसरों के लिए गुलामी का काम करते हैं।

यद्यपि सकेत फाटक से प्रवेश करना और संकरे मार्ग से यात्रा करने में स्वयं का त्याग करना, कठिनाई और संघर्ष, दर्द और कष्ट हैं, विशेषकर क्योंकि पापमय स्वभाव पर अभी पूर्णतः विजय प्राप्त नहीं कि गई है, भजन 119:165 सिखाता है, ''तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शांति होती है (बाइबल में परमेश्वर का प्रकाशन); और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती'' (1पतरस 1:8-9)।

थोड़े लोग जो सकेत फाटक से प्रवेश करते हैं वे ''चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते, गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते'' (2कुरिन्थियों 4:8-9)। वे ''भरमानेवालों जैसे मालूम होते हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; अनजानों के सदृश हैं, तौभी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं, और देखो जीवित हैं; मारखानेवालों के सदृश हैं, परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते; शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आंनद करते हैं; कंगालों के समान हैं, परन्तु बहुतों को धनवान बना देते हैं; ऐसे हैं जैसे उनके पास कुछ नहीं तौभी सब कुछ रखते हैं'' (2कुरिन्थियों 6:8-10)। उनका पल भर का हल्का सा क्लेश उनके लिए अनंत महिमा उत्पन्न करता जाता है जिसके सामने यह कठिनाईयाँ कुछ भी नहीं हैं (2कुरिन्थियों 4:17; रोमियों 8:18)!

सकेत फाटक से प्रवेश करने वाले थोड़े लोग, ''यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए सब कुछ छोड़ देते हैं''। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने मेरे और सुसमाचार के

लिए घर या भाई या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, (घरों, भाईयों, बहिनों, माताओं, बच्चों और खेतों को- पर सताव के साथ) और परलोक में अंनत जीवन'' (मरकुस 10:28-30)!

(4) इस संसार में जीवन के बाद दो मंजिलें कौन सी हैं?

पढ़ें मत्ती 3:12; 25:46; 2थिस्सलुनीकियों 1:8-9; प्रकाशितवाक्य 14:9-11

दो मंजिले या तो अनंत दंड या अनंत जीवन है। वे लोग जिन्होंने चौड़े फाटक से प्रवेश करने का चुनाव किया और सरल मार्ग में चले वे विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। ''विनाश'' (यूनानीः अपोलिया) का अर्थ ''सर्वनाश'' नहीं है, लेकिन इस अर्थ है ''अनंत नरकदंड और सजा'' है, मत्ती 25:46 के सामान (यूनानीः कोलासिस)। वे लोग जिन्होंने सकेत फाटक से प्रवेश करने का चुनाव किया और संकरे मार्ग में चले, वे जीवन के मार्ग पर हैं। स्वयं का इंकार करना वर्तमान समय में बहुतायत को और अनंतकाल में परमेश्वर के साथ जीवन को लाता है। ''जीवन'' (यूनानीः जोए) का तात्पर्य वर्तमान समय में परमेश्वर के साथ मसीह में उद्धार और संगति है, और भविष्य में मसीह के दूसरे आगमन के बाद नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में जीवन है। और इसमें परमेश्वर की सभी आशीर्षे हैं जो परमेश्वर के साथ संगति से प्राप्त होती हैं।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या बनना या करना सिखाया?

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्तें।

''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' करने का अर्थ है ''उद्धार पाना''। यीशु सिखाते हैं कि उद्धार पाना एक ओर तो बहुत आकर्षक है, वहीं दूसरी ओर बिल्कुल भी आसान नहीं है! प्रवेश द्वारा संकरा होना चाहिए और उसे ढूढ़ा जाना चाहिए! इसका मार्ग संकार है और संकीर्ण महसूस होता है। संकरा फाटक एक व्यक्ति के जीवन के आरंभिक चुनाव का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के दृष्टिकोण से यह ''प्रारंभिक रूपांतरण'' है और परमेश्वर के दृष्टिकोण से यह ''धर्मी ठहरना'' है। संकरा मार्ग यीशु मसीह पर विश्वास करने का चुनाव करने के बाद मसीही जीवन-शैली का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के दृष्टिकोण से इसे ''दैनिक रूपांतरण'' कहा जाता है, और परमेश्वर के दृष्टिकोण से इसे ''शुद्धिकरण'' कहा जाता है। इसी प्रकार चौड़ा फाटक ''रूपांतरित न होने की इच्छा'' का प्रतिनिधित्व करता है और सरल मार्ग ''आत्म-भोग के जीवन'' का प्रतिनिधित्व करता है।

सकेत फाटक जीवन की ओर ले जाने वाले मार्ग की शुरूआत में खड़ा है। और संकरा मार्ग जीवन के मार्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो ऊँची चट्टानों और गहरी घाटियों के बीच से होकर गुजरता है, जो हर तरफ एक दूसरे से टकराता है। सकेत फाटक से प्रवेश करने के लिए, एक व्यक्ति को स्वयं को बहुत सी चीजों से दूर रखने की आवश्यकता है, जैसे सांसारिक वस्तुओं की नाश कारने वाली अभिलाषाँए, क्षमा न करने वाली आत्मा, स्वार्थीपन और स्वयं की धार्मिकता (इब्रानियों 12:1)। एक व्यक्ति के सकेत फाटक से प्रवेश करने के बाद भी, उस व्यक्ति का पुराना स्वभाव, बुरे चरित्र और बुरी आदतों को दूर करने में बलावा करता है। इस पुराने स्वभाव पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त नहीं कि गई है इसलिए जीवन भर, शारीरिक मृत्यु तक, पुराने स्वभाव और नए स्वभाव के बीच एक कड़वा

संघर्ष जारी रहता है (रोमियों 7:14:25; गलातियों 5:17)। इसलिए सकेत फाटक ''स्वयं का इंकार, अपना क्रूस उठाना और यीशु के पीछे चलने का प्रतिनिधित्व करता है'' और इसलिए संकरा रास्ता ''लगातार स्वयं का इंकार, हर दिन अपना क्रूस उठाना और हर दिन यीशु का अनुसरण करने का प्रतिनिधित्व करता है'' (लूका 9:23)।

लेकिन पूर्ण विजय सुनिश्चित है, क्योंकि इस व्यक्ति ने सकेत फाटक को ढूढ़ लिया है और उससे प्रवेश किया है। उसने पापियों के मार्ग को धर्मियों के मार्ग से बदल लिया है (भजन 1)। सकेत फाटक से प्रवेश करने का सचेत निर्णय ''प्रारंभिक रूपांतरण और धर्मी ठहरने'' का प्रतिनिधित्व करता है और संकरे मार्ग से यात्रा करना ''प्रतिदिन आज्ञा पालन और शुद्धिकरण'' का प्रतिनिधित्व करता है।

(2) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का परिणाम।

पहाड़ी उपदेश सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना प्रतिकूल और अनुकूल दानों परिस्थितियों और परिणामों के साथ है। अनुकूल परिणाम यह है कि जो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं वे धन्य हैं: वे पृथ्वी के अधिकारी हैं, वे दया प्राप्त करते हैं, परमेश्वर को देखते हैं आदि। प्रतिकूल परिणाम यह हैं कि जो लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं वे साताए जाएँगे और बदनाम किये जाएँगे। उन पर कुछ दायित्वों का बोझ है: उन्हें एक ऐसी धार्मिकता का अभ्यास करना है जो फरीसियों की धार्मिता से बढ़कर है; उन्हें अपने शत्रुओं से प्रेम करना है और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करनी है; उन्हें पाखंड़ी नहीं होना चाहिए और विवेकशील होना चाहिए, आदि। इस प्रकार कि बातें *प्रतिकूल* हैं, क्योंकि यह लोगों की स्वभाविक प्रवृत्तियों से टकारती हैं जैसे आधा-अधूरापन, क्रोध करना, दूसरे लिंग का सम्मान करने में अनुशासन की कमी, बदला लेना आादि। (मत्ती 5)।

ख. बड़ा भोज

पढ़ें लूका 14:15-24

1. **दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।**

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

यह कहानी विवाह के भोज के दृष्टांत के समान दिखाई देती है, लेकिन उसके समानांतर नहीं है। यीशु ने अक्सर दृष्टांत कहे। कई बार उन्होंने एक ही दृष्टांत अलग-अलग परिस्थितियों के बारे में कहा, जैसे कि खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (मत्ती 18; लूका 15)। कई बार उन्होंने समान दृष्टांत अलग अलग परिस्थितियों के बारे में कहे, जैसे विवाह के भोज का दृष्टांत और बड़े भोज का दृष्टांत। विवाह का भोज एक राजा द्वारा विवाह के भवन में दिया गया और बड़ा भोज एक घर के स्वामी द्वारा उसके घर में दिया गया औपचारिक भोज था।

पहला निमंत्रण। वचन 16 दर्शाता है कि सब ने भोज का पहला निमंत्रण स्वीकार किया। इसमें किसी भी ऐसे व्यक्ति का उल्लेख नहीं है जिसने आने से इंकार किया हो।

दूसरा निमंत्रण। भोज कि शुरूआत से कुछ समय पहला मेजबान ने एक सेवक को आमंत्रित लोगों को बुलाने के लिए भेजा, क्योंकि भोज की सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकि थी। यह इस दूसरे निमंत्रण

के जवाब में था कि आमंत्रित मेहमान सभी प्रकार के कमजोर बहाने बनाने लगे। इन सभी लोगों ने आने का वादा किया था लेकिन अब अपने पहले वादे से पीछे हट गये। भोज के लिए जो तैयारी की गई थी, उसे देखते हुए इस तरह के वादे को तोड़ने को अक्षम्य अपराध माना जाता था। यह सबित हुआ कि आमंत्रित मेहमान निष्ठाहीन थे! उन्होंने ''हाँ'' कहा, जबकि उनका मतलब ''न'' था।

इसके अलावा, इनके बहाने उथले और दिखावटी थे। कोई खेत को बिना पहले देखे नहीं खरीदेगा! और यदि पहले खरीदा भी है, तो बाद में इसे देखने के लिए पर्याप्त समय रहा होगा। इसी प्रकार कोई भी बिना परखे महंगे बैलों को नहीं खरीदेगा! और कोई भी जिसका विवाह हुआ हो इस प्रकार के रमणीय भोज से दूर रहने के लिए बहाना नहीं बनाएगा चाहे वह फिर विवाह के पहले वर्ष के दौरान सभी सैन्य, नागरिक और धार्मिक कर्तव्यों से मुक्त हो गया हो (व्यवस्थाविवरण 24:5)!

तीसरा निमंत्रण। भोज को बंद नहीं किया गया। यह पहले से निर्धारित किये गये समय पर ही होने जा रहा था! इसलिए मेहमानों की कमी को पूरा करने के लिए, सेवक को बाहर भेजा जाता है कि वंचित लोगों को आमंत्रित करे। यहां तक कि वह उन्हें लाने का आदेश देता है, अर्थता, उन्हें हाथ पकड़ के *लाए* और भोज के भवन तक उनकी अगुवाई करे, क्योंकि उनमें से कुछ घायल, लंगड़े और अंधे थे।

अंत में, वह आदेश देता है कि उन्हें आने के लिए विवश किया जाए, अर्थात उन्हें प्यार से मानाने के लिए मजबूर करें। यह आवश्यक था क्योंकि कई मेहमान पूरी तरह से अयोग्य महसूस करते थे! इस प्रकार भोज का भवन पूर्णरूप से भर गया, जैसा कि मेजबान ने इरादा किया था।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 14:1-15 में पाया जाता है।

यीशु एक प्रमुख फरीसी के घर में भोजन कर रहे थे। उन्होंने यह सिखाया कि, ''जब तू भोज करे (रात्रि का भोजन या औपचारिक भोजन), तब अपने मित्रों या भाई या कुटुम्बियों या धनवान पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न हो कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा बदला पूरा हो जाए।

जब तू भोज करे तो कंगालों, टुण्डों, लगंड़ों और अन्धों को बुला। तब तू धन्य होगा, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, परन्तु तुझे ''धर्मियों के जी उठने पर'' इसका प्रतिफल मिलेगा (लूका 14:12-14)। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें कभी अपने मित्रों और परिवार के लोगों को आमंत्रित नहीं करना चाहिए। लेकिन इसका अर्थ यह है कि अपने समाझ में वंचित लोगों को निमंत्रित करना कहीं अधिक धन्य है।

उस प्रमुख फरीसी के घर में मेज पर बैठे मेहमानों में से एक ने कहा, ''धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाएगा'' (लूका 14:15)। तब यीशु ने उसे और वहाँ बैठे सभी लोगों को इंगित करने के लिए बड़े भोज का दृष्टांत कहा कि यह महत्वपूर्ण नहीं हैं कि तुम्हें आमंत्रण मिला या नहीं,

लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि क्या तुम उस आमंत्रण का प्रत्युत्तर देते हो! धन्य है वह जो आमंत्रण को स्वीकार करता है। जो इसे अस्वीकार करते हैं वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते!

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 14:16-24 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 14:24 में निहित है।

जिस किसी को भी निमत्रंण भेजा गया था और उसने अस्वीकार किया, वह कभी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। केवल वही परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे जिन्होंने निमंत्रण स्वीकार किया और उसका प्रत्युत्तर दिया।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें। आवश्यक या प्रासंगिक विवरण को संदर्भ और बाइबल में समानांतर लेखांश से निर्धारित किया जाना चाहिए, क्योंकि यीशु ने किसी भी विवरण की व्याख्या नहीं की।

बड़ा भोज। यह एक प्रासंगिक विवरण है। विवाह के भोज के समान, बड़ा भोज मसीह के दूसरे आगमन में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता का प्रतीक है (प्रकाशितवाक्य 19:7)। यह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर रहने के आनंद का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ सभी लोग मसीह में परमेश्वर के राज्य (शासन) को स्वीकार करेंगे। यह एक विशाल भोज के भवन में भोजन से भरी मेंजों पर सोफे पर बैठे मेहमानों के रूप में चित्रित किया गया है जो कि प्रकाश से भरा है। और मेजबान के साथ और एक दूसरे के साथ आनंद का वार्तालाप होता है। इस प्रतिनिधित्व के तत्वों को निम्न लेखाशों में पाया जा सकता हैः भजन 23:5; यशायाह 25:6; मत्ती 8:11-12; 22:1-14; 26:29; प्रकाशितवाक्य 3:20; 19:9।

सवाल यह है, "इन तत्वों की व्याख्या शाब्दिक रूप से किस हद तक और अंलकारिक रूप से किस हद तक की जानी चाहिए"? उत्तर यह है, कि प्रतीकवाद दृष्टांतों में प्रमुख है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि प्रतीक अवास्तविक है। "नया यरूशलेम और नई पृथ्वी और नया स्वर्ग" बहुत वास्तविक हैं! वास्तविकताएँ प्रतीकों के शाब्दिक अर्थ से कहीं अधिक ऊँची, समृद्ध और अधिक सुंदर हैं! उद्धार पाए हुओं की आशीषें और आनंद परमेश्वर के राज्य में बहुत वास्तविक हैं! लेकिन उन विवरणों के अर्थ के बारे में अटकलें लगाना बेकार है, जिन पर बाइबल स्वयं बहुत कम या कोई प्रकाश नहीं डालती।

निमंत्रण। सभी दृष्टांतों में यह आवश्यक है कि हम उस केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश को समझे जो यीशु मसीह सिखाते हैं। इस दृष्टांत में सवाल यह है, "क्या मैंने वास्तव में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का निमंत्रण स्वीकार किया है?" क्या मेरे जीवन से यह पता चलता है कि मैंने निमंत्रण को स्वीकार किया है और मैं उस धन्य अनुभव के अपने मार्ग पर हूँ, और यहाँ और अभी उस वास्वविकता का पूर्वानुभव ले रहा हूँ?" दृष्टांत का परिचय (वचन15) और निष्कर्ष (वचन 24) दोनों इस सवाल की ओर संकेत करते हैं! वास्तव में महत्वपूर्ण यह नहीं है कि आपको निमत्रंण मिला या नहीं बल्कि क्या आपने निमंत्रण का प्रत्युत्तर उस प्रकार दिया या नहीं जिस प्रकार परमेश्वर चाहते हैं और अपेक्षा करते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 14:15-24 में बड़े भोज का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश के लिए शर्त" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार के परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण को अस्वीकार करने का परिणाम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य के अंतिम प्रगटिकरण में आशीषों और आनंद से बाहर रखा जाना होगा।"

परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर की शर्तों पर प्रवेश करना परमेश्वर के राज्य के मूलभूत चरित्रगुणों में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करते हैं और उसका प्रत्युत्तर देतें हैं और जब उन्हें आमंत्रित किया जाता है तो वे आते हैं। वे उसका विरोध नहीं करते जब परमेश्वर का सेवक उनका हाथ पकड़ कर अंदर आने में उनकी अगुवाई करता है। वे परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण पर संदेह नहीं करते जब प्रेम का अनुनय बल उन्हें अंदर लाता है।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की तुलना दो पुत्रों के दृष्टांत, दृष्ट किरायेदारों और मत्ती 21-22 में विवाह के भोज के दृष्टांत से किस प्रकार की जा सकती है?
ध्यान दें। बड़े भोज का दृष्टांत, उन अन्य तीन दृष्टांतों के समान ही, यह सिखाता है कि जो लोग पश्चयाताप नहीं करते और बदलते नहीं, वे यीशु मसीह के दूसरे आगमन में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता में प्रवेश नहीं करेंगे।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?
ध्यान दें।

(1) परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त यह है कि परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करें अस्वीकार न करें।

स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र पुराने नियम की अवधि के दौरन परमेश्वर की वाचा के लोग थे, लेकिन बहुत से यहूदियों ने परमेश्वर के निमंत्रण को अस्वीकार किया। परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण फिर से दोहराया गया:

- पहले पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा
- अंत में मसीहा, यीशु मसीह के द्वारा
- और उनके प्रेरित।

इस कारण वे (स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र में अविश्वासी) कभी भी अंतिम बड़े भोज का स्वाद नहीं ले पाएंगे अर्थात, वे नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण में कभी

प्रवेश नहीं कर पाएंगे! वे नाश होंगे! ''उन आमंत्रित लोगों में से कोई मेरे भोज को न चखेगा'' (लूका 14:24)।

हाँलाकि जब स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र ने यीशु मसीह को अस्वीकार कर दिया था, परमेश्वर की योजना विफल या त्यागी नहीं गई!

- पुराने नियम की अवधि के दौरान, यहूदियों के बीच में (यशायाह 1:9; रोमियों 9:29) और अन्यजातियों के बीच में (यशायाह 56:3-8) वास्तविक विश्वासी रहे हैं।
- यीशु मसीह की पृथ्वी पर की सेवाकाई के दौरान यहूदियों में (उनके चेलें) और गैर-यहूदियों में (प्रेरितों 17:4; 1थिस्सलुनीकियों 1:6-10) वास्तविक विश्वासी रहे हैं।
- और यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक स्वभाविक इस्त्राएल का ''एक बचा हुआ भाग'' विश्वास से यीशु मसीह में आएगा और उद्धार पाएगा (1राजा 19:18; यशायाह 1:9; 10:22; मत्ती 22:14; लूका 5:31-32; 13:1-5; रोमियों 9:27; 11:5,11-24; मत्ती 24:34)।

(2) लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने का तरीका प्रेम और अनुनय है।

सेवकों को *केवल* वंचितों को भोज के भवन में *आमंत्रित नहीं* करना था, बल्कि *उनका हाथ पकड़ कर उन्हें* भोज के भवन में भी *ले जाना था।* उनमें से बहुत से अपंग होने के कारण चल नहीं सकते थे। लागूकरण यह है, कि परमेश्वर के सेवकों को संसार के वंचित और विकलांग लोगों को परमेश्वर के राज्य में लाने के लिए विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इसके बाद सेवक ने मार्ग और गलियों में यात्रा करने वाले लोगों को भोज के भवन में आने के लिए *विवश* किया। उलझन यह है कि बहुत से लोग प्रवेश करने में स्वयं को अयोग्य महसूस करते हैं। यह विशेषरूप से उन लोगों को संदर्भित करता है जो मूलरूप से आमंत्रित नहीं किये गये थे, अर्थात अन्यजातियाँ। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने न केवल अपने निमंत्रण को दोहराया, बल्कि वास्तव में गैर-यहूदी (अन्यजातियों) राष्ट्रों को इसमें शामिल करने के द्वारा इसे बढ़ाया जो बहुत महत्वपूर्ण है। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता पहले से ही जानते थे कि गैर-यहूदी राष्ट्रों को शामिल करने के द्वारा परमेश्वर का राज्य बढ़ाया जाएगा (उत्पत्ति 22:17-18; यशायाह 54:2-3; 56:3-8; 60:1-3; 65:1-3; भजन 72; दानिय्येल 2:34-35, 44-45)! पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता जो बात नहीं जानते थे वह यह थी, कि यह यीशु मसीह के विषय में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा होगा (नए नियम की अवधि के दौरान) और यह स्वभाविक इस्त्राएल राष्ट्र के साथ पूरी तरह से बराबरी पर होगा (इफिसियों 3:2-6)! यह यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर पूरा होना शुरू हुआ।

(3) इस दृष्टांत को सुनने या पढ़ने वाले लोगों से प्रत्युत्तर देने का आग्रह किया जाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश यह है कि किसी मनुष्य को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए निमंत्रण (सुसमाचार के प्रचार) का प्रत्युत्तर देना चाहिए और इसे स्वीकार करना चाहिए। इसलिए, यदि आपने अभी तब प्रत्युत्तर नहीं दिया, अभी यीशु मसीह को स्वीकार करें!

ग. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के विषय में इस दृष्टांत कि मुख्य शिक्षा और पाठ का सारांश बताएँ।

सिखाएँ। परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की शर्त किसी व्यक्ति (या धर्म) द्वारा नहीं, बल्कि केवल बाइबल के परमेश्वर के द्वारा निर्धारित की जाती है।

(1) सकेत फाटक का दृष्टांत (मत्ती 7:13-14)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की शर्त सकेत फाटक से प्रवेश करना और संकरे मार्ग से यात्रा करना है। *सकेत फाटक* परिवर्तित होने और यीशु मसीह में विश्वास करने के प्रारंभिक निर्णय का प्रतिनिधित्व करता है। संकीर्ण मार्ग यीशु मसीह में भरोसे और आज्ञापालन और पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्धिकरण के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि पहाड़ी उपदेश में वर्णित है।

(2) विवाह के भोज का दृष्टांत (मत्ती 22:1-14)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के विषय में परमेश्वर की शर्त यीशु मसीह की धार्मिकता का वस्त्र पहनना है, जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं और परमेश्वर ही देंगे। विवाह का वस्त्र यीशु मसीह की धार्मिकता को दर्शाता है जो परमेश्वर प्रदान करते हैं और अनुग्रह के द्वारा हर उस व्यक्ति को प्रदान करते हैं, जो यीशु मसीह में विश्वास करता है।

(3) बड़े भोज का दृष्टांत (लूका 14:15-24)।

अपने राज्य में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर की शर्त परमेश्वर के निमंत्रण को स्वीकार करना है, इसे अस्वीकार करना नहीं। परमेश्वर के अनुग्रह और अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के निमंत्रण को अस्वीकार करने का परिणाम, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता की आशीषों और आनंद से बाहर निकाला जाना होगा।

परिशिष्ट 5

(यीशु मसीह के दृष्टान्त)
1. बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत
2. मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत
और 3. जाल का दृष्टांत

मत्ती 11:16-19 में बाजार में बैठे हुए बालकों का दृष्टांत,
मत्ती 16:1-4 में मौसम के चिन्ह् का दृष्टांत
और मत्ती 13:47-50 में जाल का दृष्टांत,
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी के विषय में दृष्टांत हैं।

क. बाजार में बैठे हुए बालक

पढ़ें मत्ती 11:16-19 और लूका 7:31-32।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टांत अलंकारिक शब्दों में बताया गया है और इसका आत्मिक अर्थ इसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी और पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

बाजार। उन दिनों में, जिस दिन बाजारों में किसी भी व्यवसाय का लेन-देन नहीं होता है, विशेषरूप से बालक खेलने के लिए खुले स्थान में एकत्र होते हैं। यह सारे संसार भर में बहुत आम बात है।

खेल और झगड़ा। इस कहानी में बालकों के एक समूह को बिना सफल हुए खेलने की कोशिश करते हुए चित्रित किया गया है। हमेश कुछ ऐसे बालक होते हैं जो किसी भी खेल को खेलने के विषय में जो सुझाव दिए जाते हैं, उसका विरोध करते हैं! उदाहरण के लिए, जब कुछ बालक एक आनंद दयाक खेल को खेलने का सुझाव देते हैं, जैसे कि बाँसली बजाना या नाचना, तब बालकों का एक दूसरा समूह इस विचार का विरोध करता है। जब वे दूसरा सुझाव देते हैं कि हम कोई दुःखी खेल खेलते हैं, जैसे कि कोई शोक गीत गाना या रोना, फिर से दूसरा समूह इसका विरोध करता है। इसलिए बालक एक दूसरे के प्रति शिकायत करते और झगड़ा करते हैं, और सहयोग की कमी के करण एक दूसरे पर दोष लगाते हैं।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की ''कहानी'' के संदर्भ में दृष्टांत का ''समायोजन'' और ''स्पष्टीकरण या लागूकरण'' शामिल हो सकता है। दृष्टांत का समायोजन दृष्टांत को बताने के *अवसर* या दृष्टांत को बताने के

समय की *परिस्थितियों* के विषय में बता सकता है। समायोजन आमतौर पर दृष्टांत की काहनी से *पहले* और स्पष्टीकरण या लागूकरण आमतौर पर दृष्टांत की काहनी के *बाद* पाया जाता है।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 11:1-15 या लूका 7:24-30 में निहित है।

यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवाकाई के महत्व के बारे में बात की, और इस्त्राएल के लोगों के द्वारा यूहन्ना को प्राप्त प्रतिक्रिया की कमी की ओर संकेत किया। शुरुआत में साधारण लोगों ने यूहन्ना को उत्साह के साथ स्वीकार किया (मत्ती 3:5-7)। यूहन्ना ने प्रचार किया कि लोगों को अपने बुरे मार्ग से फिरना चाहिए और अपने वास्तविक पश्चयाताप को सिद्ध करने के लिए अच्छे फल लाने चाहिए। आम तौर पर, बहुत से साधारण लोग हर जगह से आकर परमेश्वर की इस धार्मिक आवश्यकता के प्रति सहमत हुए। उन्होंने परमेश्वर की इस धार्मिक आवश्यकता के प्रति अपनी सहमती परमेश्वर की ओर फिर कर और यूहन्ना के अधीन पानी के बपतिस्में को लेकर दिखायी। लेकिन बड़ी संख्या में फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने अपने सभी अनुयायियों सहित, परमेश्वर के उद्धार के उद्देश को अपने विषय में अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा नहीं लेना चाहते थे (लूका 7:29-30)। यीशु ने यह दृष्टांत इसलिए कहा क्योंकि, लोग बहुत चचंल और अस्थिर थे।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 11:16-17 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 11:18-19 और लूका 7:33-35 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 11:16-19 और लूका 7:31-32 में बाजार में बैठे बालकों का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "एक व्यक्ति को बचकानी हरकतें छोड़ कर अपने शब्दों और कार्यों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।"

जबकि मत्ती 18:1-5 में यीशु लोगों को "बलकों के समान" बनने की सलाह देते हैं वहीं मत्ती 11:16-19 में वह लोगों को उनके "बचकाने व्यवहार" के लिए दोषी ठहराते हैं। एक असहिष्णु

रवैया और लगातार आलोचना, बचकान और पूरी तरह से मूर्खतापूण है, जब वे परमेश्वर (यीशु) की बुद्धिमानी की शिक्षा को अस्वीकार करते हैं।
समाज के सामान्य लोगों (यहाँ तक कि बुरे लोगों) ने भी पहचाना कि परमेश्वर का मार्ग (उनके लिए क्षमा जो पश्चयाताप करते और उद्धारकर्ता में विश्वास करते हैं) सही है और यूहन्ना के द्वारा पानी का बतिस्मा लिया। लेकिन धार्मिक यहूदी अगुवों ने परमेश्वर के उद्देश और योजना (पश्चयाताप और मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार) को अपने विषय में अस्वीकार कर दिया और इसलिए यूहन्ना द्वारा पानी का बपतिस्मान नहीं लिया (लूका 7:29-30)।
व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों ने बचकानी हरकतों को छोड़ कर, पश्चयाताप, विश्वास और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की व्यक्तिगत जिम्मेदारी को लिया है (मरकुस 1:15)।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

परिचय। कुछ दृष्टांत एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सत्य, बाइबल के अन्य लेखांशों में सिखाए गए सत्य के समानांतर या विपरीत हो सकता है। सबसे महत्वपूर्ण विपरीत संदर्भ को खोजने की कोशिश करें जिससे दृष्टांत की व्याख्या करने में हमारी सहायता हो। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टांत की व्याख्या की जाँच करें।
पढ़ें 1कुरिन्थियों 3:1-4; इब्रानियों 5:11 से 6:3
खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?
ध्यान दें। दोनों लेखांश अपरिपक्व व्यवहार के परिणामों के विषय में सिखाते हैं। बचकाने व्यवहार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- धार्मिक विश्वास और कलीसिया की परंपराओं के विषय में झगड़ना जो मानवीय राय पर आधारित हैं और परमेश्वर के शुद्ध वचन के अनुसार नहीं हैं।
- मसीह की देह में एकजुट रहने के बजाय विभिन्न संप्रदायों में विभाजित होना।
- इस संसार के लोगों के समान व्यवहार करना।
- स्वंय को पोषित करना सीखने के बजाय, अपने आत्मिक भोजन के लिए आत्मिक अगुवों (पासबानों) पर निर्भर रहना।
- सही को गलत से, भले को बुरे से, सत्य को असत्य से अलग करने के योग्य न होना।

बाइबल के इन दो लेखांशो में, कुरिन्थियों के मसीही और इब्रानियों के मसीहियों ने अभी भी अपने जीवनों, निर्णयों, चुनावों, आत्मिक उन्नति और व्यवहार की जिम्मेदारी नहीं ली थी!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या जानना और विश्वास करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?
ध्यान दें।

(1) गैरजिम्मेदार और असंगत व्यवहार की निंदा की गई है।

यीशु ने कहा कि उनकी आलोचना करने वाले फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक, बचकाने थे। वे गम्भीरता से विचार न करने वाले और गैरजिम्मेदार और असंगत रूप से अभिनय करने वाले थे। वे कभी सकारात्म नहीं रहे और कभी संतुष्ट नहीं हुए। पहले वे यूहन्ना के विषय में उत्साहित थे और उसकी तपस्या, निम्न जीवन स्तर और पश्चयाताप के आवाह्न में कोई दोष नहीं पाया।

लेकिन फिर उन्होंने यह कहते हुए उसकी आलोचना की कि वह कठोर था, उसका संदेश बहुत तीखा था, और उसमें दुष्टात्मा थी। उन्होंने कहा कि यूहन्ना बहुत *गैरमिलनसार* था, लेकिन यीशु पर *अधिक मिलनसार* होने का दोष लगाया, क्योंकि वे उन्हें ''पेटू और पियक्कड़, और पापियों और चुंगी लेने वालों का मित्र'' मानते थे (लूका 7:33-34)। यीशु ने कहा कि इस तरह की अनुचित और कड़वी आलोचना और असहिष्णुता कहीं नहीं मिलेगी, क्योंकि अंत में परमेश्वर की सच्चाई विजयी होगी!

(2) ज्ञान अपने कर्मों से सच्चा ठहराया गया है।

मत्ती शाब्दिक रूप से कहता है, ''ज्ञान अपने कर्मों से सच्चा ठहराया गया है'' (मत्ती 11:19) और लूका शाब्दिक रूप से कहता है, ''ज्ञान अपनी सब संतानों द्वारा सच्चा ठहराया गया है'' (लूका 7:35)। इन भावों का अर्थ एक ही है। दोनों भावों का एक ही अर्थ हैः ''किसी भी कार्य का ज्ञान (''उसका कार्य'') उसके द्वारा सही सिद्ध होता है जो वह लोगों (''अपनी संतानों'') के हृदयों और जीवन में पूरा करता है, जो अपने आप को अनुमति देते हैं कि उनकी अगुवाई इस प्रकार के ज्ञान द्वारा की जाए।'' मत्ती ''ज्ञान के कामों'' और लूका ''लोग जो अपने आप को इस ज्ञान द्वारा अगुवाई पाने की अनुमति देते हैं'' पर जोर देता है।

मत्ती कहता है कि यूहन्ना बपतिस्मादाता कि बुद्धि यह थी कि उसने रूपांतरण और पश्चयाताप करने के साथ फल लाने पर जोर दिया (मत्ती 3:2,8)। और यीशु की बुद्धि यह थी कि उन्होंने उद्धार की आशा (अपेक्षा) को अयोजित किया और जिन्होंने ने भी सुसमाचार सुना उन्हें चंगा कर रहे थे (मत्ती 11:4-6)। इन कार्यों के ज्ञान का परिणाम उन कार्यों में देखा जा सकता है जो लोगों के जीवन में हुए। यीशु और यूहन्ना के कार्य (सेवकाईयाँ) पूर्ण रूप से उसके द्वारा उचित ठहराए गए जो उन्होंने ''अपनी सभी संतानो'' के हृदयों और जीवनों में पूरा किया, अर्थात उन सभी के जिन्होंने अपने आप को अनुमति दी कि वे उस ज्ञान के द्वारा अगुवाई पाएं!

क्योंकि यहूदी धार्मिक अगुवे (फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक) एक दूसरे के साथ यहूदियों की व्यवस्था (और रब्बीयों द्वार निर्मित अन्य 613) (सब्त, उपवास, खतना, सार्वजनिक प्रार्थना, खाने के नियम, दशवांश इत्यादि।) को लेकर बाल कि खाल निकालने में व्यस्त थे, वे यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु के पापों से पश्चयाताप और जीवन के रूपांतरण के प्रचार के प्रति अनुत्तरदायी बने रहे। परिणामस्वरूप वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने में विफल रहे (वे उद्धार पाने में विफल रहे)।
लेकिन सामन्य लोग और यहाँ तक कि चुंगी लेने वाले ने भी यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु के प्रचार का प्रत्युत्त दिया, इसलिए वे बड़ी संख्या में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर रहे थे (लूका 7:29:30)।

ख. मौसम के लक्षण

पढ़ें मत्ती 16:1-4 और लूका 12:54-56।

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

कहानी काफी सामान्य है। हर जगह लोग आकाश को देखकर मौसम के बारे में अपनी राय देते हैः आज वर्षा होगी या फिर आज धूप निकलेगी। इस्त्राएल में फरीसी और सदूकी मौसम के लक्षणों की व्याख्या बहुत अच्छी तरह से करते थे। वे जानते थे कि जब शाम के समय आकाश लाल दिखाई देता है तो इसका अर्थ है कि बादल पश्चिम में समुद्र की ओर चले गए है, और अगले दिन मौसम अच्छा रहेगा। वे यह भी जानते थे कि जब भोर के समय आकाश काले बादलों के साथ लाल मिश्रित दिखाई देता था तो इसका अर्थ था कि बादल पश्चिम में समुद्र की ओर से वापस आ रहे हैं, और संभवतः उस दिन वर्षा होगी।

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 16:1 में पाया जाता है।

इस्त्राएल के धार्मिक और राजनीतिक अगुवे यीशु मसीह और उनकी सेवकाई के खिलाफ बढ़ते जा रहे थे। यीशु मसीह न केवल इस्त्राएल में पर पड़ोसी अन्यजातीय प्रदेशों जैस सूर और सैदा में भी सुसमाचार का प्रचार और लोगों को चंगा कर रहे थे (मत्ती 15:21-22)। इस्त्राएल के धार्मिक अगुवे यीशु के पास आए। उनका उद्देश्य यीशु की परिक्षा करना था, इस आशा और अपेक्षा से कि यीशु असफल हो जांए, और इस प्रकार सर्वजनिक रूप से बदनाम हो जाएं। उन्होंने संभवतः यीशु के चमत्कारों के बारे में सुना था कि उन्होंने गलील की झील के पूर्वी किनारे पर भूखे लोगों की भीड़ को भोजन प्रदान किया और विकंलागों को चंगा किया (मत्ती 15:29-39)।

स्वर्गीय चिन्ह् की माँग। जैसा कि मत्ती 12:38 में पाया जाता है, उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि यीशु के चमत्कार, ''एक चिन्ह् थे कि वे परमेश्वर की ओर से भेजे गए थे''। वे उनके असाधारण चमत्कारों को नकार नहीं पाए, लेकिन उन्होंने स्वंय को समझाने की बहुत कोशिश की कि यह किसी प्रकार का काला जादू है, कि यीशु ने यह चमत्कार शैतान की सामर्थ्य के द्वारा किए थे। उन्होंने यीशु के इन चमत्कारों को केवल ''पृथ्वी पर के चिन्ह्'' माना। वे ''स्वर्गीय चिन्ह्'' देखाना चाहते थे। स्वर्गीय चिन्हों के रूप में, वे निम्नलिखित के बारे में सोच सकते थेः

- मन्ना, जो उनकी दृष्टि में, मूसा ने स्वर्ग से बरसवाया था (यूहन्ना 6:30-32)
- सूर्य और चंद्रमा जो यहोशू की प्रार्थना पर स्थिर रहे (यहोशू 10:12-14)
- सितारें, जो बराक और दबोरा के समय में इस्त्राएल के लिए लड़े (न्यायियों 5:20)
- बादलों का जोर से गरजना जिसने शमूएल के दिनों में पलिश्तियों को घबरा दिया (1शमूएल 7:10)
- परमेश्वर की आग, जिसने एलिय्याह के दिनों में बलिदान, लकड़ी, पत्थर, पानी और मिट्टी को भी भस्म कर दिया था (1राजा 18:30-40)।

इन विरोधियों की दृष्टि में, यीशु ने अभी तक इस प्रकार का कोई ''स्वर्गीय चिन्ह्'' नहीं दिखाया था।

(2) यह कहानी मत्ती 16:2-3 में निहित है।

(3) व्याख्या या लागूकरण मत्ती 16:3-4 में दिया गया है।

समय के लक्षण। यीशु ने उनकी ओर संकेत करते हुए कहा कि वे ''समय के लक्षणों'' (यूननीः सेम्या टन किरॉन) की अपेक्षा ''मौसम के लक्षणों'' (मौसम की नियमित रूप से बदलने वाली दशा) पर अधिक ध्यान देते हैं। ''समय'' का अर्थ यहाँ साधारण समय अवधि, भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल से नहीं है, बल्कि इतिहास में एक नए युग कि शुरूआत से है जो विशेष घटनाओं से चिन्हित है! इस्त्राएल के अगुवे महत्वपूर्ण को महत्वहीन समझ रहे थे। वे महत्वहीन मौसम के संकेतों के बारे में सब कुछ समझ गए लेकिन समय के महत्वपूर्ण संकेतों के बारे में कुछ भी नहीं समझ पाए। समय के संकेत विशेष संकेत हैं जो परमेश्वर के उद्धार के इतिहास में मनुष्यजाति के साथ एक नए युग कि शुरूआत है! समय के संकेत हैः

- ''पुराने नियम की अवधि'' में व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की छाया ''नए नियम की अवधि की वास्तविकताओं'' में पूर्ण हुई (कुलुस्सियों 2:16-17)
- ''पुराने नियम में मसीहा के आने की भाविष्यवाणियाँ ''लंबे समय से अपेक्षित मसीहा (यीशु मसीह) के आने से पूर्ण हुई''
- ''मसीहाई युग ''तरोताजा होने के समय'' से मसीह के प्रथम आगमन के साथ शुरू होता है, और मसीह के दूसरे आगमन तक ''परमेश्वर के पुर्नस्थापन के समय तक रहेगा'' (प्रेरितों 3:19-21)
- यहूदी धार्मिक अगुवों द्वारा व्याख्या किए गए व्यवस्था के संवेदनहीन नियम ''सत्य के प्रकाशन और अनुग्रह की समर्थ्य से बदल दिए गए'' (यूहन्ना 1:17)

इस प्रकार समय के इन चिन्हों में यीशु समीह स्वयं शामिल थे जो प्रेम, अनुग्रह और सत्य के साथ खोए हुए लोगों को ढूंढते हैं और उन्हें पाते हैं। उन्होंने सभी प्रकार के चमत्कार सामर्थ्य के साथ किए। इस्त्राएल में धार्मिक अगुवे ''दीवर पर लिखावट'' को नहीं समझ पाए (दानिय्येल 5:5, 24-28)। वे नहीं जानते थे कि मनुष्यों द्वारा बनाए गए धार्मिक माध्यमों (यहूदी धार्मिक अगुवों द्वारा व्याख्या की गई औपचारिक व्यवस्था) के विषय में झगड़ने के दिन गिने हुए हैं, और सुसमाचार तब तक फैलता जाएगा जब तक कि यह सारी पृथ्वी पर न फैल जाए (यशायाह 11:9; यिर्मयाह 31:34)!

योना का चिन्ह्। एक मात्र चिन्ह् जो यीशु ने इस्त्राएल के लोगों को दिया था वह ''योना का चिन्ह्'' था। मत्ती 12:38-42 इस चिन्ह् के बारे में बताता है। ''जिस प्रकार योना तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।'' यहूदी और रोमि अधिकारी यीशु को क्रूस पर चढ़ाएंगे, लेकिन वह *तीसरे दिन* फिर से जी उठेंगे और सभी अधिकारियों और उनकें अनुयायियों को हमेशा के लिए निराश कर देंगे! <u>एकमात्र चिन्ह् जो यीशु समीह ने इस्त्राएल राष्ट्र को दिया वह उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान था!</u>

बाइबल यह नहीं बताती कि इन *तीन दिनों और तीन रातों* की गणना कैसे की गई थी। कुछ मसीही लोग इसका प्रयोग इस बात के प्रमाण के रूप में करते हैं कि यीशु पूरे तीन दिन प्रत्येक दिन 24 घंटे के लिए मृत थे, और इसलिए उन्हें शुक्रवार दोपहर की बजाय गुरूवार को सूली पर चढ़ाया गया था। लेकिन यह सिंद्धात सही नहीं है।

- पहला. बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि यीशु को गुरूवार को सूली पर नहीं चढ़ाया गया था, लेकिन शुक्रवार को दोपहर में और वह रविवार को सुबह जल्दी ही फिर से जी उठे। यूनानी भाषा में मूल शब्द, ''परस्केयू'' का अर्थ ''तैयारी'' है, अर्थात सब्त के दिन के लिए तैयारी करना (शुक्रवार को), यहूदियों के सब्त के दिन (शनिवार) से एक दिन पहले। यह शब्द अभी भी ''शुक्रवार'' के लिए आधुनिक यूनानी शब्द है (मरकुस 15:42; लूका 23:55-56; यूहन्ना 19:42)।
- दूसरा. उनके विचार में ''तीन पूरे दिन'' का अर्थ होगा कि यीशु को केवल रविवार कि दोपहर को उठाया जा सकता था। हाँलाकि यीशु को रविवार की सुबह बहुत जल्दी ही जीवित कर दिया गया।
- तीसरा. एस्तेर 4:16 और 5:1 में में ''तीन दिन, और रात'' का अर्थ पूरे तीन दिन, प्रत्येक दिन 24 घंटे का नहीं हो सकता। यह अभिव्यक्ति, ''एक दिन और एक रात'' एक समय-इकाई है जो दिन के एक भाग या रात के एक भाग की ओर संकेत करता है। यहूदियों ने दिन के एक हिस्से को एक दिन के बराबर और रात के एक हिस्से को एक रात के बराबर गिना। निष्कर्षः यहूदियों के अनुसार इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग का अर्थ था कि यीशु पहले दिन (शुक्रवार) के एक भाग में कब्र में थे, दूसरे दिन (शनिवार) पूरे दिन के लिए और तीसरे दिन (रविवार) के एक भाग में। *इस घटना के बाद,* यीशु ने लगातार भविष्यवाणी की कि वह ''तीसरे दिन'' फिर से जीलाए जाएंगे (मत्ती 16:21; 17:22; 20:18-19)!

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

सिखाएं. कहानी केवल लागूकरण के लिए एक परिचय है, जो इस दृष्टांत में एकमात्र आवश्यक विवरण है (मत्ती 16:4)।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 16:1-4 में मौसम के चिन्हों का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश की जिम्मेदारी'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''एक व्यक्ति को मौसम के महत्वहीन चिन्हों को छोड़ कर विशेष चिन्हों को देखना शुरू करना चाहिए जो मानवजाति के साथ परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के नए युग को चिन्हित करते हैं! ये चिन्ह हैं:

- **यीशु मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा किया**
- **और वास्तविकताओं को सामने लाए जिनकी ओर पुराने निमय की छायाओं ने संकेत किया**
- **यीशु मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने उद्धार और न्याय की घोषणा की**
- **सत्य सिखाया, दया और अनुग्रह दिखाया और चमत्कार किए**

समय के इन चिन्हों के साथ उन्होंने नए नियम की अवधि का परिचय दिया! यीशु के चारों ओर कि बड़ी घटनाएँ विशेष रूप से उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान, ऐसे महान चिन्ह हैं जिन पर लोगों को ध्यान देना चाहिए और उनका प्रत्युत्तर देना चाहिए।

व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोगों ने महत्वहीन चिन्हों (लड़ाईयों, आकाल, भूंकप, उत्पीड़न, जातियों की घृणा, विश्वास का परित्याग, बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता/धर्म, अपराध में वृद्धि और प्रेम का ठंडा पड़ना (मत्ती 24:6-12)। और सभी जातियों पर यीशु के राज्य की घोषणा) को देखना बंद कर दिया है। इसके बजाव वे संसार के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण चिन्हों को देख रहे हैं (मसीह का प्रथम आगमन जिसमें उन्होंने भविष्यवाणियों को पूरा किया और उन वास्तविकताओं को प्रगट किया जिसकी ओर छाया संकेत करती थी, यीशु मसीह और उनके राज्य के संदेश की घोषणा सभी जातियों में की गई (मत्ती 24:14) और उनकी मृत्यु और तीसरे दिन पुनरूत्थान इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर ने उनके प्रायश्चित बलिदान को स्वीकार किया - संक्षेप में हमारे स्थान पर उनके उद्धार के कार्य का पूर्ण होना।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

खोजें और चर्चा करें। यह लेंखाश जो सिखातें हैं उसकी तुलना इससे किस प्रकार की जा सकती है जो यह दृष्टांत सिखाता है?

(1) पूर्वजों के परमेश्वर को देखें।

मत्ती 22:23-33 पढ़ें। सदूकी मुर्दो के पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं करते थे। इसलिए उन्होंने भी यीशु की इस भविष्यवाणी को अस्वीकार किया कि वह तीसरे दिन मुर्दो में से जीवित हो जाएंगे। हालाँकि मत्ती 22 में यीशु एक और तरीके से साबित करते हैं कि पुनरूत्थान निश्चित रूप से होगा। जबकि अब्राहम और उसके बाद की पीढ़ियाँ बहुत वर्षो पहले ही मर चुकि थी (शारीरिक रूप से), फिर भी परमेश्वर अपने आप को ''अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर'' कहते हैं। अब क्योंकि परमेश्वर ''मुर्दो के नहीं *जीवतों* के परमेश्वर हैं'', इसलिए इससे केवल यह सिद्ध नहीं होता कि अब्राहम, इसहाक और याकूब कि *आत्माएँ (या प्राण)* परमेश्वर की उपस्थिति में जीवित हैं, बल्कि भाविष्य में परमेश्वर उनके *शरीरों* को भी जीवित करेंगे!

(2) पवित्रशास्त्र में मसीहा को देखें।

यूहन्ना 5:39-47 पढ़ें। यहूदियों ने परिश्रम से पुराने नियम का अध्ययन किया, क्योंकि वे सोचते थे कि इसके द्वारा वे अनंत जीवन के अधिकारी होंगे। हालाँकि, केवल पवित्रशास्त्र का अध्ययन करना नहीं, पर जो कुछ पवित्रशास्त्र कहता है उसका पालन करना, अंनत जीवन की ओर ले जाता है। पवित्रशास्त्र यीशु मसीह के विषय में और अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए उनके पास आने के बारे में बताता है। अंतिम न्याय के दिन मूसा और अन्य भविष्यद्वक्ता यहूदियों पर पवित्रशास्त्र पर विश्वास न करने और आज्ञा पालन न करने का दोष लगाएंगे!

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है! मानव इतिहास की यह एक महान घटना, मानव इतिहास को दो भागों में बाँटती हैः यह पुराने नियम

अवधि की भविष्यवाणियों और छायाओं का अंत करती है और नए नियम की पूर्णता और वास्तविकताओं की शुरूआत करती है। यह महान घटना एकमात्र चिन्ह् था जो यीशु मसीह ने फरीसियों को दिया जिन्होंने यीशु की मृत्यु की साजिश रची थी और विश्वास नहीं किया था कि वह फिर से जीवित होंगे। यह महान घटना एकमात्र चिन्ह् था जो यीशु मसीह ने सदूकियों को दिया था जो शरीर के पुनरूत्थान पर विश्वास नहीं करते थे।

ग. बड़ा जाल

पढ़ें मत्ती 13:47-50

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। जहाँ कहीं भी लोग मछली पालन करते हैं, वहाँ यह कहानी काफी आम है। एक जाल एक ही समय पर अच्छी और बुरी दोनों मछलियों को पकड़ता है। लेकिन बाद में जब जाल को किनारे पर लाया गया तो अच्छी और बुरी मछलियाँ अलग कर दिया गया।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 13:36-51 में पाया जाता है।
यह उसी प्रकार का समायोजन है जो कि गेहूं के बीच घास के दृष्टांत, छिपे हुए खाजाने और बहुमूल्य मोती का है, ये सभी दृष्टांत चेलों से कहे गए थे, भीड़ से नहीं।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 13:49-40 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 13:49-50 में दिया गया है।
यह दृष्टांत अपने वर्तमान प्रगटीकरण में परमेश्वर के राज्य के मिश्रित चरित्र की बात करता है। वास्तविक मसीही और झूठे मसीहियों को अंतिम न्याय के दिन तक साथ में रहना और काम करना है। अपने दूसरे अगमन में मसीह अपने स्वर्गदूतों को भेजेंगे जो विश्वासियों को अविश्वासियों से, धर्मियों को अधर्मियों से और झूठे मसीहियों को वास्तविक मसीहियों से अलग करेंगे। अविश्वासियों और दुष्टों में नरक में डाल दिया जाएगा, जहाँ वे दंड पाएंगे।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।
यीशु कहानी के किसी भी विवरण का कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। मछली पकड़ रहे "जाल" की व्याख्या नहीं की गई है, लेकिन यह लोगों को पकड़ते हुए चेलों की एक तस्वीर है (लूका 5:10)। बुरी मछली को अच्छी मछली से "अलग करना" अंतिम न्याय की तस्वीर है, जैसा कि स्वयं यीशु ने मत्ती 13:50 में बताया है।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 13:47-50 में बड़े जाल का दृष्टांत न केवल "परमेश्वर के राज्य में दो प्रकार के लोगों" के बारे में सिखाता है, बल्कि "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की जिम्मेदारी के बारे में भी सिखाता हैं।"

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "हर व्यक्ति को पता होना चाहिए कि अंतिम न्याय पूरी तरह से अटल और निर्णायक होगा। वहाँ अच्छे और बुरे लोगों को अलग कर दिया जाएगा।"

मुख्य संदेश, मत्ती 13:41-43 में गेहूं के बीच घास के दृष्टांत के मुख्य संदेश से संबंधित है। वहाँ वास्तविक मसीहियों और नामधारी मसीहियों के मिश्रण के विषय में, परमेश्वर के राज्य के वर्तमान प्रगटिकरण से लेकर अंतिम न्याय के दिन तक धीरजवंत रहने के अभ्यास पर जोर दिया गया है। यहाँ अंतिम न्याय की निश्चितता पर जोर दिया गया है जिसमें नामधारी मसीहियों को निश्चित रूप से वास्तविक मसीहियों से अलग कर दिया जाएगा!

यीशु अपने चेलों को सिखाते हैं कि लोगों को आने वाले अंतिम न्याय के बारे में चेतावनी दें। वे कहते हैं कि आने वाले निर्णायक और अपरिवर्तनीय न्याय को देखते हुए, उन्हें लोगों को प्रभावित करना चाहिए कि परमेश्वर का राज्य और खजाना कितना कीमती है और यहाँ और अभी उस पर अधिकार करना कितना महत्वूर्ण है!

व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। अंतिम न्याय की निश्चितता और निर्णायकता को देखते हुए गंभीर लोग आगे की सभी देरी को रोकते हैं और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का व्यक्तिगत और जिम्मेदार निर्णय लेते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

सिखाएँ। विशेषरूप से बड़े जाल के दृष्टांत की व्याख्या और लागूकरण गेहूं के बीच घास के दृष्टांत से मिलता जुलता है। परमेश्वर के राज्य के वर्तमान प्रगटिकरण में अच्छे और बुरे लोग परस्पर मिश्रित हैं। वे केवल यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर अलग किए जाएंगे।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश (पाठ) क्या है? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

अंतिम न्याय अपरिवर्तनीय और अटल होगा! यीशु मसीह ने एक बार परमेश्वर के अंतिम न्याय में दंड की घोषणा करने के बाद नियमित रूप से इसकी निश्चितता पर जोर दिया (मत्ती 8:12; 13:4; 13:50; 25:10; 25:30; 25:46; लूका 17:26-37)। इसलिए वह हर जगह लोगों से पश्चयाताप करने का अग्रह करते हैं (मत्ती 4:17; 9:13) और वह उन्हें उपदेश देते हैं कि लगातार सतर्क रहें (मत्ती 25:13)। साथ ही यह सभी प्रकार के लोगों के प्रति यीशु मसीह के दिल में गहन सहानुभूति के साथ मेल खाता है (मत्ती 9:35-38; 11:28-30; 14:13-18; 15:32; 23:37)

परिशिष्ट 6

(यीशु के दृष्टान्त)
खोई हुई भेड़ और खोया हुआ सिक्का

मत्ती 18:12-14 में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत और
लूका 15:8-10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति के बारें में हैं

क. खोई हुई भेड़ (मत्ती रचित सुसमाचार में)

पढ़ें मत्ती 18:12-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

सिखाएं। कहानी लगभग वही है जो लूका 15:1-7 में है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

हालाँकि मत्ती रचित सुसमाचार और लूका रचित सुसमाचार में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, वे *समानांतर नहीं* हैं। यह एक उदाहरण है कि कैसे यीशु ने उसी दृष्टांत का प्रयोग अलग संदर्भ में किया एक दूसरा संदेश या पाठ को सिखाने के लिए।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 18:1-11 में निहित है।
यीशु के चेलें आपस में झगड़ रहे थे कि परमेश्वर के राज्य में उनमे से सबसे बड़ा कौन है। यीशु जानते थे कि वे क्यों लड़ रहे थे, इसलिए उन्होंने तीन चीजें कीः उन्होंने उन्हें एक उदाहरण, एक चेतावनी और एक काम दिया। उन्होंने एक बालक को उदाहरण के रूप में प्रयोग किया यह बताने के लिए कि चेलों को कैसा बनना चाहिए, उन्होंने उन्हें दूसरें लोगों के लिए पाप में गिरने का कारण बनने के प्रति चेतावनी दी, और उन्होंने उन्हें खोई हुई भेड़ का दृष्टांत बताया कि उन्हें अपने दैनिक जीवन में क्या करने में व्यस्त होना चाहिए।

यीशु अपने चेलों को एक उदाहरण देते हैं। वह उन्हें परिवर्तित होने और ''छोटे बालकों के समान'' बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनकी सांसारिक महत्वाकांक्षा और बड़े बनने की भूख को सबसे छोटा बनने के लिए इच्छुक होने का स्थान तैयार करना चाहिए। एक बच्चे के साथ जुड़े कुछ अनुकूल गुण सादगी, स्पष्टता, आज्ञाकारिता, सादापन, और विशेषरूप से नम्रता और विश्वासशीलता होते हैं।

यीशु अपने चेलों को चेतावनी देते हैं। यीशु उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे सावधान रहें कि किसी भी 'परमेश्वर की संतान' आर्थात मसीहियों के लिए, चाहे वे बालक हों या परिपक्व हों, पाप में गिरने

का कारण न बनें। चेलों का चालचलन परमेश्वर की संतानों के लिए ठोकर खाने और पाप में गिरने का कारण बन सकता है। विशेष रूप से अपने साथियों से बड़ा बनने और उन पर शासन करने की ललक न केवल निष्क्रिय रवैया है, बल्कि एक सक्रिय उपकरण है जिसके द्वारा लोगों को चोट पहुँच सकती है और यह उनके लिए ठोकर खाने का कारण बन सकता है। इसके बजाय, चेलों को परमेश्वर की संतानों का, जो कि मसीही हैं, अधिक आदर कारना चाहिए (रोमियों 12:10), क्योंकि परमेश्वर उनका इतना आदार करते हैं कि उन्होंने अपने सेवा ठहल करने वाले स्वर्गदूतों को उनकी देखभाल करने के लिए नियुक्त किया है (इब्रानियों 1:14)।

यीशु अपने शिष्यों को एक कार्य देते हैं। यीशु उन्हें परमेश्वर की उन संतानों को वापस लाने के लिए समर्पित होना सिखातें हैं, जो भटक गए हैं या पिछे हट गए हैं। इस दृष्टांत का संदर्भ, लूका 15 में इसी दृष्टांत के संदर्भ से काफी अलग है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 18:12-13 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 18:13-14 में निहित है।

जब यीशु कहते हैं कि चरवाहा उस एक भेड़ के मिल जाने पर बहुत खुश होता है जो खो गई थी, उन निन्यानबे भेड़ों को छोड़ कर जो कि खोई नहीं थी, तो उनके कहने का अर्थ यह नहीं था कि वह उन निन्यानबे भेड़ों के लिए खुश नहीं था। वह केवल इस तथ्य पर जोर देना चाहते हैं कि जब एक कलीसिया से खोए हुए मसीही को ढूढ़ा जाता है और वह मिल जाता है, तो परमेश्वर बहुत प्रसन्न होते हैं।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

इस दृष्टांत का संदर्भ, लूका 15:1-7 में इसी दृष्टांत के संदर्भ से काफी अलग है। इसलिए इस दृष्टांत के विवरण भी अलग-अलग वास्तविकताओं का संकेत देंगे।
सौ भेड़ें परमेश्वर की संतानों, मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

खोई हुई भेड़ परमेश्वर की संतान का प्रतिनिधित्व करती है, एक मसीही जो कि मसीही कलीसिया और मसीही विश्वास से भटक गया है।

अन्य निन्यानबे भेड़ें कलीसिया में अन्य मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो खोए नहीं थे। लेकिन वे इस दृष्टांत में *एक प्रासंगिक विवरण तैयार नहीं करती* और केवल एक पृष्ठभूमि के रूप में काम करती हैं, अधिक स्पष्ट रूप से एक खोए हुए मसीही की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। इस दृष्टांत में चरवाहे के हृदय पर जोर दिया गया है, यहाँ तक कि एक भेड़ के प्रति भी जो कि खो गई थी, विशेषरूप से जब वह अपरिपक्व बालक या किशोर है (मत्ती 18:5-10)! झुण्ड में यथास्थिति को बनाए रखने की तुलना में एक खोई हुई भेड़ को वापस लाने में चरवाहे को अधिक खुशी होती है। उसकी उमंग यह है कि उसकी एक भी भेड़ खोनी नहीं चाहिए! अंततः एक भी भेड़ नहीं खोई (यूहन्न 17:12; यूहन्ना 18:9)!

लेकिन लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ के अन्य दृष्टांत में, 99 भेड़ों की तुलना खोई हुई भेड़ से कि गई है इसलिए 99 भेड़े प्रासंगिक विवरण है। यहाँ *99 भेड़ें यहूदियों का प्रतिनिधित्व करती है* जो चुंगी लेने वालों और पापियों की परवाह करने के लिए यीशु की निंदा करते हैं (लूका 15:1)। चरवाहे को इस एक अविश्वासी जो कि अब विश्वासी बन चुका है, के लिए अधिक प्रसन्नता होती है उन अन्य 99 लोगों की अपेक्षा जो सोचते हैं कि उन्हें विश्वास में आने की आवश्यकता नहीं।

चरवाहा सब बातों के ऊपर परमेश्वर पिता का प्रतीक है, जो पवित्र त्रिएकता का प्रतिनिधित्व करता है। सभी भेंड़े उसी की हैं और वह नहीं चाहता कि इन छोटों में से कोई भी खोए।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 18:12-14 में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर की इच्छा प्रगट है कि उनकी एक भी भेड़ नाश न हो, लेकिन वे सब पूर्ण रूप से बचाई जाएं। अपने खोए हुए बच्चों के प्रति प्रेम की तड़प कारण बनती है कि परमेश्वर उन्हें खोजे और वापस कलीसिया में लाए।

परमेश्वर/यीशु मसीह एक मसीही जो खो गया था उसके विषय में उन 99 मसीहियों से अधिक आंनदित नहीं है जो कि खोए नहीं थे। उनका एक शुभचिंतक होने का आनंद जो कि खोई हुई भेड़ को खोजता, पाता और वापस लाता है, विश्वासियों का अधिकारी मात्र होने से बढ़कर है (यशास्थिति बनाए रखने)! यहाँ खोई हुई एक भेड़ पर नहीं, लेकिन चरवाहे पर जोर दिया गया है जो खोई हुई भेड़ को खोजता, पाता और वापस लाता है। जोर उन लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम और उमंग पर है जो सही मार्ग से भकट जाते हैं।"

भटके हुए और खोए हुए लोगों को वापस लाने के लिए उन्हें खोजना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलते हैं और जो लोग मसीही कलीसिया और मसीही विश्वास से भटक गए हैं उन्हें ढ़ूढ़ कर वापस लाने के लिए बाहर जाते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 5:29; भजन. 119:176; यशायाह 45:22-23; 48:17-19; यहेजकेल 18:23,32; 33:11; मत्ती 9:37-38, 11:28-29; 23:37; यूहन्ना 7:37; याकूब 5:19-20; 2पतरस 3:9; प्रकाशितवाक्य 22:17।
खोजें और चर्चा करें। यह प्रत्येक लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?
ध्यान दें।

यह महिमामय तथ्य कि परमेश्वर नहीं चाहते कि उनके छोटों (परमेश्वर की संतानों) में से कोई भी खोए, बाइबल की शिक्षा के अनुरूप है। यीशु ने कहा, ''जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमे से मैं ने एक को भी न खोया'' (यूहन्ना 18:9)! दृष्टांत का लागूकरण दर्शाता है कि भटके हुए व्यक्ति की अपेक्षा परमेश्वर (यीशु मसीह) पर अधिक जोर दिया या है, जो कि भटके हुए व्यक्ति को खोज रहे हैं!

ख. खोया हुआ सिक्का

पढ़ें लूका 15:8-10

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

चांदी का सिक्का, जो खो गया था, लगभग एक दिन की मजदूरी के बराबर था। एक मजदूरी करने वाले के लिए वह बहुत पैसा था! हो सकता है कि महिला ने दस चांदी के सिक्कों को चेन में लगा कर अपने गले में पहना हो, या फिर संभावित रूप से उसने उन्हें एक छोटे कपड़े में लपेट कर अपनी पोशाक से बांधा हो। हो सकता है कि चेन टूट गई हो या फिर गाँठ ढीली हो गई हो, जिसके परिणामस्वरूप एक सिक्का गिर कर खो गया हो। यीशु के दिनों में गरीब लोगों के घर बहुत छोटे वासस्थान हुआ करते थे, जिनका फर्श गंदा होता था और उनमे या तो खिड़की नहीं होती थी या फिर बहुत छोटी खिड़की होती थी। क्योंकि उसके घर में अंधेरा था, इसलिए उसे सिक्का नहीं मिला। लेकिन दीपक जाला कर पूरे फर्श को झाड़-बुहारकर, उसे अपना सिक्का मिल गया। अपने आनंद में उसने अपनी सहेलियों और पड़ोसियों को बुलाया और जो कुछ हुआ वह उन्हें बताया।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ के दृष्टांत के समना है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 15:8-9 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 15:10 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत को एक रूपक (रूपकात्मा ढ़ग से) के समान देख रहे हैं।

कुछ व्याख्याकार इस व्याख्या के साथ आए हैं कि ''महिला'' पवित्र आत्मा का प्रतीक है। वे निष्काशन कि एक प्रक्रिया द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। खोए हुए पुत्र के दृष्टांत में ''पिता'' परमेश्वर पिता का प्रतिनिधित्व करता है। खोई हुई भेड़ के दृष्टांत में ''वह व्यक्ति जिसके पास सौ भेड़ें थी'' परमेश्वर पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार खोए हुए सिक्के के दृष्टांत में ''महिला'' पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है।

अन्य लोग ''महिला'' की व्याख्या कलीसिया के रूप में करते हैं। ''दीपक'' सुसमाचार की ओर संकेत करता है। ''झाड़ू'' (जिसका उल्लेख भी नहीं हुआ) व्यवस्था का द्योतक है। ये व्याख्याएँ सही नहीं हैं और इन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए।

यीशु की व्याख्या। यीशु इस दृष्टांत के विभिन्न विवरणों को कोई अर्थ नहीं देते। लेकिन वह दृष्टांत को परमेश्वर और उनके स्वर्गदूतों के प्रतिनिधित्व के रूप में समझाते जो एक भी खोया हुए व्यक्ति के पश्चयाताप करने और उनकी की ओर फिरने पर स्वर्ग में आंनद मना रहे हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 15:8–10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति'' के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर जो की अपने स्वर्गदूतों की उपस्थिति में वास करते हैं, खोए हुए लोगों को खोज रहे हैं और यदि उनमें से एक भी पश्चयाताप करता या परिवर्तित होता है तो उस पर आनंदित होते हैं।''

खोए हुए और भटके हुओं को वापस लाने के लिए खोजना, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोग यीशु के नक्शेकदम पर चलते हैं और भटके हुओ और खोए हुओ को खोजने के लिए बाहर जाते हैं और उन्हें वापस लाते हैं ताकि वे बचाए जा सकें।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

खोए हुए पुत्र के दृष्टांत को देखें।

राज्य परिशिष्ट 7

(यीशु के दृष्टान्त)
दुष्टात्मा के वापस आने और दो देनदार का दृष्टांत

मत्ती 12:43-45 में दृष्टात्मा के वापस आने का दृष्टांत
और लूका 7:40-50 में दो देनदारों का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम के बारे में हैं।

क. एक दुष्टात्मा का वापस आना

पढ़ें मत्ती 12:43-45।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। कुछ लोगों के अनुभव में, इस कहानी के तत्व जीवन के प्रति सच्चे नहीं हैं। क्योंकि वे शैतान या दृष्टात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करते और इसलिए वे शैतान और उसकी दृष्टात्माओं के काम को नहीं पहचान पाते। वे अभी तक भी यह नहीं समझ पाए हैं कि उनके जीवन में कोई विशेष घटना (सभी नहीं) दुष्टात्माओं के कारण हुई। फिर भी यीशु के समय में और आज भी कुछ समाजों में लोग आम तौर पर दृष्टात्माओं पर विश्वास करते हैं और उनके विश्नकारी कार्यों के देखते हैं। उन्होंने देखा है कि कैसे यीशु लोगों में से दुष्टात्माओं को बाहर निकालते थे या आज भी दुष्टात्माओं को कैसे बाहर निकाला जाता है! उनके लिए इस दृष्टांत की कहानी विचित्र, अंधविश्वासी या सांस्कृतिक रूप से निर्धारित नहीं है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 12:22-42 में निहित है।
इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

शैतान के विनाश का चिन्ह्। मत्ती 12:22-37 इस प्रश्न के साथ व्यवहार करता है कि क्या यीशु के चिन्ह् और चमत्कार शैतान के अधिकार (प्रभुत्व, सामर्थ्य, नियत्रंण) का प्रमाण है या फिर उसकी हार (विनाश) का? समायोजन यीशु और उनकी सेवकाई के खिलाफ फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों का बढ़ता हुआ विरोध है। उन्होंने उन चीजों को करने के लिए यीशु की निंदा की जो सब्त के दिन करना व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं था और उन्होंने यीशु को मार डालने का षड़यंत्र किया (मत्ती 12:2,7,10,14)। उन्होंने देखा था कि कैसे यीशु ने दुष्टात्मा ग्रस्त व्यक्ति को चंगा था, जो कि अंधा और गूंगा था (मत्ती 12:22-23)। अब फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने यह कह कर खुलेआम

यीशु की निंदा की कि यह शैतान (बालजबूल या बालजबूब) की सामर्थ्य के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है।

हालाँकि, यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जब वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालते हैं तो परमेश्वर का राज्य उनके पास आ चुका है। यीशु ने सिखाया की उनके चमत्कार और दुष्टात्माओं को निकालना शैतान की हार (विनाश) के चिन्ह् हैं (शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के प्रभुत्व के चिन्ह् नहीं)! वे पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य (प्रभुत्व, सामर्थी शासन) की उपस्थिति के चिन्ह् और प्रमाण हैं! यीशु ने सिखाया की शैतान को बांधना और उसकी दुष्टात्माओं को निकालना, इस बात का प्रमाण है कि उनके प्रथम आगमन पर परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आ चुका है!

योना का चिन्ह्। मत्ती 12:38-42, में यीशु ने धार्मिक यहूदी अगुवों को चमत्कारिक चिन्ह् देखने की उनकी लालसा के लिए फटकारा। इस तथ्य के बावजूद की यीशु ने उनके बीच में चंगाई के बहुत से चमत्कार किए, इन फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों ने इन चिन्हों को *शैतान की सामर्थ्य से किए गए पृथ्वी पर के चिन्ह्* समझ कर नकार दिया। वे *परमेश्वर की सामर्थ्य से स्वर्गीय चिन्ह्* देखने की मांग कर रहे थे, जैसा कि एलिय्याह ने स्वर्ग से आग प्रगट थी, ताकि यीशु भी सिद्ध कर सके कि वह वास्तव में मसीहा थे (मत्ती 16:1)। इस्त्राएल के इन धार्मिक अगुवों और उनके अनुयायियों की दिलचस्पी लोगों की चंगाई और उद्धार में नहीं थी, लेकिन केवल सनसनीखेस घटनाओं और रोमांचकारी प्रदर्शन में थी।

एक मात्र चिन्ह् जो यीशु ने उन्हें दिया वह योना का चिन्ह् था। योना का यह चिन्ह् यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान का एक प्रकार (उदाहरण के रूप में एक घटना) था। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान, ऐसी पीढ़ी के लिए एक मात्र चिन्ह् है जो सनसनीखेस चिन्ह् के लिए तरसती है!

नकारात्मकता के धर्म का चिन्ह्। जिस तरह के धर्म की वकालत फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक करते थे वह स्पष्ट रूप से ''एक नकारात्मकताओं का धर्म'' था। उन्होंने पुराने नियम के सकारात्मक नहीं पर नकारात्मक पहलुओं पर जोर दिया। उन्होंने लोगों को सिखाया,

- ''चुंगी लेने वालों और पापियों से *न* मिलें'',
- ''बीमारों को चंगा करने और गेहूं की बालों को तोड़ने के द्वारा सब्त के दिन को *न* तोड़े'',
- ''उस शपत को *न* तोड़े जो आपने परमेश्वर की खाई हो'', इत्यादि।

बहुत से ऐसे ''ऐसा मत करो'' के बारे में सोचें या जिसकी मांग धार्मिक अगुवें हमारे दिनों में करते हैं।

आधुनिक लोगों की नकारात्मक व्यवस्थाः *न करें:*

- कुछ विशेष खाद्य पदार्थ खाना (उदाहरण के लिएः सूअर का मांस)
- शराब पीना
- धुम्रपान
- नृत्य

धर्मो में नकारात्म व्यवस्थाः *न करें:*

- धार्मिक सभाओं के दौरान गीत गाना

- यह कहना कि परमेश्वर ने स्वयं को एक मनुष्य में प्रकट किया (उदाहरण के लिएः यीशु समीह) (यहाँ तक कि जब उसने स्वयं को जलती हुई झाड़ी में प्रगट किया) (निर्गमन 3:1-6)
- इस दावे पर प्रश्न उठाना कि एक विशेष पुस्तक स्वर्ग से उतरी थी
- इस विश्वास पर सवाल उठाना कि एक मनुष्य भविष्यद्वक्ता होने का दावा करता है या सत्य बोलता है
- अपने स्वयं के धर्म को छोड़ दूसरे धर्म के लोगों से मिलना, इत्यादि।

<u>मनुष्यों की नकारात्म व्यवस्थाः</u> *न करें:*

- अपनी दाढ़ी बनाना
- बिना सिर पर कुछ ढ़के बाहर जाना

<u>महिलाओं के लिए नकारात्मक व्यवस्थाः</u> *न करें:*

- बिना टोपी या अपने सिर पर कुछ ढ़के आराधना करना
- बिना घूंघट के सार्वजनिक रूप से दिखाई देना
- सार्वजनिक रूप से पहचानने योग्य दिखाई देना
- परमेश्वर के बारे में पुरूषों से बात करना
- पुरूषों से बात करना

यहूदी धर्म गुरूओं के पास 365 प्रतिबंधों की सूची थी (248 आज्ञाओं की सूची के अलावा) जो अनके सभी अनुयायियों के लिए पालन करना आवश्यक था! इसलिए उनके धर्म में 365 ''*न करें*'' हैं!

यहूदियों के इस नकारात्मक धर्म के संदर्भ में यीशु ने ''एक दुष्टात्मा के वापस आने'' का दृष्टांत कहा था।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 12:43-45 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 12:45 और लूका 7:33-35 में निहित है। यीशु ने कहा, ''इस दुष्ट पीढ़ी के साथ यही होगा!'' जो कुछ उन्होंने साफ लेकिन खाली घर के बारे में कहा वह इस पीढ़ी पर लागू होता है, अर्थात इस्त्राएल राष्ट्र पर (और आज मानव निर्मित धर्मो के लिए), जिन्होने यीशु को नहीं पहचाना और विश्वास नहीं किया की वह मसीहा थे।

---

3. <u>दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।</u>

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

मनुष्य। यीशु इस दृष्टांत में किसी भी विवरण के लिए कोई विशिष्ट अर्थ प्रदान नहीं करते। वह इस पीढ़ी (धार्मिक लोगों की पीढ़ी) की तुलना उस व्यक्ति से करते हैं जो शुरूआत में ग्रस्त था, और फिर स्वत्रंत किया गया और अंत में फिर से आठ दुष्टात्माओं से ग्रस्त हो गया (मत्ती 12:45)। सम्पूर्ण दृष्टांत की व्यख्या इस कथन के प्रकाश में कि जानी चाहिए।

दुष्टात्मा। यीशु का इरादा दुष्टात्माओं पर कोई पाठ्यक्रम सिखाने का नहीं था। वह चाहते हैं कि हम दुष्टात्माओं के बारे में इतना अधिक न सोचें जितना कि ''इस दुष्ट पीढ़ी'' के (मत्ती 12:39,45) जो

कि आठ दुष्टात्माओं से ग्रस्त व्यक्ति के समान दिखाई देता है। इस प्रकार, ''दुष्टात्माएँ किसी और चीज का प्रतिनिधित्व नहीं करती और इस दृष्टांत में एक प्रासंगिक विवरण नहीं है।

सूखी जगह। जिस प्रकार अच्छे स्वर्गदूत क्रम, सुंदरता और जीवन की परिपूर्णता से जुड़े हैं उसी प्रकार बुरे स्वर्गदूत विकार, निर्जनता और मृत्यु से जुड़े हैं। इन जलरहित या रेगिस्तानों को कोई प्रासंगिक अर्थ नहीं है, लेकिन यह केवल कहानी को बढ़ाता है।

एक दुष्टात्मा से ग्रस्त होना फिर स्वतंत्र होना और अंत में आठ दुष्टात्मओं से ग्रस्त होना। यह एक प्रासंगिक और आवश्यक विवरण है, क्योंकि यह इस दुष्ट पीढ़ी की दशा का वर्णन करता है! इस दृष्टांत के अर्थ का अनुमान केवल इसके संदर्भ से लगाया जा सकता है।

इस्त्राएल में यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु की प्रारंभिक सेवकाई एक व्यक्ति को दुष्टात्मा से स्वतंत्र करने के समान थी। यूहन्ना ने पश्चयाताप की आवश्यकता और पश्चयाताप को बनाए रखते हुए फल लाने का प्रचार किया (मत्ती 3:5)। यीशु ने भी लोगों को पश्चयाताप करने के लिए कहा, क्योंकि उन्होंने कहा कि मन फिराव क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है (मत्ती 4:17)। इन दोनों के बहुत से अनुयायी हो गए थे (मत्ती 4:23-25)। यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई के माध्यम से इस्त्राएल में जो कुछ हो रहा था वह ऐसा प्रतीत हो रहा था कि एक व्यक्ति में से दुष्टात्मा बाहर निकाल दी गई है- वह ''व्यक्ति'' यीशु मसीह के दिनों में इस्त्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है।

लेकिन फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के प्रभाव में, इस्त्राएल की दशा लगातार बदल रही थी। फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के ज्याद से ज्यादा अनुयायियों ने यीशु का विरोध किया। धार्मिक अगुवों ने खुले तौर पर यीशु की निदां की, दोष लगाया और भला बुरा कहा (मत्ती 12:2,7,10,14,24)। यहाँ तक कि उन्होंने यीशु को मार डालने की साजिश की। अंत में वे और उनके अनुयायी चिल्ला उठे ''उसे क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर!'' (मत्ती 26:59; 27:1,20,41)। इस्त्राएल में अब जो कुछ हो रहा था वह ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों एक व्यक्ति के अंदर एक दुष्टात्मा की जगह आठ दुष्टात्माओं ने ले ली हो। वह ''व्यक्ति'' अभी भी इस्त्राएल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है जिसे यीशु ''यह दुष्ट पीढ़ी'' कहते हैं! यीशु मसीह का विरोध और तिरस्कार करने से, इस्त्राएल की दशा और भी बुरी हो गई थी!

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का केंद्रीय बिंदु या मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 12:43-45 में एक बुरी आत्मा की वापसी का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम'' के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर के राज्य को नकारात्मक धर्म की अपेक्षा सकारात्मक धर्म के रूप में चित्रित किया गया है। इसे नकारात्मक धर्म (नकारात्मक व्यवस्था और कानूनों की सूची के साथ) में बढ़ने के बजाय सकारात्मक व्यय (दृश्यमान) प्रेम के रूप में चित्रित किया गया है''। इसे यहूदी धर्म में वैधानिक निष्क्रियता (मत्ती 12:2), दोष के वातावरण (मत्ती

12:7), नकारात्मक निंदा (मत्ती 12:24) और बाहरी चिन्हों के प्रति हठ (मत्ती 12:39) की अपेक्षा उन लोगों के प्रति यीशु मसीह के व्यय प्रेम (दृश्यमान) के रूप में चित्रित किया गया है जिन्हें चंगाई, स्वतंत्रता और उद्धार की आवश्यकता है (मत्ती 12:9-14)।

व्यय (दृश्यमान) प्रेम परमेश्वर के राज्य की उत्कृष्ट विशेषताओं में से एक है! व्यय (दृश्यमान) प्रेम लगातार गलत या बुरा करने के भय के बजाय नियममित रूप से सही और भला करने के लिए लगन होना है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग खाली और सूने घर की अपेक्षा भरे हुए घर के समान हैं जिसमें सकारात्कम गतिविधियाँ होती हैं (मत्ती 12:44)। घर के निवासी परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास के द्वारा चंगे, स्वतंत्र और उद्धार पाए हुए हैं और अपने आभार को निष्क्रिय शून्यता की अपेक्षा सक्रिय प्रेम, धार्मिकता और पवित्रता के द्वारा प्रकट करते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें मत्ती 15:13; 21:19; 25:18,26-28; 25:41-46

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें। यीशु केवल एक साफ सुथरे लेकि खाली घर से संतुष्ट नहीं हैं जो एक नकारात्मक, निष्क्रिय और हानिरहित घर्म का प्रतिनिधित्व करता है (एक ऐसा धर्म जो कि व्यवस्था या कानूनों की लंबी सूची के अनुसार सही ठहराया गया है)।

न ही परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति से संतुष्ट है जो कि केवल मनुष्य मात्र के हाथों द्वारा रोपित और विकसित (सिखाया या तैयार किया गया) है (मत्ती 15:13)। यीशु के कार्य दर्शाते हैं कि एक अंजीर का पेड़ जो केवल बहुत सी पत्तियाँ लाता है और फल नहीं लाता, वह श्रापित होने के खतरे में है (मत्ती 21:19)। और यीशु सिखाते हैं कि एक व्यक्ति, जो परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई अपनी प्रतिभाओं और जिम्मेदारियों को छिपाता है वह अस्वीकार किए जाने के खतरे में है (मत्ती 25:18,26-28)। एक व्यक्ति जो सोचता है कि वह मसीही है, और अन्य जरूरतमदं मसीहियों की परवाह नहीं करता, वह परमेश्वर के राज्य में मिरास न मिलने के खतरे में है (25:41-46)।

ये सभी लेखांश सिखाते हैं कि यीशु मानव निर्मित नियम या "न करें" जैसे कानूनों द्वारा नियत्रिंत निष्क्रिय धर्म की निंदा करते हैं। इसके बजाए वे प्रेम की सक्रिय सेवा के लिए लोगों को आज्ञा देते और आग्रह करते हैं। फरीसियों जैसे लोग, "यह मत करो और वह मत करों!" पर जोर देते हैं। लेकिन यीशु, "यह करो और वह करो! (और तुम जीवित रहोगे)" पर जोर देते हैं। नकारात्मक धर्म पारंपरिक नियम और कानूनों का उल्लंघन करने का भय दिखाकर इसे लोगों पर थोपते हैं। लेकिन यीशु मसीह लोगों को परमेश्वर से प्रेम करने, अपने पड़ोसी से प्रेम करने और स्वयं से प्रेम करतने के लिए स्वतंत्र करते हैं।

---

6. दृष्टांत की मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में बताइए।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की मुख्य शिक्षाएँ या संदेश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* और *विश्वास* करना सिखाया और उन्होंने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) व्यय (दृश्यमान) प्रेम या लगातार गलत या बुरा करने के भय के बजाय नियममित रूप से सही और भला करने के लिए लगन।

यह परमेश्वर के राज्य की उत्कृष्ट विशेषताओं में से एक है! यूहन्ना बपतिस्मादाता की सेवकाई के दिनों में इस्त्राएल की दशा एक ऐसे व्यक्ति के समान थी जो कि दृष्टात्मा से स्वतंत्र किया गया हो। लोगों ने पश्चयाताप किया और मसीहा की अपेक्षा कर रहे थे, लेकिन वास्तव में मसीहा को स्वीकार नहीं किया। इस्त्राएल की आत्मा जैसे खाली सूनी, साफ की गई और क्रम में थी। लेकिन इस प्रकार की दशा मानव हृदय की गहरी जरूरतों को और साथ ही परमेश्वर की आवश्यकताओं को न तो पूरा कर सकती हैं और न कभी कर पाएगी।

(2) हानिरहितता पवित्रता के समाना नहीं है!

वैधानिक निष्क्रियता व्यय (दृश्यमान) प्रेम के समान नहीं है!

लोग अक्सर नई शुरूआत करने की कोशिश करते हैं, जीवन को बेहतर बनाने या अपने जीवन से गड़बड़ी को दूर करने की कोशिश करते हैं। लेकिन यीशु मसीह एक साफ और खाली घर से कहीं अधिक प्रदान करते हैं! अक्सर लोग स्वयं अपने व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करते हैं, अध्ययन गोष्ठी में भाग लेते हैं, अपने व्यक्तित्व और और गुणों को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम या प्रशिक्षण सम्मेलनों में भाग लेते हैं और एक बेहतर मनुष्य बनने के लिए हर प्रकार के भले काम करते हैं।

लेकिन यीशु सिखाते हैं कि वास्तव में आंतरिक रूप से बदलने के लिए और व्यवहार में बाहरी रूप से बदलने के लिए, एक व्यक्ति को ऐसा पौधा होना चाहिए जो कि परमेश्वर द्वारा लगया गया हो (मत्ती 15:13), परमेश्वर द्वारा पुनर्जीवित और रूपांतरित हो (यूहन्ना 3:7)!

लोग अक्सर बाहरी शिष्टाचार, अच्छे व्यवहार, धार्मिक समारोहों और अनिवार्य धार्मिक व्यवहार से प्रभावित होते हैं। यीशु इसकी तुलना एक खाली और साफ-सुथरे घर से करते हैं! लेकिन यीशु मसीह सिखाते हैं कि सच्चे मसीहियों के पास केवल साफ हृदय और जीवन मात्र ही नहीं होना चाहिए। उनके पास शुद्ध किये गए हृदय (यीशु के लहू के द्वारा) और भरे हुए हृदय (पवित्र आत्मा के द्वारा) होने चाहिए!

(3) इसके अतिरिक्त कुछ अन्य दृष्टांत भी आंतरिक वास्तविकता की अपेक्षा बाहरी दिखावे के खतरे के बारे में सिखाते हैं।

ऐसे लोग जो कि उस पेड़ के समान दिखाई देते हैं जिसमे बहुत सी पत्तियां हैं लेकिन फल नहीं और ऐसे लोग जिनके पास तोड़े हैं लेकिन उन्होंने उसे जमीन में गाड़ दिया है, उनकी तुलना साफ-सुथरे, और खाली घर से की गई है। उनका बाहरी व्यवहार एक बदलाव का संकेत देता है, लेकिन यीशु ऐसे हृदय को खोजते हैं जो पवित्र आत्मा और उमड़ते हुए प्रेम से परिपूर्ण हो (रोमियों 5:5)।

(4) परमेश्वर के राज्य को यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों के नकारात्म धर्म की अपेक्षा यीशु मसीह के सकारात्मक धर्म के द्वारा चित्रित किया गया है।

जबकि फरीसियों ने सिखाया की, ''ऐसा मत करो!'', यीशु ने सिखाया, ''ऐसा करो!'' उन्होंने सिखाया ''परमेश्वर से प्रेम करो!'' और अपने पड़ोसी से प्रेम करो!'' यीशु का गर्म प्रकार का रवैया

फरीसियों के ठंडे वैधानिक रवैये से टकरा रहा था। उनकी व्यापक सोच संकरे वंश की आत्मा से टकरा गई। उनका उमड़ता हुआ प्रेम फरीसियों के स्वार्थीपन से टकरा गया। उनका व्यवस्था के गहरे अर्थ पर जोर देना फरीसियों के व्यवस्था के पत्र को बनाए रखने के जोर देने से टकरा गया (मत्ती 5:17-48)। बड़े हृदय वाले यीशु मसीह और हठधर्मी फरीसी एक साथ नहीं रह पाए! इसलिए यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे (मत्ती 5:20)।"

ख. दो देनदार

पढ़ें लूका 7:40:50

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें। एक महाजन को पैसा देने वाले दो देनदारों की कहानी एक वास्तविकता है जिसे हर कोई जानता है। पाँच सौ दीनार उस धनराशि के बजाबर थी जो कि एक साधारण मजदूर लगभग दो साल की समय अवधि के दौरान कमाता था और पचास दीनार उस धनराशि के बाराबर थी जो कि एक साधारण मजदूर लगभग दो महीने में कमाता था। उनमें से कोई भी चुकाने के योग्य नहीं था। उन्हें जेल में ड़लवाने के बजाय, जब तक कि वे सारा कर्ज न चुका दें, महाजन ने उदारतापूर्वक उनका कर्ज रद्द कर दिया।

यीशु ने एक प्रश्न के साथ इस दृष्टांत का निष्कर्ष निकाला, ताकि उनके श्रोताओं को मुख्य संदेश के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया जा सके। उन्होंने पूछा, "उनमे से कौन महाजन से अधिक प्रेम रखेगा?" शमौन ने सही उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह जिसका उसने अधिक कर्ज रद्द कर दिया।"

तब यीशु ने लागूकरण दिया और उस महिला कि तुलना जिसने उनके पैरों का अभिषेक किया था, उस फरीसी से की जिसने यीशु को भोजन पर आमंत्रित किया था, "इसलिए, मैं तुझ से कहता हूँ इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए- क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया। परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा होता है वह थोड़ा प्रेम करता है।"

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 7:36-39 में निहित है।

फरीसी। यीशु को एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर अमंत्रित किया था। यह स्पष्ट नहीं है कि उसने क्यों यीशु को आमंत्रित किया। यह संभव है कि उसने यीशु के विषय में सुना हो कि वह एक महान भविष्यद्वक्ता थे और जिज्ञासा के कारण उसने यीशु को आमंत्रित किया हो (लूका 7:16)। यह भी संभव है कि वह यीशु पर दोष लगाने का अवसर ढूढ़ना चाहता था (लूका 6:7)। जो ध्यान उस ने यीशु पर दिया उससे यह स्पष्ट है कि उसने यीशु को प्रेम के कारण या इस कारण अमंत्रित नहीं किया था कि वह यीशु का बड़ा आदर करता था (लूका 7:44-46)। फिर भी यीशु ने उसका आमंत्रण

स्वीकार किया। यीशु ने केवल चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ ही नहीं खाया (लूका 5:29-30), उन्होंने फरीसियों के साथ भी खाया (लूका 7:36; 11:37; 14:1)।

महिला। इस्त्राएल में बिन बुलाए व्यक्ति के लिए ऐसे घर में प्रवेश करना विचित्र नहीं था जिस में भोज दिया गया हो। वे आम तौर पर स्वयं दीवार के साथ बैठ जाते और जो कुछ भी हो रहा होता उसे देखते और यहाँ तक कि कुछ आमंत्रित लोगें के साथ बातचीत करने में लगे रहते थे।

एक सार्वजनिक रूप से बुरी ख्याति प्राप्त महिला भी उस घर में आई जहाँ वे खा रहे थे, और यीशु के पाँवों के पास खड़ी हो गई। यह कहना अनुचित होगा कि वह महिला एक वेश्या थी, क्योंकि एक औरत वेश्या होने के बिना भी पापी हो सकती है। इसके अलावा उपलब्ध विवरण से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि वह अपना पहला जीवन नहीं जी रही थी। इस दिन से पहले, उसने यीशु को सुसमाचार प्रचार करते हुए अवश्य सुना था और सुसमाचार पर विश्वास किया था, क्योंकि उसके सम्पूर्ण व्यवहार ने यीशु की ओर उसके आभार की गवाही दी। उसके हृदय में परमेश्वर द्वारा क्षमा किए जाने की भावना बढ़ रही थी! इसलिए वह उनके प्रति धन्यवाद की एक बहुमूल्य भेंट लाई जो कि उसके जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे।

महिला का कृतज्ञता का कार्य। अपने पिछले पापमय जीवन के लिए वास्तविक दृःख से अभिभूत होकर, वह फूट-फूट कर रो पड़ी और उसके आंसू यीशु के पाँवों पर बह निकले। उसने अपने बालों से यीशु के पाँवों को सुखाया, उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। शमौन फरीसी ने, इस बात को अपमान जनक माना और अपने हृदय में यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु भविष्यद्वक्ता नहीं हो सकता, क्योंकि यदि वह होता तो जानता कि वह महिला बुरी ख्याति प्राप्त महिला है और उसे स्वयं को छूने की अनुमति नहीं दी होती। फरीसी के दृष्टिकोण और विचारों की प्रतिक्रिया में यीशु ने यह दृष्टांत कहा।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 7:41-42 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 7:43-50 में निहित है।

घर में सभी की उपस्थिति में यीशु अपने मेजबान फरीसी द्वारा प्राप्त अनुचित व्यवहार पर उलाहना देते हैं। उनके मेजबान ने यीशु को मेजबानी के पारंपरिक पूरबी प्रचलन के अनुसार स्वीकार नहीं किया। धूल भरी सड़क से चलकर आने के बाद भी उसने यीशु को अपने पैरों को धोने के लिए पानी प्रदान नहीं किया था (उत्पत्ति 18:4; न्यायियों 19:21)। उसने एक चूम्बन के माध्यम से, जो कि स्नेह की एक अभिव्यक्ति था, यीशु का स्वागत नहीं किया (उत्पत्ति 29:13; 45:15; रोमियों 16:16; 1पतरस 5:14)। उसने सस्ते जैतून के तेल से भी अपने अतिथियों के सिर को अभिषिक्त नहीं किया, जो कि आनंद का प्रतीक था (भजन 23:5; 45:7; 141:5)। संक्षेप में यीशु के साथ फरीसी का व्यवहार ठंडा, कृपारहित और अभद्र था।

यीशु यह भी कहते हैं कि उन्हें महिला से बिल्कुल विपरीत व्यवहार प्राप्त हुआ। यीशु के पैर धोने के लिए उसने पानी के बजाय अपने आँसुओं का इस्तेमाल किया। यह उसके पश्चयाताप और बदलाव का चिन्ह् था। उनके गाल पर चुम्बन करने के बजाय, उसने उनके पैरों को चूमा। उसका चुम्बन उसकी कृतज्ञता का चिन्ह् था। उनके सर पर सस्ते जैतून के तेल के बजाय, उसने उनके पैरों पर बहुमूल्य और सुगंधित इत्र डाला!

तब यीशु ने कहा, ''इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया। पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।'' यीशु द्वारा दिए गए इस लागूकरण का निम्नलिखित अर्थ हैः फरीसी ने सुसमाचार पर विश्वास नहीं किया। उसने विश्वास नहीं किया कि वह एक पापी था; इसलिए उसे क्षमा की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई; और इसलिए उसने कोई आभार व्यक्त नहीं किया! उसने यीशु के प्रति अपने प्रेम की कमी के द्वारा अपने विश्वास की कमी को दर्शा दिया। इसके विपरीत, महिला ने सुसमाचार पर विश्वास किया (लूका 7:50)। वह अपने पापों से अभिभूत हो चुकि थी और अब ये सभी पाप क्षमा हो चुके थे! यीशु समीह के संदेश पर विश्वास ने उसे पापों की पूर्ण क्षमा के बारे में जागरूकता प्रदान की और उसके पाप क्षमा हो चुके थे इस बात के प्रति अपनी कायलता को उसने उस प्रेम के द्वारा प्रगट किया जो उसने यीशु के प्रति दिखाया। जो वह महिला अपने हृदय में पहले से जानती थी और उसने अनुभव किया था उसकी पुष्टि यीशु ने यह कह कर की, ''तेरे पाप क्षमा हुए..... तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया, कुशल से चली जा'' (लूका 7:48-50)। रोमियों 5:1 कहता है, ''अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।'' इस महिला को विश्वास था और इसलिए उसने परमेश्वर के साथ मेल किया और यीशु मसीह के प्रति अपना प्रेम दिखाया! इसके विपरीत यशायाह 57:20-21 कहता है, ''दुष्टों के लिए शांति नहीं है, मेरे परमेश्वर का यहि वचन है।''

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

सिखाएँ। यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 7:40-50 में दो देनदारों का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में व्यय प्रेम'' के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''क्षमा होने की अनुभूति होने का परिणाम प्रेम का प्रवाह है और क्षमा होने की चेतना का परिणाम सुसमाचार पर विश्वास करना है।'' वह व्यक्ति जिसके अधिक पाप क्षमा होते हैं, अधिक प्रेम दिखाता है और जिसके थोड़े पाप क्षमा होते हैं वह थोड़ा प्रेम दिखाता है।

यीशु के प्रति प्रेम का प्रवाह परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग, जिनके पाप क्षमा किए गए, चाहे वे कितने भी क्यों न रहे हों, परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता को यीशु मसीह के प्रति प्रेम के प्रवाह द्वारा व्यक्त करते हैं।

यीशु क्षमा के प्रति फरीसी की समझ की तुलना क्षमा के प्रति महिला की समझ से करते हैं। फरीसी ने सोचा कि वह धर्मी है और उसे क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि उसका कुछ भी क्षमा नहीं हुआ इसलिए उसने कुछ भी प्रेम नहीं किया। क्योंकि उसने यीशु मसीह से कोई क्षमा प्राप्त नहीं की इसलिए उसने यीशु मसीह से प्रेम भी नहीं किया।

इसके विपरीत, महिला अपने पापों के प्रति (पापमय स्वभाव) और उसी समय अपनी पूर्ण क्षमा के प्रति गहराई से सचेत थी। क्योंकि उसे यीशु से अधिक क्षमा प्राप्त हुई, उसने यीशु मसीह से अधिक प्रेम किया।

इस दृष्टांत में उस व्यक्ति जिसका थोड़ा क्षमा किया गया था और उस महिला जिसका अधिक क्षमा किया गया था के बीच तुलना की गई है! मसीहियों के बीच थोड़ा क्षमा किए जाने या बहुत क्षमा किए जाने के बीच कोई अंतर नहीं है। जब परमेश्वर किसी को पूर्णरूप से क्षमा करते हैं तो वे उस व्यक्ति को अपनी दृष्टि में 100 प्रतिशत धर्मी (क्षमा किया गया) घोषित करते हैं और उसके जीवन भर उसे 100 प्रतिशत धर्मी (क्षमा किया गया) मान कर उसके साथ व्यवहार करते हैं (रोमियों 4:4-8)! सभी मसीही जिन्होंने अपने पापों का पश्चयाताप किया और यीशु मसीह पर विश्वास किया, वे पूर्णरूप से क्षमा किए गए हैं (इब्रानियों 8:12)!

जैस-जैसे मसीही अपने आत्मिक जीवन में बढ़ते हैं, वे *अपने* पापमय स्वभाव के *प्रति जागरूकता*, जो कुछ यीशु मसीह ने उनके लिए किया और उन्होंने उन्हें कितना क्षमा किया इसके *प्रति अपनी जागरूकता में* भी बढ़ते हैं। परिणामस्वरूप मसीही यीशु मसीह के प्रति अपने प्रेम में भी बढ़ते हैं। एक पुराना मसीही एक नए मसीही की अपेक्षा अपने पापमय स्वभाव के प्रति अधिक जागरूक होता है। एक व्यक्ति जितना अधिक अपने पापी स्वभाव के बारे में जागरूक होता है, उतना ही अधिक उसे इस बात के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है कि उसके पाप पूर्णरूप से क्षमा कर दिए गए हैं। जितना अधिक वह अपने क्षमा किए जाने के प्रति जागरूक होता है, उताना ही अधिक वह यीशु मसीह के प्रति अपनी कृतज्ञता को यीशु मसीह के प्रति उमड़ते हुए प्रेम में व्यक्त करता है!

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें लूका 5:17-26

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाता है, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें। लूका 5:17-26 में, यीशु ने एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा किया जो उसके चार मित्रों द्वारा यीशु के पास लाया गया था। यीशु ने महसूस किया कि इस लकवेग्रस्त व्यक्ति की वास्तविक समस्या परमेश्वर की दृष्टि में उसके सभी अपराधों से ऊपर थी। यीशु उस लकवाग्रस्त व्यक्ति के हृदय में देख सकते थे और उन्होंने देखा की वह अपने पापों के प्रति जागरूक था और दोषी महसूस करता था और शर्मिंदा था। यीशु उसके चार मित्रों के हृदयों में भी देख सकते थे और देखा कि उन्हें उन पर और जो वह कर सकते हैं उस पर विश्वास है। जब यीशु ने लकवाग्रस्त व्यक्ति और उसके मित्रों के विश्वास को देखा तो वह प्रभावित हुए और कहा, "मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए" (लूका 5:20)।

फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक क्रोधित थे, क्योंकि वह यीशु को परमेश्वर का निंदक मानते थे। उन्होंने यीशु पर वह काम करने का आरोप लगया जो केवल परमेश्वर कर सकते थे आर्थत पापों को क्षमा करना। अपने मन में वे यह सोच रहे थे कि लकवाग्रस्त व्यक्ति के लिए कुछ प्रायोगिक कार्य करने के बजाय, किसी के लिए यह कहना सरल है कि: "तेरे पाप क्षमा हुए"। यीशु उनके विचारों

को जनते थे और अपने परमेश्वर[1] होने, जिसने मनुष्य का रूप लिया[2] और कि उन्हें पापों को क्षमा करने का अधिकार है, के दावे को लकवाग्रस्त व्यक्ति को तुरन्त और पूर्णरूप से चंगा करने के द्वारा सिद्ध किया! यीशु मसीह लोगों के पापों को प्रायश्चित बलिदान के आधार पर क्षमा करते हैं जो उन्होंने स्वयं क्रूस पर दिया। क्योंकि उन्होंने पापों के लिए प्रायश्चित किया, उन्हें मनुष्य के पापों को क्षमा करने का और पापों की क्षमा की घोषणा करने का अधिकार है!

जबकि फरीसी कई प्रतिबंधों के साथ, जैसे, ''तुम्हें किसी को सब्त के दिन चंगा नहीं करना चाहिए'', एक नकारात्म धर्म से भरे हुए थे, वहीं यीशु ने इस संसार में जरूरतमंद लोगों के प्रति प्रेम दिखाते हुए सकारात्मक कार्यो के साथ स्वयं को व्यस्त रखा।

---

[1] परमेश्वर का पुत्र

[2] मनुष्य का पुत्र

राज्य परिशिष्ट 8

(यीशु के दृष्टान्त)
मुद्दई

मत्ती 5:25-26 में मुद्दई का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में क्षमा के विषय में है।

पढ़ें मत्ती 5:25-26

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?
ध्यान दें। कुछ लोग इसे दृष्टांत के रूप में नहीं मानते। हालाँकि यह एक सांसारिक कहानी है स्वर्गीय अर्थ के साथ। यह एक सामान्य कचहरी का उपयोग एक आत्मिक संदेश का वर्णन करने के लिए करता है। एक सांसारिक कचहरी की कार्यप्रणाली को एक प्रोत्साहन के संदर्भ में बताया गया है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।
खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 5:21-24 में निहित है।

यह दो हिस्सों से मिलकर बना है:

मत्ती 5:21-22 छठी आज्ञा की व्याख्या से संबंधित है। व्याख्याकार मत्ती 5:21 के अनुवाद के मामले को लेकर अलग अलग राय देते हैं। कुछ अनुवाद करते है, ''यह लोगों को बहुत पहले कहा गया था।'' इसका अर्थ है कि मूसा ने व्यवस्था में इस्त्राएल के पित्रों से कुछ कहा था और यह माना जाता है कि यीशु ने मूसा के नियमों पर श्रेष्ठता का एक स्वर ग्रहण किया। कुछ अनुवाद करते हैं, ''यह लोगों द्वारा बहुत पहले कहा गया था'', जिसका अर्थ है कि व्यवस्था के प्राचीन व्याख्याकारों (रब्बियों) ने कुछ कहा था, और जो कुछ भी उन्होंने कहा यीशु उससे सहमत नहीं थे या उसे खतरनाक रूप से अधूरा माना।

दूसरा अनुवाद निम्नलिखित कारणों से सही है। यीशु ने पहले मत्ती 5:17 में व्यवस्था की पुष्टि नहीं की और फिर बाद में मत्ती 5:21 में उसे एक तरफ कर दिया। यदि यीशु इस बात का जिक्र कर रहे होते कि मूसा ने व्यवस्था में क्या आज्ञा दी है, तो उन्होंने इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया होता, ''मूसा ने आज्ञा दी थी'' या ''यह लिखा है'' (मत्ती 4:4,7,10)। बाद में यहूदी लेखन अपने पहले शिक्षकों रब्बी हिलेल और शम्मई को संदर्भित करने के लिए इस वाक्य का प्रयोग करते हैं ''पूर्वजों के पिता।'' और यह शब्द ''यह कहा गया था'' पुराने नियम में लिखे हुए शब्दों की तुलना में ऐसे शिक्षकों की मौखिक परंपरा से अधिक जुड़ा हुआ है। निष्कर्ष यह है कि ''बहुत पहले के लोग'' वे लोग थे जिन्होंने लिखित पुराने नियम का अनुवाद मौखिक रूप से किया था। व्यवस्था के पत्र का सारांश गलत नहीं था, लेकिन यीशु के शिक्षण के पता चलता है कि उन प्राचीन रब्बियों ने

इसके महत्व को अनुपयुक्त तरीके से बताया, जैसा कि फरीसी और व्यवस्था के शिक्षक अभी भी यीशु के दिनों में कर रहे थे।

छठी आज्ञा के प्राचीन अनुवादकों ने छठी आज्ञा के पत्र को सही तरीके से प्रस्तुत किया, ''हत्या न करना'' (निर्गमन 20:13)। साथ ही शब्दों का सार जो उन्होंने जोड़ा, ''यदि कोई हत्या करता है तो वह दण्ड के योग्य ठहरेगा'', पुराने नियम में पाया जा सकता है (उत्पत्ति 9:6)। हालाँकि वर्तमान संदर्भ में जो उन्होंने कहा वह गलत नहीं था, बल्कि जो उन्होंने अनकहा छोड़ दिया, जो उन्होंने अनुवाद नहीं किया और जिस पर वे जोर देने में असफल हो गए! प्राचीन अनुवादक और साथ ही साथ पुराने नियम के अनुवादक यीशु मसीह के दिनों में छठी आज्ञा का पूर्ण सारांश नहीं दे रहे थे। उन्होंने केवल *व्यवस्था के पत्र* को लागू किया, लेकिन *व्यवस्था के मूलभूत भाव* को अनदेखा कर दिया! वे कुछ इस प्रकार कहते, ''जब तू बंदूक, चाकू या औषधि का प्रयोग करे तो सावधान रहना, क्योंकि तू किसी को मार सकता है।''

यीशु सिखाते हैं, जब तक ये अनुवादक व्यवस्था के पत्र पर जोर देते हैं, लेकिन लोगों को इसके उन आत्मिक कारणों के खिलाफ चेतावनी देने में विफल रहते हैं जिनके कारण इस प्रकार की हिंसा (हत्या) उत्पन्न होती है, तब तक वे परमेश्वर की व्यवस्था को मानव समाज में केवल दण्ड की नियमावली से अधिक और कुछ नहीं बनाते। यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर की दस आज्ञाएँ केवल दण्ड संहिता से बहुत अधिक हैं। दस आज्ञाँए अपराध के बाहरी कार्यों से परे जाती है और बाहरी अपराधों के कारणों पर लागू होती हैं, जैसे कि, हृदय की पापमय प्रवृत्ति, जो बाहरी पापमय कार्यों के वास्तविक कारण है! हत्या के बाहरी कार्य की शुरूआत सदैव हृदय की आंतरिक प्रवृत्ति से होती है। मनुष्य समान्यत केवल *बाहरी समस्या* को देखता है। परमेश्वर हमेशा *मूल कारण* को देखते हैं! उदाहरण के लिए, मुहँ से निकले कड़वे शब्द क्रोध, घृणा और हृदय में क्षमा न करने वाली आत्मा की अभिव्यक्ति हैं!

''रैका'' (तिरस्कार के लिए एक आरामी शब्द), जिसका अर्थ है ''खाली सिर'', जो कि उस व्यक्ति के लिए हृदय में तिरस्कार व्यक्त करता है।

''मूर्ख या ''बेवकूफ'' हृदय में एक व्यक्ति के खिलाफ क्रोध, घृणा और कड़वाहट को व्यक्त करता है। यीशु इन पापों का कोई वर्गीकरण प्रदान नहीं करते केवल एक बिंदु स्थापित करते हैं। जो कोई भी किसी दूसरे के लिए अपने मन में क्रोध, घृणा और कड़वाहट को बनाए रखता है, ''वह नरक में डाले जाने के खतरे में है'', अर्थात परमेश्वर से मृत्यु के दण्ड का हकदार है! जो पाठ यीशु सिखाते हैं वह यह है कि हृदय में पापमय क्रोध, घृणा, और कड़वाहट, कड़वे शब्दों की ओर ले जाते हैं और कड़वे शब्द सार में ''हत्या'' हैं जो हृदय में जगह ले रही है! जब तक कोई व्यक्ति इससे पश्चयाताप नहीं करता, वह नरक में जाने के लिए दोषी ठहराया जाएगा। यीशु सिखाते हैं कि सभी बुराईयों और पाप की जड़ मनुष्य के हृदय में बनी रहती है। यह मनुष्य का हृदय ही है जहाँ, घृणा और भेदभाव को प्रेम से और, पाखंड और स्वार्थीपन को ईमानदारी से बदलना आवश्यक है।

मत्ती 5:23–24 छठी आज्ञा का लागूकरण है। कुछ लोग समझते हैं कि जब तक वे आत्म संयम का अभ्यास करते हैं और अपने हृदय में मौजूद इस पापमय स्वभाव को क्रोध और कड़वे शब्द *बोलने* के द्वारा प्रगट नहीं करते, तब तक वे छठी आज्ञा का पालन करते हैं। लेकिन यीशु सिखाते हैं कि

किसी भी प्रकार का संबंध जिस में सामंजस्य न हो, छठी आज्ञा का उल्लंघन है। जब तक एक व्यक्ति अपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप से नहीं रहता, वह छठी आज्ञा को तोड़ता है और परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकता। चाहे वह व्यक्ति बाहरी रूप से परमेश्वर की आराधना करें, परमेश्वर उस व्यक्ति के साथ मिलाप या संगति नहीं करेंगे! किसी भी व्यक्ति के साथ एक तनावपूर्ण संबंध परमेश्वर के साथ तनावपूर्ण संबंध का कारण बनता है! 1यूहन्ना 4:20 कहता है, ''यदि कोई कहे कि 'मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ' और अपने भाई से बैर रखे तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता।''

जब यीशु कहते हैं, ''यदि तुझे याद आए कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ है'', तब उनके कहने का अर्थ है कि विरोध एक ऐसा महत्वपूर्ण स्वभाव है जो कि ''एक शिकायत'' कहलाने के योग्य है। वह केवल धार्मिक शिकायातों को ही नहीं बल्कि किसी भी शिकायत को संबोधित करते हैं। यीशु ने कि किसी प्रकार की शिकायत का उल्लेख ही नहीं किया। वह सारा जोर मेल मिलाप करने की आवश्यकता और अपने भाई के साथ सामंजस्य में रहने पर देते हैं। जब भी आपको पता चलता है कि आपके भाई को आपके असंतुष्ट होने का अधिकार है, आपको उसके साथ मेल मिलाप करने का प्रयास करना चाहिए!

छठी आज्ञा का यीशु का सकारात्मक लागूकरण यह है कि हृदय क्रोध घृणा और कड़वाहट के बजाय, हर समय प्रेम से भरा होना चाहिए। वह सिखाते हैं कि जब तक आप आपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप नहीं करते तब तक आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इसी समायोजन में यीशु ने मुद्दई का दृष्टांत बताया।

(2) दृष्टांत की कहानी मत्ती 5:25-26 में एक प्रोत्साहन के रूप में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण स्वयं इसका प्रोत्साहन है जो कि मत्ती 5:25-26 में निहित है।

एक व्यक्ति को जल्द से जल्द अपने विरोधी के साथ अपने विवाद को निपटाना चाहिए। उसे जल्दी से कोशिश करनी चाहिए कि वह उस व्यक्ति के साथ मेल मिलाप कर ले जो यह *सोचता* या *महसूस* करता है कि वह उससे नाराज है। उसे यह तुरन्त करना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि नाराज भाई या विरोधी कानूनी कार्यवाही करने का विचार कर रहा हो या हो सकता है कि उसने ऐसी कार्यवाही की शुरूआत भी कर दी हो। फिर से यीशु यह नहीं कहते कि विरोधी नैतिक रूप से सही है या नहीं। साथ ही वह अपराध की प्रवृत्ति के बारे में भी नहीं बताते, यद्पि यह आर्थिक ऋण की ओर संकेत करता है (मत्ती 5:26)। वह न्याय (जो यह सिद्ध करता है कि आप सही हैं) पर नहीं, परन्तु मेल मिलाप (अपने विरोधी के साथ, बिना यह सोचे की कौन सही है) पर जोर देते हैं! यहाँ तक कि अगर अंत में अंतिम न्याय के समय इसके साथ व्यवहार किया जाएगा, फिर भी इस लेखांश में न्याय के प्रश्न पर चर्चा नहीं की गई।

जब तक एक व्यक्ति के पास ऐसा करने का अवसर है तो उसे हर मामले को ''कचहरी से बाहर'', निपटाने का प्रयास करना चाहिए। उसे संसार की कचहरी को शामिल किए बिना, चार आँखो के तले

अपने विरोधी से मेल मिलाप करने का प्रयास करना चाहिए। यदि वह ऐसा करने में असफल हो जाता है, तो उसे जेल में डाला जा सकता है, जब तक कि वह एक एक कौड़ी न भर दे।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

यीशु इस दृष्टांत में किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं। हालाँकि, संदर्भ दर्शाता है कि अंतिम विश्लेषण में यीशु सांसारिक नहीं बल्कि स्वर्गीय न्यायधीश के बारे में बता रहे हैं (मत्ती 6:15)। वह सांसारिक बन्दीगृह के बारे में नहीं वरन नरक के बारे में बोल रहे हैं (मत्ती 5:22; 18:30,35)। यह हृदय का अनंरूनी रवैया है जो सभी लोगों के प्रति प्रेम में एक होना चाहिए। यीशु चेतावनी देते हैं कि यदि एक व्यक्ति अपने हृदय में दूसरे व्यक्ति के प्रति क्रोध, घृणा और कड़वाहट के साथ मरता है, तब यह रवैया अंतिम न्याय में स्वर्गीय न्यायधीश के सामने उस व्यक्ति के विरोध में गवाही देगा और वह नरक के बंदीगृह से नहीं बच पाएगा। यीशु का तत्पर्य यह है कि परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपने हृदय में दूसरे लोगों के प्रति क्रोध, घृणा और कड़वाहट को थामे नहीं रखते।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

मत्ती 5:25-26 में मुद्दई का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में क्षामा" के बारे में है। दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "मेल मिलाप का समय सदैव अभी है!"

क्षमा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग उन भाई या बहनों से जो उन से क्रोधित हों या वे उन से क्रोधित हों, मेल मिलाप करने में देर नहीं करते, क्योंकि "कल" शायद बहुत देर हो सकती है! वह व्यक्ति जो मेल मिलाप के लिए पुरजोर प्रयास करने से इंकार करता है, वह कभी अपना ऋण नहीं चुका पाएगा।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

(1) व्यवस्था का पत्र और व्यवस्था की आत्मा।

पढ़ें उत्पत्ति 4:6-7; व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18; नीतिवचन 14:17; 22:24-25; अय्यूब 5:2

खोजें और चर्चा करें। बुराई की जड़ के विषय में बाइबल क्या सिखाती है?

ध्यान दें। बुराई की जड़ हृदय में है। व्यवस्था का पत्र नहीं, बल्कि व्यवस्था की आत्मा मनुष्य के पापमय स्वभाव और मनोवृत्ति को उजागर करती है। आधुनिक और प्राचीन यहूदी अनुवादकों के पास छठी आज्ञा के अपने अनुवाद को *बाहरी* हत्या के *कार्य* के रूप में सीमित करने के अलावा कोई बहाना नहीं था।

पहले घरेलू झगड़े के दौरान, परमेश्वर ने कैन से कहा, "तू क्यों क्रोधित हुआ? तेरे चेहरे पर उदासी क्यों छा गई? यदि तू भला करे तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे,

तो पाप द्वार पर छिपा रहता है; और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तुझे उस पर प्रभुता करनी है।'' परमेश्वर कैन के हृदय की अंदरूनी मनोवृत्ति को संबोधित कर रहे थे, अर्थात जलन और क्रोध। पुराने नियम में, परमेश्वर ने पहले ही दस आज्ञाओं को, ''परमेश्वर से प्रेम रखो'' और ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखो'' के साथ संक्षेप में प्रस्तुत किया। यह प्रेम ही है तो कि हृदय की आंतरिक मानोवृत्ति के साथ-साथ मनुष्य के बाहरी आचरण को भी निर्धारित करता है। क्रोध मनुष्य के लिए मूर्खतापूर्ण कार्य करने का कारण बनाता है और द्वेष (बैर) मारता है।

(2) ग्रहण न करने योग्य और ग्रहण करने योग्य बलिदान।

पढ़ें उत्पत्ति 4:5; 1शमूएल 15:22-23; यशायाह 1:10-17; यिर्मयाह 6:19-20; आमोस 5:22-24; मीका 6:6-8; मरकुस 12:41-44; इब्रानियों 11:4।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल उन भेटों और बलिदानों के बारे में क्या सिखाती है जो परमेश्वर को ग्रहण योग्य नहीं?

ध्यान दें। ऐसी भेंट और बलिदान जो परमेश्वर के पास उस समय लाये जाते हैं जब एक व्यक्ति के हृदय में लगातार पाप और अन्याय बना रहता है, परमेश्वर की दृष्टि में पूर्णरूप से अयोग्य है। परमेश्वर ऐसी भेंट और बलिदानों को स्वीकार नहीं करते! जब आप अपने हृदय में किसी के विरूद्ध घृणा को थामे रखते हैं या तथाकथित ''पवित्र युद्ध''[1] में लगे होते हैं तब ''अत्यधिक धर्मी'' होने के नाते जैसेः एक मात्र परमेश्वर का अंगीकार करना, सप्ताह में दो बार उपवास करना, प्रत्येक दिन में तीन बार प्रार्थना करना, हर साल तीन बार यरूशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाना और परमेश्वर और गरीबों को अपनी कमाई का दसवां हिस्सा देना, बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में निश्चित रूप से बेकार है।

(3) मेल मिलाप का समय अभी है।

खोजें और चर्चा करें। ये लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?

ध्यान दें।

- ***पढ़ें*** रोमियों 12:18. जब आपने अपनी सामर्थ्य से अपने विरोधी के साथ मेल मिलाप करने का भरसक प्रयास किया हो, और वह अभी भी निष्पक्ष होने और जहाँ क्षमा करने की आवश्यकता हो वहाँ क्षमा करने से इंकार करता है, तब दोष पूर्ण रूप से केवल आपके विरोधी पर पड़ता है।
- ***पढ़ें*** नीतिवचन 27:1; लूका 4:18-19 की तुलना यशायाह 61:2; 2कुरिन्थियों 6:2 से की गई। परमेश्वर बार-बार टालने पर चेतावनी देते हैं! कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय कल पर न छोड़ें, क्योंकि कल शायद बहुत देर हो सकती है! रूपांतरण, विश्वास और अपने भाई या बहन के साथ मेल मिलाप जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने का समय सदैव अभी होता है!